हिंगलाज शक्तिपीठ

ओंकार सिंह लखावत

मोमीन को मक्का, हिंदुन को हिंगलाज

आदि शक्ति हिंगलाज सर्वव्यापी एवं सर्वकालीन लोकपूज्य देवी है। हिंगलाज माता को हिन्दू आदि शक्ति के रूप में और मुस्लिम नानी मां के हज के रूप में पवित्र मानते हैं। हिंगलाज तीर्थ यात्रा के विवरण वाली अनेक पुस्तकें समय-समय पर प्रकाशित होती रही हैं, परंतु इस पुस्तक में शक्ति की अवधारणा, शक्ति पीठों की उत्पत्ति, भारतीय परम्परा में हिंगलाज, हिंगलाज के अवतार जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर गवेषणापूर्ण जानकारी प्रदान की गई है।

गुरु नानक देव जी, गुरु गोरख नाथ जी एवं अन्य संत महात्माओं एवं महापुरुषों की ऐतिहासिक हिंगलाज यात्राओं का वर्णन शताब्दियों तक श्रद्धालुओं को हिंगलाज दर्शन के लिये प्रेरित करता रहेगा। सूफी सन्त शाह अब्दुल लतीफ़ एवं सचल सरमस्त के द्वारा हिंगलाज की श्रद्धा में लिखे अरबी सिंधी के छंद हिंगलाज के प्रति व्यापक श्रद्धा का प्रकटीकरण है।

पुस्तक में हिंगलाज यात्रा के भाव प्रधान वर्णन के साथ-साथ हिंगलाज माता के दर्शन, स्मरण, परचे-परवाड़ों एवं हिन्दुस्तान में प्रमुख हिंगलाज मंदिरों के रंगीन छायाचित्र सहित विवरण उपलब्ध कराया गया है। पाकिस्तान में हिन्दू आस्था केन्द्रों को रंगीन छायाचित्र सहित प्रस्तुत किया गया है। भक्ति काव्य एवं शब्दकोशों में हिंगलाज सामग्री साहित्य के अध्ययन के लिये उपयोगी होगी। डिंगल व गुजराती भाषा में हिंगलाज की भक्ति रचनायें श्रद्धालुओं के लिये नित्य पठनीय एवं पाठ पारायण योग्य है। यथा स्थान छायाचित्रों का उपयोग प्रभावी रूप से किया गया है। पाश्चात्य विद्वानों एवं अधिकारियों द्वारा लिखित हिंगलाज यात्रा का विवरण अत्यधिक प्रामाणिक एवं उपयोगी है। सिंध एवं बलूचिस्तान की प्रभावी जानकारी सामान्य पाठक का ज्ञानवर्द्धन करेगी।

आशा है कि श्री ओंकार सिंह लखावत की 'हिंगलाज शक्तिपीठ' पुस्तक विभिन्न आयामों पर विस्तृत शोध कार्य करने के लिये दिशा बोध कराने के साथ-साथ भारतीय उपमहाद्वीप में सांस्कृतिक एकता स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी।

-प्रो. आशुतोष पंत

हिंगलाज शक्तिपीठ

ओंकार सिंह लखावत

हिंगलाज शक्तिपीठ : ओंकार सिंह लखावत

© ओंकारसिंह लखावत
प्रथम संस्करण : दिसम्बर, 2010
पहला पुनर्मुद्रण : फरवरी, 2011
ISBN : 978-81-920932-0-8

प्रकाशक
तीर्थ पैलेस प्रकाशन, 125, हैलोज रोड, पुष्कर (राजस्थान)
दूरभाष : 0145-2773999, 5121021, 2773168
Fax : 91-0145-2773999
24-ए, मोहन कॉलोनी, स्वेज फार्म, सोडाला, जयपुर (राजस्थान)
e-mail : teerthpalacep@gmail.com
दूरभाष : 0141-2290629

मुद्रक : तरु ऑफसेट, एफ-77, करतारपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, बाईस गोदाम, जयपुर-302006
दूरभाष : 9829018087, कम्प्यूटर ग्राफिक्स : राज कुमावत

मूल्य : 300.00 रुपए मात्र (समस्त भारत)
US$10 (Rest of the World) डाक व्यय अतिरिक्त

समर्पण

पिता स्व. श्री आशकरण जी को
जिन्होंने बाल्यकाल में सद्-संस्कार दिये
और वही संस्कार नित्य प्रति मेरे अन्त:स्थल को
संस्कृति युक्त ऐतिहासिक कार्यों के
संवर्द्धन में जुड़े रहने की प्रेरणा एवं
शक्ति प्रदान करते रहे हैं।

अनुक्रमणिका

- *अध्याय-एक* : **शक्ति की अवधारणा** **13-22**
  1. भारतीय शक्ति परम्परा 13-16
  2. शक्तिपीठ 17-22
- *अध्याय-दो* : **भारतीय परम्परा में हिंगलाज** **23-29**
- *अध्याय-तीन* : **हिंगलाज माता की उपासना पद्धति** **30-32**
  1. हिंगलाज, हिंगलाज और हिंगलाज 32
- *अध्याय-चार* : **हिंगलाज के अवतार** **34-37**
  1. ठट्ठा की हिंगलाज देवी 34-35
  2. आवड़ तनोट माता 35-36
  3. माँ सैणी जी 36-37
  4. करनी माता 37
- *अध्याय-पाँच* : **हिंगलाज यात्रा** **38-57**
- *अध्याय-छह* : **हिन्दुस्तान में प्रसिद्ध हिंगलाज मंदिर** **58-69**
- *अध्याय-सात* : **पाकिस्तान में हिन्दू आस्था केन्द्र** **70-75**
- *अध्याय-आठ* : **हिंगलाज दर्शन एवं स्मरण** **76-90**
  1. गुरु नानक देव जी, गुरु श्री गोविन्द सिंह जी एवं हिंगलाज 76-78
  2. शिव स्वरूप बाबा श्री चन्द्र जी, उदासीन मत व हिंगलाज 79
  3. गुरु गोरख नाथ, नाथ सम्प्रदाय एवं हिंगलाज माता 80-83
  4. चहुवान कुमार अस्थिपाल की हिंगलाज यात्रा 84-85
  5. शाह लतीफ़ और हिंगलाज 86-88
  6. सचल सरमस्त एवं हिंगलाज 89
  7. दादा मेकण की हिंगलाज यात्रा 89
  8. बाबा किन्नाराम जी अघोरी एवं हिंगलाज 90

9. स्वामी त्रिगुणातितानन्द की हिंगलाज यात्रा 90

- *अध्याय-नौ* : **हिंगलाज ही हिंगलाज** **91-94**
- *अध्याय-दस* : **पाश्चात्य विद्वान् एवं हिंगलाज** **95-114**
- *अध्याय-ग्यारह* : **हिंगलाज माता-नानी मां** **115-118**
- *अध्याय-बारह* : **आस्था के रूप** **119-134**

1. हिंगलाज माता के परचे व कथायें 119-123
2. जगन्नाथपुरी एवं हिंगलाज माता 124-125
3. बप्पा रावल एवं हिंगलाज 126
4. पाण्डव और हिंगलाज माता 126
5. चन्द्रला परमेश्वरी स्वरूपा हिंगलाज 127-128
6. राजा युवनाश्व, कोली एवं हिंगलाज 128
7. दधीचि ऋषि एवं हिंगलाज 128-129
8. भगवान परशुराम एवं हिंगलाज 129-130
9. हिंगोल वध 131
10. भूपत देथा को वरदान 131-132
11. महाराव देशलजी को हिंगलाज का चमत्कार 132-133
12. गिरिपंथ एवं हिंगलाज 133-134

- *अध्याय-तेरह* : **हिंगलाज यात्रा : तब और अब** **135-142**
- *अध्याय-चौदह* : **संसद में हिंगलाज पर प्रश्नोत्तर** **143-144**
- *अध्याय-पन्द्रह* : **बंगाली फिल्म मरुतीर्थ हिंगलाज** **145-146**
- *अध्याय-सोलह* : **हिंगलाज मंदिर के बचाव में बलूच सरकार** **147-148**
- *अध्याय-सत्तरह* : **सांस्कृतिक एकता का प्रतीक हिंगलाज** **149-153**
- *अध्याय-अठारह* : **भक्ति काव्य में हिंगलाज** **154-157**
- *अध्याय-उन्नीस* : **शब्दकोशों में हिंगलाज** **158-162**
- *अध्याय-बीस* : **आध्यात्मिक पर्यटन केन्द्र हिंगलाज** **163-164**
- *अध्याय-इक्कीस* : **स्तुति** **165-210**

1. हिंगलाज माता : डिंगल काव्य में स्तुति 165-198
2. गुजराती साहित्य में हिंगलाज माता 199-210

डॉ. कर्ण सिंह
संसद सदस्य

सत्यमेव जयते

अध्यक्ष
भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद
(आई.सी.सी.आर.)

भूमिका

भारतवर्ष एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत वाला देश है। समूचे उपमहाद्वीप में जितनी भी संस्कृतियाँ वास करती हैं, वो भारत भूमि से ही अपनी पहचान हासिल करती आई हैं। शक्तिपीठ हिंगलाज के विषय में जो जानकारियां अब तक मिलती आई हैं, वो फुटकर और यत्र-तत्र बिखरी हुई हैं। वैसे तो हिंगलाज माता से जुड़ी लोक-कथाएँ बचपन से सुनने को मिलती थीं, लेकिन हिंगलाज माता के विषय में इतनी व्यवस्थित जानकारी पहली बार एक पुस्तक के रूप में देखने को मिली है। प्रिय ओंकारसिंह लखावत जी इसके लिए साधुवाद के पात्र हैं। जैसा कि पुस्तक में वर्णित है कि माता हिंगलाज के श्रद्धालु समूचे भारतीय उपमहाद्वीप में फैले हैं और हिन्दू-मुस्लिम दोनों मजहब में इनके भक्तों की खासी तादाद है, ऐसे में माँ हिंगलाज के विषय में विशद जानकारी उपलब्ध कराना अपरिहार्य भी था। प्रिय लखावत ने इसका बीड़ा उठाया और पूर्ण कुशलता के साथ इस महती कार्य को संपन्न किया, यह देखकर बेहद हर्ष की अनुभूति हो रही है।

आशा करता हूँ कि निकट भविष्य में भी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण विषयों पर ओंकारसिंह लखावत जी की लेखनी यूं ही सतत चलती रहेगी। माँ शारदे की कृपा सदैव उन पर बरसती रहे, यही शुभकामना है। अत्यंत स्नेह के साथ यह पुस्तक सुधी पाठकों और माता हिंगलाज के श्रद्धालुओं को सौंप रहा हूँ।

कर्ण सिंह

(डॉ. कर्ण सिंह)

ऑफिस : आई.सी.सी.आर., आजाद भवन, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली-110002
दूरभाष : 23378616, 23370698

हींगुलायै नमोऽस्तुते

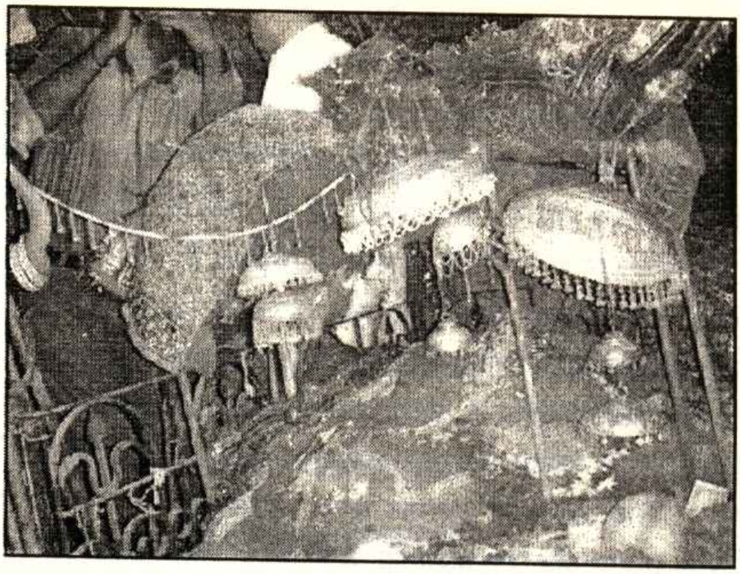

महामाया जगत माता, महामाये जगत प्रिया।
महामाया जगधात्री, हींगलायै नमोऽस्तुते।।
प्रचंड दंडनी शत्रु तथा ब्रह्मांड धारिणी।
तारणी दुर्ग संसारात्, हींगुलाये नमोऽस्तुते।।

(जोधपुर महाराज अजीत सिंह)

श्री जगदंबिका हिंगुला विजयतेतराम्।।
नमो हिंगुले देवि मातर्नमस्ते सदा ध्याननिष्ठे सदा ध्यानतुष्टे।
सदा भक्तकार्याद्यतायै नमस्ते नमस्ते परे योगिनां योगगम्ये।।

(श्री हिंगुला पुराण)

हिंगलाज रथ हांक

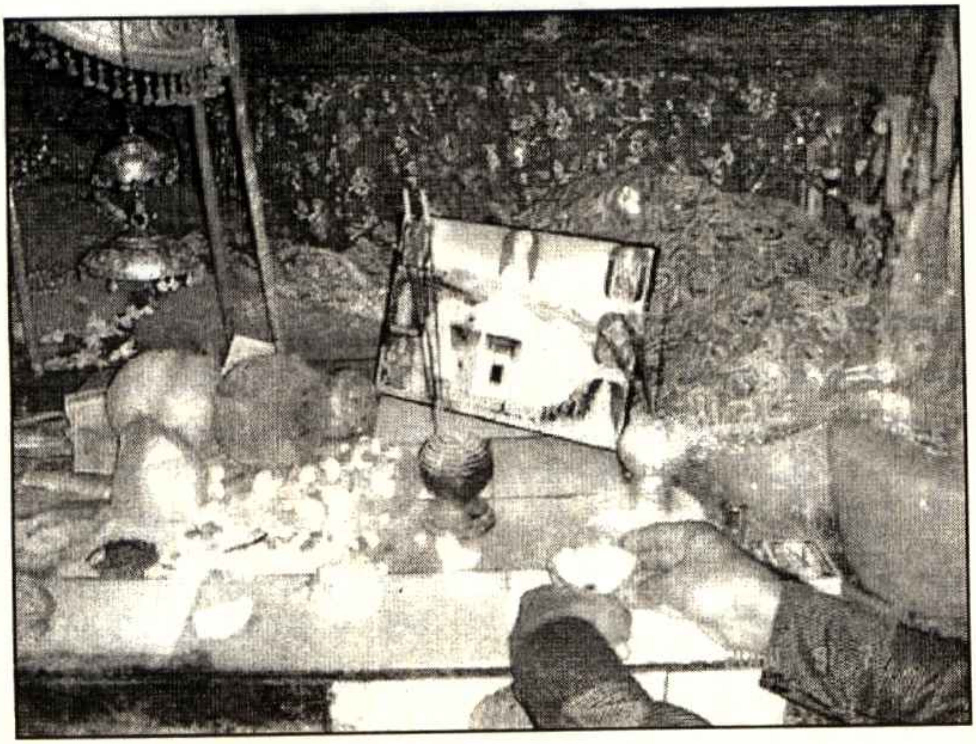

शुभ कार्यों को प्रारम्भ करने से पूर्व गणेश जी को स्मरण करने की परम्परा का निर्वहन करते हुये उन्हें नमन करता हूँ। गणेश जी के पिता भगवान शिव की पहली पत्नी एवं प्रजापिता ब्रह्माजी के पुत्र राजा दक्ष की पुत्री सती के ब्रह्मरन्ध के पृथ्वी पर गिरने के स्थान पर पूजित होने वाली प्रथम आदि शक्तिपीठ हिंगलाज है। हिंगलाज माता सर्वव्यापी, सर्वकालीन एवं सर्वप्रभावी हैं।

मेरी वंश परम्परा का निर्वहन करते हुये भगवान कृष्ण को नत मस्तक होकर वंदन करता हूँ तथा मेरी इस पुस्तक के सभी अमंगल एवं त्रुटियों के हरण की प्रार्थना करता हूँ।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम लंका विजय के पश्चात् हिंगलाज माता के दर्शन करने गये थे। विद्वानों के अनुसार स्वयं भगवान शिव पार्वती सहित हिंगलाज में तपस्यारत रहे। महर्षी दधीचि ने हिंगलाज के महत्व को समझकर श्रद्धालुओं को मन्त्र दिया। स्वयं भगवान परशुराम हिंगलाज माता के उपासक थे।

गुरु गोरखनाथ ने हिंगलाज में तपस्या की। हिंगलाज माता नाथ सम्प्रदाय की इष्ट देवी हैं। मनीषी शुकदेव व्यास ने हिंगलाज के दर्शन कर अपने आप को कृतकृत्य समझा।

गुरु नानक देव जी भी हिंगलाज माता के दर्शन करने पधारे। दशम गुरु गोविन्द सिंह जी ने हिंगलाज की स्तुति में छन्द रच कर इनके प्रति आस्था प्रकट की। सूफी सन्त शाह लतीफ ने अपने रिसालो में हिंगलाज की स्तुति में अरबी सिन्धी में छन्द लिख कर आराधना की, वहीं सचल सरमस्त ने हिंगलाज को अपना स्थान बताया।

ठट्ठा के चारण हरिदास गोरविया, म्हादा चारण, मेहाजी किनिया, वेदोजी एवं भलियोजी सिंढ़ायच ने हिंगलाज यात्रा कर अपनी वंश परम्परा को गौरव के साथ चलाने की प्रार्थना की। हिंगलाज माता के आशीर्वाद से ठट्ठा की हिंगलाज देवी, चालकनूं गांव में जन्मी आवड़ माता, सुवाप में अवतरित करनी माता, माडवा में अवतरित देवल मां एवं कच्छ में अवतरित सैणीजी लोक पूज्य देवियों के रूप में आज जन-जन द्वारा पूजित हो रही हैं।

मारवाड़ के महाराजा जसवन्त सिंह के पुत्र अजीत सिंह का जन्म हिंगलाज माता की कृपा से हुआ। भगवान जगन्नाथ के यहां अग्नि स्वरूपा हिंगलाज माता स्वयं पधारीं।

डिंगल, पिंगल, गुरुमुखी, सिन्धी, गुजराती एवं अन्य भाषाओं में कवियों ने हिंगलाज की स्तुति की, वहीं मुसलमानों ने हिंगलाज माता की नानी बीबी के नाम से हज कर इबादत की।

अंग्रेजों के शासनकाल में अनेक पाश्चात्य विद्वानों एवं अधिकारियों ने हिंगलाज यात्रा कर उसका प्रतिवेदन व नक्शे लिखित में तैयार किये।

मुझ जैसे सामान्य प्राणी को हिंगलाज यात्रा करने व माता को स्पर्श करने का सौभाग्य मिला। घुटने और कोहनियों के बल गुफा की परिक्रमा करने पर परम्परा के अनुसार मेरा भी पुनर्जन्म हुआ। हिंगलाज यात्रा से हुये पुनर्जन्म की सार्थकता के लिये मुझे नई शक्ति प्राप्त हुई। इसी के फलस्वरूप जनसहयोग और सरकारी सहयोग से अपने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के कर्त्तव्य की पूर्ति करते

हुये बूढ़ा पुष्कर जीर्णोद्धार, खानवा में राणा सांगा स्मारक, गोगा मेड़ी में गोगा जी स्मारक, मेड़ता में मीरा बाई स्मारक, सलूम्बर में हाडी रानी स्मारक, भरतपुर में राजा सूरजमल स्मारक, साहवा साहिब में साहवा सरोवर एवं रावत कान्धल प्रतिमा, मानगढ़ धाम में गोविन्द गुरु स्मारक, सीलू में नर्मदेश्वर धाम, खरनाल में तेजाजी स्मारक, पीपासर में जाम्भाजी स्मारक आदि राष्ट्रीयता के भाव को जागृत करने वाले स्थानों का निर्माण कार्य कराने का सौभाग्य मिला। आदि शक्ति पीठ हिंगलाज माता भारतीय उपमहाद्वीप में सांस्कृतिक एकता का आधार स्तम्भ बन सकती है।

मेरा मन पाकिस्तान में आदि शक्ति हिंगलाज और सूफ़ी संत शाह अब्दुल लतीफ़ के छंदों में रम गया था। शाह लतीफ़ ने अपने रिसालों में हिंगलाज और भगवान राम की महिमा के अरबी सिंधी में छंद लिखे यथा-

''हर हर कनि हरि नामु, धुवनि डि॒हाणी धोतिया,
जनि न रीझायो रामु, नाथु न नमे तनिखे।''

मैं चारण हूँ और मेरे पुरखों में पहला चारण प्रजापिता ब्रह्मा जी की सेवा में प्रजापति, देवताओं, ऋषियों, सिद्धों, गंधर्वों, विद्याधरों के साथ विद्यमान था। यथा-

'प्रजापतीन, मनून देवान् ऋषीतपितृगणान् पृथक्।
सिद्ध चारण गंधर्वान् विद्याधरासुर गुह्यान।।

मेरे यशस्वी पूर्वज लखाजी बारहठ, महाकवि नरहरि दास जी एवं भक्त कवि तेज सिंह जी हुये। मैंने अपने आप को चारण कुल में पैदा होने की सार्थकता को समझते हुये एवं भारतीय उपमहाद्वीप में आदि शक्तिपीठ हिंगलाज माता के प्रति लोक आस्था को शब्दों में अभिव्यक्त करने के कर्त्तव्य का पालन करने हेतु हिंगलाज माता पर यह शोध कार्य करने का प्रयास किया है।

मुझे अनेक विश्वविद्यालयों, शोध केन्द्रों, पुस्तकालयों, धर्मग्रंथ संग्रहालयों, मठों, मंदिरों, गुरुद्वारों, धार्मिक स्थलों, साधु-सन्तों, विषय विशेषज्ञों एवं आधुनिक तकनीक के विशेषज्ञों के सान्निध्य में हिंगलाज माता के बारे में जानने, समझने, लिखने एवं इसे एक पुस्तक का आकार देने का शुभ अवसर मिला। हिंगलाज यात्रा के समय जो कुछ देखा, जिसकी अनुभूति हुई, उसको भी शब्दों में ढालने का प्रयास किया है।

महंत श्री हंसराम जी महाराज, महंत श्री चांद नाथ जी, श्री रविनाथ जी, डॉ. श्री बद्रीप्रसाद जी पंचोली, डॉ. श्री चन्द्र प्रकाश जी देवल, डॉ. भंवर सिंह जी सामौर, डॉ. शक्तिदान जी कविया, मास्टर गंगाराम जी, गुलाबदान जी, गिरधरदान जी रतनू, राजेन्द्र जी बारहठ, डॉ. अम्बादान जी रोहड़िया डॉ. दिनेश जी चारण,

प्रो. चमन लाल जी रैना, प्रो. आशुतोष जी पंत, सुरेन्द्र सिंह जी सान्दू, नरेश जी हरियाणवी, श्री गिरोश हिन्दुस्तानी, श्री महेन्द्र जी तीर्थाणी, श्री गुलाबचंद जी मीरचंदानी, श्री नन्दकिशोर पाराशर, श्री हिम्मत सिंह उज्ज्वल, श्री नरेन्द्रसिंह जसनगर, श्री जयंत जी पटवर्द्धन, श्री रमेश सोनी, श्री वेद माथुर एवं श्री श्यामजी फोटोग्राफर ने मुझे मार्गदर्शन एवं सहयोग किया, इस हेतु उनका आभार।

मेरे पुत्र उमरदान लखावत, पुत्री डॉ. सरला लखावत, डॉ. सरोज लखावत एवं पौत्री अभिलाषा लखावत ने तकनीकी दृष्टि से सामग्री एकत्र करने में सहयोग दिया। पाण्डुलिपि तैयार करने में श्री जितेन्द्र कुमावत, अंजु बाकीवाला एवं श्री मोहन कुमार मंगलम् ने भरपूर परिश्रम के साथ कार्य किया।

खजुराहो संग्रहालय, राष्ट्रीय अभिलेखागार, महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश जोधपुर ने सामग्री उपलब्ध कराने में सहयोग प्रदान किया। मुझ से पूर्व हिंगलाज माता के बारे में लिखने वाले विद्वानों ने समयानुकूल सामग्री एवं विवरण उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। ऐसे अनेक महानुभाव हैं जिन्होंने प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से इस पुस्तक लेखन में सहयोग किया। मैं उपरोक्त सभी महानुभावों एवं संस्थाओं के प्रति विनम्रता से कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

मैं विशेष रूप से आभारी हूँ भारतीय सांस्कृतिक सम्बंध परिषद् के अध्यक्ष डॉ. श्री कर्ण सिंह जी के प्रति जिन्होंने इस पुस्तक की भूमिका लिखने की कृपा की।

मैं तीर्थ पैलेस प्रकाशन एवं तरु ऑफसेट के श्री मायामृग जी के प्रति भी आत्मीयता से पुस्तक प्रकाशन में सहयोग हेतु कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं।

हिंगलाज माता को श्रद्धालु द्वारा सरल मन से स्मरण करने मात्र से माता सभी प्रकार के संकट हरण में एवं श्रेष्ठ कार्य करण में चामत्कारिक रूप से सहाय होती हैं। मैं हिंगलाज माता से करबद्ध प्रार्थना करता हूँ कि वह राष्ट्र एवं आमजन के संवर्द्धन एवं संकटों से उबरने के लिये आशीर्वाद प्रदान करें।

नव दुरगा नां निमतरां, निमतरां नव लाख।
होड कोड हरकत हुवे, हिंगलाज रथ हांक।।

ओंकार सिंह लखावत

(ओंकार सिंह लखावत)

24-ए, मोहन कॉलोनी, स्वेज फार्म, सोडाला, जयपुर (राजस्थान)
करणी कुंज, कचहरी रोड, अजमेर (राजस्थान)
मो. : 9414007610, e-mail : oslakhawat@gmail.com

अध्याय : एक

शक्ति की अवधारणा

1. भारतीय शक्ति परम्परा

पुराणों में शक्ति की बहुत आदर के साथ स्तुति की गई है, वह मातृ सिद्धांत का स्वरूप है। यही मातृ सिद्धान्त वैष्णव धर्म में भगवान विष्णु की पत्नी एवं शैव धर्म में शिव की पत्नी के रूप में वर्णित है। मार्कण्डेय पुराण, देवी भागवत पुराण एवं अन्य शाक्त पुराणों में देवी का वर्णन मिलता है। शक्ति और शिव का गहरा संबंध है। शक्ति को विष्णु एवं शिव से भी अधिक महत्ता प्रदान की गई है। ऋग्वेद में शक्ति को राष्ट्र की संगमनी के रूप में स्मरण करते हुये उल्लेख किया गया है-

अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्।
तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्तीम्।।

(ऋग्वेद 10/125)

मैं राष्ट्र की संगमनी शक्ति हूँ। वसुओं की ज्ञानदात्री और यज्ञयुक्त (उपलब्धियों) में प्रथम हूँ। मुझ को देवगण अनेक रूप से धारण करते हैं। मैं बहुतों की रक्षक हूँ, बहुतों को (रहने के लिए) स्थान प्रदान करने वाली हूँ और बहुतों में अनुप्रविष्ट हूँ।

शाक्त पुराणों में हिन्दू धर्म की मौलिक आस्थाओं को शक्ति के रूप में सूत्रबद्ध किया गया है। शक्ति की अवधरणा न केवल वेदों में पाई जाती है, अपितु इसकी प्राचीनता सिन्धु सभ्यता के अवशेषों से भी सिद्ध हो चुकी है।

पुराणों एवं शाक्त उपनिषदों में शक्ति को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। प्रत्येक गाँव में देवी के किसी न किसी स्वरूप के मन्दिर बने हुये हैं। यह देवी लोगों की अगाध श्रद्धा, भक्ति और उपासना का केन्द्र है। देवी को सर्व-मंगलकारी और सभी इच्छाओं की पूर्ति करने वाली मानते हैं। देवी की स्तुति श्रद्धालु इस प्रकार करते हैं-

सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोऽस्तुते।।

आदि जगतगुरु शंकराचार्य ने भवानी की स्तुति करते हुये कहा है कि-

> **''भवानी स्तोतुं त्वां प्रभवति चतुर्भिर्न वदनैः,**
> **प्रजानामीशानस्त्रिपुरमथनः पञ्चभिरपि।**
> **न षड्भिः सेनानीर्दशशतमुखैरप्यहिपतिस्तदान्ये षां**
> **केषां कथय कथमस्मिन्नवसरः।।''**

(कल्याण शक्ति अंक)

'हे भवानी, औरों की तो बात ही क्या, अखिल सृष्टि के रचयिता प्रजापति ब्रह्माजी अपने चारों मुखों से भी तुम्हारी स्तुति नहीं कर सकते, त्रिपुरहर शंकर पाँच मुख रहते हुए भी इस विषय में मूक होकर रह जाते हैं, छह मुख वाले कार्तिकेय भी मन मारकर बैठ जाते हैं। इन सबकी कौन कहे, हजार मुख वाले शेषजी भी मन मसोस कर रह जाते हैं, परन्तु तुम्हारी स्तुति नहीं कर पाते। कोई करे भी तो कैसे? तुम्हारे गुणों का थाह पावे तब न। फिर मेरे-जैसे जीवों की सामर्थ्य ही क्या जो इस काम में हाथ डालने का दु:साहस करें।'

शंकर स्तुति में आगे निवेदन करते हैं कि-

> **''त्वदन्यस्मादिच्छाविषयफललाभे न**
> **नियमस्त्वमज्ञानामिच्छाधिकमपि समर्था वितरणे।**
> **इति प्राहुः प्राञ्चः कमलभवनाद्यास्त्वयि मनस्त्वदासक्तं**
> **नक्तन्दिवमुचितमीशानि कुरु तत्।।''**

'तुम्हारे अतिरिक्त जो दूसरे देवता हैं, उनके द्वारा उनके उपासकों को इच्छित फल की प्राप्ति हो ही, ऐसा नियम नहीं है क्योंकि प्रथम तो वे सर्व समर्थ नहीं हैं। वे अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार ही अपने उपासकों की इच्छा को पूर्ण कर सकते हैं। अपनी सामर्थ्य से अधिक वे नहीं दे सकते। फिर जो कुछ भी वे देते हैं उसके लिये मूल्य भी पूरा-पूरा वसूल करते हैं। मूल्य पूरा अदा न करने से अथवा साधना में किसी प्रकार की त्रुटि रह जाने पर अथवा विधि में वैगुण्य होने से वे इच्छित फल, सामर्थ्य होने पर भी नहीं देते। तुम्हारी बात कुछ दूसरी ही है। तुम तो अपने भक्तों को उनकी इच्छा से अधिक भी दे सकती हो।'

शाक्त सम्प्रदायी योग मार्ग द्वारा परब्रह्म को प्राप्त करने की सतत चेष्टा करते हैं। मुअन जो दड़ो और हड़प्पा सभ्यता में अनेक देवी प्रतिमायें एवं मुद्रायें प्राप्त हुई हैं।

वेद काल में शक्ति पूजा प्रचलित होने का उल्लेख ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद में मिलता है। उपनिषदों में परा शक्ति का वर्णन मिलता है।

मौर्यकाल, शक साम्राज्य एवं गुप्तकाल में शक्ति पूजा का वर्णन मिलता है।

'धर्मों के विश्वकोश' में शाक्त-शक्ति उपासना का वर्णन प्रभावी रूप से निम्नलिखित प्रकार मिलता है-

Saktism:- The term 'saktism' stands along with vaisnavism or saivism as a way of designating a third aspect of Hindu religion that is indisputably ancient and influential way of worship of goddesses, especially when they are understood as expressions or aspects of a single goddess (Devi) or great goddess (Mahadevi). This Goddess personifies a power, or energy (sakti), presents throughout the universe challenges any notion of the faminine as passive or quienscent. She can be related to a widely dispersed tradition that associates forceful female deities, many in-habiting particular locals, with the offering of animal sacrifices. Such deities are summarized in the legendry of the 'Sakta Pithas' (seats of powers) that are said to have been established when various parts of the dismembered goddess Sati consort of Shiva, fell there. The texts often consider that there are 108 of these pithas, extending throughout India and commemorated by a network of temples."

भारतीय संस्कृति एवं पुरातत्व के प्रकाण्ड पंडित **मार्शल** ने शक्ति के बारे में कहा है कि- "For in no other country in the world, has the worship of the divine of the mother has been so deep rooted and uniquritious as in India, since her shrines are found in every town and hamlet throughout the entire length and breadth of the country."

चीनी यात्री **फाहयान** (Fa-hian) ने भारत यात्रा 399 ईस्वी में की थी। वह अनेक वर्षो तक बौद्ध विहारों में रहा। उसने शिव और पार्वती की पूजा का उल्लेख किया है।

एक अन्य चीनी यात्री **ह्वेनसांग** भारत में सातवीं शती में (629 से 664) आया और नालन्दा विश्व विद्यालय में अध्ययन किया एवं एक शक्ति पीठ का वर्णन करते हुये लिखा है "यह देवी की प्राकृतिक प्रतिमा है और समस्त भारत से अनेक यात्री यहाँ पर आकर एक सप्ताह तक व्रत रखकर पूजा करते हैं।"

अरबी विद्वान **अलबरुनी** ने ग्यारहवीं शताब्दी में भारत यात्रा की थी और उसने काश्मीर में बोलोर की पर्वत श्रृंखलाओं में शारदा देवी की काष्ठ की बनी एक

भव्य प्रतिमा का उल्लेख करते हुये लिखा है कि इस देवी की बहुत मान्यता है और अनेक यात्री यहाँ पूजा के लिये आते हैं।

फारसी साहित्य '**तारीखे यामिनी**' में अलउत्वी लिखता है कि भारत के समस्त राजा कांगड़ा देवी की आराधना के लिए आते थे।

जैनुददी बरूनी (1265ई.) ने अपनी कृति '**तारीखे फीरोजे शाही**' में लिखा है कि फीरोज शाह सुल्तान ज्वालामुखी मन्दिर देखने गया था। इसके अनुसार मन्दिर में स्थित पुजारियों का कहना था कि सुलतान विशेष रूप से ज्वालामुखी मन्दिर में आया और उसने स्वर्ण छत्र देवी को भेंट किया।

एक अन्य मुस्लिम इतिहासकार **फरिस्ता** ने अपनी कृति में राजा राम देव के कांगड़ा मन्दिर में जाने का वर्णन किया है।

सोलहवीं शती के एक अन्य ग्रन्थ '**नजमुल उलूम**' में अष्टभुजी दुर्गा महिषासुरमर्दिनी का वर्णन मिलता है।

प्रसिद्ध अमेरिकी दार्शनिक विल डूरंट का मानना है कि शैव मत विश्व का प्राचीनतम मत है। उन्होंने अपनी पुस्तक 'Story of Civilization part I' में उल्लेख किया है कि-

"The worship of Shiva is one of the oldest, most profound and most terrible elements in Hinduism. Sir John Marshall reports "unmistakable evidence of the cult of Shiva at Mohenjo-daro, partly in the form of a three-headed Shiva, partly in the form of little stone columns which he presumes to be as phallic as their modern counterparts. Shivaism is **therefore the most ancient living faith in the world ...**"

"In some parts of India, particularly Bengal, this creative or reproductive energy (Shakti) of Shiva or nature is personified in the figure of Shiva's wife, Kali (Parvati, Uma, Durga), and is worshipped in one of the many Shakti cults."

उपरोक्त सभी उल्लेखों से भारत में प्राचीन काल से शक्ति की उपासना पद्धति के अनुसरण और उसकी विश्व में मान्यता प्रमाणित होती है।

श्रीलंका में हिंगुला शहर

श्रीलंका में सबरगमुवा के निकट **हिंगुला** नामक नगर है, जिसमें 'मूर' एवं मुस्लिम बाहुल्य जनसंख्या है, वहां के निवासी कृषि का कार्य करते हैं।

2. शक्तिपीठ

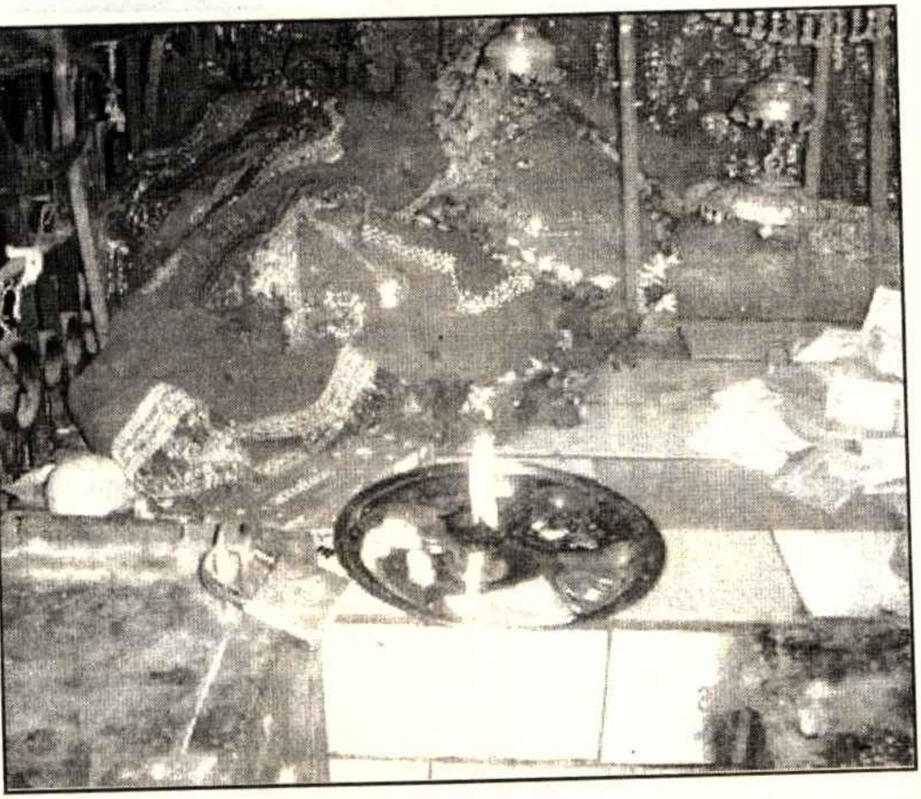

ब्रह्मा जी की प्रेरणा से प्रजापति दक्ष ने दिव्य सहस्र वर्षों तक तपस्या कर के आद्या शक्ति शिवा को प्रसन्न किया और उनसे अपने यहाँ पुत्री रूप में जन्म लेने का वरदान माँगा। दक्ष पत्नी प्रसूति के गर्भ से सती ने जन्म लिया। सती के बड़ी होने पर राजा दक्ष ने स्वयंवर का आयोजन किया। दक्ष मोहवश शिव के परम तत्त्व को नहीं जान कर उन्हें श्मशानवासी भिक्षुक मानते हुए निरादर का भाव रखते थे और उन्हें अपना जामाता नहीं बनाना चाहते थे। स्वयंवर में श्रेष्ठ देवगण विराजमान थे। राजा दक्ष ने सती से कहा- इनमें जो भी आपको अच्छा प्रतीत होता हो, उसका वरण कर

लें। सती ने शिव विहीन स्वयंवर सभा देखकर 'शिवाय नमः' कह कर वरमाला भूमि को समर्पित कर दी। ऐसा करते ही दिव्य रूपधारी त्रिनेत्र वृषभध्वज भगवान सदाशिव प्रकट हो गये और वरमाला उनके गले में सुशोभित होने लगी। यह देख कर ब्रह्माजी ने प्रजापति दक्ष से कहा कि आप की पुत्री ने देवाधिदेव भगवान शंकर का वरण किया है। दक्ष ने सती का शिव से विवाह कर दिया। सती के चले जाने के बाद दक्ष का दिव्य ज्ञान लुप्त हो गया।

आदि जगतगुरु शंकराचार्य के अनुसार- सती का विवाह भगवान शिव के साथ होते समय जब पवित्र अग्नि की परिक्रमा हो रही थी उस समय राजा दक्ष के सम्मान में विवाह मंडप में उपस्थित सभी देवता खड़े हो गये, परन्तु भगवान शिव खड़े नहीं हुये। राजा दक्ष ने भगवान शिव के व्यवहार से अपने आप को अपमानित अनुभव किया।

सती का योगाग्नि में प्रवेश
साभार : कल्याण देवीपुराण (महाभागवत)-शक्तिपीठाङ्क

राजा दक्ष ने बृहस्पति महायज्ञ का आयोजन किया और उसमें भगवान शिव एवं सती को छोड़कर सभी देवताओं को आमंत्रित किया। दक्ष पुत्री सती ने भगवान शिव से प्रार्थना कर अपने पिता द्वारा आयोजित यज्ञ में जाने की अनुमति माँगी। अत्यधिक आग्रह करने पर भगवान शिव ने अनुमति दे दी। सती यज्ञ में उपस्थित हुइ, परन्तु राजा दक्ष ने भगवान शिव और सती के लिये अपमानजनक शब्दों का प्रयोग किया। दक्ष पुत्री ने अपने आपको अत्यधिक अपमान से पीड़ित अनुभव कर योगाग्नि में आत्मदाह कर लिया।

भगवान शिव जानकारी मिलने पर अत्यधिक क्रोधित हुये और यज्ञ स्थल पर पहुँचे। कुपित भगवान शिव ने राजा दक्ष का सिर काटकर वध कर दिया एवं संपूर्ण यज्ञ को ध्वस्त कर दिया। भगवान शिव ने अत्यधिक क्रोधित होकर सती के शव को उठाकर तांडव नृत्य प्रारम्भ कर दिया, जिससे धरती कंपायमान हो उठी।

भगवान विष्णु ने अपने चक्र से सती के शव को टुकड़ों में विभाजित कर दिया। शव के अंश जहाँ-जहाँ गिरे वे स्थान पवित्र शक्तिपीठ के रूप में स्थापित एवं पूजित हो गये।

ब्रह्म पुराण के अनुसार राजा दक्ष ने अपनी अन्य कन्याओं की अपेक्षा सती का कम आदर किया, तब क्रोध से आकुल सती ने अपने पिता से कहा-

यवीयसीम्यः श्रेष्ठाऽहं किं न पूजसि मां प्रभो।
असत्कृतामवस्थां यः कृतवानसि गर्हिताम्।।
अहं ज्येष्ठा वरिष्ठा च मां त्वं सत्कर्तुमर्हसि।

(प्रभो मैं छोटी बहनों से बड़ी हूँ। फिर आप मुझे सम्मान क्यों नहीं देते। मेरा निरादर करके मेरी अवस्था को क्यों बुरी बना रहे हैं। मैं श्रेष्ठ एवं ज्येष्ठ हूँ। मेरा भी सत्कार कीजिए।)

सती की यह बात सुनकर दक्ष क्रोधित हो गये और भगवान शिव के लिये अत्यधिक अपमानजनक शब्द कहे। सती अपने पति शिव का अपमान सहन न कर सकी और क्रोधित हो कर अपने देह को त्याग दिया। सती के शरीर त्यागने पर भगवान शंकर क्रुद्ध हो उठे तथा अनेक गणों ने दक्ष का यज्ञ विध्वंस कर दिया। शिव सती का शरीर अपने कंधे पर रखकर सर्वत्र भ्रमण करने लगे। देवताओं के परामर्श से शनि ने सती के शरीर में प्रवेश कर उसके शरीर को छिन्न-भिन्न कर दिया। सती के शरीर के वस्त्राभूषण तथा अंग-प्रत्यंग जहाँ-जहाँ भी गिरे, वहीं पर शक्तिपीठों की स्थापना हो गई।

जगद्गुरु शंकराचार्य पुरी पीठाधीश्वर **श्री निश्चलानन्द जी सरस्वती** के मतानुसार ''शक्ति शक्य (शक्ति संस्थान) और शक्त (शक्तिमान्) को 'शक्तिपीठ' कहते हैं। भगवती सती के शव रूप दिव्य अंग, केश और उनकी छाया के योग से भूमि विशेष को शक्तिपीठ कहा गया और उनके वक्षःस्थल से निर्गत जलधारा, वस्त्राभूषण, लोमादि के निपात स्थल को उप-पीठ कहा गया।''

देवी भागवत के अनुसार-

''अपश्यतां सतीं वह्नौ दह्यमानां तु चित्कलाम्।
स्कंधेऽप्यारोपयामास हा सतीति वदन्मुहुः।।
बभ्राम भ्रांतचित्तः सन्नानादेशेषु शंकरः।
तदा ब्रह्मादयो देवाश्चिंतामापुरनुत्तमाम्।।

विष्णुस्तु त्वरया तत्र धनुरुद्यम्य मार्गणैः।
चिच्छेदावयवान्सत्या स्तत्तत्स्थानेषु तेऽपतन्।।
तत्तत्स्थानेषु तत्रासीन्नानामूर्तिधरो हरः।
उवाच च ततो देवान्स्थानेष्वेतेषु ये शिवाम्।।
भजन्ति परया भक्त्या तेषां किंचिन्न दुर्लभम्।
नित्यं सन्निहिता यत्र निजांगेषु परांबिके।।
स्थानष्वेतेषु ये मर्त्याः पुरश्चरण कर्मिणः।
तेषां मंत्राः प्रसिध्यंति मायाबीजं विशेषतः।।
इत्युक्त्वा शंकरस्तेषु स्थानेषु विरहातुरः।
कालं निन्ये नृपश्रेष्ठ जपध्यानसमाधिभिः।।

शब्दार्थ : ''भगवान शंकर ने उस चैतन्यरूपिणी सती को हुताशन में दग्ध होते देख अपने कंधे पर उठा लिया और नाना देशों में भ्रमण करने लगे। यह देख कर ब्रह्मादि देवगण चिन्तित हो पड़े। भगवान् विष्णु ने सती के सभी अवयवों को शर से काट डाला। वे सब अवयव नाना स्थानों में जा गिरे। भगवान् शंकर उन सब स्थानों में नाना प्रकार की मूर्ति धारण कर रहने लगे और देवताओं से बोले, 'यदि कोई इन सभी स्थानों में भक्तिपूर्वक भगवती शिवा की आराधना करे, तो उसके लिये कुछ भी दुर्लभ नहीं है। यहां भगवती अम्बिका अपने में सर्वदा सन्निहित रहती हैं। मानवगण यदि इस स्थान में रह कर पुरश्चरण विशेषतः माया बीज का जप करें, तो उनके वे सब मन्त्र सिद्ध हो जाते हैं। विरहातुर शंकर इतना कह कर जप, ध्यान और समाधि द्वारा उन सभी स्थानों में रह कालयापन करने लगे।''

तंत्र चूड़ामणि में इक्यावन शक्ति पीठों का उल्लेख निम्नलिखित प्रकार है-

	स्थान	अंग तथा अंगभूषण	शक्ति	भैरव
१.	**हिङ्गुला**	**ब्रह्मरन्ध्र**	**कोट्टवीशा**	**भीमलोचन**
२.	शर्करार	तीन चक्षु	महिषमर्दिनी	क्रोधीश
३.	सुगन्धा	नासिका	सुनन्दा	त्र्यम्बक
४.	काश्मीर	कण्ठदेश	महामाया	त्रिसन्ध्येश्वर
५.	ज्वालामुखी	महाजिह्वा	सिद्धिदा	उन्मत्त भैरव
६.	जलन्धर	स्तन	त्रिपुरमालिनी	भीषण
७.	वैद्यनाथ	हृदय	जयदुर्गा	वैद्यनाथ
८.	नेपाल	जानु	महामाया	कपाली
९.	मानस	दक्षिणहस्त	दक्षायणी	अमर

१०. उत्कल में विरजाक्षेत्र	नाभिदेश	विमला	जगन्नाथ
११. गण्डकी	गणस्थल	गण्डकी	चक्रपाणि
१२. बहुला	वाम बाहु	बहुलादेवी	भीरूक
१३. उज्जयनी	कूर्पर	मंगलचण्डिका	कपिलाम्बर
१४. त्रिपुरा	दक्षिणपद	त्रिपुरसुन्दरी	त्रिपुरेश
१५. चट्टल	दक्षिणबाहु	भवानी	चन्द्रशेखर
१६. त्रिस्त्रोता	वामपाद	भ्रामरी	भैरवेश्वर
१७. कामगिरि	योनिदेश	कामख्या	उमानन्द
१८. प्रयाग	हस्ताङ्गुलि	ललिता	भव
१९. जयन्ती	वाम जङ्घा	जयन्ती	क्रमदीश्वर
२०. युगाद्या	दक्षिणाङ्गुष्ठ	भूतधात्री	क्षीरखण्डक
२१. कालीपीठ	दक्षिणपादाङ्गुलि	कालिका	नकुलीश
२२. किरीट	किरीट	विमला	संवर्त्त
२३. वाराणसी	कर्णकुण्डल	विशालाक्षी मणिकर्मी	कालभैरव
२४. कन्याश्रम	पृष्ठ	सर्वाणी	निमिष
२५. कुरुक्षेत्र	गुल्फ	सावित्री	स्थाणु
२६. मणिबन्ध	दो मणिबन्ध	गायत्री	सर्वानन्द
२७. श्रीशैल	ग्रीवा	महालक्ष्मी	शम्बरानन्द
२८. काञ्ची	अस्थि	देवगर्भा	रुरु
२९. कालमाधव	नितम्ब	काली	असिताङ्ग
३०. शोणदेश	नितम्बक	नर्मदा	भद्रसेन
३१. रामगिरि	अन्य स्तन	शिवानी	चण्डभैरव
३२. वृन्दावन	केशपाश	उमा	भूतेश
३३. शुचि	ऊर्ध्वदन्त	नारायणी	संहार
३४. पञ्चसागर	अधोदन्त	वाराही	महारुद्र
३५. करतोयातट	तल्प	अपर्णा	वामनभैरव
३६. श्रीपर्वत	दक्षिण गुल्फ	श्रीसुन्दरी	सुन्दरानन्दभैरव
३७. विभाष	वाम गुल्फ	कपालिनी	सर्वानन्द
३८. प्रभास	उदर	चन्द्रभागा	वक्रतुण्ड
३९. भैरवपर्वत	ऊर्ध्व ओष्ठ	अवन्ति	लम्बकर्ण
४०. जनस्थल	दोनों चिबुक	भ्रामरी	विकृताक्ष

४१. सर्वशैल	वाम गण्ड	राकिनी	वत्सनाभ
४२. गोदावरी तीर	गण्ड	विश्वेशी	दण्डपाणि
४३. रत्नावली	दक्षिण स्कन्ध	कुमारी	शिव
४४. मिथिला	वाम स्कन्ध	उमा	महोदर
४५. नलहाटी	नला	कालिकादेवी	योगेश
४६. कर्णाट	कर्ण	जयदुर्गा	अभीरू
४७. वक्रेश्वर	मनः	महिषमर्दिनी	वक्रनाथ
४८. यशोर	बायीं हथेली	यशोरेश्वरी	चन्द्र
४९. अट्टहास	ओष्ठ	फुल्लरा	विश्वेश
५०. नन्दिपुर	कण्ठहार	नन्दिनी	नन्दिकेश्वर
५१. लंका	नूपुर	इन्द्राक्षी	राक्षसेश्वर
(क) विराट	पादाङ्गुलि	अम्बिका	अमृत
(ख) मगध	दक्षिणजङ्घा	सर्वानन्दकरी	व्योमकेश

कुछ पुस्तकों में क व ख में वर्णित पीठों का उल्लेख नहीं है। देवी पुराण में शक्ति महापीठ की स्थापना को लेकर निम्नांकित श्लोक महत्त्वपूर्ण है-

स देहो बहुधा भूत्वा पतिष्यति धरातले।
तत्र तद्धि महापीठं भविष्यत्यघनाशनम्।।
''विष्णुचक्रेण संछिन्नास्त देहावयवा: पृथक्।।
पीठानि चैकपञ्चाशद् भवन्मुनिपुङ्गग।।
अंगप्रत्यंगपातिनछाया सत्यां महीतले।।''

कालिदास के कुमारसम्भव में सती का यज्ञ में पिता से अपमानित होकर योग बल से शरीर छोड़ने का उल्लेख किया है-

''अथावमानेन पितुः प्रयुक्ता दक्षस्य कन्या भवपूर्वपत्नी।
सती सती योग विसृष्ट देहा तां जन्मने शैलवधूं प्रवेदे।।''

(उस मैनाक के जन्म के कुछ ही दिनों के बाद महादेव जी की पहली पत्नी और दक्ष की परम साध्वी कन्या सती ने अपने पिता से अपमानित होकर योग बल से अपना शरीर छोड़ दिया और दूसरा जन्म लेने के लिये वे मैना के गर्भ में आ पैठीं।)

उपरोक्त प्रकार भारतीय उपमहाद्वीप में शक्तिपीठों की स्थापना हुई।

भारतीय परम्परा में हिंगलाज

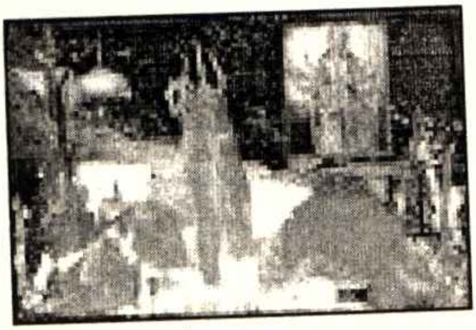
हिंगलाज माता बलूचिस्तान

शक्ति पीठ हिंगलाज बलूचिस्तान की लासबेला क्षेत्र की सम्माकतर तहसील में मकरान पर्वत माला के बीच हिंगोल नदी के किनारे स्थित है। पाकिस्तान के 6200 वर्ग किलोमीटर के सबसे बड़े हिंगोल राष्ट्रीय पार्क में 25.30° उत्तर अक्षांश तथा 65.30° देशान्तर पूर्व में विद्यमान **हिंगलाज** माता का मन्दिर प्राचीनतम शक्तिपीठ है। हिंगलाज को "**मरुतीर्थ हिंगलाज**" के नाम से भी जाना जाता है।

सती का सिर जिसके ललाट पर सिन्दूर के निशान थे, जहाँ गिरा वह पवित्र स्थान **हिंगलाज** शक्तिपीठ के रूप में प्रतिष्ठित हुआ। सिन्दूर को हिंगलू कहा जाता है और इसी हिंगलू से **हिंगलाज** और हिंगोल शब्द प्रचलन में आया।

तंत्र चूड़ामणि में हिंगलाज का उल्लेख इस प्रकार है-

"पंच्चाशदेक पीठानि एवं भैरव देवताः।
अंगप्रत्यंगपातेन विष्णुचक्रक्षतेन च।।
ब्रह्मरन्ध्रं हिङ्गुलायां भैरवो भीमलोचनः।
कोट्टरी सा महामाया त्रिगुणा या दिगम्बरी।।१।।"

कुब्जिकातन्त्र में सिद्ध पीठों में हिङ्गुला का वर्णन निम्नलिखित प्रकार किया गया है-

"मायावती मधुपुरी काशी गौरक्षकारिणी।
हिङ्गुला च महापीठं तथा जालन्धरं पुनः।।२।।"

अन्नदामंगल ग्रंथ में हिंगलाज का उल्लेख इस प्रकार है-

''ममादावपुषो देव हिताय त्वयि कथ्यते।
ब्रह्मरन्ध्रं हिङ्गुलायां भैरवो भीमलोचनः।।३।।''

शिव चरित्र नामक ग्रन्थ में ७७ पीठों का वर्णन है जिनमें से ५१ महापीठ और शेष २६ उपपीठ हैं। **हिंङ्गुला** को महापीठ में पहले स्थान पर उल्लेखित किया गया है।

देवी भागवत महापुराण के अनुसार नगराज हिमालय ने देवी से पूछा-

हिमालय उवाच।।

कति स्थानानि देवेशि द्रष्टव्यानि महीतले।। मुख्यानि च पवित्राणि देवीप्रियतमानि च।। १।। व्रतान्यपि तथा यानि तुष्टिदान्युत्सवा अपि।। तत्सर्वं वद मे मातः कृतकृत्यो यतो नरः।। २।।

(हिमालय बोले- हे देवी! इस पृथ्वी में तुम्हारे मुख्य और प्रिय कितने स्थान हैं? तुम मुझसे कहो।। १।। हे मातः! जिन सारे व्रतों और उत्सवों का अनुष्ठान करने से मनुष्य कृतकृत्य होते हैं, अपने प्रीतिदायक उन सभी व्रतों और उत्सव का वर्णन कीजिये।। २।।)

श्रीदेव्युवाच।। सर्वं दृश्यं मम स्थानं सर्वे काला व्रतात्मकाः उत्सवाः
सर्वकालेषु यतोऽहं सर्वरूपिणी।। ३।।
तथाऽपि भक्तवात्सल्यात्किंचिदथोच्यते।।
शृणु ष्वावहितो भूत्वा नगराज वचो मम।। ४।।
तुलजापुरं तृतीय स्त्यात्सप्तशृंगं तथैव च।।
हिंगुलाया महास्थानं ज्वालामुख्यास्तथैव च।।५।।

(सप्तम स्कन्ध 38 अध्याय 6 श्लोक)

(देवी बोली- हे पर्वतराज! मैं सर्वाधिष्ठान स्वरूपिणी हूँ, इस कारण भूमण्डल में जितने स्थान विद्यमान हैं, वह सब ही मेरी अधिष्ठान भूमि हैं और मैं सब कालमयी हूँ, इस कारण सब काल ही मेरा व्रत और उत्सवात्मक है, इस कारण जिस समय जिसका अनुष्ठान करें, उसको ही मेरा प्रीतिप्रद जानें।। ३।। पर तथापि भक्तवत्सलता से कुछ तुमसे कहती हूँ हे नगराज! वह सावधान होकर मुझसे सुनो..........तुलजापुर और सप्तशृंग स्थान में **हिंगुला महास्थान** और ज्वालामुखी निवास करती हैं।)

श्री ब्रह्मवैवर्तपुराणम् में कहा गया है कि आश्विन शुक्ल अष्टमी को **हिंगलाज** के दर्शन, पूजन व उपवास करने से पुनर्जन्म के कष्ट का निवारण हो जाता है।

हिंगुलायां तथाऽष्टम्यामिषे मासि सिते शुभे।।
श्री दुर्गाप्रतिमां दृष्ट्वा करोति जन्मखण्डनम्।। २१।।

आद्य शक्तिपीठ हिंगलाज के सर्व सिद्ध तीर्थ के बारे में निम्नलिखित श्लोक उल्लेखनीय है :-

ज्वालामुखी हिंगुला व महातीर्थ गणेश्वरम्।
मानाहि सर्वसिद्धानां हेतु स्थानानि सुन्दरी।।

हिंगुला, हिंगुल धारिणी, हिंगुल नदी और हिंगोल पर्वत माला विशेषणों का उपयोग शास्त्रों में भी इस प्रकार हुआ है-

सर्वेश्वरी सिद्ध विद्या, परा परम देवता।
हिंगुला, हिंगुलानी च हिंगुला, धार वासिनी।।
हिंगुलोत्तम वर्णाभा, हिंगुलाभरणा च सा।
जागर्ति च जगत्माता, जगदीश्वर वल्लभा।।

बगलामुखी सहस्त्र नाम में **हिंगलाज** का उल्लेख निम्नलिखित प्रकार मिलता है-

''तुम्हीं हिंगुलाज महारानी। तूं ही शीतला अरू विधानी।।
दुर्गा दुर्ग विनाशिनी माता। तूं ही लक्ष्मी जग सुख दाता।।''

श्री वामन महापुराणम् अध्याय 66 में हिंगलाज का उल्लेख निम्नांकित प्रकार हुआ है-

अन्यश्च।''कन्या चोत्स्त्रेसंजाता सासृग्विलिलिहे-ऽङ्गुता।
ततस्तामाह बालार्कप्रभां भैरवमूर्त्तिमान्।।
शङ्करो वरदो लोकक्षेयार्थाय वचो महत्।
त्वां पूजयिष्यन्ति सुरा ऋषयः पितरस्तथा।।
यक्षविद्याधराश्चैव मानवाश्च शुभङ्करि।
त्वां स्तोष्यन्ति सदा देवि बलिपुष्यात् करैः करैः।।
चतेर्वुकेति चर्च्चिकेति शुभं नाम यस्माद्रुधिरचर्च्चिता।।
इत्येवमुक्ता वरदने चर्च्चिका
भूतानुयाता हरिचर्म्मवासिनी।
महीं समन्ताद्विचचार सुन्दरी
स्थलं गता हैङ्गुलमाद्यमुत्तमम्।''

इति वामनपुराणे ६६ अध्याय : ।।

श्री स्कंदपुराणान्तर्गत श्री हिंगुला पुराण में हिंगुला देवी का वर्णन मिलता है-

सूत उवाच-'''नमामि हिंगुलां देवीं सर्वाभीष्ट प्रदायिनीम्।
स्वभक्तपक्षपातेन सर्वदानवनाशिनीम्।।''

सूत पुराणिक ने हिंगुला की उत्पति का वर्णन करते हुये कहा कि हिंगुलासुर नाम के दैत्य को मारने के कारण देवी का नाम हिंगुला देवी हो गया। हिंगुला पुराण के अनुसार गिरिजा नदी एक पवित्र नदी है, और वहाँ इस नदी का संगम हिंगुल पर्वत के समीप होता है जो पवित्र तीर्थ स्थल है और यहां महास्नान करने पर मोक्ष प्राप्त होता है। भगवान राम ने दैत्य रावण के वध के पश्चात् वशिष्ठ मुनि की आज्ञा से गिरिजा नदी के हिंगुला तट पर स्नान और पूजा की। गिरिजा और हिंगुल पर्वत का उल्लेख इस प्रकार मिलता है-

गिरिजा त्रिषु लोकेषु ब्रह्मण: कलशोद्धता।
तत्तीरनिकटे रम्ये हिंगुल: पर्वतोत्तम:।।

वामन महापुराण में वर्णित **हिंगलाज** की कथानुसार भगवान शिव ने अंधकासुर राक्षस का वध कर चर्चिका व मंगला नामक देवियों को उत्पन्न किया। इन देवियों ने अंधकासुर के अंश से उत्पन्न सभी असुरों का संहार कर भगवान शिव को प्रसन्न किया। भगवान शिव ने वरदान दिया कि चर्चिका आदि शक्ति के रूप में पूजित होगी। यही चर्चिका 'हैंगुलत्ताद्री' में वास करने लगी और 'हिंगुला' के नाम से लोक प्रसिद्ध हुई।

देवीनाम विलास में हिंगलाज का उल्लेख निम्नलिखित प्रकार मिलता है-

हिङ्गुला

निस्पणा षण्णामप्युपरि कटकानामघवता-
मगम्या या काम्या शुभविभवसारैक्यविदुषाम्।
शुभाङ्गो नि:सङ्गो कृतनिजपदा कापि किल **हिङ्गुला** बाला
कालान्तकहिततमा मामवतु सा।।

श्री दुर्गा चालीसा में हिंगलाज माता को स्मरण करते हुये कहा गया है-

''हिंगलाज में तुम्हीं भवानी। महिमा अमित न जात बखानी।।''

प्रसिद्ध अंग्रेज लेखक **विलियम कूक** ने हिंगलाज माता को पश्चिमी भारत की अनेक जनजातियों एवं मिर्जापुर क्षेत्र में लोक आस्था से पूजी जाने वाली देवी बताते हुये लिखा है- "Hinglaj is the best known place of pilgrimage in Baluchistan. The Devi is the family goddess of many tribes in western India. Even in Mirzapur, in the United Provinces, she is worshipped by Kharwars. She is known and revered throughout India.[15]"

प्रोफेसर चमन लाल रैणा के अनुसार, ''रूद्रयामल तंत्र के अन्तर्गत श्री भवानी सहस्त्रनाम के १००० दिव्य नामों में ''हिङ्गुला' देवी का आह्वान किया जाता है।

कश्मीर की शाक्त संस्कृति में **हिङ्गुला देवी** का स्थान मुख्य प्रवेश द्वार के मध्य में विराजमान रहता है। अतः कश्मीर की मातृ स्वरूप महिलाएं ब्राह्मी मुहूर्त्त में उस देवी का स्वागत करती हैं। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन विधिवत् दुर्गा-कुशा ग्रास का विषृर स्थापित करते हैं। ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष की अष्टमी में शारदा लिपि के आकार पद क्षीरीवानी जलमय कुण्ड के भीतर माता हिङ्गलाज की अर्चना कर पुष्प, व्यन-पुष्प, क्षीर, मिष्टान्न आदि भेंट प्रदान करते हैं।''

श्री नाथ रहस्य (प्रथम खण्ड) में हिंगलाज माता को नमस्कार करते हुये उल्लेख किया गया है-''पश्चिम दिशा में ऊँ शक्तिपीठ सिन्धु क्षेत्र **हिंगलाज** माता को नमो आदेश।''

गोपाल जी गुप्त ने अपनी पुस्तक '**महाशक्तियाँ और उनके 51 शक्तिपीठ**' में कहा है कि- ''ऐसी मान्यता है कि वहाँ असम की कामाख्या, तमिलनाडु की कन्याकुमारी, काँची की कामाक्षी, गुजरात की अम्बाजी, प्रयाग की ललिता, विन्ध्याचल की विन्ध्यवासिनी, काँगड़ा की ज्वालामुखी, वाराणसी की विशालाक्षी, गया की मंगलादेवी, बंगाल की सुंदरी, नेपाल की गुह्येश्वरी और मालवा की कालिका इन द्वादश रूपों में आद्याशक्ति **हिंगलाज** ही देवी के रूप में सुशोभित हो रही हैं।''

पं. विश्वेश्वरनाथ रैऊ ने अपनी पुस्तक (GLORIOUS OF MARWAR & GLORIOUS OF RATHORE) में उल्लेख किया है कि जोधपुर के महाराजा अभय सिंह हिंगलाज माता के परम भक्त थे। उन्होंने अपने राज्य की मुहर में हिंगलाज देवी का नामोल्लेख इस प्रकार किया था-

''महामाया श्री हिंगुलाज प्रसादात् छत्र पति श्री राजराजेश्वर
महाराजाधिराज महाराजा श्री अभैः सिंह देवः विजयते
भानुतेज स्वरूपेण मही मध्येषु राजते हरि अंबा
शिवसुर विनायक ये सुर पंच सदा फलदायक
महाराज की सही हुकम छै।।''

'**आग्नेय तीर्थ हिङ्गलाज**' नामक पुस्तक में देव दत्त शास्त्री ने हिंगलाज शक्ति पीठ का वर्णन करते हुये लिखा है- ''कराची बन्दरगाह से उत्तर-पश्चिम में ४५ मील दूर **हिंङ्गलाज** देवी का स्थान है। बलोचिस्तान का अथर रेगिस्तान-आग का दरिया है, जहाँ पर हिङ्गलाज शक्तिपीठ स्थित है। हिङ्गलाज के पूर्व में कोहिस्तान, उत्तर में 'कलात' की पहाड़ियाँ, दक्षिण में अरब सागर इनके बीच विस्तृत, वितत अग्निका समुद्र-सा रेगिस्तान दण्डवत् प्रणामी मुद्रा में लेटा हुआ है, जिसके चरण दक्षिण-पूर्व

में 'हाव' नदी को छूते हैं। फैली हुई दोनों भुजाएं दक्षिण की ओर सागर का और उत्तर की ओर कोहेकाफ पर्वतमाला का स्पर्श करती हैं और पश्चिमाभिमुख अवनत शिर 'देवी हिंगलाज' के चरणों को पखारती हुई अघोर नदी से अभिसिक्त है।''

वाराणसी के महाराज किन्नाराम जी अघोरी ने अपनी मृत्यु से पूर्व अनेक शिष्यों एवं श्रद्धालुओं को आमंत्रित किया और उन्हें आदेश दिया कि उनकी मृत्यु के बाद उनके शव को हिंगलाज यंत्र के निकट समाधि में रखा जाये। उन्होंने कहा कि हिंगलाज यंत्र लोक-परलोक सभी इच्छाओं की पूर्ति करता है। श्रद्धालुओं ने किन्नाराम जी अघोरी के शव को हिंगलाज यंत्र के साथ समाधिस्थ किया।

शाक्त सम्प्रदाय में देवी के चार सिद्ध पीठ हैं- ''पूर्व में कामाख्या, उत्तर में ज्वालामुखी, पश्चिम में हिंगलाज और दक्षिण में मीनाक्षी।''

भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी रहे श्री कैलाश दान एस. उज्ज्वल ने हिंगलाज माता के बारे में वर्णन करते हुये लिखा है-

"Not many know that Hinglaj, with its novel worshipping procedures and its muslim priestess is one of the four premier Shakti Peeths of our religious lore. Since Bhagwati Awadji, the tutelary deity of the Bhatis of Jaisalmer and incarnation previous to Bhagwati Karaniji, is the incarnation of Goddess Hinglaj, the Adhishthatri Devi of the West, we would do well to recapitulate the Puranic version of the establishment of Shakti Peeths...

Answering prayer and Applications of Gods and humans Shakti assumed physical form as 'Mahisasurmardini' and put as end to Mahisasur and his reign of terror...

The need for continuing Her physical form ceased with the destruction of the demon. Shakti, therefore, divided its physical form into four parts, and with a view to protect the land implanted these at the four points of the compass-one part at each point; thus founding the four Shakti peeths of **Hinglaj** (West), Meenaxi (South), Kamaxi (East) and Jwalamukhi (North)."

प्रख्यात विद्वान एवं कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डेविड गार्डन वाइट ने अपनी पुस्तक **"Siddha tradition"** में दावा किया है कि चौथी शताब्दी के ग्रीक के भूगोलविद् Ctesias ने अपने लेखन कार्य में **हिंगलाज** का उल्लेख किया है। पीठ निर्णय एवं महापीठ निरूपण में भी हिंगुला शक्तिपीठ का उल्लेख है।

सुप्रसिद्ध लेखक **श्री इश्तियाक अंसारी** ने अपनी पुस्तक ''धरती माता'' में

हिंगलाज माता का उल्लेख करते हुये लिखा है कि- ''सिन्ध में 'मुअन जो दड़ो' में से प्राप्त देवी माता भी उसी सिलसिले की कड़ी है, जो पाँच हजार साल पुरानी है। 'मुअन जो दड़ो' वाली देवी का एक रूप हिंगलाज देवी भी है।

श्री अली अहमद ब्रोही का विचार है कि हिंगलाज देवी की यात्रा करने वालों को 'अगोरी' भी कहा जाता है।

एन.एम.बिलोमोरिया एवं प्रोफेसर डी.आर मन्कड़ का मानना है कि हिंगलाज शब्द संस्कृत का नहीं है, पर दो शब्दों (Hin) और (Gal) से जुड़ा हुआ है। उनके विचार से 'हिन' एक कबाइली आर्य कबीला है। जैसे (mav) कौम वालों का 'अलाइको' 'मंगल' सद्जि। उसी प्रकार 'हिगल' का अर्थ 'हिन' (Hin) की तरह काम में लाया जाता होगा। इसलिये 'हिंगल देवी' को 'हिंगलाज' माता कहा गया।

ठाकुर लाल लहिरूमल छाबड़िया ने अपनी किताब ''हिंगलाज माता'' में लिखा है- ''हिंगलाज माता जे बारे में हूंअ त मुख्तलफ गाल्हियूं लिखियल आहिनि मगर मक्सद सभिनी जो हिकु ई आहे त ही तीर्थ स्थान सभिनी 52 शक्ती पीठन मां सभ खां वधीक श्रेष्ठ आहे। इहो ई सबबु आहे जो हिन स्थान जो वदन-वदन महात्माउन, सन्तन, ऋषियुनि मुनियुनि, रूहानी दुनिया जी हस्तियुनि, सन्यासियुनि, जोग़ियुनि, कापड़ियुनि ऐं मशहूर राजाउन अची दर्शन कयो आहे।''

परसियन भाषा में हिंग शब्द का अर्थ 'गार' यानी गुफा है। हमको जानकारी है कि हिंगलाज मन्दिर गुफानुमा कटाव में है। इसलिये 'हिंग' गुफा बदलकर हिंगाल या हिंगलाज हो गया जिसका अर्थ है गुफा वाली देवी।

उपरोक्त संदर्भो एवं विद्वानों के विचारों से यही निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि शक्तिपीठ हिंगलाज प्राचीनतम आस्थायुक्त सिद्ध पीठ है और इस कारण करोड़ों श्रद्धालुओं की आराध्य स्थली है।

पेरिस की अंतरराष्ट्रीय गोष्ठी में हिंगलाज

पेरिस में 24 सितम्बर, 2010 को 'Shrine Pilgrimages & Wanderers in Muslim South Asia' विषय पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय गोष्ठी में ''The Pilgrinmage of Hinglaj Devi in Pakistan followed by the Screening of a 17mn documentary film 'Agneyatirth Hinglaj''' में विद्वानों ने विस्तृत चर्चा की।

अध्याय : तीन

हिंगलाज माता की उपासना पद्धति

हिंगलाज माता की उपासना पद्धति अत्यधिक सरल है। केवल निर्मल व समर्पण भाव से हिंगलाज माता के मातृ रूप का ध्यान करना एक भक्त के लिये पर्याप्त है। "**जब जब ध्यान धरे सेवक, तब तब किये सुकाज**"।

ईश्वरीय सत्ता के लिये जाति-पांति का कोई भेदभाव नहीं होता है। यह लोकोक्ति जग प्रसिद्ध है कि "**जात पात पूछे नहीं कोई, हरि को भजे सो हरि का होई।**"

स्वामी गणेशपुरी ने वीर विनोद में जोगमाया को संबोधन यों किया-

"गुनातीत चितसक्ति तूं जोगमाया,
अहोनी सुहोनी करें तोर दाया।"

(हे चित्त में ध्यान मात्र से अपनी माया को प्रकट करने वाली योगमाया।)

देवी की स्तुति में "चरजा" गाई जाती है। चरजायें वे गेय पद या भजन होते हैं, जिनमें देवी व भैरव की महिमा एवं अलौकिक कार्य-कलापों का गुणगान किया जाता है। देवी चरजाओं में सिगाऊ और चाडाऊ रचनाएँ मिलती हैं। भक्ति रचना (चरजा) के द्वारा माताजी से की जाने वाली प्रार्थना के उदाहरण निम्न प्रकार है-

"चन्दू, इन्दू, हिंगुलाज, संग गिरवर राणीजी।
सेणी कामहि सबही सगत्यां मात अखाड़े आणीजी।।"

भक्त शिरोमणि विदुषी श्रीमती गुलाब बाई द्वारा हिंगलाज माता से की गई प्रार्थना का अंश प्रस्तुत है-

''मात हिंगलाज तूं मेरी, दया कर भक्ति दे तेरी।।
अज्ञान अबुद्धि नाश दे री, मेट दे घोर अंधेरी।
लोभ मोह की काट बेरी, करै मत मात अब देरी।।''

दधीचि ऋषि द्वारा **हिंगलाज** की स्तुति में निम्न मंत्रोच्चारण की शिक्षा दी गई-

''ओम् हिंगुले परम हिंगुले अमृतरूपिणी
तनु शक्ति मनः शिवे श्री हिंगुलाय नमः स्वाहः।''

उपासना की विधाओं में निष्काम उपासना और सकाम उपासना का भी वर्णन आता हैं। हिंगलाज माता सुखकारणी एवं मंगलदायी हैं। वह भक्तों पर इतनी कृपा करती है कि उसका सत नहीं छूटता है। हिंगलाज माता स्वयं कुछ नहीं चढ़वाती हैं, वह तो देती ही देती हैं-

''लेवती नाही किणी रौ लोटड़ो, देवती आ तो दुनियां भर ने दान रे।।''

श्रद्धालु श्रद्धास्वरूप हिंगलाज माता की उपासना में जोत, दीपक, अगरबत्तो भी करते हैं। हिंगलाज माताजी के स्थान पर त्रिशूल अंकित लाल ध्वजा फहराई जाती है। हिंगलाज माताजी को चूड़ियाँ, बिंदियाँ, चून्दड़ी, नारियल चढ़ाये जाते हैं। अपने घर में हिंगलाज माताजी का स्थान या पूजा स्थल के लिये कोई विशेष प्रकार का निर्माण आवश्यक नहीं है, केवल सिन्दूर से त्रिशूल अंकित कर देना और उपलब्धता पर उस पर माली पन्ना लगा देना पर्याप्त है। हिंगलू देवियों के सिंदूर से आवरण (बागा) धारण कराया जाता है क्योंकि हिंगलू हिंगलाज माता का अंश माना जाता है। हिंगलाज माता की श्रद्धा में सेवक ''रातीजोगा'' या रात्रि जागरण का आयोजन भी करते हैं, जिसमें माताजी को भक्ति रचनाओं से स्मरण करते हैं। माताजी के भोग में लूची लपसी (लापसी) चढ़ाई जाती है, भक्त श्रद्धा के अनुसार माताजी के समक्ष आखा (अनाज के दाने) भी चढ़ाते हैं। कुंवारी कन्याओं को ''माताजी को सुआसनी'' अर्थात् देवी की सहोदरा माना जाता है और इसलिये श्रद्धालु नवरात्र में कुंवारी कन्याओं को भोजन कराते हैं। साधन सम्पन्न श्रद्धालु माताजी के छत्र भी चढ़ाते हैं। हिंगलाज माता की पूजा करने का महिलाओं को पुरुषों के बराबर अधिकार है। सेवक हिंगलाज माता को चाहे जहाँ भी निर्मल मन से स्मरण कर सकता है। माताजी की स्तुति में छन्द एवं अन्य भक्ति रचनाओं का पाठ किया जाता है। हिंगलाज माता की नित्य पूजा की जा सकती है। शुक्ल पक्ष की चौथ, सप्तमी, अष्टमी, नवमी एवं चतुर्दशी को अत्यधिक शुभ माना गया है। भक्त शिरोमणि ईसरदास बारहठ ने देवीयांण ग्रन्थ में इसका उल्लेख करते हुये लिखा है-

''देवी सप्तमी अष्टमी नोम नूजा।
देवी चौथ चौदस्स पूनम्म पूजा।।''

1. हिंगलाज, हिंगलाज और हिंगलाज

हिंगलाजपुरा गांव

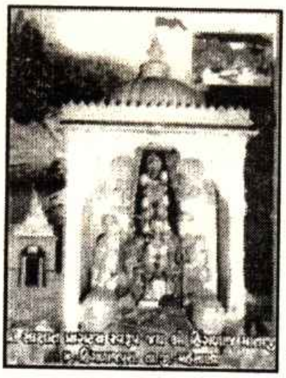

हिंगलाजपुरा गांव महेसाणा (गुजरात) से 12 किलोमीटर दूर स्थित है। लोक मान्यता के अनुसार इस गांव में हिंगलाज माता साक्षात प्रकट हुई थी और इसलिये इस गांव का नाम हिंगलाजपुरा है। हिंगलाज माता को राजपूत और अहीर समाज प्राचीन काल से पूजते आ रहे हैं। इस मंदिर की प्रतिष्ठा जन आस्था के कारण बढ़ती गई, और गांव में सम्पन्नता और सुख की वृद्धि हुई। माताजी ने अनेक भक्तों को जीवन दान दिया है। वहाँ एक प्रसिद्ध मीठे पानी का कुआं है। मीठे बैर का पेड़ है और साक्षात नाग देवता विराजमान हैं। पूर्णिमा की रात्रि को वहाँ विशाल भजन संध्या होती है। हिंगलाज माता की ग्राम देवी के रूप में पूजा-अर्चना होती है। इस मंदिर के प्रति भावसार, रजपूत, क्षत्रिय, हिंगुदर्जी, ब्राह्मण और भानुशाली समाज कुलदेवी के रूप में पूजते है। हिंगलाजपुरा से इंट ले जाकर अनेक स्थानों पर हिंगलाज माता के मंदिर की स्थापना की गई है।

हिंगलाज क्षेत्र

स्कन्द पुराण में हिंगुल क्षेत्र को ऋषि-महर्षियों द्वारा पवित्र स्थान मानने का वर्णन निम्नलिखित प्रकार मिलता है-

"तावत् हिंगुल क्षेत्रं च महार्षिगण सेवितम्।
नास्ति तादृशतीर्थं च पवित्रं पापनाशनम्"।।

हिंगुल क्षेत्र में हिंगुलाद्रिथी सिंधु देश से लेकर समुद्र तट तक कहलाता है। इसमें हिंगुल पर्वत एवं हिंगुल नदी स्थित है। वर्तमान में 6200 वर्ग किलोमीटर में हिंगोल नेशनल पार्क पाकिस्तान सरकार द्वारा अधिसूचित है।

हिंगलाज यात्रियों को विशेष अनुदान

मध्यप्रदेश सरकार ने हिंगलाज (पाकिस्तान) एवं नेपाल जाने वाले तीर्थ यात्रियों को विशेष अनुदान देने की घोषणा की है।

सती के शव को उठाकर ताण्डव नृत्य करते भगवान शिव

सती का ब्रह्मरन्ध्र जहां गिरा वहां हिंगलाज शक्तिपीठ बनी।

(फोटो सौजन्य श्री गुलाबचन्द मीरचंदानी)

अध्याय : चार

हिंगलाज के अवतार

ठट्टा की देवी

हिंगलाज

1. ठट्टा की हिंगलाज देवी

सिंध के नगर ठट्टा के चारण हरिदास गोरविया के घर हिंगलाज ने अवतार लिया और इसलिये यह मान्यता बन गई कि जो ठट्टा गांव की यात्रा करता है, उसे हिंगलाज यात्रा का पुण्य मिलता है।

डॉ. भंवर सिंह सामौर (शक्ति काव्य) के अनुसार वैदिक काल में नाथ सिद्ध, ऋषि-मुनियों की तपोभूमि रोहड़ी थी। थट्टा के गौरविया शाखा के चारण हरि दास के घर भगवती हिंगलाज का प्रथम अवतार हुआ। यहाँ ठट्टा अरोड़ प्रसिद्ध है। इसे जालंधरनाथ की सिद्ध पीठ भी कहा जाता है। यह नगर नाथ सिद्धों का गढ़ रहा है और यह **हिंगुलाम्बा** नाम का शक्तिपीठ है। हिंगलाज माता नाथों के प्रति प्रेम भाव रखती हैं तथा उनका आदर करती थीं। गुरु गोरक्षनाथ के दर्शन बेला होने के पश्चात् हम फिर

आयेंगे ऐसा कहकर गुरु गोरक्षनाथजी वहाँ से चल दिये। उन्हें खिचड़ी अति प्रिय थी। अतः माता **हिंगलाज** उनके इन्तजार में रोज खिचड़ी बनाने लगी किन्तु गुरु गोरक्षनाथ जी के न आने पर वह खिचड़ी एक स्थान पर डाल देती थी। बारह साल तक गुरु गोरक्षनाथ जी नहीं आये, अतः वहां खिचड़ी का ढेर लग गया। अन्त में जब गोरक्षनाथ जी वहां पहुंचे तो उन्होंने माता **हिंगलाज** की श्रद्धा-प्रेम देखते हुये प्रसन्न होकर खिचड़ी के ढेर को ठुमरों का पहाड़ कर दिया और वरदान दिया कि माता **हिंगलाज** का दर्शन करके जो ठुमरों की माला पहनेगा वह जीव मुक्त अवधूत योगी के फल को प्राप्त होगा। बच्चों को नर नारी ठुमरे पहनाने से नजर, टोना का प्रभाव नहीं होगा। मोती जैसे ठुमरे के नाथ सिद्ध योगेश्वर माला बनाकर धारण करते हैं और यह ठुमरे केवल इसी क्षेत्र में पाये जाते हैं।

2. आवड़-तनोट माता

हिंगलाज माता की अवतार के रूप में आवड़ माता अवतरित हुई। आपका जन्म बाड़मेर जिले के धोरी मन्ना क्षेत्र के चाळकनूं नाम के गांव में हुआ। इस चाळकनूं गांव में चारण म्हादा के पुत्र मामड़ के घर महड़ू शाखा की मोहवंती की कोख से आवड़ माता का जन्म विक्रम संवत ८८८ चैत सुदी नवमी शनिवार को हुआ। मामड़ ने हिंगलाज शक्ति पीठ की यात्रा कर माता से संतान सुख की प्रार्थना की थी।

महादेवी मामड़ घरे, आवड़ लिय अवतार,
मही नानाणौ माडवे, दादा चालक नंन।

आवड़जी को उभट नाम से भी जाना जाता है। अन्य भक्ति रचनाओं में आवड़ मां हिंगलाज स्वरूपा अवतार का वर्णन निम्नलिखित प्रकार से मिलता है :

उभट मांमट रै अवतरी, सुभट उणियारै,
मांमट देव के उभट प्रैह, प्रगटी पालणै।
साल अठ्यासी आठ सै, नवमी चैत अनूप,
*आवड़ जग में अवतरी, श्री **हिंगलाज** सरूप।*
''मांमड जी रै जलमवी, उभट दे अवतारा''

तनोट माता

आवड़ माता को तनोट माता के रूप में भी पूजा जाता है। भारत-पाक युद्ध के समय पाकिस्तानी सेना के द्वारा तनोट माता क्षेत्र में गिराया गया एक भी बम नहीं फटा और भारतीय सेना को कोई क्षति नहीं हुई। सीमा सुरक्षा बल तनोट माता मंदिर का संधारण करती है। देशभर के श्रद्धालु इस मंदिर में माता के दर्शन करने आते हैं। आवड़ माता ने बावन हूण दैत्यों को मारा और इसलिए आवड़ माता को बावन नामों से जाना जाता है।

इनके बावन परचे परवाड़े भी मिलते हैं, और बावन मढ़ मंदिर एवं ओरण स्थापित हुए। आवड़ माता की छोटी बहिन खोड़ियार माता सहित सातों बहिनें लोक-पूज्य देवियां हैं। खोड़ियार माता के गुजरात सहित देश के अन्य राज्यों में लगभग 50 हजार से अधिक मंदिर हैं।

सैणी जी के जन्म स्थान पर 'वेदा वड'

3. माँ सैणी जी

सौराष्ट्र के वेदोजी निपूता होने के कारण अत्यधिक दुखी रहते थे। उनकी पत्नी ने पुन: हिंगलाज माता से संतान हेतु प्रार्थना करने का निवेदन किया। इस संबंध में एक दोहा मिलता है-

कहे हंसा कळपे क्यों, कंथ वेदा कवराय।
ध्यान तो हिंगळाज धर, जद आवे जगराय।।

विक्रम संवत १३४६ के चैत्र शुक्ल अष्टमी के दिन सौराष्ट्र (गुजरात) गोरड़ियाळे गांव में वेदोजी की पत्नी हंसा के गर्भ से सैणीजी ने अवतार लिया।

सैणीजी ने अपने पिता वेदोजी से दो वचन लिये। एक तो मैं विवाह नहीं करूँगी और दूसरा चौदह वर्ष की आयु में हिमालय जाऊंगी। सैणीजी हिमालय की ओर प्रस्थान कर गईं। कच्छ से कुंवर गांव, मांगरोल, धूळिया, फलसूण्ड, जुड़िये पधारीं। जुढ़िये में सैणीजी के चमत्कार से सूखे कुएं में अथाह जल आ गया।

"जुड़िये जरूर थांन, थापना थही। वधंत नीर कूप बीच, नीठता नहीं।।"

सैणीजी ने हिमालय के कारगिल की द्रास नामक स्थान पर जाकर घोर तपस्या

की और वहीं अपने देह को निसार दिया। वहाँ आज भी हिन्दू लामा की कुंवारी कन्या 'सैणमायी' के नाम से माता की पूजा करती है। हर शुभ कार्य में श्रद्धालु सैणीजी को गणेशजी व हिंगलाज माता के साथ स्मरण करते है-

"हिरदे बसो हिंगळाज, साम्प्रत विराजो सैणला।
गणनायक गणराज, उच्छव पैला आवजो।।"

4. करनी माता

करनी माता के पिता मेहाजी किनिया **हिंगलाज** माता के दर्शन करने के लिए आदि शक्ति पीठ **हिंगलाज** गये थे। **हिंगलाज** माता के पिण्ड को स्पर्श किया और प्रार्थना की "माई म्हारो नांवगो रह जाय" माता मेरा नाम चल जाये। **हिंगलाज** माता की कृपा से मेहाजी के घर करनी माता ने जन्म लिया। करनी माता के पिता मेहाजी का नाम युगों तक अमर हो गया। श्री करनी जी का विवाह साठीका के देपा जी के साथ हुआ।

करनी माता को आवड़ माता का अवतार और **हिंगलाज** स्वरूपा कहा गया है। निम्नलिखित भक्ति रचनाओं के अंश प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत हैं-

"किनियां मेह रै ग्रह रूप कन्यां धरै सुण धणियाप,
देण सुत **हिंगलाज** देवी अवतरे जद आप।
तो सुइयाप जी सुइयाप साँसण प्रगटया सुइयाप।"

(भैरूंदान आशिया)

"करनी जस उज्ज्वल करण, आपो शुभ अख्खर, **हिंगलाज** जग अवतरे, आवड़ अप्रंपर।
सेलायत्त संघारियो, दीनी सूमां धर, हेक चळू भर हाकड़ो, सौखे सरोवर।।"

(झूंझारसिंह राठौड़ मनाणा)

"अम्बा **साता दीप** से मेहा गृह आया, चवदासै चम्माळ में अवतार लिराया।
अमर कोटि तेतीस मिली सह हाजर आया, ब्रह्मा करि करि बीनती चहुँ वेद सुनाया।।"

(गंगादान बारैठ, कल्याणपुरा)

हिंगलाज यात्रा

श्रद्धा का सफर

शक्तिपीठ **हिंगलाज** माता के दर्शन की अभिलाषा अनेक दशकों से भारतीय श्रद्धालुओं के मन में जाग्रत रही है। देश के विभाजन के पश्चात् शक्तिपीठ **हिंगलाज** पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रान्त में रह गई।

देश के विभाजन के बाद से ही श्रद्धालुओं की अनेक बार भारत सरकार और पाकिस्तान सरकार से शक्तिपीठ **हिंगलाज** को दर्शनार्थ खोलने और वीजा जारी करने की माँग प्रबलता से होती रही थी। 1965 में भारत-पाक युद्ध के पश्चात् तो मुनाबाव-खोखरापार रेल मार्ग भी बन्द हो गया था। हमारी हिंगलाज यात्रा के बाद इसे पुन: खोला गया है।

पूर्व विदेश मंत्री श्री जसवन्त सिंह के प्रयासों से शक्ति पीठ **हिंगलाज** के दर्शन हेतु मुनाबाव-खोखरापार मार्ग से भारतीय शिष्ट मण्डल को अनुमति मिल गई। निश्चित कार्यक्रम के अनुसार मुझे भी श्री जसवंत सिंह जी एवं श्री प्रकाश जी गुप्ता

के सहयोग से शक्ति पीठ **हिंगलाज** यात्रा के दर्शन के लिए तीर्थ यात्रा का सौभाग्य प्राप्त हुआ। शक्ति पीठ **हिंगलाज** माता के दर्शन के अतिरिक्त अखंड भारत का हिस्सा रहे विश्व सभ्यता के सिरमौर सिन्ध प्रान्त, उसके लोगों एवं भू-भाग के दर्शन

भी तीर्थ यात्रा के समान थे। हम सब लोग बाड़मेर में एकत्र हुए और वहां से अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा आदि की व्यवस्था की गई। बाड़मेर में शक्तिपीठ **हिंगलाज** तीर्थ यात्रियों के भारतीय दल को राजस्थान सरकार की ओर से शिक्षा मंत्री श्री घनश्याम जी तिवाड़ी एवं नागरिकों ने एक भव्य समारोह आयोजित कर शुभ विदाई दी।

पाकिस्तान प्रवेश से पूर्व संध्या को उस पार के भू-भाग, लोग एवं शक्तिपीठ **हिंगलाज** माता के दर्शन की विभिन्न कल्पनाओं के दृश्य मन-मस्तिष्क में उमड़ते-घुमड़ते रहे।

30 जनवरी, 2006 को प्रारम्भ हुई शक्तिपीठ **हिंगलाज** यात्रा। केन्द्रीय राजस्व विभाग, सीमा सुरक्षा बल आदि से हमारे सामान की आवश्यक जाँच करवाई गई। सीमा सुरक्षा बल के अधिकारियों व जवानों का भी इस यात्रा के प्रति अत्यधिक उत्साहपूर्ण और अनुकूल दृष्टिकोण था। उन सब का मानना था कि इस यात्रा से दोनों देशों के बीच सम्बन्ध मधुर होंगे और सीमान्त प्रान्तों के लोगों के दिल मिलेंगे। भारत-पाक सीमा पर दूर-दूर तक लगी हुई कंटीले तारों की बाड़ और फ्लड लाइट दोनों देशों के बीच सीमाओं का बोध करा रही थी।

सीमा पर कंटीले तारों की बाड़

भारतीय सीमा में एक द्वार बना हुआ था और भारतीय सीमा सुरक्षा बल के जवान सशस्त्र पहरे पर थे। हमें भारतीय सीमा से 200 मीटर दूर पाकिस्तान की सीमा में अस्थायी रूप से बनाई गई चेक पोस्ट तक पैदल ही जाना था। शक्तिपीठ **हिंगलाज** माता के जयकारे लगाते हुए मन में अति उत्साह लिए हम लोग पाकिस्तानी अस्थायी चेक पोस्ट पर पहुँचे। यह चेक पोस्ट पाकिस्तान के सिंध प्रान्त में है।

हमारी **हिंगलाज** यात्रा सिंध प्रांत से प्रारम्भ हुई। **हिंगलाज** यात्रा का वर्णन आगे बढ़ाने से पहले सिंध प्रान्त के बारे में कुछ महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ देना चाहते हैं। सिंध ने विश्व को प्राचीनतम समय में सभ्यता का पाठ पढ़ाया, जहाँ सिंधु घाटी, मुअन जो दड़ो, हड़प्पा जैसी नगरीय नियोजन की विस्मयकारी सभ्यता के प्रमाण आज भी विद्यमान हैं।

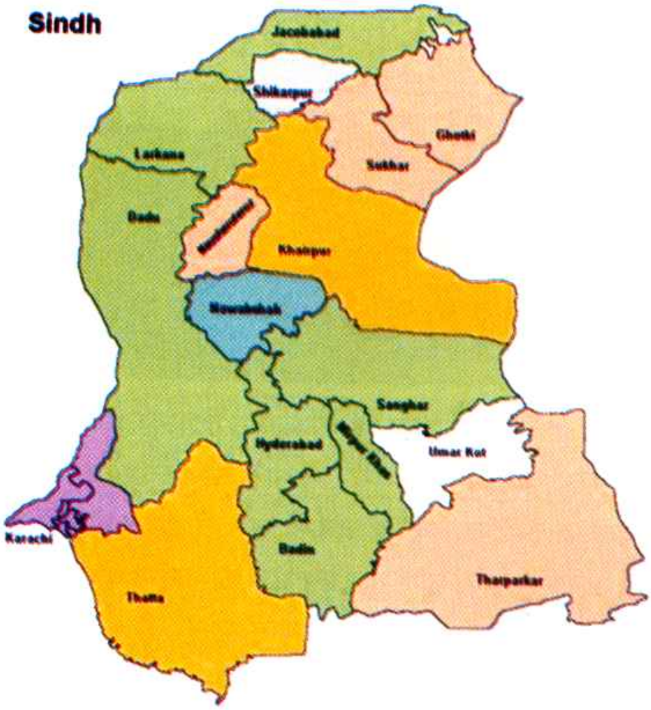

महाभारत काल में सिंध के राजा जयद्रथ का उल्लेख मिलता है। कला व हस्तकला में सिंध अग्रणी रहा है।

पंडित जवाहर लाल नेहरू ने डिस्कवरी ऑफ इण्डिया में सिन्धु के बारे में वर्णन करते हुए लिखा है कि ''हिंदू' शब्द स्पष्टतया 'सिंधु' शब्द से लिया गया है, जो कि 'इंडस' का प्राचीन और वर्तमान भारतीय नाम है। 'सिंधु' से ही 'हिंदू' व 'हिंदुस्तान' शब्द आए हैं और इसी तरह 'इंडस' व 'इंडिया'।''

कन्हैया लाल तलरेजा (पर्ल्स ऑफ वेदाज) के अनुसार- ''जब प्राचीन पवित्र ऋषियों ने सिंधु नदी के तट पर मधुर वाणी में वेद के मंत्र पढ़े, तब सिंधु की लहरों में तरंग उत्पन्न हुई और सिंध की धरती तथा आकाश में वैदिक मंत्रों की मधुर प्रतिध्वनि गूँजने लगी।''

दाहरसेन

हिन्दुस्तान के सीमांत प्रहरी के रूप में सिंध ने विदेशी हमलों का मुकाबला किया। आदि शक्ति हिंगलाज के उपासक यशस्वी सिंधुपति महाराज श्री साहसी, श्री चच देव एवं श्री दाहरसेन की कर्मभूमि है। मुहम्मद बिन कासिम ने 711 ई. में सिंध पर सैनिक आक्रमण किया तब सिंध के राजा दाहरसेन ने अद्‌भुत शौर्य के साथ मुकाबला किया। दाहरसेन राष्ट्र रक्षार्थ युद्ध में अपनी रानी लाडी बाई सहित वीर गति को प्राप्त हुये। मुझे नगर सुधार न्यास, अजमेर के अध्यक्ष के कार्यकाल में अजमेर में सिंधुपति सम्राट् दाहरसेन का भव्य स्मारक बनाने का सौभाग्य मिला, जिसमें सिंध की सभ्यता, इतिहास एवं दाहरसेन के शौर्य और बलिदान को प्रदर्शित किया गया। अब यह स्थान एक तीर्थ के रूप में विकसित हुआ है। डॉ. श्री शक्तिदान कविया द्वारा रचित दाहरसेन की स्मृति से संबंधित एक दोहा प्रस्तुत है–

''पाल धरम रण पौढ़ियौ, खल़ दल़ जूंझे खास।
सिंध में दाहरसेन रौ, अमर हुवो इतिहास।।''

सिंध की लगभग 91.32 प्रतिशत आबादी मुस्लिम है, परन्तु पाकिस्तान के कुल हिंदुओं की लगभग 93 प्रतिशत जनसंख्या केवल सिंध में निवास करती है।

सिंध में लगभग 59.7 प्रतिशत आबादी सिंधी भाषी है। उर्दू बोलने वालों का प्रतिशत 21.1 है। 7 प्रतिशत लोग पंजाबी व 4.2 प्रतिशत पस्तो भाषा भाषी हैं। बलोची भाषी 2.1 प्रतिशत व सिराईकी भाषी मात्र 1 प्रतिशत है। गुजराती व कच्छी भाषी नागरिक भी सिंध में निवास करते हैं। तेईस प्रशासनिक जिले वाले सिंध में नगरीय आबादी लगभग 55 प्रतिशत व ग्रामीण क्षेत्र की आबादी लगभग 45 प्रतिशत है।

सिंध पाकिस्तान का तीसरा सबसे बड़ा प्रान्त है और लगभग 1,40,915 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है। सिंध पूर्व में थार रेगिस्तान और पश्चिम में फिर थार पर्वतों से आच्छादित है। सिंध के दक्षिण में अरब सागर हिलोरें लेता है और मध्य में सिंध नदी के चारों ओर उपजाऊ समतल अन्नपूर्णा क्षेत्र है।

सिंध ने इजिप्ट (मिस्र) और मेसोपोटामिया से श्रेष्ठ व प्राचीनतम बसावटी सभ्यता का नमूना सम्पूर्ण विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया। सिंध ने अलेक्जैण्डर से लेकर चन्द्रगुप्त मौर्य एवं सम्राट् अशोक के साम्राज्य में अपने व्यापार का वर्चस्व बना रखा था। सिंध ने सुमरो एवं सम्मा के क्रूर शासन को देखा है। बादशाह अकबर का जन्म भी सन् 1542 में सिंध के उमरकोट (अमरकोट) में हुआ था। इस्ट इण्डिया कम्पनी के अनुसार

सिंध का नगर ठट्ठा शहर लंदन के समकक्ष था। समुद्री बंदरगाह वाला नगर ठट्ठा विशाल अट्टालिकाओं, 4000 शिक्षालयों एवं 4000 जहाजों वाला व्यापार का समृद्ध शहर था।

पूज्य झूलेलाल जी

संत कंवर राम जी

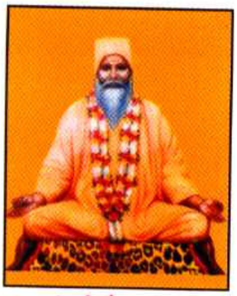

संत टेऊँ राम जी

बाबा श्री हरिराम जी

श्री दांदुराम साहिब

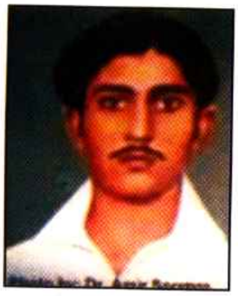

शहीद हेमू कालाणी

सिंध में ही स्वामी टेऊं रामजी, हालाणी साहिब दरबार, साधु टी.वासवाणी, संत लीलाशाह जी, स्वामी दांदुराम साहिब, बाबा हरिराम जी साहब, बाबा सेवाराम जी, सूफी कवि शाह अब्दुल लतीफ़ भिटाई, वरुण देवता झूलेलाल जी, सन्त कंवर राम जी, सचल सरमस्त, किशन चन्द "बेबस," डॉ. रोचलदास मंसारमाणी, भगवान एस. गिदवाणी, डॉ. चोइथराम गिदवाणी, जयराम दास, जे.बी कृपलाणी एवं स्वातंत्र्य वीर हेमू कालाणी जैसे अनेक महापुरुषों की जन्मभूमि है।

अब हमारी हिंगलाज यात्रा प्रारम्भ होती है। पाकिस्तानी चेक पोस्ट पर पहुँचने पर पाकिस्तानी अधिकारियों, विशिष्ट नागरिकों और पाकिस्तानी रेंजर्स ने हमारा स्वागत किया। अत्यधिक शिष्टता से पासपोर्ट, वीजा आदि की जांच की गई। जिस प्रकार के रेगिस्तानी रेत के टीले एवं कहीं-कहीं दिखने वाले खेजड़ी के पेड़ जैसे भारत के सीमान्त क्षेत्र में थे, वैसे के वैसे उस पार पाकिस्तानी सीमा में भी थे। भारत और पाकिस्तान के सीमान्त क्षेत्र में रहने वाले नागरिकों की कद-काठी, चेहरा-मोहरा, बोल-चाल, पहनावा हूबहू एक सा ही था। यदि कंटीले तार की बाड़ नहीं होती तो कौन कहता कि इधर हिन्दुस्तान और उधर पाकिस्तान है। यह तो बात हुई आदमियों की, जानवर भी एक से ही नजर आ रहे थे। रहने के लिए बने हुए कच्चे

झूपों की बनावट से ऐसा लग रहा था मानो एक ही कारीगर द्वारा दोनों देशों में बनाये गये हैं। भारतीय सीमा तक पक्की डामर की सड़क बनी हुई थी, परन्तु पाकिस्तान के खोखरापार क्षेत्र में अनेक किलोमीटर तक रेत के टीबों के बीच ''फोर व्हीलर'' गाड़ियों के पहियों के निशान से ही रास्ते का पता लग रहा था।

खोखरापार से हम ''फोर व्हीलर'' गाड़ियों से कड़ी सुरक्षा व्यवस्था में रवाना हुए। हम कहने को तो पाकिस्तान में थे, परन्तु रास्ते के दोनों तरफ घर, पशु, पेड़-पौधे

और रेत के टीबों को देखने से हमें तो बाड़मेर जैसा ही लगा। '**जालूचौरा**' तक का लगभग 25 किलोमीटर का रेतीला मार्ग पार किया तब पक्का रास्ता मिला। उमरकोट जागीर के राणा श्री हमीरसिंह एवं उनके साथियों ने यात्रीदल का भव्य स्वागत किया। सड़क के किनारे लकड़ियों के सहारे घास-फूस से छाये हुए चाय के ढाबे दिखाई दिये।

जालूचौरा से हाजी उमेद अली सुमरो, होले पोता के गाँव, रहमा कालूनी (छोर), तारबाबाद, आसेरी, हाजी चिनसेर भरी, खारोड़ा, मानाराम जाट का गाँव, उमरकोट, बचाबंद गांव, बलोचाबाद होते हुए हम मीरपुर पहुँचे।

हमारी यात्रा के प्रति सम्पूर्ण सिंध में जबर्दस्त उत्साह था। सड़क के दोनों ओर हजारों की संख्या में सिन्धवासी अपनी परम्परागत वेशभूषा में हाथ हिलाकर यात्री दल का स्वागत कर रहे थे। एक-दूसरे की आँखों में आँखें डालकर देखने से लग रहा था कि वे और हम एक ही हैं, सियासतदानों ने हमें अलग कर दिया। हमारे यात्रा दल में अनेक सदस्यों के पारिवारिक रिश्तेदार सिंध में निवास करते हैं। हमारे दल का पहला पड़ाव **मीरपुर** खास में हुआ। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री की पौत्री एवं मीरपुर खास की निर्वाचित जिला प्रमुख बेगम जुनेजो की ओर से स्वागत समारोह व मध्याह्न भोज का आयोजन किया गया था।

पाकिस्तानी पत्रकारों, टी.वी. चैनलों ने भी तीर्थ यात्रियों को कुरेद-कुरेद कर खूब सवाल किए पर सब का उत्तर एक सा ही था कि हमारा और सिंध के नागरिकों का खून एक है, पुरखे एक हैं, पहनावा एक सा है, खान-पान में कोई भिन्नता नहीं है, संस्कृति और सभ्यता समान है, अत: यह मानव निर्मित कंटीले तार की बाड़ हमें अलग नहीं कर सकती।

हमारा काफिला फिर आगे बढ़ा कराची की ओर। सड़क के दोनों ओर वही लोगों का स्वागत करता जन समूह था। उनको भी ऐसा लग रहा था जैसे उनके बिछुड़े हुए लोग अनेक दशकों के बाद अचानक लौट आए हैं। सिंधु नदी का विशाल पाट अनेक स्थानों पर बहता हुआ निर्मल जल, पीले बसन्ती फूलों वाले सरसों के खेत, मुर्रा भैंसें और ऊँटों के टोले वहां के विकास और जन-जीवन की साक्षी दे रहे थे।

लम्बा रास्ता पार कर हम पहले दिन ही देर शाम कराची पहुँचे। हमें पूर्व निर्धारित सारवान होटल में ठहराया गया। सम्पूर्ण यात्रा में पत्रकार श्री तरुण जी विजय और मैं एक ही कमरे में ठहरे थे।

तीर्थ यात्रा का दूसरा दिन हम तीर्थ यात्रियों के लिए जीवन की श्रेष्ठ इच्छा पूर्ति का दिन था। प्रात:काल कराची से हमारा दल शक्ति पीठ **हिंगलाज** के दर्शनार्थ रवाना हुआ। लगभग 20 किलोमीटर बाद एक नदी पर बने विशाल पुल को पार करने पर हम बलूचिस्तान प्रान्त के पहले सीमाई कस्बे हब शहर में पहुंचे। परता राजा एवं उनके वंशजों का पहली से तीसरी शताब्दी के बीच वर्तमान बलूचिस्तान एवं ईरान के भू-भाग पर साम्राज्य था। उस कालखंड में स्वास्तिक एवं राजा की आकृति वाले सिक्के चलते थे। बलूचिस्तान प्रान्त की स्थापना 1876-1891 में ब्रिटिश साम्राज्य के राजनैतिक प्रतिनिधि रोबर्ट सान्डेमैन एवं कलात के खान के बीच तीन संधियों के परिणामस्वरूप हुई थी। इसके अन्तर्गत क्वेटा में सेना का प्रमुख तैनाती स्थल बनाया

paratarajas coin gallery
(coinindia.com/galleries-para-rajas.htm)

गया, जिसने दूसरे व तीसरे अफगान युद्ध में महती भूमिका निभाई। सन् 1947 में भारत के विभाजन के साथ ही बलूचिस्तान पाकिस्तान का प्रान्त बन गया। ग्वादर क्षेत्र व केन्द्र शासित बलूचिस्तान को मिलाकर सन् 1970 में पूर्ण राज्य बनाया गया और मुख्य आयुक्त के स्थान पर मुख्यमंत्री, राज्यपाल एवं प्रांतीय विधानसभा का गठन किया गया। बलूचिस्तान के उत्तरी क्षेत्र में पश्तून एवं दक्षिण पश्चिम क्षेत्र में बलोच जनजाति प्रभावी रूप से निवास करती है।

वर्तमान बलूचिस्तान दक्षिण पश्चिम पाकिस्तान, दक्षिण पश्चिम अफगानिस्तान एवं दक्षिण पूर्वी ईरान की सीमा से लगा हुआ राज्य है। इसकी राजधानी क्वेटा है। बलूचिस्तान रेगिस्तान, पहाड़ों व अरब सागर का तटीय राज्य है और वह 347191 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है। यात्रा लगभग 190 किलोमीटर राष्ट्रीय राजमार्ग पर चलती गई। हब के बाद मकरान की लाइडा मार्बलसिटी, लसबेला, लियारी होते हुए आगे बढ़े। सड़क के दोनों ओर रेगिस्तान और कम आबादी वाला क्षेत्र था। कराची से लगभग 225 किलोमीटर सड़क मार्ग पर चलकर हम हिंगोल नदी के किनारे 'अघोर' स्थान पर पहुँचे।

अघोर नदी को हिंगोल नदी के नाम से भी जाना जाता है। अघोर नदी के किनारे एक तरफ राष्ट्रीय राजमार्ग एवं मखमल जैसा मरुस्थल दूसरी तरफ अद्वितीय प्राकृतिक सौंदर्य वाले हिंगोल पर्वत अपनी छटा बिखेर रहे थे। यह स्थान अत्यधिक

दर्शनीय है। हमारी जिज्ञासा प्रवृत्ति ने इस दृश्य को टकटकी लगाकर देखने के लिये विवश कर दिया। वहां से दायीं तरफ **हिंगलाज** माता की ओर कच्चा मार्ग जाता है। हिंगोल नदी के किनारे पर '**नानी मंदर**' का दिशासूचक बोर्ड लगा हुआ था। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के राष्ट्रीय ध्वज फहरा रहे थे और पहाड़ों के बीच से हमारी यात्रा के लिए तैयार किये गये कच्चे मार्ग की ओर यात्री दल आगे बढ़ा।

हिंगोल पर्वत, स्थान-स्थान पर नदी के निर्मल जल का भराव प्राकृतिक छटा बिखेर रहा था। यह मार्ग नैसर्गिक रूप से अत्यधिक सुंदर और मन पर असर छोड़ने वाला है। हमारी यात्रा अलौकिक दिव्य शक्ति के दर्शन करने के लिये आगे बढ़ रही थी। हमारे सहयात्री श्लोकों और मंत्रों का उच्चारण कर रहे थे।

अघोर नदी/हिंगोल नदी

यह क्षेत्र 'हिंगोल राष्ट्रीय पार्क' के क्षेत्र में आता है। मौसम अत्यधिक सुहावना था। स्थान-स्थान पर शीतल व निर्मल जल के कुण्ड मनमोहक लग रहे थे। रास्ते के दोनों ओर सुन्दर पहाड़ियाँ और कुछ अस्थायी निर्जन निर्माण दिखाई दिये। इन स्थानों का उपयोग **हिंगलाज** माता के मेले के दौरान तीर्थ यात्रियों हेतु अस्थायी दुकानों के लिए होता है। लगभग 10 किलोमीटर रास्ते को पार कर फिर पक्की सड़क प्रारम्भ हुई। पाँच किलोमीटर पक्की सड़क के रास्ते को पार कर हम पहुँच गये **हिंगलाज** माता के यात्रियों के ठहरने हेतु बनाई गई आशापुरा सराय तक। यहाँ आशापुरा माता और हनुमान मंदिर के दर्शन किये।

विशाल पर्वतों के बीच हम लोगों का चित्त प्रफुल्लित हो रहा था। यहां बिजली की व्यवस्था जनरेटर के द्वारा की गई थी। इस पर्वत शृंखला को कानराज एवं हिंगोल पर्वत के नाम से भी जाना जाता है। यहां पहुंचने पर बलूचिस्तान सरकार के मुख्यमंत्री **श्री जाम मोहम्मद युसुफ** और उनके पुत्र **श्री जाम कमाल**, अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री श्री जय प्रकाश एवं श्री **हिंगलाज** सेवा समिति लसबेला के पदाधिकारियों ने हमारे दल का स्वागत किया। बलूचिस्तान सरकार की ओर से आयोजित स्वागत भोज के अवसर पर अपने सम्बोधन में श्री जाम मोहम्मद युसुफ ने कहा कि- "श्री जसवन्त सिंह जी व उनके साथ आए सभी यात्रियों का बलूची धरती पर बलूचिस्तान के लोगों

की ओर से मैं तहेदिल से स्वागत करता हूँ। हिंगलाज माता हिन्दुओं का प्राचीन तीर्थ है, जिसका वर्णन सिंध प्रांत के सूफी सन्त शाह अब्दुल लतीफ़ भिटाई ने मुक्त कंठ से अपने रसाले में किया है। बलूचिस्तान सरकार ग्वादर कोस्टल हाईवे से हिंगलाज तक पक्की सड़क का निर्माण करवायेगी व पानी की सुव्यवस्था की जायेगी।''

भारतीय तीर्थयात्री दल के नेता श्री जसवन्त सिंह ने अपने सम्बोधन में कहा- ''स्वतंत्रता के बाद जमीनी रास्ते से यह पहला दल पाकिस्तान आया है। यह धार्मिक यात्रा के साथ एक ऐतिहासिक यात्रा भी है तथा मैं और मेरे सहयात्री भारत की ओर से पूरे पाकिस्तानवासियों के लिए प्यार और मोहब्बत का संदेश लाये हैं। पाकिस्तान में प्रवेश करते समय हमें ऐसा लगा मानो हम अपने घर में ही हैं।''

बलूचिस्तान के मुख्यमंत्री श्री जाम मोहम्मद युसुफ से भेंट करते ओंकार सिंह लखावत

श्री हिंगलाज सेवा मण्डली के प्रमुख संयोजक श्री वरसीमल देवानी, **हिंगलाज** सेवा मण्डली लसबेला के महासचिव श्री श्यामलाल लासी आदि ने यात्री दल का स्वागत किया।

यहाँ बनी धर्मशालाओं से शक्तिपीठ **हिंगलाज** केवल 500 मीटर की दूरी पर स्थित है। रास्ते में खजूर, बेर, खेजड़ी, कंडील आदि के पेड़ों और स्थान-स्थान से

हिंगलाज स्थित धर्मशाला के सामने तीर्थयात्रियों का समूह

झरनों से एकत्र पानी के कुण्डों को पार कर हम पंहुच गये शक्तिपीठ **हिंगलाज**। धर्मशालाओं और शक्ति पीठ **हिंगलाज** के बीच भेलड़ी माता एवं काली माता के मन्दिर हैं। यहाँ पर सभी वृक्षों की शाखाएँ त्रिशूल की आकृति की हैं, त्रिशूल जो महादेव शिव का शस्त्र है, त्रिशूल के तीन नुकीले अंग आकाश, धरती व पाताल को इंगित करते हैं। हिंगलाज माता के झंडे पर भी त्रिशूल का चिह्न होता है।

धर्मशाला से हिंगलाज माता के मंदिर का रास्ता

हमने शक्तिपीठ हिंगलाज में जो कुछ देखा वही विवरण इश्तियाक अंसारी ने अपनी पुस्तक में लिखा है। समय की आवश्यकता एवं परिस्थिति को भली-भांति समझते हुये हम यहाँ पर शक्ति पीठ हिंगलाज माता की गुफा एवं वहाँ के पूजा स्थल का विस्तृत विवरण जो हमने इश्तियाक अंसारी की 'धरती माता' पुस्तक (सिंधिका अकादमी कराची का प्रकाशन) से उद्धृत किया है, श्रद्धालुओं की जानकारी के लिए देना चाहते हैं।

गाजे-बाजे के साथ हिंगलाज माई की शरण में जाते

"यह मंदिर पर्वत की कटाव में सात फीट ऊंचे चबूतरे पर बना हुआ है, जिसकी नाप 25.29 × 25.20 फीट है। इस मन्दिर के पिछवाड़े में पर्वत की दीवार है और ऊपर भी पर्वत की प्राकृतिक छत है। मन्दिर के अग्रभाग में, पत्थरों की बनी दीवार छत से जुड़ी हुई नहीं है, इसलिये मन्दिर में पर्याप्त

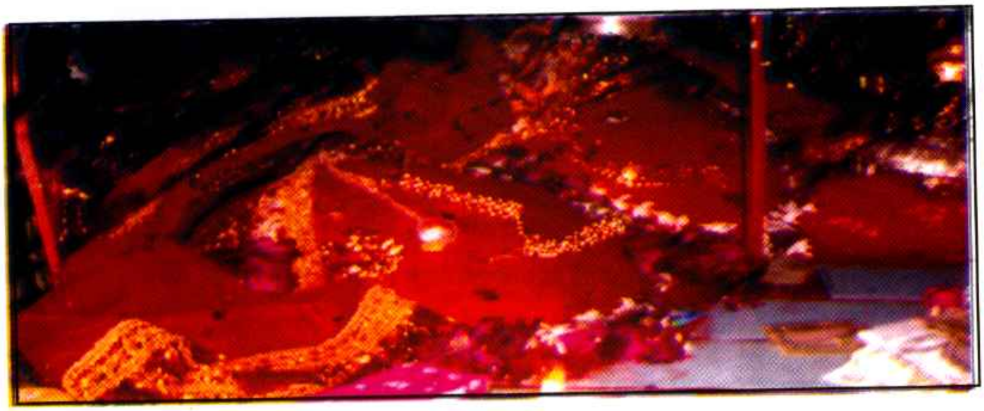

वायु और प्रकाश रहता है। मन्दिर में प्रवेश हेतु थोड़ी चढ़ाई के उपरान्त बारह-तेरह सीढ़ियां हैं जिसके आगे एक संकड़ी गली प्रारम्भ होती है, जिसके दाहिने हाथ पर एक छत बनी हुई है। कमरा सम्भवतः पुजारी के रहने के काम आता है।

इस संकड़ी गली को लांघ कर दर्शनार्थी मन्दिर में प्रवेश करते हैं। अन्दर मन्दिर का फर्श दो भागों में बंटा हुआ है। एक निचला हिस्सा जिसके एक तरफ शिवलिंग स्थापित है, उसके पास दीपक जलते रहते हैं। दूसरा भाग अंदाजन चार फीट ऊंचा चबूतरा है। इसी चबूतरे पर हिंगलाज माता की मूर्ति है। मूर्ति के पास ही लकड़ी के कटहरे में एक छोटा अग्नि कुंड बना हुआ है।""

अग्नि कुंड:- मन्दिर के अन्दर चबूतरे पर दो पौढ़ियां चढ़ने पर बायें हाथ पर अग्नि कुंड है, जिसके चारों तरफ लकड़ी का कटहरा बना हुआ है। कटहरे के अन्दर जिसके पास में अग्नि, दीपक व अगरबत्तियां जलती रहती हैं। अग्नि कुंड के पास माता का आस्थान है। इसके नज़दीक में संगमरमर के पत्थर की तख्तियों पर हिन्दी में यह वाक्य लिखा हुआ है-

" श्री हिंगलाज माता माया में शरणा गत ते राखो मोरे जनम सफल होए ज़मींदार धसाराम खेमचन्द पटेल ने अपने स्वर्गवासी नन्द बाई के माता, पिता, गुरु गोसाईं अचल सात पीढ़ी को सफल हो।"

हिंगलाज मूर्ति आस्थान:- मन्दिर के अन्दर चबूतरे पर कोने से डेढ़ फुट की ऊँचाई पर छोटी ("मद" गुफा "धिको") बना हुआ है जिसके पीछे और एक तरफ से पर्वत की दीवार है। उसके दूसरी तरफ अग्नि कुंड है।

सामने वाला भाग खुला है, जहां पर यात्री बैठकर पूजा करते हैं और सिर झुकाते हैं। इसी स्थान पर दीपक जलते रहते हैं, कुछ शंख भी यहां पर रखे हुए हैं। अगरबत्तियां जलाने हेतु अलग से स्थान बना हुआ है। वहां पर अग्नि जलाने का भी स्थान है। इस गुफा के पीछे पर्वत वाली दीवार, जिसको मन्दिर की पीठ भी कहा जा

सकता है, वहां पर माता की मूर्ति रखी हुई है। यह लगभग तीन फीट लम्बी व एक फीट चौड़ी, त्रिशूल जैसा पत्थर है। इसको गेरुये रंग से रंगा गया है। ऐसा भी कह सकते हैं कि इसकी आकृति मूसली जैसी है, यही हिंगलाज माता की मूर्ति है, इस

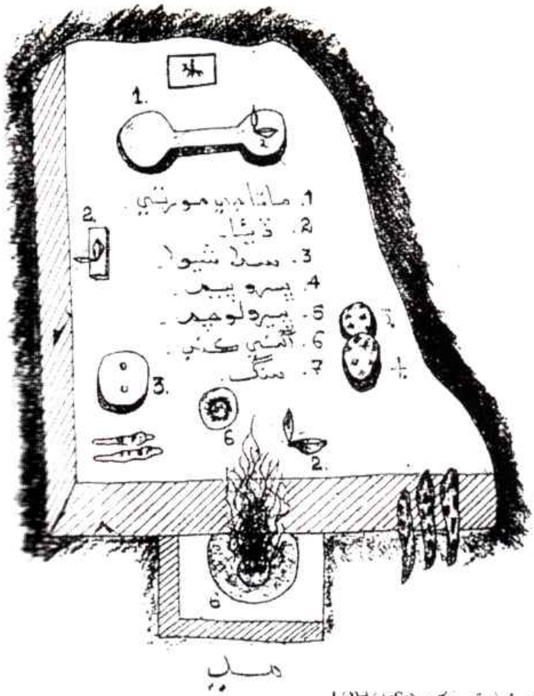

हिंगलाज का नक्शा

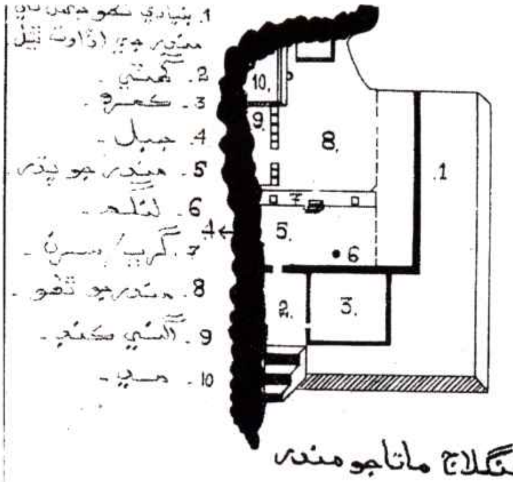

१. मन्दिर का बुनियादी चबूतरा जिस पर मन्दिर जुड़ा हुआ है।
२. गली, ३. कमरा, ४. पर्वत, ५ व ६.मन्दिर का आंगन, ७. गर्भ/मन्दिर
८. मन्दिर का चबूतरा, ९. अग्नि कुंड, १०. गुफा (मध)

पत्थर के बारे में कहा जाता है कि जमीन पर आसमान से दो पवित्र (मुकद्दस) पत्थर गिरे थे, एक पत्थर काबेअलाह में स्थापित मौजूद है और दूसरा पत्थर यह है। इस मूर्ति के नज़दीक एक फीट से थोड़ा सा कम गोल पत्थर रखा हुआ है, जिसको गेरू (सिन्दूर) लगाया हुआ है। इस पत्थर को 'सदा शेवा' कहते हैं।

मध पर गेरू रंग के और भी दो पत्थर पड़े हुए हैं, जो माता के सेवक हैं। इनमें से एक का नाम 'भैरूं भीम'' और दूसरे का नाम ''भैरूं लोचन'' रक्षक है।''

माता का प्राकृतिक महल

हिंगलाज मंदिर के निकट कालिका माता

शक्तिपीठ हिंगलाज के सामने नैसर्गिक सौन्दर्य का विहंगम दृश्य दृष्टिगोचर हो रहा था। सामने की ओर विशाल उत्तंग शृंग पर्वत की सुन्दरता मन मोह रही थी। बायीं ओर सुनहरा पर्वत प्राकृतिक रूप से अत्यधिक सुन्दर लग रहा था। उसको देखने से लग रहा था मानो हिंगलाज माता के महल के रूप में इसे हजारों साल के परिश्रम से

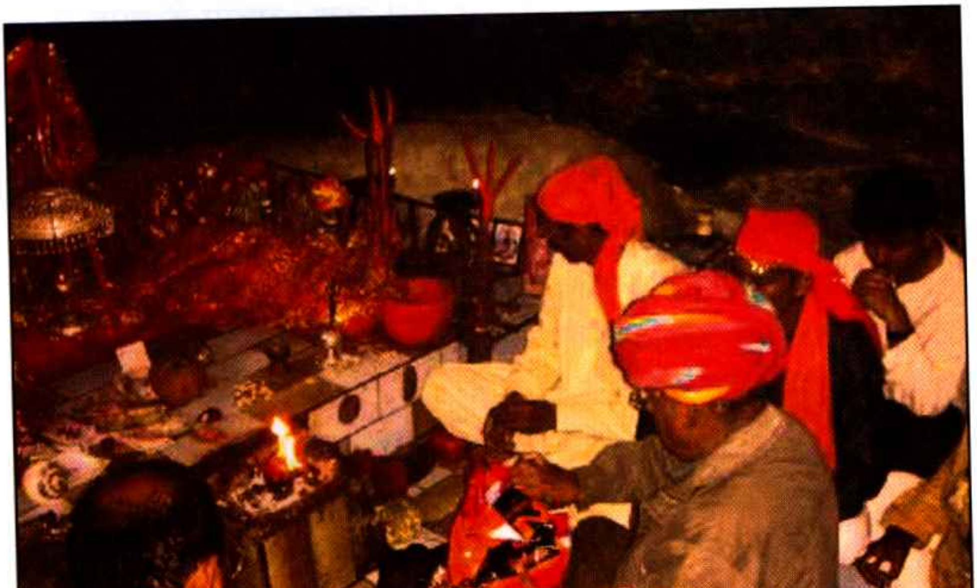

हिंगलाज माता की पूजा करते हुए लखावत

अत्यधिक कुशलता के साथ यक्षों ने बनाया हो। आकर्षक पहाड़ एक विशाल एवं भव्य महल का स्वरूप प्रकट कर रहा था। ऐसा लग रहा था मानो प्रकृति ने सारी शांति, सौन्दर्य एवं सुरम्यता यहीं लुटा दी हो।

विशाल पहाड़ों के बीच जाने पर बायीं हाथ की ओर एक विशाल छतनुमा 50 फीट ऊँची खुली गुफा में अवस्थित है शक्ति पीठ **हिंगलाज**। श्रद्धालुओं ने पिंड के रूप में विराजमान **हिंगलाज** माता के तीन तरफ दीवार बनाकर इस स्थान को सुरक्षित किया है। वहाँ विराजित पिण्ड रूपी **हिंगलाज** माता सिंदूर, लाल चूंदड़ी, छत्र, त्रिशूल आदि श्रृंगार से सुसज्जित हैं। हमने सहयात्रियों के साथ **हिंगलाज** माता की

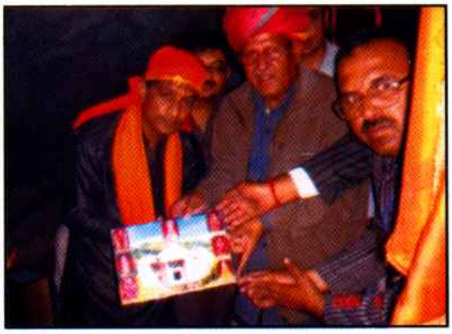

छत्र चढ़ाते एवं भक्ति धाम की आकृति भेंट करते हुए ओंकार सिंह लखावत श्री तरुण विजय एवं अर्जुनदान

पूजा-अर्चना विधि-विधान से की और माई स्पर्श किया। अजमेर के चारण समाज की ओर से **हिंगलाज** माता जी को चांदी का छत्र चढ़ाया। भारतीय सिंधु सभा द्वारा भेजी गई पूज्य झूलेलालजी की मूर्ति एवं चारण साहित्य शोध संस्थान अजमेर के परिसर में निर्मित भक्ति धाम की रंगीन आकृति वहाँ भेंट की। जिस समय हम हिंगलाज माता के दर्शन कर रहे थे उसी समय मेरी पत्नी श्रीमती रतन कंवर लखावत अजमेर में हमारे आवास पर जब हिंगलाज माता की आराधना कर रही थी, उसी समय चामत्कारिक रूप से उसकी हथेलियां स्वत: ही कुंकुंम रंगी हो गईं।

शक्तिपीठ हिंगलाज के दर्शन करते-करते मन नहीं भरा। सहस्र नयन से हिंगलाज माता के दर्शन करने से भी मन नहीं भर सकता। आराध्य देवी के दर्शन कर हमें अत्यन्त सुख की अनुभूति हो रही थी, परन्तु बार-बार दर्शन करने का लोभ संवरण नहीं

कर पा रहे थे। संपूर्ण स्थल भव्य तपस्या स्थली और गौरवमय तीर्थ है। हिंगलाज माता के निकट ही भैरव भीमलोचन के दर्शन किये। शक्तिपीठ के सामने के पर्वत पर भगवान राम द्वारा चित्रित सूर्य एवं चन्द्रमा दर्शन योग्य हैं।

हिंगलाज मंदिर के सामने जलकुण्ड

मंदिर के सामने शीतल निर्मल जल का कुण्ड था। उसमें स्नान कर गुफा में सह तीर्थयात्री अर्जुन दान जी को धर्म भाई बनाकर प्रवेश किया। घुटने और हाथ की कोहनियों के बल पूरी गुफा में हिंगलाज माता का स्मरण करते पाप-ताप- संताप से मुक्ति और हिंगलाज कृपा की प्रार्थना करते बाहर निकले, फिर उसी कुण्ड में स्नान कर वस्त्र बदले और अपने आप को माताजी के दरबार में पुनः जन्म लेने वाले सौभाग्यशाली जीवों में सम्मिलित किया। यहीं से फिर एक नया संकल्प लिया नये जीवन में चारणा-चार के पालन और राष्ट्रीय अस्मिता से जुड़े हुये कुछ काम करने का।

गुफा में से निकलते लखावत एवं यात्रा धर्म भाई श्री अर्जुनदान

हिंगलाज माता के दर्शन की मनचाही मुराद पूरी हो गई। हिंगलाज माता की महिमा अपरम्पार एवं अलौकिक है।

हिन्दुस्तान के विभाजन के पश्चात् भी श्रद्धालुओं की अटूट आस्था व प्रयासों से आदि शक्तिपीठ **हिंगलाज** सुरक्षित व यात्रा योग्य पूजित स्थल है। वहाँ श्रद्धालु माता

हिंगलाज माता मंदिर पर श्री जसवंत सिंह के साथ ओंकार सिंह लखावत, सर्वश्री सूर्यदेव सिंह, डॉ. सोहनदान, कानदान बारहठ, पुष्पदान गढ़वी, डॉ. अम्बादान रोहड़िया, अर्जुनदान, रिछपालसिंह एवं आवड़दान उज्ज्वल व यात्रीगण।

की पूजा में चूंदड़ी, सिंदूर, चूड़ियां, लाल व भगवा वस्त्र, छत्र, अगरबत्ती, इत्र, दीपक, छड़ी एवं सीरनी मिष्टान्न भेंट चढ़ाते हैं। **हिंगलाज** यात्री ठुमरा की माला पहनने को

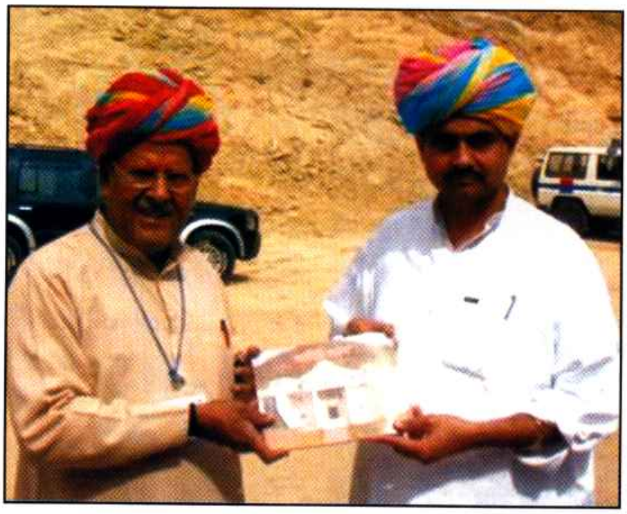

बलूचिस्तान के अल्पसंख्यक विभाग के मंत्री श्री जयप्रकाश को भक्तिधाम अजमेर की आकृति भेंट करते हुए लखावत

सौभाग्य मानते हैं। आज भी लोक मान्यता है कि **हिंगलाज** माता असाध्य रोगों और शरीर को विष से मुक्ति दिलाती हैं। **हिंगलाज** यात्री को 'कापड़ी' कहा जाता है।

शक्तिपीठ **हिंगलाज** तीर्थ के आस-पास निम्नलिखित अन्य प्रमुख ऐतिहासिक व दर्शनीय तीर्थस्थल हैं-(1) **हिंगलाज** माता के दक्षिण में तलोक कुण्ड, (2)आशापुरा से चौरासी पहाड़ (3) चौरासी पहाड़ से गुरु नानक चरण, (4) नानक

हिंगलाज में आसापुरा माता एवं रामभक्त हनुमान जी

चरण से गोरख धूणी, (5) गोरख धूणी से जुली जल, (6) जुली जल से अलील कुण्ड। कराची से यात्रा आरम्भ करने पर 13 पड़ाव व 24 पूजा होती है।

(1) बटिया भैरव पड़ाव : गोरक्ष इमली पूजा/बटिया भैरव पूजा, (2) पकोड़ा वाली पड़ाव : श्री शाखिया भैरव पूजा/लोटण नदी पूजा, (3) राज्य चौकी पड़ाव: सिंह भवानी पूजा/गुप्त हनुमान पूजा, (4) आम्बावाली पड़ाव : सीता सुन्दरी की पूजा, (5) सोनमियाणी गांव पड़ाव : खारी नदी की पूजा, (6) कोपला वाली पड़ाव : गुरु चेला की समाधि पूजा, (7) घब्बेवाली पड़ाव, (8) मंगलावाली पड़ाव, (9) कंदावाली पड़ाव, (10) चन्द्रकूप पड़ाव, (11) सींगल पड़ाव, (12) अघोर पड़ाव : अघोर नदी पूजा/गोइड़िया भैरव पूजा/कटारिया भैरव पूजा/सोया भैरव पूजा/हिंगोल माई पूजा/मुंडकटा गणेश पूजा/राधापुरी पूजा, (13) आशापुरी पड़ाव : आशापुरी पूजा/कालिका कपाट पूजा/हिंगलाज की बड़ी पूजा। (14) रामचन्द्र जी द्वारा अंकित सूर्य-चन्द्र के दर्शन (15) गुरु नानक चरण पूजा/गोरखनाथ चरण पूजा/झोली झटकण भैरव पूजा।

हिंगलाज माता के दर्शन कर रात्रि विश्राम वहीं करने के पश्चात् हमारा यात्रीदल दूसरे दिन दोपहर में कराची के लिए रवाना हुआ। कराची प्रवास के दौरान सिंध के मुख्यमंत्री अरबाब गुलाम रहीम ने तीर्थयात्री दल के सम्मान में रात्रिभोज समारोह का आयोजन किया।

सिंध के मुख्यमंत्री अरबाब गुलाम रहीम के साथ ओंकार सिंह लखावत

श्री जसवन्त सिंह ने कराची में प्रबुद्ध जनों के सम्मान में समारोह आयोजित किया। मैंने और पत्रकार श्री तरुण विजय ने एक दिन कराची के पुस्तक बाजार, धरोहर स्थल एवं पुस्तक प्रकाशकों के यहां जाकर साहित्य देखने एवं खरीदने में लगाया।

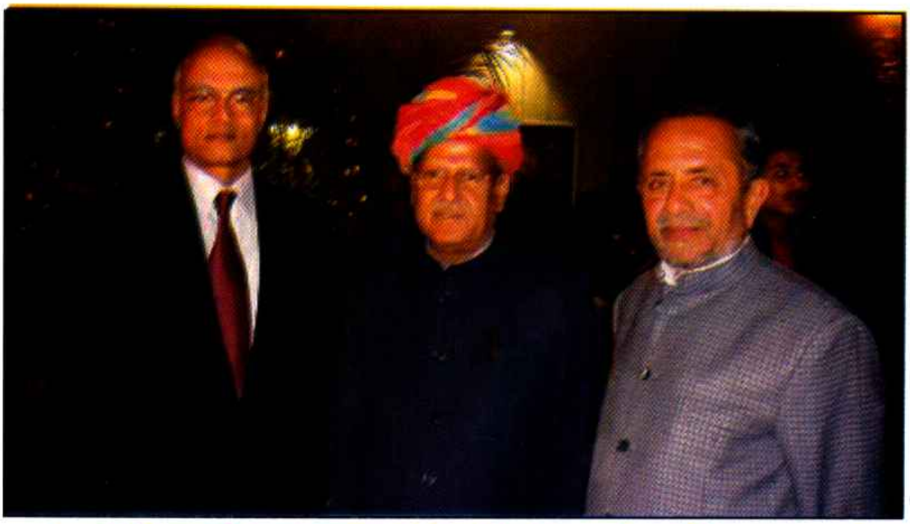

कराची में भारत के पाक राजदूत श्री शिवशंकर मेनन, ओंकार सिंह लखावत एवं सांसद श्री पुष्पदान गढ़वी

कराची से लौटते समय हमलोग हैदराबाद (सिंध) में रुके। चूड़ियों और कपड़े के लिए हैदराबाद प्रसिद्ध है। हैदराबाद में राजस्थान मूल के अनेक परिवार विभाजन

श्री जसवंत सिंह जी के साथ ओंकार सिंह लखावत
श्री महेन्द्र जी झाबक, पद्म श्री सूर्यदेव सिंह जी
श्री तरुण जी विजय, श्री नाहर सिंह जी

के समय वहां बस गये थे। ऐसे ही बालोतरा से जाकर हैदराबाद बसे फतेअली टैक्सटाइल के श्री इनायतउल्ला बरकत व श्री ब्रोही साहब ने यात्रीदल का स्वागत किया और टैक्सटाइल मिल के परिसर में अल्पाहार का आयोजन किया। यहां मूल राजस्थान के परिवारों से भी मिलने का अवसर मिला। इसके पश्चात् हमारा दल पहुंचा मीरपुर। रास्ते में बलोचाबाग, अलारखियों मगरियौ, बचाबन्द की सीमा में होते हुए हमारा यात्री दल उमरकोट पहुंचा।

उमरकोट से **खारोड़ा चारणान** देवल माता के दर्शन किये। वहां श्री देवीदान के नेतृत्व में चारण परिवार के सदस्यों ने यात्रीदल का स्वागत किया और देवल मां के थान पर जोत प्रज्वलित कर दर्शन किये। आगे उमरकोट जागीर में श्री हमीरसिंह राणा व उनके परिवारजनों ने यात्रीदल का स्वागत किया। उमरकोट के श्री रतनसिंह ने स्वातंत्र्य आन्दोलन में भाग लिया और उन्हे फाँसी की सजा दी गई थी। स्वातंत्र्य वीर

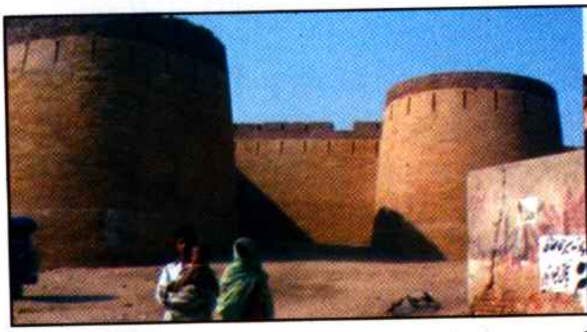

ऐतिहासिक उमरकोट किला, उमरकोट जागीर में राणा हमीर सिंह के साथ ओंकार सिंह लखावत

राणा रतन सिंह के देशभक्ति के कार्यों को आज भी लोकगीतों में गाया जाता है। रात्रि विश्राम उमरकोट जागीर में करने के पश्चात् दूसरे दिन 7 फरवरी, 2006 को प्रात:काल यात्री दल रवाना होकर सीमा चौकी पार कर वापस बाड़मेर पहुँचा।

हिन्दुस्तान में प्रसिद्ध हिंगलाज मंदिर

हिंगलाज माता को क्षत्रिय समाज, भावसार समाज, चारण समाज, ब्रह्म क्षत्रिय समाज, सिंधी समाज, भानुशाली समाज, भंसाली समाज, पंजाबी समाज, कोली समाज, भाटिया समाज, सोनी समाज, माहेश्वरी समाज, रेबारी समाज, लोहाना, राव, लौहार समाज, नामदेव छीपा समाज, भूमिहार समाज, ब्राह्मण समाज, पुष्करणा समाज, नाथ सम्प्रदाय, कश्मीरी समाज, शाक्त मत को मानने वाले श्रद्धालु, श्री सोमवंशीय सहस्त्रार्जुन क्षत्रिय समाज (दर्जी समाज) व अन्य अनेक समाज अपनी कुलदेवी मानते हैं। हम यहां कुछ हिंगलाज माता मंदिरों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं।

मेहरानगढ़ (जोधपुर) में हिंगलाज माता

जोधपुर राजघराने के मेहरानगढ़ दुर्ग में **हिंगलाज** माता की मूर्ति की स्थापना महाराजा अभै सिंह ने की थी। इसका उल्लेख जोधपुर राज्य के दस्तूर बही (सं. डा. विक्रम सिंह राठौड़) 121 व 129 में निम्नलिखित प्रकार किया गया है–

बाड़ी रा म्हेला में श्री नागणेचियांजी माताजी मन्दिर में विराजे तठेश्री पंचदेवरा इतरा विराजै–

हिंगलाज माता मेहरानगढ़ जोधपुर

श्री आदरपरवाणौ चकरेश्वरी आद कुलदेवी
श्री सांघीया माताजी
श्री छींक माताजी
श्री चांवडा माताजी
श्री सिंघ वाहनी जी
श्री नवा देवता **श्री हिंगलाज** ने
श्री अभैसिंघजी पधराया।
श्री म्हादेवजी झरणेश्वर ठेठ सु
श्री पाज रा खेत्रपाल जी ठेठ सु।

श्री नागणेचियां माताजी के साथ हिंगलाज माताजी भी विराजमान हैं, इसका उल्लेख **डॉ. नारायण सिंह भाटी** द्वारा संपादित 'महाराजा तख्तसिंह री ख्यात' में निम्नलिखित प्रकार मिलता है-

"संवत् 1904 माताजी श्री नागणेचियांजी ने हिंगलाज बाड़ी रा महलां में बिराजे सो हमें जनाना में नवा मैल (महल) आगला मिंदरा री पूठ (पीछे) हुआ, जठै श्री माताजी रा सरूप पधारिया जिणारी आज प्रतिष्ठा हुई सु मिंदर तीन हुआ-एक नागणेचियांजी रो, एक श्री हिंगलाजजी रो, एक श्री संभरायजी रो भेळा विराजिया नै आथूणी (पश्चिम) कानी रा मिंदर में श्री महादेवजी, श्री नाथजी नै नव दुर्गा विराजिया, नै मिंदरा रे सोना रा इंडा चाढ़िया।"

भक्ति धाम (अजमेर) में हिंगलाज माता

चारण साहित्य शोध संस्थान अजमेर में भव्य भक्तिधाम के मध्य में हिंगलाज माता की मूर्ति विराजित है। भक्ति धाम में हिंगलाज माता, आवड़ आसापुरा माता, खोड़ीयार माता, अम्बाजी, बरबड़ीजी (अन्नपूर्णा जी), बहुचराय जी एवं करणी माता के विग्रह विराजमान हैं। भक्तिधाम जन आस्था का केन्द्र है। भक्तिधाम का निर्माण ओंकार सिंह लखावत के अध्यक्षीय कार्यकाल में किया गया था।

हिंगलाज माता गेहलपुर (अजमेर)

राजा हमीर के पुत्र गेहल ने अरांई के निकट हिंगलाज माता के मंदिर का निर्माण कराया था। उक्त प्राचीन मंदिर क्षेत्रीय जनता की आस्था का केन्द्र है।

सिन्धुपति सम्राट दाहरसेन स्मृति स्मारक (अजमेर) में हिंगलाज माता

विदेशी आक्रांता मोहम्मद बिन कासिम का 712 ई. में मुकाबला कर राष्ट्र रक्षार्थ प्राण न्यौछावर करने वाले सिंध के शासक दाहरसेन के स्मारक का निर्माण ओंकार सिंह लखावत के नगर सुधार न्यास अजमेर के अध्यक्षीय कार्यकाल में किया गया था। दाहर सेन स्मारक में एक चट्टानी गुफा में हिंगलाज माता का विग्रह स्थापित किया गया है।

हरगंगा (बीजापुर) में हिंगलाज माता

पाली जिले के बाली तहसील में बीजापुर के पास हरगंगा से आगे हिंगलाज माता का प्राचीन मंदिर स्थित है। इस मंदिर में श्रद्धालु बड़ी संख्या में दर्शन करने के लिये आते हैं। यहाँ हिंगलाज माता की मूर्ति पहाड़ की गुफा में विराजित है।

आमेर के शिला देवी मंदिर में हिंगलाज माता

प्रसिद्ध आमेर किले में शिला माता के मंदिर में हिंगलाज माता की मूर्ति विराजित है। उक्त मंदिर का निर्माण राजा मानसिंह ने कराया था। शिला माता के साथ हिंगलाज माता की नियमित पूजा होती है। वर्ष भर में लाखों दर्शनार्थी दर्शन करने आते हैं। जयपुर के कछवाहा वंश के शासक अपनी विजय व सुरक्षार्थ हाथ के चूड़े के अन्दर हिंगलाज माता का स्वरूप धारण करते आये हैं। आमेर मीणा शासकों की राजधानी रही है।

गुड़ा लास में हिंगलाज माता

पाली जिले के बाली कस्बे के आगे गुड़ा लास में हिंगलाज माता का अत्यधिक प्राचीन मंदिर है। यह मंदिर पहाड़ की गुफा में स्थित है। लोक कथा के अनुसार पांडवों ने अज्ञातवाश के समय यहाँ रहकर हिंगलाज माता की अर्चना की थी। इस मंदिर में लाखों की संख्या में यात्री दर्शन करने के लिये आते हैं।

(बाळ रूपा हिंगळाज माता : माणक जनवरी 2010 अंक : डॉ. अर्जुन सिंह शेखावत)

गढ़ीसर (जैसलमेर) में हिंगलाज माता

जैसलमेर के प्राचीन गढ़ीसर में हिंगलाज माता विराजित हैं। यह अत्यधिक प्राचीन मंदिर है और इसकी लोक मान्यता अत्यधिक प्रभावी है। प्रतिवर्ष नवरात्र में हिंगलाज माता के दर्शन के लिये श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ती है।

सिवाना (बाड़मेर) में हिंगलाज माता मंदिर

सिवाना के छपनों के पहाड़ में हिंगलाज माता का कोयलिया नामक गुफा में प्रसिद्ध मंदिर है। इस मंदिर का निर्माण गढ़ सिवाना के राजा वीर सेन द्वारा कराया गया था। प्राचीन काल से यह मंदिर लोक आस्था का स्थान रहा है। राजस्थान में हिंगलाज माता का यह प्राचीनतम मंदिर माना जाता है।

हिंगलाज धाम जसाई

बाड़मेर जिले के जसाई गांव में हिंगलाज माता का अत्यधिक प्राचीन मंदिर है। इस मंदिर में क्षेत्रीय जनता की जबरदस्त आस्था है।

हिंगलाज मंदिर वलदरा

लोक पूज्य देवी मां लूंग बाईसा सिरोही जिले के वलदरा गांव में विराजती हैं। मां लूंग बाईसा आदि सगति हिंगलाज की उपासिका हैं एवं वहीं हिंगलाज माता का मंदिर है।

आसा पूरण आस, हुवै हाजर हिंगलाजरै।
जग दु:ख नासै जास, लूंग भगति प्रभता लखौ।।

हिंगलाज माता मंदिर, जयपुर

आदर्श नगर, जयपुर में ब्रह्म क्षत्रिय समाज द्वारा हिंगलाज माता के विशाल मंदिर का निर्माण करवाया गया। इस मंदिर में हिंगलाज माता का भव्य विग्रह स्थापित किया गया है। प्रतिदिन बड़ी संख्या में श्रद्धालु हिंगलाज माता के दर्शन कर लाभान्वित होते हैं।

पाली में हिंगलाज मंदिर

राजस्थान के पाली जिला मुख्यालय पर पानी दरवाजा स्थित जूना मठ में पूज्य चंदन पुरीजी महाराज द्वारा स्थापित हिंगलाज माता मंदिर क्षेत्रीय जनता का आस्था केन्द्र बना हुआ है। यह मंदिर अत्यधिक प्राचीन है।

जैन तीर्थ ऋषभ देव के निकट हिंगलाज मंदिर

राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या आठ पर उदयपुर जिले के प्रसिद्ध जैन ऋषभ देव मंदिर से 2 किमी. दूर हिंगलाज माता का प्रसिद्ध मंदिर है और क्षेत्र के असंख्य वनवासी श्रद्धालु इसकी उपासना करते हैं। इस मंदिर का निर्माण मुम्बई निवासी सुरेश भाई शाह ने करवाया। प्रत्येक रविवार को इस मंदिर में विशेष पूजा होती है।

ज्वालामुखी पीठ में हिंगलाज

हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले में स्थित शक्तिपीठ ज्वालामुखी में हिंगलाज माता की मूर्ति विराजमान है। ज्वालामुखी के साथ नित्य हिंगलाज माता की पूजा-अर्चना की जाती है। हिमाचल प्रदेश में हिंगलाज माता के प्रति श्रद्धालुओं की बड़ी आस्था है। अनेक धर्म ग्रंथों में ज्वालामुखी के साथ-साथ हिंगलाज का उल्लेख मिलता है। हिंगलाज के हिमाचल प्रदेश के श्रद्धालुओं मिले परचे-परवाड़े एवं दंत कथायें प्रसिद्ध हैं।

हिंगलाज मढ़ कोलायत (बीकानेर)

कपिल मुनि की तपस्या स्थली कोलायत के निकट हिंगलाज माता का मढ़ प्राचीन काल से श्रद्धा का केन्द्र बना हुआ है। इस मंदिर में नियमित पूजा होती है और बड़ी संख्या में श्रद्धालु अपनी आस्था प्रकट करने आते हैं।

बुधगिरि मढ़ी में हिंगलाज मन्दिर

इष्ट देवी हिंगलाज के दर्शनों से बुधगिरि अत्यंत प्रसन्न हुये और उन्होंने अपने हाथों से हिंगलाज माता की प्रतिमा नवरात्र में अष्टमी के दिन बुधगिरि की मढ़ी (फतेहपुर, शेखावटी) में स्थापित की। उक्त मन्दिर में गत दो सौ वर्षो से प्रतिदिन हिंगलाज माता के समक्ष अखण्ड ज्योति जलती है।

जारोड़ा की हिंगलाज माता

नागौर जिले के मेड़ता तहसील के जारोड़ा गांव में पांच हजार बीघा ओरण में तालाब के बीच हिंगलाज माता का मंदिर बना हुआ है। इसकी स्थापना विक्रम संवत 1068 में गुहिल वंश के शासकों के द्वारा की गई।

गंगारड़ा में हिंगलाज

नागौर जिले के मेड़ता तहसील के गांव गंगारड़ा में तालाब के किनारे हिंगलाज माता का मंदिर बना हुआ है। हिंगलाज माता की पूजा गोरख पंथी पुजारी करते है। यह स्थान मारवाड़ और मराठों के बीच युद्ध स्थली रहा है।

राव देवा व मीणा शासकों की राजवंशीय देवी हिंगलाज

बून्दी राज्य के शासक राव देवा (सन् 1242-1244) ने अपने दो पुत्रों हरराज और समरसी को बम्बावदा और बून्दी के राज्य को सौंपकर उमरथूना में संन्यासी के रूप में मृत्यु तक रहा। उमरथूना में दक्षिणी पर्वत शिखर पर हिंगलाज माता का मंदिर है और इसी मंदिर में रहकर राव देवा ने अपना संन्यासी जीवन व्यतीत किया। उपरोक्त हिंगलाज माताजी बूंदी राज्य के मीणा शासकों की राजवंशीय देवी थी, जो बाद में अन्य जातियों की भी आराध्य बन गई।

हिंगलाज स्वरूपा श्री वीरी माँ का राणा सांगा को वरदान

उदयपुर जिले के मावली तहसील के भीमल चारणान गांव में हिंगलाज स्वरूपा अवतरित श्री वीरी माँ का प्राचीन मंदिर है। पूज्य वीरी माँ हिंगलाज माँ की उपासिका थी और वचनसिद्ध थी। इसी लोक आस्था के कारण राणा सांगा और उनके भाई पृथ्वीराज के बीच महाराणा बनने के विवाद का निर्णय इसी देवी के मंदिर में हुआ और राणा सांगा के मेवाड़ के शासक बनने की भविष्य वाणी हुई।

महाराणा प्रताप के शस्त्रागार में हिंगलाज माता

महाराणा प्रताप के शस्त्रागार मायरा की गुफा में हिंगलाज माता का मंदिर था और उसकी नियमित पूजा होती थी। अभी भी गुफा मंदिर के प्रतिक विद्यमान है।

राव समाज की कुलदेवी हिंगलाज

उदयपुर जिले के मावली तहसील के गांव मेडता स्थित हिंगलाज माता को राव समाज अपनी कुलदेवी मानते हैं और इसकी नियमित पूजा करते हैं।

लोहार समाज की कुलदेवी हिंगलाज

उदयपुर जिले के मावली तहसील के बड़ियार गांव के नजदीक गारवियावास में मुख्य सड़क पर हिंगलाज माता का मंदिर है। यह लोक आस्था का केन्द्र है। लोहार समाज अपनी कुलदेवी मानते हुए इसकी पूजा करते हैं।

गोपाल प्रसाद गढ़ा में हिंगलाज

हिंगुला माता का उड़ीसा के अनुगुल जिले में गोपाल प्रसाद गढ़ा में भव्य मंदिर है और शक्तिपीठ के रूप में पूजा होती है। यह स्थान तालचेर से 14 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। प्रतिवर्ष चैत्र शुक्ल चतुर्दशी के दिन हिंगलाज माता के विशेष दर्शन होते हैं और वहाँ जोत प्रज्वलित होती है। जगन्नाथ यात्रा की तरह हिंगुला यात्रा निकलती है, जो गोपाल प्रसाद से हरे कर्म स्थली पहुँचती है।

दिल्ली में श्री हिंगलाज माँ

मधु विहार दिल्ली में माँ हिंगलाज भवानी मंदिर स्थापित है। द्वारका शारदा पीठाधीश्वर जगदगुरु शंकराचार्य स्वामी श्री स्वरूपानन्द जी सरस्वती के आशीर्वाद से उनकी शिष्या श्रीमती राधा शर्मा द्वारा संचालित हिंगलाज भवानी मंदिर श्रद्धालुओं के आस्था का केन्द्र है। इस मंदिर में काले पत्थर का श्री हिंगलाज माँ का विग्रह विराजित है।

नारायणा में हिंगलाज माता

दिल्ली के नारायणा क्षेत्र में ऐतिहासिक प्राचीन श्रीराम द्वारा में हिंगलाज देवी मंदिर स्थापित है। सन् 1448 में तंवर राजर्षि परम पूज्य बाबा रामदेव जी महाराज ने यहाँ चौमासा व्यतीत किया था। इस मंदिर का निर्माण सन् 1448 में हुआ। इस मंदिर में हिंगलाज माता का विग्रह स्थापित है। यह मंदिर अत्यधिक प्राचीन है और लोक आस्था का प्रमुख केन्द्र है।

बड़ौदा में हिंगलाज माता

गुजरात के बड़ौदा शहर में सरकारी गोदाम के पास हिंगलाज माता का शताब्दियों पुराना प्राचीन मंदिर है। यह मंदिर बड़ौदा और उसके आसपास के क्षेत्र के श्रद्धालुओं की आस्था का केन्द्र है। इस मंदिर की पूजा कनुपुरी, सोमपुरी, गोस्वामी के परिवार के सदस्य अनेक पीढ़ियों से कर रहे हैं।

जाबुंडा में हिंगलाज माता

गुजरात के जाबुंडा (जाम नगर) गांव में हिंगलाज माता का लोक पूज्य मंदिर अवस्थित है। जाबुंडा में लाम्बा शाखा के चारण पुराने समय से रह रहे हैं और वहाँ हिंगलाज माता का मंदिर स्थापित है। यह मंदिर प्राचीन है।

हिंगलाज माता मंदिर आशापुरा मढ़ (कच्छ, गुजरात)

कच्छ के आवेल मढ़ गाँव के चौक में हिंगलाज माता का मंदिर में हंसवाहिनी हिंगलाज माता का विग्रह स्थापित है। कच्छ के लोगों की मान्यता है कि हिंगलाज माता मनुष्यों की तमाम मनोकामना पूर्ण करती हैं। हिंगलाज माताजी ने अनेक भक्तों को 'परचे' दिये।

ब्रह्मक्षत्रिय, भावसार, भानुशाली व हिंगलाज

ब्रह्मक्षत्रिय समाज/खत्री समाज व भानुशाली समाज के विवाह एवं सभी शुभ कार्य हिंगलाज माता की आराधना से प्रारम्भ होते हैं। हिंगलाज माता उनकी कुलदेवी है। उन्होंने अपनी आवासीय क्षेत्रों, नगरों एवं गांवों में हिंगलाज माता के स्थान-स्थान पर सैकड़ों मंदिर बना रखे हैं।

चन्द्रला परमेश्वरी स्वरूपा हिंगलाज

चन्द्रला परमेश्वरी स्वरूपा हिंगलाज का मंदिर कर्नाटक राज्य के गुलबर्गा के निकट स्थित है। यह अत्यधिक प्राचीन एवं ऐतिहासिक मंदिर है, यहां हिंगलाज माता की चंद्रलाम्बा देवी के नाम से पूजा होती है। कर्नाटक प्रांत और उसके आस-पास से लाखों श्रद्धालु दर्शनार्थ आते हैं।

बाड़ी बरेली की हिंगलाज माता

मध्यप्रदेश के रायसेन जिले के बाड़ी बरेली में हिंगलाज माता का भव्य मंदिर लोक आस्था का केन्द्र है। इस मंदिर का निर्माण 1543 ई. में तत्कालीन शासकों द्वारा कराया गया था।

हिंगलाजगढ़ (मध्य प्रदेश)

मध्य प्रदेश के मंदसौर जिले के भानपुरा तहसील के नावली गांव स्थित हिंगलाज गढ़ (हिंगलाज किला) में हिंगलाज माता का मंदिर अवस्थित है। यह अत्यधिक प्राचीन मंदिर है। हिंगलाज माता वहाँ के मौरी शासकों की कुलदेवी होने के कारण उक्त किले में हिंगलाज माता की मूर्ति विराजमान की गई। हिंगलाजगढ़ किला लगभग 800 वर्ष पूर्व अत्यधिक कलात्मक रूप से निर्मित किया गया था। हिंगलाजगढ़ वाले स्थान को पहले हिंगलाज टेकरी के नाम से जाना जाता था।

हिंगलाज माता मंदिर इंदौर

विदुषी अहिल्या बाई की नगरी इंदौर में सोमवंशीय सहस्त्रार्जुन क्षत्रिय समाज की कुलदेवी के रूप में हिंगलाज माता मंदिर नन्दलालपुरा इंदौर में पूजित हो रहा है। यहाँ प्रतिवर्ष भव्य फूल बंगला, भजन, अन्नकूट महोत्सव, महाआरती आदि का आयोजन होता है। इंदौर में माँ हिंगलाज देवी नवयुवक मंडल का भी गठन हो रखा है। अनेक समाजों के श्रद्धालु हिंगलाज माता के दर्शन करने के लिये आते हैं।

उज्जैन में हिंगलाज माता

उज्जैन में हिंगलाज माता मंदिर अत्यधिक प्राचीन मंदिर है। यह मंदिर सखीपुरा, इन्दौरी गेट के निकट बना हुआ है। यह सौमवंशीय सहस्त्रार्जुन क्षत्रिय समाज द्वारा संचालित है। हिंगलाज माता का समारोह अत्यधिक उत्साह के साथ आषाढ़ सुदी २ को मनाया जाता है। सिख समाज, सिन्धी समाज एवं अन्य श्रद्धालु माताजी को पूजते हैं। इस मंदिर में त्रिशूल रूपा हिंगलाज माता विराजमान हैं।

खण्डवा में हिंगलाज माता मंदिर

खण्डवा में हिंगलाज माता मंदिर मालियों के कुएँ के पास प्राचीन काल से लोक आस्था का प्रमुख केन्द्र है। यहाँ हिंगलाज माता का शेषनाग से लिपटा हुआ विग्रह है। भावसार समाज की कुलदेवी के रूप में यह विग्रह स्थापित किया गया था। श्रद्धालुओं ने इस मंदिर को भव्य स्वरूप देने का काम किया है। बड़ी संख्या में श्रद्धालु हिंगलाज माता के दर्शन करने आते हैं।

निजामाबाद में हिंगुलाम्बिका देवी

निजामाबाद शहर में हिंगुला देवी का प्राचीन मंदिर है। यह मंदिर लोक आस्था का प्रमुख केन्द्र है। अल्लाह सानी पेद्दना ने अपनी कृति 'सर्व भीष्म' में इस मंदिर की प्राचीनता एवं प्रसिद्धि के बारे में विस्तार से उल्लेख किया है।

बुद्ध गुफा एवं हिंगलाज

राष्ट्रीय समुद्रीय पुरातत्व अनुसंधान केन्द्र गोवा की विशेषज्ञ शिला त्रिपाठी के अनुसार भारत के पश्चिमी समुद्री तट पर स्थित चोल से दक्षिण-पूर्व में एक किलोमीटर दूर पर्वतीय बुद्ध गुफाएं अवस्थित हैं और इनमें से एक गुफा में हिंगलाज माता का पवित्र स्थान विद्यमान है।

(Iron age/early historical port sites of the Indian coastal lands.. Dr. Sunil Gupta Allahabad Museum India) Photo : Neeraj Thakur

यवतमाल में हिंगलाज मंदिर

महाराष्ट्र के यवतमाल में हिंगलाज माता का प्राचीन मंदिर है। इस मंदिर में श्रद्धालुओं की प्रगाढ़ आस्था है। प्रतिवर्ष लाखों भक्त माता के दर्शन करते हैं।

अध्याय : सात

पाकिस्तान में हिन्दू आस्था केन्द्र

पाकिस्तान के हजारों धार्मिक स्थानों में से प्रमुख स्थान शक्तिपीठ **हिंगलाज**, कटास राज मंदिर, ननकाना साहिब, तक्षशिला, साधुबेला, दरबार साहिब हालानी, खारोड़ा की देवल मां एवं टीला जोगियान हैं।

कटासराज

कटासराज मंदिर प्राकृतिक दृष्टि से भगवान शिव का मनोरम पूजा स्थल पाकिस्तान के पंजाब प्रान्त के चकवाल जिले के कटास गाँव में स्थित है। **कटासराज** मंदिर में महाभारत काल में पांडवों ने अपना अज्ञातवास व्यतीत किया था। उक्त मंदिर

का पाकिस्तान सरकार ने जीर्णोद्धार भी कराया है। पाकिस्तान सरकार की इच्छा है कि **कटासराज** मंदिर को विश्व धरोहर के रूप में सूचीबद्ध किया जाये।

ननकाना साहिब

सिख पंथ के पहले गुरु **गुरुनानक देव जी** का जन्म सन् 1669 में लाहौर से 75 कि.मी. दूर ननकाना साहिब में (अब पाकिस्तान में स्थित है।) हुआ था। उनके जन्म के समय उनकी जन्म स्थली वाले गांव का नाम 'राय भोई दी तलवंडी' था। मई 2005 से पाकिस्तान सरकार ने ननकाना साहिब को जिले का दर्जा दिया है। इस क्षेत्र में अनेक प्रसिद्ध गुरुद्वारे हैं। पांचवें गुरु अर्जुन देव जी एवं छठे गुरु हरगोविन्द जी ने भी ननकाना साहिब की यात्रा कर दर्शन किये थे। ननकाना साहिब सम्पूर्ण विश्व में विराट् समाज का तीर्थ स्थल है।

साधुबेला

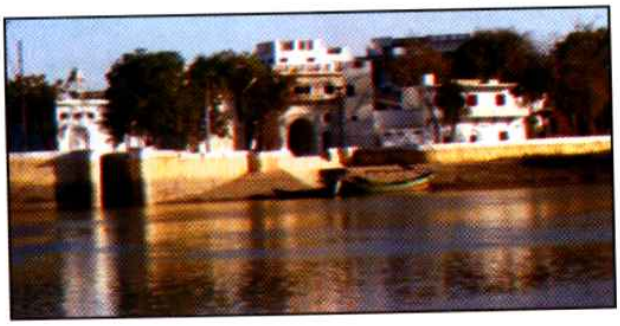

साधुबेला सिंधु नदी के प्रवाह से घिरा हुआ सक्खर के एक मनोरम टापू पर सफेद संगमरमर से बना हुआ धार्मिक और ऐतिहासिक दर्शनीय स्थल

है। स्वामी वनखण्डी महाराज उदासीन ने 1823 में इसकी स्थापना की थी। लोक मान्यता के अनुसार देवी अन्नपूर्णा की कृपा से वनखण्डी महाराज का कमण्डल चामत्कारिक रूप से अन्न की पूर्ति करता था। साधुबेला में 24 घण्टे धूणी प्रज्वलित रहती है और श्रद्धालु उसकी परिक्रमा कर अपनी मन्नत की पूर्ति के लिए प्रार्थना करते हैं। वर्ष भर में देश-विदेश से लाखों श्रद्धालु साधुबेला के दर्शन करने आते हैं।

दरबार साहिब हालानी

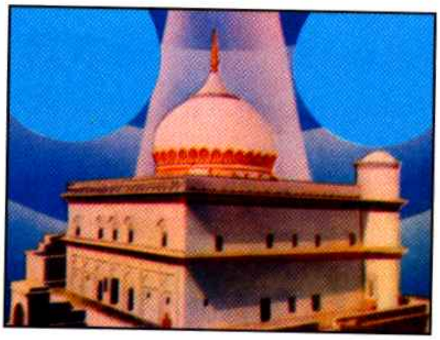

दरबार साहिब हालानी की स्थापना सन् 1787 में बाबा सुखदेव साहिब द्वारा जिला नवाब शाह के हालानी गांव में की गई। हालानी दरबार में वैशाखी और चाँद के दिन विशाल मेले का आयोजन होता है। यहाँ प्रतिदिन लंगर वितरण होता है। खैरपुर मीर के सोराब खां हालानी दरबार के दर्शन कर अत्यधिक प्रभावित हुये। उन्होंने श्रद्धा से 30 एकड़ भूमि हालानी दरबार को भेंट कर निवेदन किया कि उससे होने वाली उपज से श्रद्धालुओं के नि:शुल्क लंगर की व्यवस्था की जावे। हालानी दरबार की गद्‌दी पर बाबा किशनदास साहिब, बाबा हरिदास साहिब, बाबा मेहर बक्ष साहिब विराजे थे।

तक्षशिला

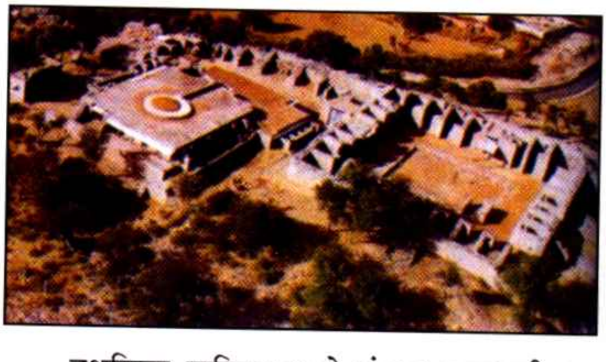

तक्षशिला पाकिस्तान के पंजाब राज्य की राजधानी इस्लामाबाद से 32 किलोमीटर दूर है। तक्ष्य भगवान राम के छोटे भाई भरत के पुत्र थे। पौराणिक कथाओं के अनुसार महाभारत का प्रथम वाचन तक्षशिला में वेद व्यास के शिष्यों ने किया था।

जनमेजय द्वारा लगातार 12 वर्ष तक किये गये सर्प-सत्र यज्ञ के आयोजन के अवसर पर महाभारत पारायण का उल्लेख मिलता है।

तक्षशिला विश्व की पुरामहत्व की प्राचीनतम धरोहर और शिक्षा के प्रमुख केन्द्र के रूप में जानी जाती है। वहाँ तक्षशिला विश्वविद्यालय स्थापित है। प्राचीन काल में तक्षशिला व्यापार के 3 प्रमुख मार्गों का केन्द्र बिन्दु रहा है, जो पाटलिपुत्र, पेशावर, काश्मीर और मध्य एशिया में श्रीनगर, मनसहरा एवं हरिपुर घाटी के मध्य से गुजरता था। तक्षशिला के प्राचीन बौद्ध स्तूप आज भी विश्वभर के श्रद्धालुओं के दर्शन और आस्था के केन्द्र बने हुये हैं।

टीला जोगियान

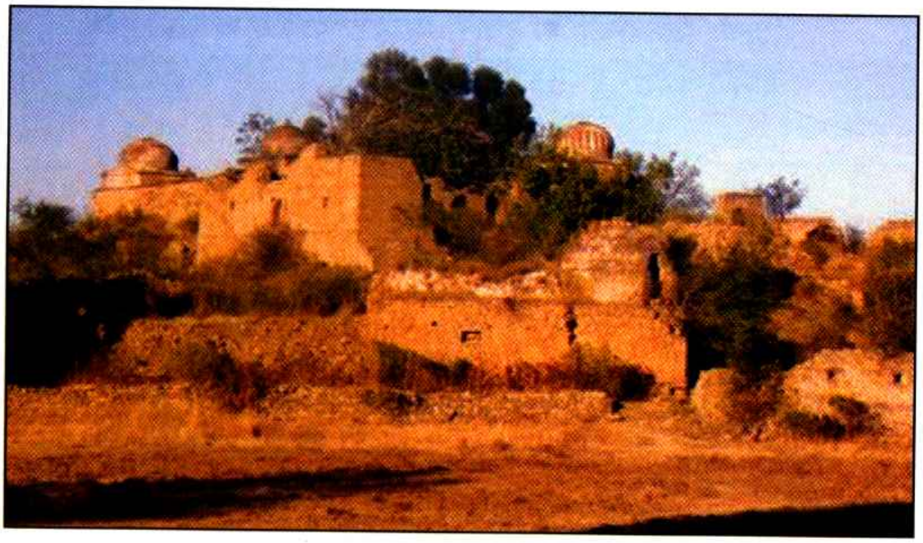

टीला जोगियान पंजाब, पाकिस्तान के पूर्वी नमक क्षेत्र में समुद्र तल से 3200 फुट ऊँचाई पर झेलम शहर के पश्चिम में 25 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। यह स्थान लगभग 4000 वर्षों से हिन्दुओं द्वारा सूर्य पूजन के रूप में उपयोग होता आ रहा है। गुरु गोरखनाथ जी टीला जोगियान पधारे थे। कनफट नाथ सम्प्रदाय का यह प्रथम प्रमुख केन्द्र रहा है। टीला जोगियान ईसा से लगभग 100 वर्ष पूर्व भी निर्मित था। यह कनफटा जोगियों द्वारा गुरु गोरख नाथ के आदेश से पूजित होता है। यहाँ गुरु नानक देव जी ने भी अपने 40 दिन साधना में बिताये थे। महाराजा रणजीत सिंह के शासन काल में वहाँ एक बावड़ी भी इस स्मृति में निर्मित की गई। बादशाह जहाँगीर एवं पूर्व प्रधानमंत्री नवाब शरीफ भी वहाँ अपनी आस्था प्रकट करने गये थे।

खारोड़ा की देवल माँ

उमरकोट जागीर व उमरकोट शहर के बीच चारणों के खारोड़ा गांव के तीन

हजार बीघा के विशाल ओरण के बीच लोक पूजित देवल माँ का 'थान' है। देवल माँ को आवड़ आशापुरा माता का अवतार माना जाता है। इस सम्बन्ध में एक दोहा लोक प्रचलन में है–

बहचर बूट जिसी खट बेटी, आप प्रतख आवड़ अवतार।
'दुलौ' सकव कहै मां देवल, परवाड़ा पावै कुण पार।।

स्वामी नारायण मन्दिर

कराची में हिन्दू समाज की सामाजिक व धार्मिक गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र **स्वामी नारायण मन्दिर** है। नित्य प्रति सैकड़ों श्रद्धालु दर्शन करते हैं। मन्दिर परिसर में गुरुद्वारा, शिव मन्दिर भी स्थापित हैं। यहां धर्मशाला, आवास व समारोह के लिए पर्याप्त स्थान उपलब्ध है। पाकिस्तान हिन्दू कौंसिल स्वामी नारायण जयंती, रामनवमी, जन्माष्टमी, दशहरा, होली एवं दिवाली समारोह सम्पन्न कराती है। इसी मन्दिर से हिंगलाज यात्रा प्रतिवर्ष प्रारम्भ होती है। हिंगलाज सेवा मंडली कार्यालय भी इसी परिसर में स्थित है।

लक्ष्मी नारायण मन्दिर

हमारे तीर्थ यात्री दल ने समुद्र किनारे स्थित विशाल घाट पर लक्ष्मीनारायण मन्दिर के दर्शन किये। घाट के मुख्य द्वार पर अंग्रेजी में 'This Ghat is reserved for Hindu Man' का शिलालेख लगा हुआ है।

इस घाट पर खोड़ियार माता और अन्य हिन्दू देवी-देवताओं की मूर्तियाँ व चित्र लगे हुए हैं। इस घाट का उपयोग हिन्दू समाज के लोग अपने धार्मिक क्रिया-कर्म के लिए करते हैं।

रत्नेश्वर महादेव मन्दिर

रत्नेश्वर महादेव मन्दिर कराची का भव्य मुख्य द्वार जोधपुर के छितर पत्थर का बना हुआ है। इस मन्दिर में हिन्दू देवी-देवताओं की भव्य मूर्तियां स्थापित हैं। इस मन्दिर में शेषनाग पर विराजमान भगवान विष्णु, लक्ष्मी जी, गणेश जी, सीताराम, चामुण्डा माता एवं शिव परिवार आदि की मूर्तियां स्थापित हैं।

पंचमुखी हनुमान मन्दिर

यह मन्दिर अत्यधिक आकर्षक एवं भव्य पंचमुखी हनुमान जी की मूर्ति से सुशोभित है। सैकड़ों श्रद्धालु प्रतिदिन इस मन्दिर के दर्शन करने आते हैं।

हिंगलाज दर्शन एवं स्मरण

1. गुरु नानक देव जी, गुरु श्री गोविन्दसिंह जी एवं हिंगलाज

प्रथम सिख गुरु श्री नानक देव जी ने प्रसिद्ध तीर्थ स्थलों की यात्रा के दौरान **हिंगलाज** यात्रा कर देवी के दर्शन किये थे। सिख साहित्य में उपलब्ध विवरण के अनुसार गुरु नानक देव जी की यह यात्रा तलवंडी से प्रारम्भ हुई थी और वे तलवंडी से लाहौर, दीपालपुर, पाक पट्टन, उच, सक्खर, हैदराबाद, लखपत, कराची, सोनमिआणी होते हुये **हिंगलाज** पहुँचे।

गुरु नानक देव जी की उक्त यात्रा की स्मृति में **हिंगलाज** के नजदीक नानक धर्मशाला का उनके अनुयायियों ने निर्माण कराया। श्री फोजा सिंह एवं श्री किरपाल सिंह द्वारा लिखित एवं पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला द्वारा प्रकाशित 'ATLAS TRAVELS OF GURU NANAK' में यात्रा का वर्णन (THIRD UDASI) FROM TALWANDI TO HINGLAJ अध्याय में निम्नलिखित प्रकार उल्लेखित है– "From here Guru Nanak proceeded westward and reached the port of Sonmiani or simply Miani, 50 miles west of the modern port of Karachi. At a few miles distance to the north of Miani was the famous Hindu temple of **Hinglaj** on the bank of the **Hinglaj** river. The temple was dedicated to the goddess called Kali Mata by the Hindus and Nani Devi by the Muslims. According to Meharban's account, the Guru, while on the way to Mecca, paid a visit to this temple. Not far from Hinglaj there is a Nanak Dharamshala set up in honour of the Guru's visit."

उक्त पुस्तक में गुरु नानक देव जी की तलवंडी से हिंगलाज यात्रा का मानचित्र संख्या 18 प्रकाशित है।

गुरुनानक देव की हिंगलाज यात्रा का नक्शा

ਤਲਵੰਡੀ ਤੋਂ ਹਿੰਗਲਾਜ ਤਕ

ਨਕਸ਼ਾ ਨੰ. 18

Map No. 18

FROM TALWANDI TO HINGLAJ

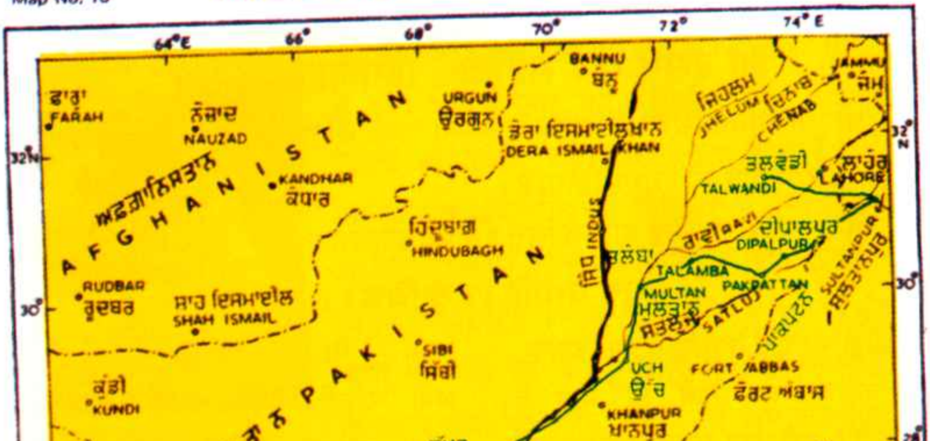

PLACES VISITED BY THE GURU ARE SHOWN IN GREEN

ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਥਾਵਾਂ ਵਿਚ ਗੁਰੂ ਸਾਹਿਬ ਗਏ ਉਹ ਹਰੇ ਰੰਗ ਵਿਚ ਵਿਖਾਈਆਂ ਗਈਆਂ ਹਨ ।

BASED UPON SURVEY OF INDIA MAP WITH THE PERMISSION OF THE SURVEYOR GENERAL OF INDIA.
THE SPELLINGS OF THE NAMES APPEARING ON THIS MAP HAVE BEEN TAKEN FROM VARIOUS SOURCES.

GOVERNMENT OF INDIA COPYRIGHT (1962)

श्री दसम ग्रंथ साहिब : हिंगलाज के छंद

श्री गुरु गोविंद सिंह जी साहिब ने अपनी वाणी श्री दसम ग्रंथ साहिब के अकाल उसतत में **हिंगलाज** को स्मरण किया है।

हिंगलाज के उल्लेख वाले कवित्त एवं छंद इस प्रकार हैं–

त्व प्रसादि।। कवित्त।।

''पूरबी न पार पावैं **हिंगुला** हिमालै ध्यावै,
गोर गरदेजी गुन गावै तेरे नाम है।
जोगी जोग साधै पउन साधना कितेक बाधै,
आरब के आरबी अराधै तेरे नाम हैं।
फरा के फिरंगी मानै कंधारी कुरेसी जानै,
पच्छम के पच्छमी पछानै निज काम हैं।
मरहटा मघेले तेरी मन सों तपसिआ करै,
दिड़वै तिलंगी पहचानै धरम धाम हैं।''।।२५४।।
बिस्व को भरन हैं कि अपदा को हरन हैं,
कि सुख को करन हैं कि तेज को प्रकास हैं।
पाईऐ न पार पारावार हूँ को पार जा को,
कीजत बिचार सु बिचार को निवास हैं।
हिंगुला हिमालै गावै हबशी हलब्बी ध्यावै,
पूरबी न पार पावै आसा ते अनास हैं।
देवन को देव महादेव हूँ के देव हैं,
निरंजन अभेव नाथ अद्वै अबिनास हैं।।२६२।।

'महा भैरवी भूतनेसुरी भवानी।
भवी भावनी भबियं काली क्रिपाणी।।
जया आजया **हिंगुला** पिंगुला है।
सिवा सीतला मंगला तोतला है।।४२६।।
भीमड़ा समदड़ा **हिंगला** कारत की।
सुप्रभा अछिद्रा अघरा भारती।।
गिंगली **हिंगली** ढिंगली पिंगला।
चिकणी चरकटा चरपटा चावंडा।।६६।।
भावना मै हरी भूतिली मैहरा।
टाकणी झाकणी साकणी सिंघुला।।
दुघरा दुमखा टुकट्टा दुघरी।
क्मपिला ज्मपिला **हिंगुला** मैहरी।।६४।।
ठिंगुला **हिंगुला** पिंगुला प्रासणी।
श्सत्रणी असत्रणी सूलणी सासणी।।
कंतिका अंतिका घंनिका घउलरी।

2. शिव स्वरूप बाबा श्री चन्द्र जी, उदासीन मत व हिंगलाज

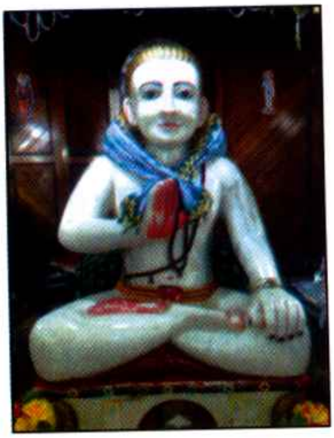

बाबा श्री चन्द्र जी

प्रथम गुरु नानक देव जी के बड़े पुत्र श्री चन्द्र जी ने उदासीन मत को जग प्रभावी बनाया। सिंध के नगर ठट्ठा में आप धूनिआं तपा कर विराजे। सरदार धन्नासिंह रंगीला की पुस्तक 'जन्म साखी बाबा श्री चन्द्र जी' के अनुसार एक बार मगध देश के एक गिरि संन्यासी अपने 360 साधु शिष्यों को लेकर हिंगलाज माता के दर्शनार्थ जाते हुये नगर ठट्ठा में बाबा श्री चन्द्र जी के धूने पर ठहरे। बाबा श्री चन्द्र जी ने उस गिरि संन्यासी को साक्षात् हिंगलाज देवी के दर्शन कराये एवं चमत्कृत किया। बाबा श्री चन्द्र जी को हिंगलाज माता से सिद्धि प्राप्त थी।

महंत श्री हंसराम जी महाराज हिंगलाज (ब्लूचिस्तान) की पूजा करते हुए

हिंगलाज माता के दर्शन कर पधारे हरि सेवा धाम उदासीन आश्रम, भीलवाड़ा के महंत स्वामी श्री हंसराज जी महाराज के अनुसार सम्पूर्ण भारतीय उप महाद्वीप में बाबा श्री चन्द्र जी के उदासीन मत को जनमानस में विस्तृत करने का कार्य प्रभावी रूप से संचालित हो रहा है। उदासीन मतावलम्बी हिंगलाज माता के प्रति शताब्दियों से अगाध श्रद्धा रखते आ रहे हैं।

''धर्मचन्द्र प्रतिपालन हारे, वेदी वंश अंश उजियारे।
हिंगलाज देवी जग जानी, सभी भवन में पूजे भवानी।।''

3. गुरु गोरखनाथ, नाथ सम्प्रदाय एवं हिंगलाज माता

नाथ सम्प्रदाय की **हिंगलाज** माता इष्ट देवी हैं। गुरु गोरख नाथ की हिंगलाज यात्रा का उल्लेख अनेक ग्रंथों में मिलता है। 'गोरख चरित्र' के अनुसार- "**हिंगलाज** गांधार आदि तीर्थ स्थानों का परिभ्रमण करते हुये एक समय महायोगी गोरखनाथजी ने अपने शिष्य सुखीरामनाथ और सूर्यमलनाथ के साथ हिमालय के समीपवर्ती क्षेत्र में प्रवेश किया।" 'गोरखपुराण' के अनुसार- "अजायानाथ नामक योगी बहुत पहुंचा हुआ संत था। उसने गोरखनाथ जी से भेंट की और अधिकारी समझ कर गोरखनाथ ने उन्हें अपने साथ लिया और भ्रमण करते हुये समुद्र तट पर घूमते हुये हिंगलाज पर्वत जा पहुंचे।" गोरखनाथियों की हिंगलाज यात्रा का वर्णन अंग्रेज लेखक रोज ने यों किया- "Hing Laj the last holy place of the Hindus towards the west, is visited by Gorakhnathis. They consider that a pilgrimage to this place is necessary for all who wish to perfect themselves and to become adepts in Yoga."

महंत श्री चांदनाथ जी
अस्तल बोहर

अखिल भारतीय नाथ सम्प्रदाय के उपाध्यक्ष बाबा श्री चांदनाथ जी के अनुसार गुरु गोरखनाथ जी ने बलूचिस्तान स्थित हिंगलाज माता के दर्शन कर तपस्या की थी। प्राचीन काल से हिंगलाज नाथ सम्प्रदाय की इष्ट देवी होने के कारण प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में नाथ योगी हिंगलाज यात्रा किया करते थे। जोगी टीला नाथ सम्प्रदाय का प्रमुख केन्द्र रहा है।

दादा मत्स्येन्द्रनाथ तथा गुरु गोरख नाथ ने **हिंगलाज** माता की शक्ति के ऊपर योग शक्ति से विजय पाकर हिंगलाज को वचनबद्ध किया था कि हमारे नाथ सम्प्रदाय के किसी भी शाबर तन्त्र मन्त्र विधि विधान में सहायता करनी होगी, अत: **हिंगलाज** शक्ति सहयोग के लिये उसके नाम से यहाँ ज्योत (मन्त्र द्वारा) चेतन की जाती है।

हिंगोल मन्त्र जाप

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ सिद्धों पहला नाम ध्रपदा दूजा नाम मादका तीजा नाम जन्माष्टमी। चौथा नाम वसुन्धरा। पांचवां नाम पंचकर्ता। छठा नाम ब्रह्मचण्डी। सातवां नाम शिव कुमारी। आठवां नाम अष्टभुजा। नौवां नाम नौ करोड़ दुर्गा दसवां नाम सिंहरुप भवानी। इतिक द्वादश पढ़न्ते सो बाला गोरक्ष जती अगल पत्त **हिंगलाज** देवीं सुर नर मुनि जोगेश्वर ध्यावे। छप्पन करोड़ घोल मंगल चामुण्डा गावे। ब्रह्मा पुरे वेद, इन्द्र आरती उतारे मेघमाला पानी भर लावे औघड़ जोगी नौ ग्रह करे। एकोत्तर सौ क्रिया ले धरे। भवन भवन ते मौरी माय, तीन भवन सेवा करे। भल आये भल आयसी। भाग प्राप्त पायसी कुण्डी हर कुण्ड कपाट। सुराहन्दा पुरसिया सुराहन्दा काम। चलो समुन्द्र तीर्थो जाप जपे मात **हिंगलाज**। ह: ह: जरनी जैह करनी, धूपक ध्यानक मंजक पूजा। मनकी मनसा देवी, जालफा पूरे। लालो जसो दोनों अगबानी। भूखा भोजन, प्यासा पानी। जंगल जंगल आवा दानी। सिंह रुप में कैलाश पर्वत धिरानी। तू भय जागे तू भय सोवे, तू भये जल रुपा न धोवे। काश्मीर में कैलास नगर कोट ज्वाला। डाकनी, शाकनी, मारनी, तारणी, देव-दानव, तत्व माता एक दुर्गा दूसरी विधाता वेगर वेगर को ध्याऊँ आद भवानी दुर्गा को ध्याऊँ। दुर्गा माता हो प्रचण्ड। मावस ऊपर पड़वा ढले। असंख्य भुजा देव को चढ़े। मुनि मन मेखला किया। नाद सिंगी मिल भीम को दिया। गर्जी देवी असुर संहारा बंकासुर का किया संहारा। पांच पांडवा चण्डी ध्याई, नव बल वीरा सवा पर्वत में नाथ कबीरा। जहां बैठा राम लखन दो भाई। जालत जालत जले पियाला जलो बमें राजा रावण ने मारा। उठो सहोदरों मिल गावो गीता। जलो बमें राजा राम जीता। मारा खप्पा जीता राम है। देव गणेश की भेंट मनावा। सो भल विद्या पहली पावा, जा घर चण्डी पाती सारा। जा घर मण्डिया तुरी तपारा। जै चण्डी की सुमिरन करे। बला जोगी नागा भूखा कदेन रहै। चण्डी है तू चरपट नारी। ताते लोह घड़े लुहारी। मैं जानूं देवी मर्म तुम्हारा। उत्तर खण्डे से चण्डी आई। हाथा कंगन पगाँ नैवर। हाथ त्रिशुल है, है करनी। जैह: जरनी मरे मुशाना रक्षा करनी घाटे वाटे रक्षा करनी। बाल बच्चे प्रतिपाल करनी। घाटे बाटे अविचल जागे। नगर कोट-माहामाई। गोरक्षवटी गोरक्ष जागै। टीले बालक नाई। ओरनी साधा के आई। मातलोक को सक्खो पर्वत माय छिपाई। हेरी शंकर नाथ द्वादश बाहर पाई। बन खण्ड

की ज्योत में शून्य के तीर में। **हिंगलाज** से उतारे। तीस भान तीस भाई। कहो सिद्धों **हिंगलाज** कहां रहती है? कहां **हिंगलाज** का वास है? कैसे **हिंगलाज** का वरण है? गगन मण्डल **हिंगलाज** रहती है शून्य मण्डल में वास है। हिरया **हिंगलाज** का वरण है। अनभया सिर बाजे वीणा। जौ परमाण देवरा। तिल परमान किवाड। हृदय में जाप जपो। इनविधि हिंगोल जप सम्पूर्ण भया। अनन्त करोड़ सिद्धों में गादी बैठ गुरु गोरक्षनाथ जी ने कहाया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

योगी श्री विलासनाथ ने अपनी पुस्तक 'श्रीनाथ सिद्धों की शंखढाल' में नाथ और हिंगलाज के बारे में विस्तार से प्रकाश डालते हुये ज्योत मन्त्र का उल्लेख इस प्रकार किया है-

हिंगलाज माता की ज्योत जगाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ पश्चिम दिशा से जोगण आयी दो कर जोड़ आगे ब्रह्मा विष्णु महेश पीछे देवी देवता तैतीस करोड़, करे सेवा पूजा आरती धूप ध्यान जपो तपो **श्री हिंगलाज माया**, ओं जुगजुग मध्ये काहे का तेरा दीवड़ा, काहे की तेरी बात, काहे के सिंहासन बैठे गुरु गोरक्षनाथ। ॐ गुरुजी जुग जुग मध्ये सत्त का दीवड़, सत की तेरी बात सत्त के सिंहासन बैठे गुरु गोरक्षनाथ। पैल ओंकार जोग ओंकार मोक्ष मुक्ता का तृप्त हो जोगन महामाया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।। आदेश।।।

हिंगलाज ज्योत पगे लगाने का मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ज्योत ज्योत महाज्योत, अखण्ड जोत **हिंगलाज** जोत जो ध्यावे सो पावे मोक्ष मुक्ति फल दे बल दे बाला सुन्दरी शिव पूजूं शक्ति पूजूं पूजूं गुरु के पांव पांच महेश्वर आज्ञा करे तो लागू **हिंगलाज** ज्योत के पांव। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश। आदेश।

।। आरती माता हिंगलाज की।।

(नाथ सिद्धों द्वारा शंखढ़ाल कर्म में बड़ी ही भक्ति से गायी जाती है)

हिंगलाज भवानी तेरी आरती। अच्छी निर्मल ज्योति जगे दिन राती।। टेक।।
सतयुग मध्ये काहे का तेरा दीवड़ा काहे की तेरी बात,
काहे के सिंहासन बैठे प्रह्लाद राज।
सतयुग मध्ये सोने का तेरा दीवड़ा सोने की तेरी बात,
सोने के सिंहासन बैठे प्रह्लाद राज।।१।।
त्रेतायुग मध्ये काहे का तेरा दीवड़ा, काहे की तेरी बात,

काहे का सिंहासन बैठे हरिश्चन्द्र राज।
त्रेतायुग मध्ये चान्दी का तेरा दीवड़ा, चान्दी की तेरी बात,
चान्दी के सिंहासन बैठे हरिश्चन्द्र राज।।२।।
द्वापर युग मध्ये काहे का तेरा दीवड़ा, काहे की तेरी बात,
काहे का सिंहासन बैठे पांचों पाण्डव राज।
द्वापर युग मध्ये ताम्बा का तेरा दीवड़ा, ताम्बा की तेरी बात,
ताम्बा के सिंहासन बैठे पांचों पाण्डव राज।।३।।
कलियुग मध्ये काहे का तेरा दीवड़ा, काहे की तेरी बात,
काहे का सिंहासन बैठे बलिचन्द राज।
कलियुग मध्ये मिट्टी का तेरा दीवड़ा, मिट्टी की तेरी बात,
मिट्टी के सिंहासन बैठे बलिचन्द राज।।४।।
युगा युगा मध्ये काहे का तेरा दीवड़ा, काहे की तेरी बात,
काहे के सिंहासन बैठे गुरु गोरक्षनाथ।
युगा युगा मध्ये सत का तेरा दीवड़ा, सत की तेरी बात,
सत के सिंहासन बैठे गुरु गोरक्षनाथ।।५।।
हिंगलाज भवानी तेरी आरती।
अच्छी निर्मल ज्योति जगे दिन राती।। भवानी तेरी आरती...।

चक्र घट मन्त्र पाठ

सत नमो आदेश। गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी। ॐ आदि घट बोलिये अनादि घट बोलिये। अथ कलियुग की। ॐ चार लाख बत्तिस हजार का कलयुग का प्रमाण बोलिये, साड़े तीन हाथ का नर बोलिये, सवा हाथ का खड़ग बोलिये, कौन कौन अवतार बोलिये। नि कलंक कल्कि बोलिये, पश्चिम दिशा भया हुंकारा **हिंगलाज** देवी का ॐकारा, काला घोड़ा काला पलाण, तिस पर चढ़े अलख पुरुष निर्वाण, आओ आओ भाई करो कमाई, ध्यान देश में मुक्ति पाई, माटी का पात्र, माटी का चक्र, माटी का छत्र, माटी का आसन, माटी का सिंहासन, माटी की नादि, माटी की सेहली सिंगी, गंगाजल का जल पूरीजे, सकल स्वामीजी बरसो ओंकार चेते गत गंगा स्वामीजी पुजे सकल संसार।।

शक्ति (हवन) मन्त्र- *ॐ ह्रिं ह्रिं हूँ हूँ हिंगूला नमः स्वाहा।*

चतुर्दिशा योगमाया पूजन विधि

पश्चिम दिशा- "माता **हिंगलाज** क्षेत्र में योगमाया पूजन विधि में सुहागन (नारी) का पूजन करते थे।"

4. चहुवान कुमार अस्थिपाल की हिंगलाज यात्रा

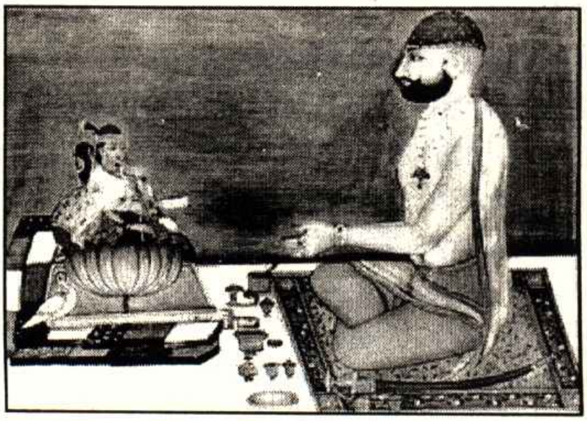

महाकवि सूर्यमल्ल मीसण

महाकवि सूर्यमल्ल मीसण द्वारा प्रणीत वंश भास्कर में चहुवान कुमार अस्थिपाल की हिंगलाज यात्रा का वर्णन किया गया है। आसेरगढ़ के राजा भोमचन्द्र के पुत्र भानुराज अपरनाम अस्थिपाल, जो लोक में हड के नाम से प्रसिद्ध हुआ, जिसके वंशज हाडा चौहान कहलाये और उनके वंशजों ने बंबावदा एवं बूंदी राज्य की स्थापना की। कुमार अस्थिपाल ने भुज नगर से चार योजन की दूरी पर एक भव्य और सुन्दर मंदिर बनवाया तथा इस मंदिर में अपनी इष्ट देवी आशापूर्णा की सुंदर प्रतिमा की प्रतिष्ठा की। तत्पश्चात् वे द्वारिका होते हुये हिंगलाज माता के दर्शन करने गये। वंश भास्कर के अनुसार:-

षट्पात्

क्रमि समुद्रतट कुमर परिस प्रभु द्वारकेस पय।
न्हान दान सब सद्धि भेट लक्खन किय निर्भय।
तंहं सुनि देवी **हिंगुलाज** निकटहि जगरानिय।
अंबा भक्ति अनन्य मन्नि हंकिय तित मानिय।
कहि मिच्छदेस बरज्यो कतिन कहिय तदपि चल्लन कुमर।
जननी निकेत राजत जहाँ बदहु देस सुहि तित्थबर।।

(चहुवान कुमार अस्थिपाल ने समुद्र तट तक जा कर द्वारिका प्रभु के दर्शन

कर चरण स्पर्श किए। स्नान कर इस अवसर पर उचित दान-दक्षिणा दे कर लाखों रुपयों की वहाँ भेंट चढ़ाई। वहीं कुमार को यह पता चला कि पास ही में **हिंगलाज देवी** का स्थान है तो देवी शक्ति को अनन्य मानने वाले कुमार ने वहाँ जाने का कार्यक्रम बनाया। यहाँ से आगे बढ़ने के कुमार के प्रस्ताव को कुछ लोगों ने यह कह कर निलम्बित करवाने का प्रयास किया कि आगे म्लेच्छ देश है वहाँ जाना मना है पर कुमार ने उनकी दलील को नहीं माना। कुमार ने कहा- जहाँ देवी का निवास स्थल है वहाँ तो तीर्थ हुआ और इसलिए पवित्र देश हुआ।)

चढि पोतन इस अक्खि पत्त खड्डियतट पच्छिम।
किय अग्गहु दरकुंच अतुल पृतना उपेत इम।
जवन खलन मग जित्ति कतिन अंकन अंकित करि।
हिंगुलाज गय हुलसि भेट उपहार घनें भरि।
पय पुज्जि जननि अग्गें प्रनमि कनक लक्ख तंहं भेट किय।
कति कहत मिलिय कुमरहिं सकति कतिन तत्थ न मिलिय कहिय।।

(चहुवान कुमार अपने सेवकों सहित वहाँ से जलपोत में सवार हुआ और पश्चिम में खाड़ी के तट पर पहुँचा। वहाँ से आगे कुमार ने अपनी सेना सहित प्रस्थान किया। दर कूच दर मंजिल बढ़ते हुए रास्ते में पड़ने वाले कई यवनों को जीता और उन पर अहसान किए। ऐसा करता हुए कुमार कई भेंट उपहार ले कर हुलसता हुआ **हिंगलाज** तीर्थ पर पहुँचा। चहुवान कुमार अस्थिपाल ने वहाँ **हिंगलाज देवी** के चरणों की पूजा संपन्न कर एक लाख स्वर्ण मुद्राओं का चढ़ावा चढ़ाया। कुछ लोग कहते हैं कि कुमार को वहाँ शक्ति (देवी) मिली। कुछ कहते हैं कि देवी उन्हें वहाँ नहीं मिली थीं।)

दोहा :

आसापूरनि देबि को, तत्थहु निलय बनाइ।
प्रतिमा इक तंहं थप्पि पुनि, मिच्छन जय मनलाइ।।

(आशापूर्णा देवी का एक मंदिर कुमार ने वहाँ बनवाया और उसमें आशापूर्णा देवी की मूर्ति की प्रतिष्ठा कर मन में म्लेच्छों पर विजय पाने का सोचा।)

5. शाह लतीफ़ और हिंगलाज

शाह लतीफ़ भिटाई (१६८९-१७५२) सिंध के ही नहीं, संसार के महान् दरवेशों में से एक हैं। उनके द्वारा रचित 'रसालो' सर्वाधिक लोकप्रिय रचना है। शाह लतीफ़ ने योगियों के साथ अनेक वर्ष बिताये और **हिंगलाज** यात्रा की। शाह लतीफ **हिंगलाज** के प्रति अत्यधिक श्रद्धा रखते थे।

पिता शाह हबीब और पुत्र शाह लतीफ़ के बीच जोगियों एवं हिंगलाज को लेकर हुये संवाद का वर्णन हम पुस्तक 'लतीफी सैर : भैरूंमल महरचन्द' से उद्धृत कर रहे हैं-

''कूड़ा सामी कूड़ गाल्हाइन, कूड़ो सन्दुन पंधु।
होत वसे हर हंध, हुनन दिठो हिंगलाज में।।''

शाह लतीफ़ ने पिता को उत्तर यों दिया-

''सच्चा सामी सचु गाल्हाइन, सच्चो सन्दुन पंधु।
होत वसे हर हंध, पर हुनन डिठो हिंगलाज में।।''

शाह अब्दुल लतीफ़ के 249 वें उर्स के अवसर पर शाह अब्दुल लतीफ़ भट्ट शाह शकफती मरकज़ (शोध संस्थान) भट्टा शाह हैदराबाद की ओर से सिंध के मुस्लिम साहित्यकारों की एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। विद्वानों ने शाह लतीफ़ की 'सुरु रामकली' पर अपने पत्र वाचन किये। श्री हमीद सिंधी ने विद्वानों के पत्रों को समाहित कर एक पुस्तक प्रकाशित की। श्री हमीद सिंधी के अनुसार शाह लतीफ़ हिंदू संन्यासियों के साथ कफनी ओढ़ कर उनके संग तीर्थ

स्थानों की यात्रा की। स्वयं शाह की रचना 'सुरु रामकली-दास्तान-9' के अनुसार-

''जा गुर डिनी गूदड़ी, सा मूं घणों सुहाय
नेई रसाणी माय, ओढीं जे अदब सीं।''

डॉ. गुलाम अली का कहना था-''शाह अब्दुल लतीफ़ ने जोग एवं जोगियों की सभ्यता जोगियों के प्रकार, जोगियों के लिये सिंधी भाषा में प्रचलित विशेष शब्दावली, लोकोक्तियों, मुहावरों, जोगियों की राहों, रास्तों पगडंडियों, वीथियों, जोगियों की जटाओं, यात्राओं, तपस्याओं, ठिकानों, तीर्थों, पंथों, पर्वो, ओतारों, आस्तानों, दायरा दूणि, बस्ती, काली देवी, नानी हिंगलाज, दुर्गा देवी गोरखनाथ मच्छन्दरनाथ, जलन्दरनाथ एवं अन्य पंथों का वर्णन किया है।''

डॉ. गुलाम नबीं सिधायो के अनुसार ''सुरु रामकली में श्री राम की भक्ति की प्रशंसा की है।''

शाह ने 'रसालो' की रचना उस समय की जब सिंध में हिन्दू और मुस्लिम सौहार्द के साथ जीवन जीते थे।

प्रोफेसर जेब भट्टी के अनुसार-''शाह ने योगियों के साथ हिंगलाज, हिंगोल, हालार, हाड़हो, द्वारका, नगरपार कर, काक, लडाणो कराची, कींझर, भंभोर मलीर आदि तीर्थ स्थलों के दर्शन कर गहन अध्ययन किया।''

उन्होंने अपने 'रसालो' में ''सुरु रामकली'' खण्ड में योगियों और **हिंगलाज** के बारे में विस्तार से वर्णन किया है। शाह लतीफ़ ने अपनी रचना में जोगियों की **हिंगलाज** यात्रा की इच्छा का वर्णन करते हुए कहा है-

जे भाँई जोग़ी थ्याँ, त परि गुरुअ सें पारि
हवाऊँ **हिंगलाज** दे, वेन्दे सभि विसारि,
नांगा! नाथु निहारि, सामी वदीअ सिक सें।

मन में योगी बनने की इच्छा है तो गुरु के उपदेश पर अमल कर। **हिंगलाज** पहुँचना चाहता है तो सांसारिक ख्वाहिशों को त्याग दे। हे योगी! मन में गुरु का प्रेम, गुरु की श्रद्धा धारण कर। सिंध और बलूचिस्तान में मुसलमान श्रद्धालु **हिंगलाज** को ''नानी माँ'' के नाम से सम्बोधित करते हैं। रसालो 'सुर-रामकली' में शाह लतीफ़ ने **हिंगलाज** का उल्लेख करते हुए लिखा है :-

(1) जोगी थियनि न यार, कंहीं सें करीबु थी,
मां मुलाकी उनि सें, जिनि पूरब जी पचार,
अठई पहर उन जी, आहि **नानीअ** डांहु निहार,

लाए विया लतीफ़ चए, अंदर मंझि अपार,
सामियुनि साणु, सतार। लाहूती लालु थियां।

अर्थ *योगी जो तपस्या करते हैं, वे किसी से भी रिश्तेदारी नहीं निभाते। ऐसे तपस्वियों को पहचानता हूँ। मैं उनके देश को जानता हूँ, जिनकी प्रीति उस ईश्वर तत्त्व की प्राप्ति में है। आठों पहर 'नानी' (हिंगलाज देवी) की ओर निहारते रहते हैं। ऐसे तपस्वी योगी पुरुष मेरे हृदय में भी वहां पहुंचने की उत्कण्ठा जगा गये हैं। हे ईश्वर! काश ऐसे स्वामियों के संघ में रहकर उनके रंग में मैं भी रंग जाऊं।*

(2) तां की साणुनि ओरि, जां आहीनि ओताकुनि में,
डह डह भेरा डींहं में, पाणु मथांउनि घोरि,
विया जे हिंगलोरि, त करमि मिलंदइ कापड़ी।

अर्थ *तब तक उन के साथ रिश्ता जोड़ लो, जब तक इस दुनिया (सशरीर) में वो हैं। हर रोज दस-दस बार अपने आप को उनके ऊपर न्यौछावर कर दो, कहीं ऐसा न हो कि वे इस दुनिया को छोड़ कर* ***हिंगलाज*** *में विलीन हो जायें। यदि इसमें समय लगाया तो फिर तकदीर से ही मिल सकोंगे।*

(3) नाथु जंहीं निंधि, तिति न निहारियों जोगिएं,
के कुवेसाहिया कापड़ी, पुरिया पराहें पंधि,
हू हिनहीं हंधि, थे हुंहई विया हिंगिलाज डे।

अर्थ *ईश्वर जिस जगह है वहां तक योगियों की नजर नहीं गई। कुछ अंधविश्वासी योगी दूर यात्रा की ओर चले गये, जबकि ईश्वर यहीं पर तो विद्यमान हैं। इस तत्व को बिना जाने ऐसे अंधविश्वासी योगी यों ही* ***हिंगलाज*** *चले गये।*

(4) नाथु जंहीं निंधि, तिति पुणि निहारियो जोगिएं,
से सुवेसाहिया कापड़ी, पुरिया पराहें पंधि,
हूँ हुओ हिन हंधि, हुनि हिंगलाजांनि हथि कयो।

अर्थ *जिस स्थान पर ईश्वर है, वहाँ पर भी योगियों की नजर गई, वे सच्चे विश्वासी योगी थे। उन्होंने दूर-दूर यात्रा की, उन को ज्ञान था कि ईश्वर यहीं पर है, परन्तु उन योगियों ने पहले* ***हिंगलाज*** *में ईश्वर का साक्षात् दर्शन किया, इसलिये वे वहाँ पर कृतज्ञता प्रकट करने जाते थे।*

(5) जे भांई जोगी थियां, त थीउ गुरु जे गसि,
दुख पाण खे डसि, हिंगलाज हलण जा।

अर्थ : *यदि तुम जोगी होना चाहते हो तो गुरु के रास्ते पर रहो। हिंगलाज चलने के दुख तुम्हें अपने आप को देने होंगे।*

6. सचल सरमस्त एवं हिंगलाज

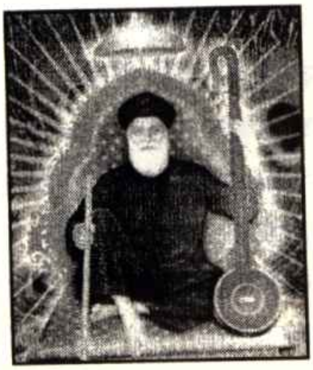

सचल साहिब का जन्म सिन्ध के दराज खैरपुर रियासत में सनीपुर स्टेशन के निकट गोठदराज में फकीर सलाहाल्दीन साहिब के घर सन् 1739 ई. में हुआ। सचल साहिब के दादा फकीर साहिब दिनो प्रसिद्ध दरवेश थे। सचल साहब का नाम अब्दुल वहाब था। सचल सरमस्त साहिब अविवाहित थे। वे सूफी सन्त थे, उन्हें फारसी और अरबी का ज्ञान था, वे संगीत के मर्मज्ञ थे और अपने सूफी कलाम को सारंगी और तबले की संगत में गाते थे। वे वैरागी रूप में तंदुरे को अपने साथ रखते थे। सचल सरमस्त साहिब ने हिंगलाज के बारे में साहित्य की रचना की। उनका हिंगलाज से सम्बन्धित एक कलाम हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं- *''जादे पूरब पंधु, तादे आऊं न वञिणो,*
ही हुननि जो हंधु, मुंहिजो हंधु हिंगलाज में।''

अर्थात्:- जो रास्ता पूर्व की ओर जा रहा है, उस ओर मुझे नहीं जाना है, वह औरों का रास्ता है, मेरा स्थान तो हिंगलाज में ही है।

7. दादा मेकण की हिंगलाज यात्रा

माता जी री वचनिका के लेखक जय चंद जती के अनुसार दादा मेकण माता जी का मढ़ छोड़कर हिंगलाज यात्रा पर निकल गये। उन्होंने अपनी धार्मिक यात्रा के दौरान हिंगलाज माता के दर्शन किये और जगत को समझने का प्रयास किया।

8. बाबा किन्नाराम जी अघोरी एवं हिंगलाज

महान सन्त कीन्नाराम जी अघोरी हिंगलाज माता के परम उपासक थे। उनका जन्म 1601 ई. में वाराणसी जिले के रामगढ़ गांव में हुआ। संत कीन्नाराम जी ने अघोर सम्प्रदाय की स्थापना की। श्रद्धालु उन्हें भगवान शिव का स्वरूप मानते हैं। संत कीन्नाराम जी ने बलूचिस्तान के लियारी जिले में हिंगलाज यात्रा कर तपस्या की। मां हिंगलाज से सिद्धि प्राप्त कर बाबा कीन्नाराम जी ने मानवता और समाज सेवा के संदेश के साथ आध्यात्मिक यात्रा प्रारम्भ की एवं लगभग 170 वर्ष तक जीवित रहे। अघोर सम्प्रदाय का बाबा कीन्नाराम स्थल, वाराणसी प्रमुख पीठ है। उनकी समाधी वहाँ हिंगलाज माता के यंत्र पूजा स्थल के निकट ही बनी हुई है।

9. स्वामी त्रिगुणातितानन्द की हिंगलाज यात्रा

रामकृष्ण परमहंस के शिष्य स्वामी त्रिगुणातितानन्द ने अपने अन्य साथियों के साथ हिंगलाज यात्रा की थी और इस यात्रा एवं हिंगलाज के महत्व का अपने गुरु भाई स्वामी विवेकानन्द को विस्तार से वर्णन बताया था। स्वामी त्रिगुणातितानन्द 'उदबोधन' के पहले सम्पादक थे। स्वामी विवेकानन्द की प्रेरणा से 1902 में वे अमेरिका गये। वे वेदान्त सोसायटी, केलिफोर्निया एवं सन फ्रांसिस्को के 1915 तक प्रमुख रहे।

अध्याय : नौ

हिंगलाज ही हिंगलाज

भारतीय उपमहाद्वीप में हिंगलाज माता के अनेक नामों से मंदिर, मढ़ एवं पूजा केन्द्र बने हुये हैं। देवी के प्रति आस्था प्रकट करते हुये स्वयं का नाम हिंगलाज एवं अनेक संस्थाओं, प्रतिष्ठानों, शिक्षा एवं सेवा केन्द्रों, गांवों एवं गढ़ों का नामकरण भी हिंगलाज माता के नाम रखा हुआ है। देश भर में हजारों हिंगलाज मंदिर है, परन्तु हम यहाँ हमारी अल्प जानकारी के आधार पर कुछ का उल्लेख कर रहे हैं।

गुजरात में अनेक हिंगलाज मंदिर लोक आस्था के केन्द्र है। इनमें जाम नगर के भाणवाड़ तालुका के वेराड़ गांव में प्रसिद्ध हिंगलाज मंदिर है। वलसाड़ में भदेली जगालाला की **हिंगलाज** माता भी अत्यधिक लोक पूज्य है। सन् 1950 में **माछी** समाज ने इस मंदिर का जीर्णोद्धार करवाकर भव्यता प्रदान की। वर्तमान में ''**श्री हिंगलाज माताजी मंदिर और माछी समाज चेरिटेबल ट्रस्ट**'' अनेक सेवा कार्य कर रहे है।

समुद्र किनारे **नानकड़ा** गांव में शंकराचार्य जी के कर कमलो से एक भव्य **हिंगलाज** मंदिर का कार्य प्रारम्भ करवाकर पूर्ण किया गया। श्री हिंगलाज माता **देसाई** समाज की कुल देवी है और आसोज शुक्ल अष्टमी को यहाँ विशाल मेला लगता है, जिसमें दूर-दूर से श्रद्धालु दर्शन करने आते है।

अहमदाबाद में नवरंगपुरा पुलिस स्टेशन के पीछे हिंगलाज माता का भव्य मंदिर है। इस मंदिर में नववर्ष की प्रथम चतुर्थी के दिन विशाल मेला आयोजित होता है।

अहमदाबाद में ही पालड़ी में ब्रह्म क्षत्रिय समाज द्वारा स्थापित **हिंगलाज** माता का मंदिर आस्था का प्रमुख केन्द्र बना हुआ है। अहमदाबाद के बापू नगर इंडिया कॉलोनी विस्तार में **भावसार क्षत्रिय समाज** द्वारा **हिंगलाज** माता का भव्य मंदिर निर्माण करवाया गया है।

अहमदाबाद के सींगरवा गांव की सीमा पर पिकर्स फैक्ट्री के पास **नायक**

कुल के एक भक्त को हिंगलाज माता ने स्वप्न में दर्शन दिया और उक्त दर्शन को आज्ञा मानकर जन सहयोग से हिंगलाज माता का भव्य मंदिर निर्माण किया गया। इस कार्य में **कच्छी कडवा पाटीदार समाज** ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

गुजरात के **चोटिला पर्वत** के निकट **हिंगलाज** माता का भव्य मंदिर लोक आस्था का प्रमुख केन्द्र है। **पोरबंदर** के महात्मा गांधी रोड पर **भानुशाली महाजन बाड़ी** में **हिंगलाज** माता मंदिर, भुज कक्ष में पाट नगर एस.टी. सोसायटी के सामने **हिंगलाज** माता का मंदिर स्थित है। **नलिया** में **हिंगलाज** माता का मंदिर देदीप्यमान है। **अंजार** के गंगा बाजार की बोरड़ी वाड़ी में **हिंगलाज** माता का रमणिक मंदिर बना हुआ है। जाम नगर के मध्य में भानुशाली वाड़ी में **हिंगलाज** माता का प्रसिद्ध मंदिर है। मोथाला में अन्य देवियों के साथ हिंगलाज माता के दर्शन भी होते हैं।

बनास कांठा के दियोदर तालुका के **धनकवाड़ा** गांव में **हिंगलाज** माता का भव्य मंदिर स्थित है। **बाघेला समाज** को **हिंगलाज** माता की मान्यता है। बनास कांटा के रण प्रदेश में कच्छ की तरफ रापर तालुका के **त्रम्बो** गांव में **हिंगलाज** माता का प्रसिद्ध मंदिर है और यहाँ **हिंगलाज** माता के पर्चे परवाड़े और साक्षात दर्शन के चमत्कार आमजन में प्रसिद्ध है। बनास कांठा के भाभर के निकट **ध्येयाणा** में **हिंगलाज** मंदिर प्रसिद्ध है।

सौराष्ट्र के **पाटनवाव** के निकट **हिंगलाज** माता के मंदिर में भादवा महीने की अमावस, एकम व बीज को मेला आयोजित होता है और ब्रह्म क्षत्रिय समाज सक्रियता से मेले में व्यवस्थाओं में सहयोग करता है। इस मेले में लगभग 50,000 यात्री भाग लेते हैं।

राजस्थान के जोधपुर के पास **सालावास** गांव में **हिंगलाज** माता का काली टेकरी के उपर गुफा में भव्य मंदिर स्थित है। उक्त मंदिर लगभग 600 वर्ष से अधिक प्राचीन है। इस मंदिर के दर्शन करने के लिये राजस्थान व गुजरात के श्रद्धालु आते रहते हैं। जैसलमेर के पास **लुदरवा** गांव में पौराणिक **हिंगलाज** मंदिर है। इस मंदिर का जग प्रसिद्ध महात्म्य है। चूरू के लोसाणा, बीदासर, बांसवाड़ा, रामपुरा अलवर, जेतारण एवं डूंगरपुर जिले में एवं हरियाणा में बलेश्वर पर्वत पर प्रसिद्ध हिंगलाज मंदिर है।

सोमनाथ के **प्रभास पाटन** में एक गुफा में **हिंगलाज** माता का सुप्रसिद्ध स्थान है। **भानुशाली राजा** को स्वयं हिंगलाज माता ने दर्शन दिये और राजा ने प्रतिदिन **हिंगलाज** माता के दर्शन करने का आशीर्वाद मांगा और तभी से **हिंगलाज** माता

प्रसन्न होकर वहाँ पधार गई। **हिंगलाज** माता की आराधना में **भानुशाली** परिवार नियमित अपनी आस्था प्रकट करने बड़ी संख्या में आते है।

मुंबई में हिंगलाज

मुंबई के घाट कोपर (ईस्ट) में भानुशाली वाड़ी में मां **हिंगलाज** का भव्य मंदिर है। मुंबई की वाल्केस्वर दशनामी अखाड़ा में **हिंगलाज** माता का मंदिर 100 वर्ष से अधिक पुराना है। वरली मुंबई में **कमाठी पाड़ा** में **हिंगलाज** माता के एक मंदिर की स्थापना आंध्र प्रदेश के तेलगू समाज ने 1905 में की थी। मुंबई के मध्य त्रीजी **पिंजरापोल** गली में **हिंगलाज** माताजी का मंदिर बना हुआ है। मुंबई के मज गांव के रोड पर **माणकेश्वर** मंदिर के निकट **हिंगलाज** माता का अति प्राचीन मंदिर है और इसमें काले पत्थर की माताजी की मूर्ति हंस पर विराजमान है। भानुशाली परिवार इस मंदिर की सेवा पूजा की व्यवस्था करते है। महाराष्ट्र के वाड़ा एवं **सोलापुर** में **हिंगलाज** माता का मंदिर श्रद्धालुओं को दर्शन के लिये बना हुआ है।

हिंगोलगढ़ गुजरात

गुजरात के राजकोट जिले मे जसदण रियासत की स्थापना हिंगलाज कृपा से हुई। जसदण मे वहाँ के शासन ने जो गढ़ बनाया उसका नाम हिंगोल गढ़ रखा। गढ़ में हिंगलाज माता की स्थापना की गई। हिंगलाज माता के विग्रह की पूजा रोहड़िया राजड़ दान ने करवाई थी।

पाण्डव लीला में हिंगलाज

गढ़वाल क्षेत्र में लोक नृत्य नाटिका पाण्डव लीला में हिंगलाज का स्मरण करते हुये कलाकार गाते हैं-

पहलो रूप हिंगुल, दूजो रूप देवी चण्डिका।
तब तीजो रूप देवी हिंगला, तब रूप देवी पिंगला।

(Dancing the self : Personhood and Performance in the Paonodav Lila of Garhwal by Willian S. Sax)

यत्र-तत्र सर्वत्र हिंगलाज

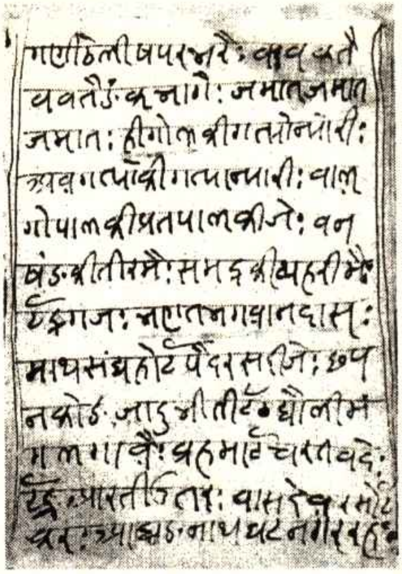

आदि शक्तिपीठ हिंगलाज के बारे में प्रचुर मात्रा में भक्ति साहित्य, ग्रंथालयों, पुस्तकालयों एवं धर्मशास्त्रों में उपलब्ध है। चारण साहित्य शोध संस्थान, अजमेर, महाराज मानसिंह, पुस्तक प्रकाश, जोधपुर एवं श्री संजय शर्मा संग्रहालय एवं शोध संस्थान, जयपुर में ही हिंगलाज माता के छंद से जुड़ी हुई पाण्डुलिपियां उपलब्ध हैं।

हम यहां श्री संजय शर्मा संग्रहालय एवं शोध संस्थान के ग्रंथ पारिजात के सौजन्य से प्राप्त पाण्डुलिपि संख्या 2211/679/2 (1849 वि.स.), 2212/520/1 (18वीं शताब्दी) के प्रथम पृष्ठ को प्रस्तुत कर रहे हैं।

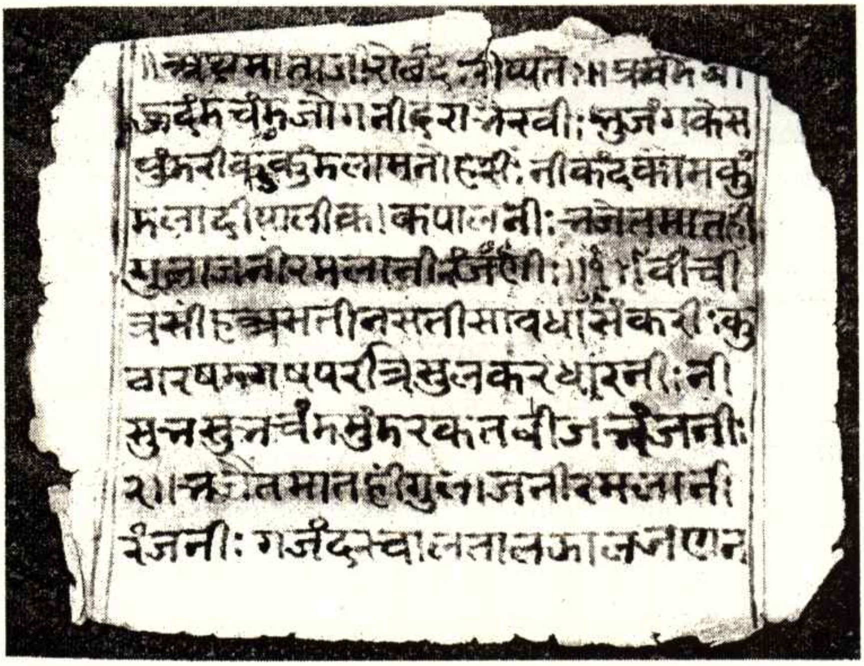

पाश्चात्य विद्वान् एवं हिंगलाज

Western Scholars And Hinglaj

Many western scholars visited Hinglaj and recorded their inspection views. Their visit record published in so many books and gazetteers.

Proceedings of the Asiatic Society of Bengal

JANUARY TO DECEMBER, CALCUTTA :
PRINTED AT THE BAPTIST MISSION PRESS,
AND PUBLISHED BY THE
ASIATIC SOCIETY, $ 7, PARK STREET. (1901)

On p. 3 of his "Notes on the Bangari caste in Barar" (J.A.S.B., Vol. LXX, Part III, 1901) Captain Haig says" some members of the caste still make pilgrimages to the temple of Hinglaj Mata otherwise called Hinglaj Devi, and Hinglaj Bhavani in Gujarat. The temple 'they say, is situated on the far side of Gujarat.'

I would suggest that the place intended is Hinglaz in Makran, which is shown on the map in Sir Thomas H. Holdich's The Indian Borderland (London, Methuen & Co., 1901). On p. 206 Sir T. Holdich say the most ancient and honourable ziarat of Hinglaz is hidden away in the clefts of the mountains (a ziarat so ancient that both Hindus and Mohamadans claim it, without recognizing its almost prehistoric Persian origin). "This Hinglaz (= Hinglaj) may be described as on the "far side of Gujrat" ; it being over two hundred miles west of the most western part of Gujrat.

According to Bombay Gazetteer, vol. V, p. 86 :

"The Stories centring around Nagar Thatta, **Hinglaj** and

Koteswar show that Western India had its very ancient holy place, as old as those in the Himalalyas and at Benares and that early contacts were common between India and Western Asia, through some of them, notably **Hinglaj**. They also make it plain that Muslims in due time took possession of the holy places, but that pilgrimages continue as of old."

Lord Shiva And Mata Parvati visit Hinglaj : George Weston Briggs

George Weston Briggs in his book "Gorakhnath and the Kanphata Yogis" (1938) mentioned the visit of Hinglaj by Lord Shiva and Mata Parvati. According to him :- "The Yogis explain the presence of the substance out of which the beads are made their reason for prizing them by the following legends. Siva and Parvati, on their way to Hinglaj, stopped in the jungles of Asapuri. There Siva asked his consort to prepare him a dish of khichri, cooked millet and rice, while he went away into the jungle. Siva then drew around her and her cooking place a magic circle of ashes, explaining to her that a giant (asura) would in his absence come to molest her; but that she would be perfectly safe so long as she remained within the circle, since the demon would be burnt to ashes should he venture to cross the magic line. Siva then left with her his trident and went into the jungle. While he was away, the giant came and Parvati slew him with the trident. The demon's blood ran all about the place, defiling everything, including the fire place and the food which she was preparing. Soon afterwards Siva returned. From his body the demon immediately appealed to Siva for release, or mukti. Siva granted the request and the demon's spirit ascended to Kailas, Siva's heaven. The giant's body became dust and this is still used as incense powder. Seeing how everything had been defiled by the giant's blood, Siva ordered Parvati to throw the food away. The grains of the khichri turned into the 'stones' out of which the beads for the famous rosaries are made."

He further writes : "There is a legend which deserves record at this juncture. While Siva was at Asapuri, Hinglaj Devi, in the form of a fly, settled in his hair. When he and Parvati, after wandering in search of Devi for twelve years, could not find her, Siva, in

rage, determined to disappear into the ground, to go to Patala. Thereupon the Devi came out of his hair, and, appearing in her proper form, said, 'Why be angry? I am with you.' The hollow in the ground marks the pit into which Siva was about to disappear. Here a sound, 'Bam, bam,' is frequently heard."

LORD RAM VISITED HINGLAJ

(GENERAL CUNNINGHAM)

General Cunningham visited Hinglaj shrine in 1853 and made the first record of it. In his record he mentioned the visit of Hinglaj by Lord Ram along with Sita and

Laxman. He gave the following description of the people living around Hinglaj.

"They wore the dress and arms of the other Indians, but differed from them in language and manners. They were the people on the Aghor river. In the bed of this river there are several jets of liquid mud, which from time immemorial have been known as **Ram Chandar ki kup**, or 'Ram Chandar's wells.' There are also two natural caves, one dedicated to Kali, and the other to **Hingulaj** or **Hingula Devi**, that is, the '**red goddess**, 'who is now regarded as a form of Kali. But the principal objects of pilgrimage in the Aghor valley are connected with the history of **Rama**. The pilgrims assemble at the Rambagh, because Rama and Sita are said to have started from this point and proceeded to the Gorakh tank, where **Rama** halted; and then to Tonga-bhera, and on to the point where **Rama** was obliged to turn back in his attempt to reach Hingulaj with an army. General Cunningham identifies Rambagh with the Rambakia of Arrian, Tonga-bhera with the river Tonberos of Pliny, and the Tomerus of Arrian At Rambakia, therefore, we must look for the site of the city founded by Alexander, which Leonatus was left behind to complete. It is probable that this is the city which is

described by Stephanus of Byzantium as the ‘ sixteenth Alexandri near the Bay of Melane.’ Nearchus places the western boundary of the Oritse at a place called Malana, which he takes to be the Bay of Malan, to the east of Ras Malan or Cape Malan of the present day, about twenty miles to the west of the Aghor river. The occurrence of the name of Rambagh at so great a distance to the west of the Indus, and also early a period as the time of Alexander, shows not only the wide extension of Hindu influence in ancient time, but also the great antiquity of the story of Rama.”

Lord Ram offered rosaries to Hinglaj : George Weston Briggs. George Weston Briggs also writes about the visit of Hinglaj by **lord Ram** and Sita as under :

“The efficacy of the thumra is attested by the following tale. During their fourteen year’s exile, Rama and Sita wandered into the neighbourhood of Asapuri. There Sita begged Rama to go to Siva and beg for a thumra. Rama’s sin of having killed a Brahman (Ravana) was forgiven when he offered the rosary to Hing Laj Devi.”

Hinglaj Lalchole Wali Mai : Janet Kamphorst

In Praise of Death

History and Poetry in Medieval Marwar (South Asia)
(Janet Kamphorst)

German Research scholar Janet Kamphorst in her research work mention about the Hinglaj as under : “Hinglaj is known by many names to her eighteenth, nineteenth and early twentieth century devotees, including Charan, Rajput, Marwar’s bania, Kanpathi and Naga Nath Yogi, Gosain, Sufi and Brohi-Charan followers. She appears in different sources as Hinglaj Ma, Hingula, Hingulaja, Kottari, Carcika, Lal Devi (the “Red (Fire) Goddess”) and the Puranic Devi Hinglaj. Her Sufi devotees think of her as Lal Chole Wale Mai (“Mother (with) the red shawl”) and nani or Nanea (“grandmother”) (Samaur 1999a: passim). As Tambs-Lyche (2004b: 30 n.7, 2004c: 64) has remarked, Hinglaj may have been part of more ancient goddess cults (perhaps traceable to the fifth century) which may have become part of later Charani Sagati cults. Now a days she is most commonly described as the first “full” incarnation of Durga embodied by a Charan woman."

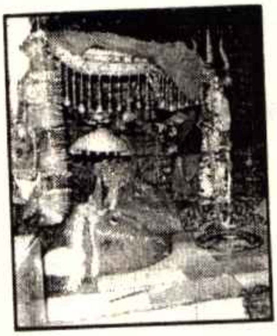

Hinglaj is Place of Sacrifice : Goldsmid

In 1862 Major(later Sir) Frederick John Goldsmid was employed by the Governer of Bombay for special missions. One such mission was a foray into Makran lasting from December12, 1861 to January 1862. Goldsmid and his party commenced their journey overland from Karachi and wrote a diary of their travels upto Gwadar.

According to Crooke (Encyclopedia of Religion and Ethics, vol. VI, p. 715) Goldsmid visited Hinglaj and narrations given by him. are as under :

Goldsmid, who visited Hinglaj in 1861, while following the river, saw a place of sacrifice, a hollow in the hill, sacred to the goddess, smeared with the blood of animals offered to her; and rocks decorated with sectarian marks, in red. From this place up to the temple, about one-fourth of a mile, the stones under foot were smeared with blood.

The shrine itself lies in a verdant valley surrounded by mountains. Far below is the abode of Nani, a castellated, mud edifice with a rude wooden door. A flight of steps leads down a deep, semicircular cleft through which pilgrims creep on all fours to reach the building. To enter this is a test of chastity, for the sin-laden cannot so enter. The shrine is a level, mud surface upon which a lamp is kept burning."

Near the village of Khajuri is a pit, or hollow, where the brother of Hing Laj Devi, on being pressed by Gabars and Zoroastrians, sank into the ground. A spring gushed forth, caused by the brother, who is called Gaib Pir (i.e. disappeared) by Musalmans and Mahadeo by Hindus.

Ain i Akabari and Hinglaj

The local legends tells after the quarrel between Siva and Daksa Vishnu cut in pieces the body of Uma wife of Shiva and that the crown of her head fell here.

(Gopatha Brahman Calcutta 1872-30f Aini-akbari tr. Blochman and Jarrett do 1873-94 ii 313)

Encyclopedia of Religion and Ethics part 12 by James Hasting.

Hinglaj fulfils desires : Frazer

According to frazer a native Pilgrim Hazi Abdul Nabi who recently visited Hinglaj adds that near the Shrine is a well, It is then an example of those oracular wells from which omens are taken in many parts of the world. (Frazer, Pausanias, London 1898 iii 388 iv 151)

The Shrine is much frequented by the Kapdi devotees of the goddess Asapuri, 'She who fulfils desires' who is much revered in cutch. It is said that if dawn overtake their Raja or head man at the **Hinglaj** hill, the goddess will drown or otherwise destory him. (BGix 1901)

Magic sword of Hinglaj : Col. James Tod

The Hinglaj Devi is revered throughout India. A Rajputana legend tells that Ugra prabhu, (Grand son of Raja Nainpal, Vs530 : 470Ad) one of the early rulers of Marwar, made a pilgrimage to her shrine and that the goddess caused to rise from her fountain a magic sword with which he conquered all the southern countries touching the ocean (Tod Annal of Rajasthan, Calcutta reprint 1884 ii 6)

She is the family Goddess of many tribes in west India (BGV.1880 49, 74, ix 1901 pt i p 247) cured even as far west as Mirzapur in the united provincess the kharwars sacrifice a goat to her, saying 'O Devi Hinglaj! Go and destroy my enemy. (NINQ i 1891) 195)

Many Das gosain from western Bengal make the pilgrimage to her Shrine (Buchanan in M. Martin, Eastern India, London 1838 i 197)

Celebrated sthan of Pilgrimage : Masson Charles

Masson Charles in his "Narrative of various journeys in Balochistan, Afghanistan, and the Punjab. 4 vols. london, 1842-44." give details about Hinglaj as under : "The maritime province of Las, besides the cave temples near Bela, Contains a celebrated sthan or place of Hindu pilgrimage. It is situated in the hills bounding the province to the west, and through which flow the Hingholi rivulet. The Sacred locality is called **Hinglatz**."

Massion reported in 1844 that he saw the figures of the sun and the moon carved on the rock, at the unaccessible site.

Imperial Gazetteer and Hinglaj

(Imperial Gazetteer vol. xiii p. 142 Journal Asiatie society Bengal JASB ix P.134)

The Ziarat is so ancient that both Hindu and muhammadans claim it without recognising its pre-historic origin. The goddess is known to the muhammadans are by the name of Nani. The Aghor river is boundary between the territory of the yam and beila and that of the khan of khelat.

The name given to the stream above the peak in the Hara mountains is Hingol. It is called aghor from the mountains to the sea. On the way from karachi, between the port of sonmeanee and the Aghor river, there are three hills which throw up jets of liquid mud called chandra kupa. The village nearest to Hinglaj is Urmura or Hurmura, Situated on the creast at a distance of two days march.

[Imperial Gazetteer of India xiii p. 82. Published by under the Authority of his majesty secretary of state for Indian council (1908)]

Hinglaj the best known place of pilgrimage in Baluchistan situated in 25°30' N, and 65°31' E., below the peak of the same name on the banks of the Hinglaj river in the Lasbela state. The shrine which is dedicated to goddess known as Nani by Muhamadans and parbati, kali or Mata by Hindus, lies in a verdant basin and consists of a low costerlated mud edifice in a natural cavity. A flight of steps leads to a deeper semicircular cleft through which pilgrims creep on all fours. Bands of Pilgrims each conducted by a leader known as an agwa, make the journey by land

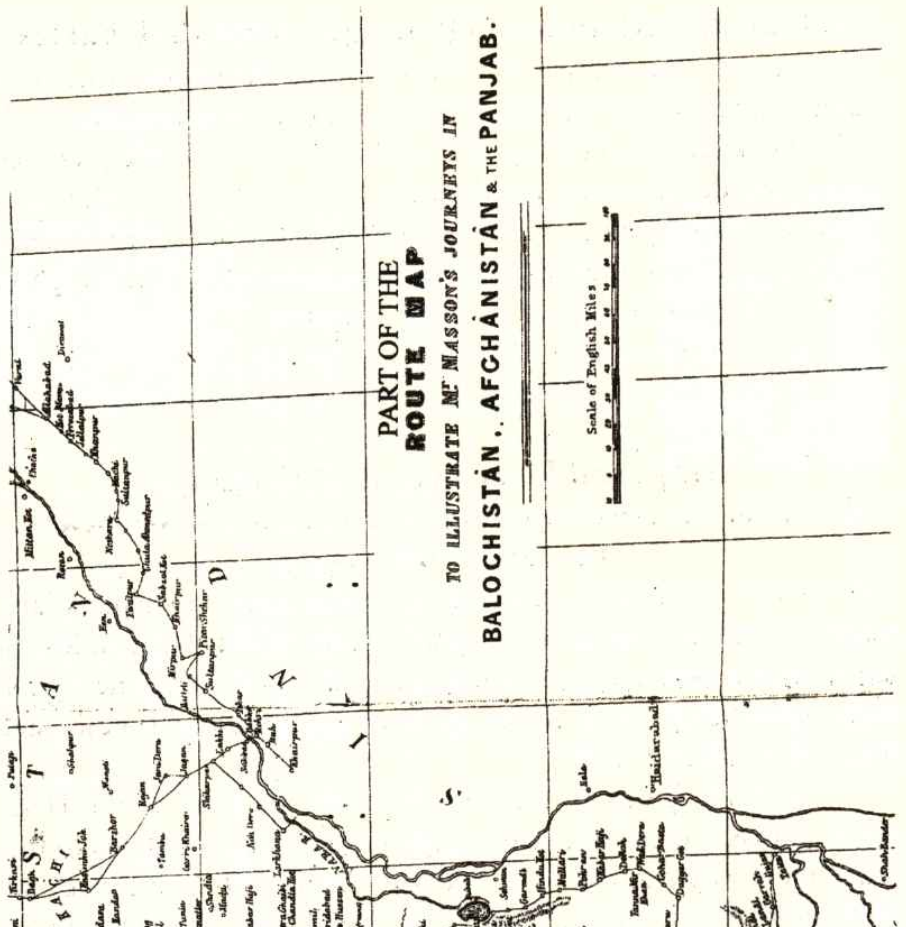
PART OF THE
ROUTE MAP
TO ILLUSTRATE Mr. MASSON'S JOURNEYS IN
BALOCHISTÀN, AFGHÀNISTÀN & THE PANJAB.
Scale of English Miles

from karachi. Fees are collected at miani by a bharati or hereditary examiner, on behalf of the Las Bela officials, from all except devotees and unmarried girls, the proceeds yield about Rs. 600 to state annually.

Christian Missions and Hinglaj

"Amongst the necklaces will usually be seen one consisting of small whitish stone beads, which is worn as a badge indicating that the wearer has visited the famous vamachari sakta temple of Hinglaj in Baluchistan."

(The religious quest of India edited by J.N. FARQUHAR. M.A. D. Litt.) Literary secretary, national council of young men's christian association, India and cylone and H.D. Griswold M.A. Phd. Secreatary of the Council of the American Press Byterian Missions in India)

Capt. Hart visit Hinglaj

The best known place of pilgrimage Hinglaj in Baluchistan, Captain Hart visited the shrine in 1840 and left an account of his visit. It took a century before the next European inspected the shrine. (Alexanders Compaigns in Sind : pierre Herman Leonard Eggermont)

The goddess Durge is known here by the name of maha maya or kottari, According to captain Hart, who visited the temple, it is situated in a narrowgorge, the mountains on each side of which rise perpendicularly to nearly a thousand feet. It is a low mud edifice, built at one end of a natural cave of small dimensions, and contains only a tomb shaped stone, called goddess mata or mahamaya.

Hart Capt. S.V.W. notes of a visit to the port of son meeanee and the country lying between karanchee and Hinglaj in the Lus Territory in 1840

6^{th} Se 155, 2 Coss Road in a plain coss to the right is ichufooree, go houres of koochak and poofhy Baloochs, and 2 coss further is Jana and Barudee, 80 houses of koochak poosjh Baloochs, then SE. 165^{0}. 4 coss road to **Beebee Nanee**.

The hills near, again leading an entrance of about 300 yards. A river of the same name revs here, two feet water, heights on both sides 300 and 400 feet high, accessible on a parts, halting place of cafilla.

7th Stage, flence Beebee Nanee 7 coss, 6 of which is no water to be found, arriving at Beebee Nanee Plenty of water from river near. (Report on the Great Balan Pass. By Jambs Nock, draftsman to left. R, Leech, Bombay Engineers, Assistant on a Mission to Cahool, C. 4C.4C.

(Signed by James Nock 22 August 1888)

(Capt. Hart : Account of Journey from karachi to Hinglaj is JASB, IX 1840 p. 134 JASB-1840 Page 134 **Hart Capt.**)

Hinglaj draws the largest crowds of Pilgrims : Thomes Holdich

(The Gates of India (Historical Narrative)

"He followed up to Hingol till he could turn to Malan by an availabe pass westward. Nothing here has altered since his days, those magnificient peaks and mountains which surround the sacred shrine of **Hinglaj** are indeed ever lasting hills and it was through them that he proceeded to make his way.

It is a matter of immence interest that one could trace any record of the **Hinglaj Shrine** in classical writings, but there is none that I know of. And yet I believe that the shrine which possible to Jagannath draws the largest crowds of pilgrims (Hindus and Mussulman alike) of any in India, was in existence before the days of Alexander. For the shrine is sacred to the goddess Nana (Now identified with Siva by Hindus), and assyrian or persian goddess Nana is of such immence antiquity that she has furnished to us the key to an older chronology even than that of Egypt. The famous cylinder of Assurbanipal, king of Assyria, tell us that in the year 645 B.C. he destroy susa the capital of elam and from its temple he carried back the chalden goddess Nana, and by the express command of the goddess her self took her from where she had dwelt in

elam "a place not appointed her" and reinstated her in her own sanctuary at urukh (Now Urukh in mesopotamia, where she had originally been taken 1635 years before by a conquering king of elam, who had invaded accad territory. Thus she was clearly a well established deity in mesopotamia 2280 years B.C. Alexander how ever, would have left that ziarat hidden away in the folds of the Hinglaj mountain on his left, and followed the winding of the hingol river some forty miles to its junction with a stream from the west, which would again give him the chance of striking out parallel to the coast.

Thumara

"Those Saniasis who visit the shrine of Hinglaj Wear rosaries of **Thumara** geting them as token from the temple of Devi."

(By Horace Arthur)

Famous temple Hinglaj : Elisee Reclus

The Earth and its habitants South west Asia vol. 18 page. 73 (1891) Famous temple of Hinglaj still frequented by thousand of Hindu pilgrims. Here animals are sacrificed to the goddess kali, and the devotees never fail to visit the islet of **Ashtola, or Satadip**, between the ports of ormara and pasni, whose rugged crest is crowned by a highly venerated sanctury. Ashtola was the Enchanted Island of nearchus.

Hinglaj is divinity of the Hindu Pantheon: James Hastings

This inacesseible Shrine has been visited by few Europeans. The best account of it is that of Goldsmid, who explored it in 1861. Moving along the course of a stream bisecting the Hinglaj hill, (3740 ft. high), he observed the place of sacrifice, a hollow in the hill smeared with the blood of animals sacrificed to the goddess, and the rocks decorated with sectarial marks (tilak) in a red pigment. From this place up to temple itself many of stones under foot were smeared with blood. About a quarter of mile higher up the hill is the shrine itself quite surrounded by mountain peaks. It foasted of no architecuture would create out of wooden toy bricks, but it

appearence and site are in good scenic effect. In the cavity to the left, far deeper and more confined than the sacifice hollow, is visible, surmounted by a long arch of pale sandstone, the so called of mari or nani the presiding goddess of the place. It is low castellated mud edifice with a rude wooden door.

In the penetrallia of the temple. We found the shrine of the goddess. Two diminitive domes, one at the head and the other at the foot, of short tomb shaphed mud erection, marked the chosen, sanctun of the divinity of the Hindu pantheon. A wooden rail has been set at the front and at the sides.

(Encyclopedia of Religion and ethics, part 12 page 715 to 717)

A place of great celebrity : Burnes

BURNES, LIEUT. ALEXANDER, (Travels into Bokhara. 3

Vols. London, 1834.) gives details description of Hinglaj as under:

"Thatta stands on the high road from India to **Hinglaj**, in Mekran, a place or pilgrimage and great celebrity, situated under the barren mountains of Hala (the Irus of the ancients), and marked only by a spring of fresh water, without house or temple. The spot is believed to have been visited by **Ramchander**, the Hindoo demigod, himself; an event which is chronicled on the rock, with figures of the sun and moon engraven as further testimony!

They travel in caravans of a hundred, or even more, under an "agwa," or spiritual guide. At Thatta they are furnished by the high-priest with a rod, which is supposed to partake of his own virtues, and to conduct the cortege to its destination. In exchange for its talismanic powers, each pilgrim pays three rupees and a half, and faithfully promises to restore the rod on his return; for no one dares to reside in so holy and solitary a spot. The "agwa" receives with it his reward; and many a Hindoo expends in this pilgrimage the hard-earned wealth of a whole life. On his arrival at Thatta from Hinglaj, he is invested with a string of white beads, peculiar to that city, and only found on the rocky ridge near it.

They resemble the grains of pulse or juwaree; and the pilgrim has the satisfaction of believing that they are the petrified grain of the Creator, left on earth to remind him of his creation. They now form a monopoly and source of profit to the priests of Thatta."

The town of Hingulaj called 'Hingulthan'

Sir Aurel Stein, who left an interesting description of the Hinglaj.....

The few historical data. I was able to collect are the next details. The town of Hingulaja and its temple, called Hingulthan are mentioned in the "Sakti sangama tantra", a tantric book dating from the 18th century A.D.

Shaktisangam Tantra III

कोङ्कणात् पश्चिमं तीर्त्वा समुद्र-प्रान्त-गोचरः।
हिंगुलाजान्तका देवि! जन्तवो जन-लेशतः।।

(Konkanat pasciman tirtva samudrapranta gocharah.
Hingulajantaka devi Jantvo Jan-Leshta)

Translation : "Hark, Pay now attention to saurastra, if oh goddess, one crosses from kokan westward to **Hingulaja**, there lies along the sore of the ocean the land of saurastra."

कर-तोयां समारभ्य हिंगुलाजान्तकं शिवे!
बक्तान-देशो देविशि! महा-म्लेच्छ-परायणः।।
हिंगु-पीठं समारभ्य मर्के शान्तं महेश्वरि!
खुरासानाभिधो देशो म्लेच्छ-मार्ग-परायणः।।

(Kara-toyam samarabhya ***Hingulaja****ntakam sive.*
Baktan-desho devesi maha-mlechha parayanah.
Hingu-pitham *samrabhya marke shantam maheshwari.*
Khurasanabhidho desho mlechha-marg-parayanah)

Translation : "Oh auspicious one, from karotaya up to **Hingulaja** extends the land of vakranta a resort of many Barbarians, from the sacred place of Hingulaj up to the lord of mecca, oh

highly goddess, extends the land called khurasan, a resort of barbarians an pilgriamage as a varanta. "Bakra ka nandi peak Map 4

वारुणाख्यं तथा देवि ! कथ्यते शृणु साम्प्रतम्।
मक्केश्वरः पश्चिमायामुत्त रे हिंगुला भवेत्।।

(Varunakhyam tatha devi! kathyate srnu sampratam.
Makkesvarah pascimayamutta re ***Hingula*** *bhavet.)*

Translation : "Likewise, oh goddess, according to report there is a country called after varuna, listen : to the west of Lord of mecca is situated to the north is **Hingula**, in the south the conqueror of the three worlds (Trailokya vijaya) is glorified."

"However the Buddhist monk sanghabhara, who for the first time translated the full text in to the chines in A.D. 516, has handed down the reading **Hinguvardhan** or increasing the "Asa Foetida plant"

In this connection the question arises whether the goddess **Hinglaci** was the protecutrix of the hingu or Asa Foetida plant. I am convinced she was, and I suppose that monk sanghbhara, when preferring the reading **Hinguvardhana** to **Nandi vardhana**, had the town of **Hinglaj** in mind.

On the other hand it is highly impossible that the author of the "Royal knowledge of the great peacok" himself had the town **Hinglaj** in mind as well.

Hinglaj has fantastic Scenery : Peter Martin

In 1945 when there was an earthquake of the Mekran coast which resulted in thousands of deaths from the subsequent tidal waves. Peter Martin and his friend planned personal expendition westward along the sparsely inhabited Mekran coast of Las Bela State, Baluchistan. Peter Martin stationed at Korangi Creek RAF flying boat base. They borrowed a tent from Karachi Technical College and drew rations from the Korangi cookhouse. These were boxed emergency rations for British forces.

Peter and his friends started on 2nd December 1945 by bus for the Hab River. They reached Hab at 5p.m. Hab which is the boundary between Sind and Baluchistan and was also border of Las Bela. Through Wazir of Las Bela they arranged 3 Camels for their journey.

Three camels turning up in the morning complete with savar(driver), a sepoy and two others.

According to Peter Martin "the rates for camels turn out to be at much more digestible levels than we had been quoted in Karachi: 8 annas per day for a carrying camel, and one rupee a riding camel, the price including the driver. In the evening we reached Dak Bungalow at Charalai but we were put up in a mud hut. By now we were on famillliar terms with our retinue. I holding Sindhi/English lessons with Jammu and Suleiman, and my friends with the Naib, an old man who appreciated that camel riding brings aches and pains to the inexperienced.

A new set of camels took us to Sonmiani, the going being easier at the outset through fairly fertile land, toughening later over large dunes, across saline wastes and occasional thicklets of scrub.

On 10[th] , we'd passed the mouth of the Hingol in the boat so now headed back inland and eastwards on dusty trails and amongst many sandhills to Aghor, a few huts, where the river leaves the rocky hills. Nearby is the fortified island in the Hingol mentioned by Stein in his Archaeological Tour in Geodresia. The river course is about ½ mile wide here and mainly dry at this time. We forded the flowing part, about 2 ft deep, on our camels.

The Hingol has fantastic scenery of towering cliffs, pinnacles and buttresses, the river winding between. Bypassing Kunderach we eventually camped at a delightful riverside spot near Gwader Bent. Nearby was the biggest fracture we yet been a vertical displacement commonly 2ft and up to 4ft between the sides. ....There were numerous subsidiary cracks in the alluvial floor; a small island like hill was extensively broken up, and there had been many rock falls about.

11[th] We attemped to get up Sham, the mountain which was claimed to have had the fiery eruption but failed, eventually being trapped in a defile with sides too steep and crumbly to risk. Some of the cliffs and slopes are of dried mud and in part we were dealing with eroded mud Volcano scenery. Our sipahi who had been a linesman on a telegraph line that had once run nearby reckoned it would take 15 hours to get to the key spot. May it be, did not want

to make the attempt either. Returning, we broke camp at 2.30 and turned back for Hinglaj.

Hinglaj is about 2 miles into a pleasant side valley that we had already passed. The track was difficult for the camels, one of which fell so we pitched camp on a small clearing and continued on foot to the Hindu shrine, Mai Nani. Under a protecting overhanging cliff there is a cool, clear spring- fed pool in front of the shrine, some coloured stones and a raised earthenware hearth for the sacred fire. It is on a platform under which there is a tunnel through which pilgrims must pass. Hasham, our sipahi, a Muslim was duly respectful requiring that we took off our shoes, which we did, and told us that photographs were not permitted."

Max Arthur Macauliffe

The Sikh Religion

Max Arthur Macauliffe (1842-1913)
It's Gurus Sacred writings and
Authors (Page 284)
Guru Gobind Singh

"The dwellers of the East know not Thy Limit, the goddess Hingula who dwelleth in the Himalayas meditateth on Thee; the Gurdegis of Ghor sing praises of Thy name.

The Jogis practice Jog to be united with Thee; how many suspend their breath to obtain Thee.

The Arabs of Arabia worship thee name.

The firangis of france worship Thee, the Kandharis and Qureshis know Thee the resident of the West recognize Thee as the object of their love.

The marathas the magadhis heartly do Thee penance, the natives of Tilang fix Thee in their hearts and recognize Thee as the abode of religion."

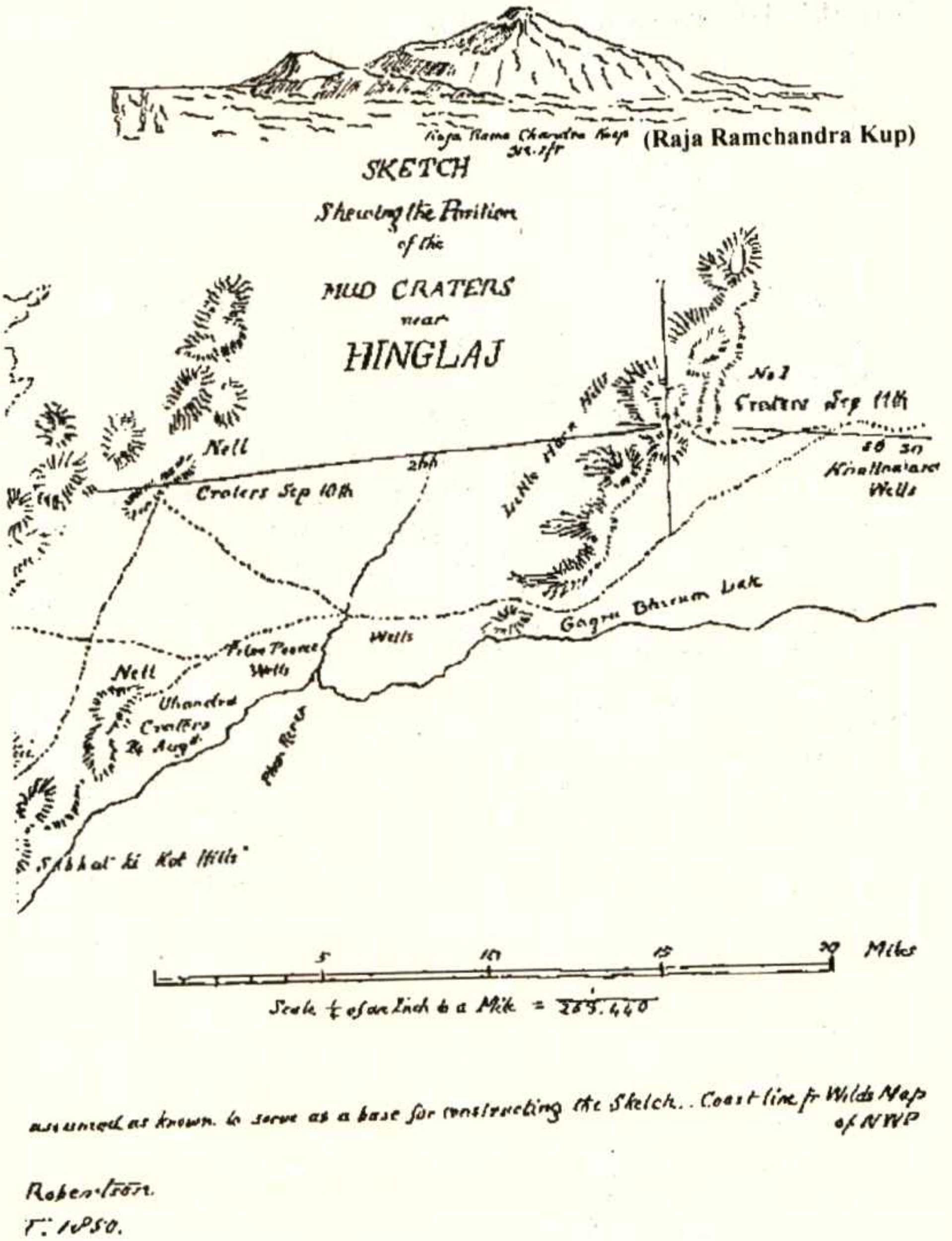

Alexander's campaigns in Sind and Baluchistan and the siege of the Brahmin ... By Pierre Herman Leonard Eggermont

Nanak's Dharamsala (In ruins)

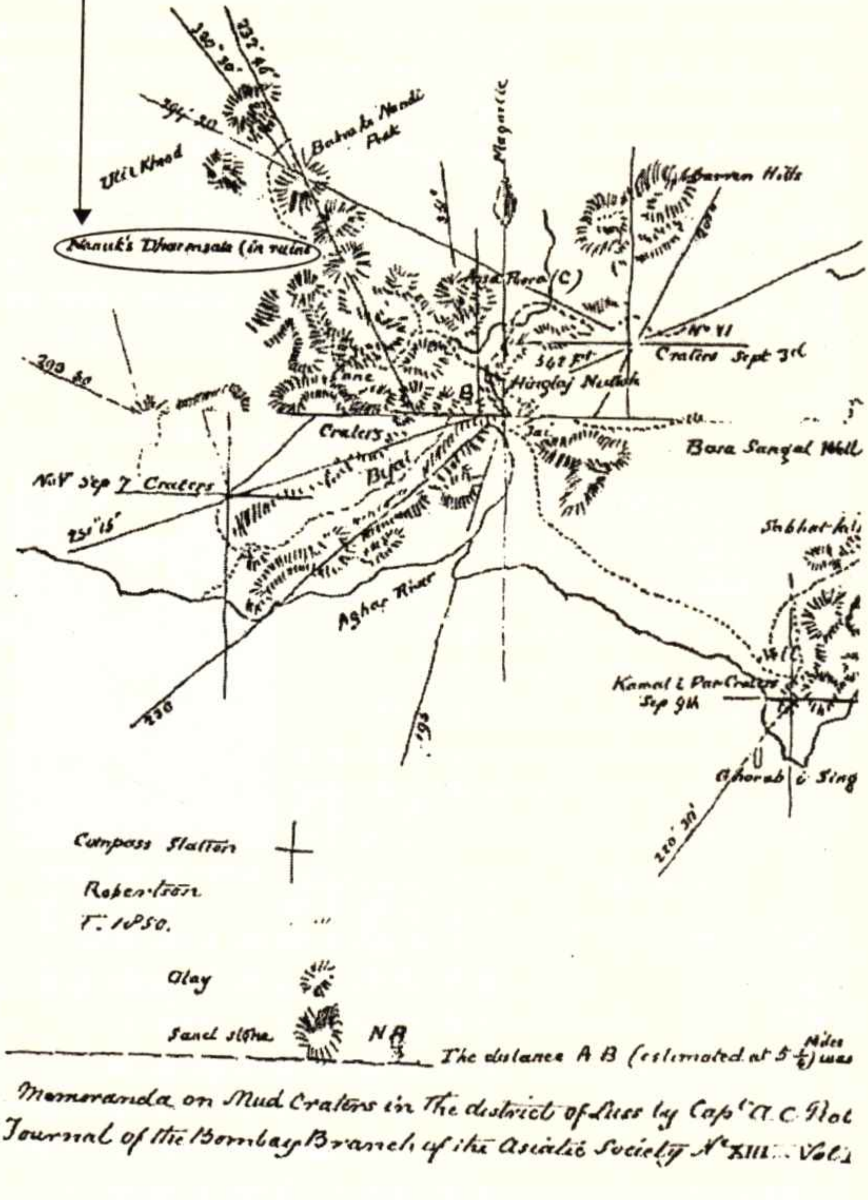

Alexander's campaigns in Sind and Baluchistan and the siege of the Brahmin ... By Pierre Herman Leonard Eggermont

PART OF THE

SKETCH of a ROUTE

through

BALOOCHISTAN and a part of MEKRAN and PERSIA

Performed under the Orders of Brig Genl Malcolm

by Lieut Henry Pottinger

Of the Bombay Military Establishment

AD 1810

The Position of Candahar laid down from Mr Elphinstone's Map
The Places laid down from report have a dash underneath them

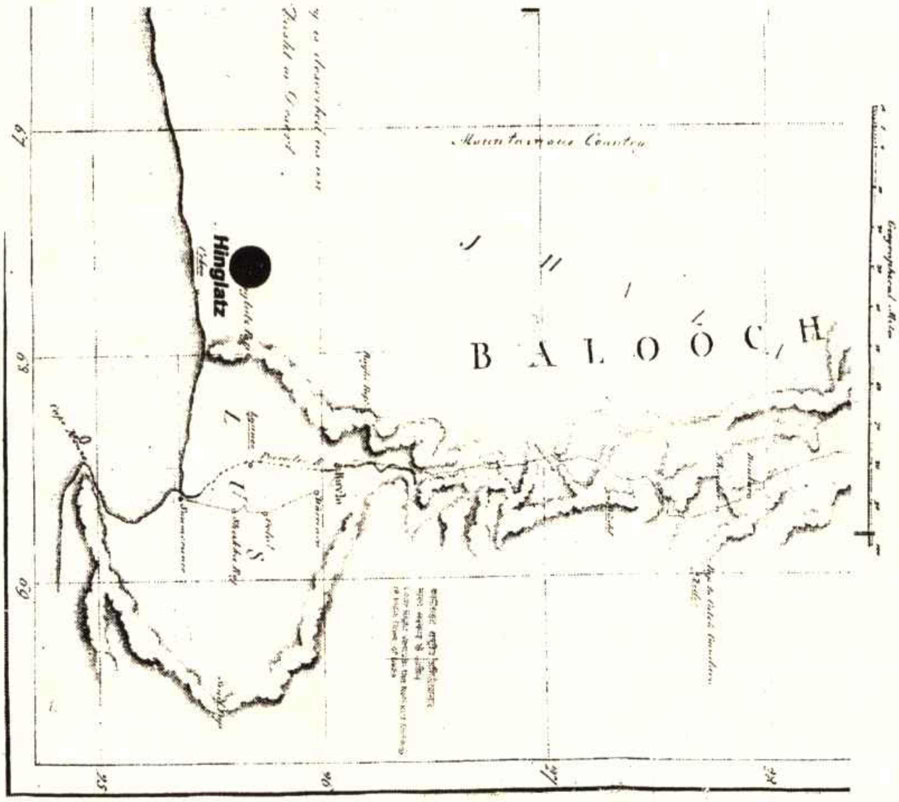

PART OF SKETCH of a ROUTE
through
BALOOCHISTAN and a part of MEKRAN and PERSIA
performed under the orders of Brig Genl Malcolm
by Lieuft Henry Pollinger
of the Bombay Military Establishment
AD 1810

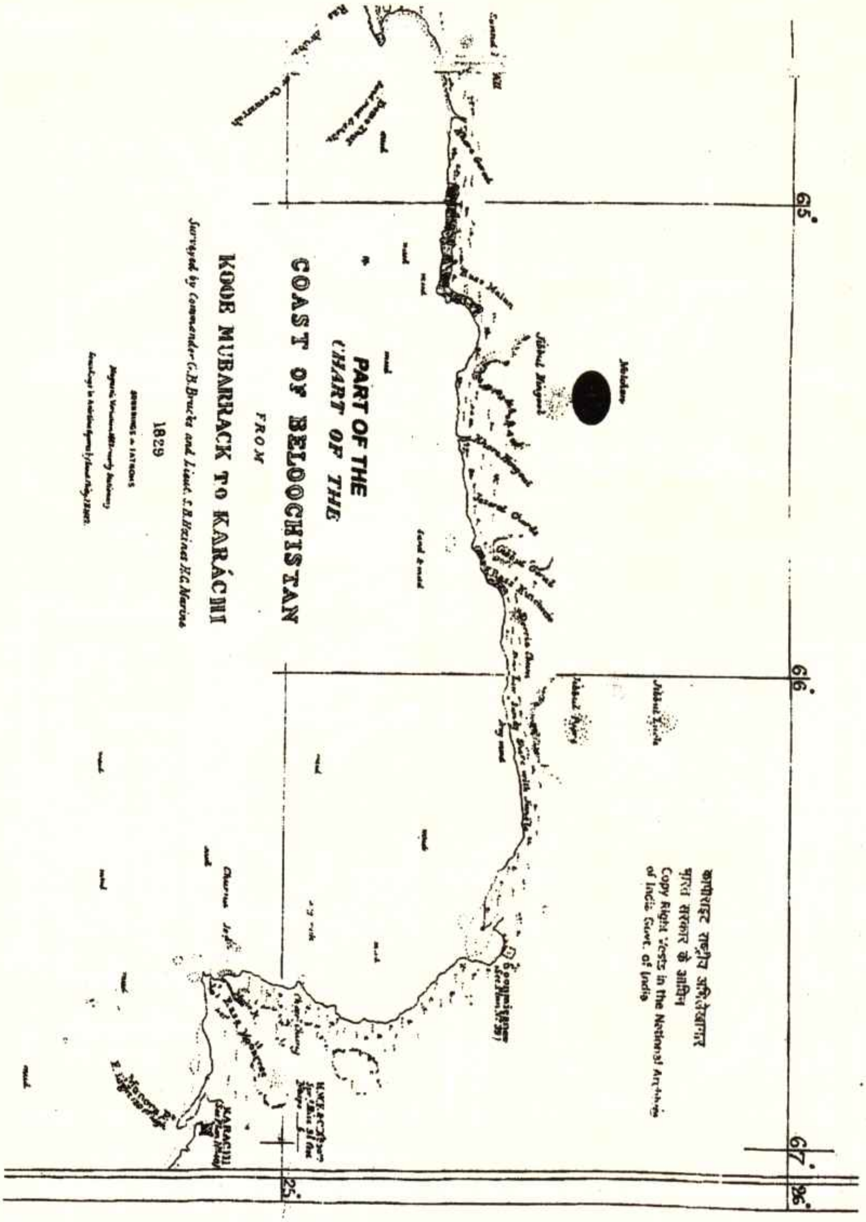

PART OF THE
CHART OF THE
COAST OF BELOOCHISTAN
FROM
KOOE MUBARRACK TO KARACHI
Surveyed by Commander G.D.Brucks and Lieut. S.B. Haines H.C. Marine
1829

अध्याय : ग्यारह

हिंगलाज माता-नानी मां

हिंगलाज माता को मुस्लिम श्रद्धालु "नानी बीबी" के नाम से संबोधित करते हैं। मुस्लिम श्रद्धालु ग्रीष्म ऋतु के पहले हिंगलाज माता की यात्रा करते हैं और उसे "**नानी की हज**" के नाम से जाना जाता है।

ऋग्वेद में माता को 'नना' कहा गया है। ऋग्वेद ९/११२/३ के अनुसार-

कारुरहं ततोभिषग्-उपलप्रक्षिणी नना।

नानाधियो वसुयवोऽनु गा इव तस्थिमेन्द्रायेन्दो परिस्रव।।

Imperial Gazetteer of India के अनुसार भी मुसलमान हिंगलाज को बीबी नानी के नाम से जानते हैं-

"Known also as the Hinglaj Devi, Hingula Devi, and the Red Goddess. She is Known as Bibi Nani by Musalmans and as Parvati, Kali or Mata by Hindus."

सुप्रसिद्ध लेखक **होल्डिच** ने हिंगलाज के बारे में वर्णन करते हुये लिखा है- "Bibi Nani is celebrated from the Ganges to the Euphrates and is perhaps the Chaldean Nana who was very old, dating perhaps a thousand years before Abraham."

मैस्सन चार्ल्स के अनुसार- "She is probably Nanaia of the Persians and Bactrians."

डॉ. रांगेय राघव की पुस्तक '**गोरखनाथ और उनका युग**' के अनुसार- "हिंगलाज में हिंगलाज देवी को जिसे मुसलमान 'बीबी नानी' और हिन्दू 'पार्वती' आदि कहते हैं। हिंगलाज के अधिकारी असल मुसलमान अर्थात् मलंग (ब्रह्मचारी) ही हो सकते हैं।"

'**हन मेजर वेस्ट**' (The Devine Mother of Local Goddesses of India) के अनुसार- "कालयापुर रियासत के एक जिले का नाम '**गृह हिंगलाज**' है, जो देवी के मन्दिर से लिया गया है। टीले राजास की मकबूल (लोकप्रिय,

सर्वप्रिय, मान्य) देवी भी हिंगलाज है। **एन. एम. बिल्मोरिया** ने बीबी नानी को 'शाम-पुस्याम' आरमीनिया, और एशिया देशों की देवी माँ को 'नान्या' से मिलाते हुए लिखा है कि Tanais या Anaca-Aneiti-Andeti बाबल वाली नाना देवी। अरक शहर वाली Enna मन्दिर वाली देवी। **एन. एम. बिल्मोरिया** ने इस समय की प्राचीनता को सिकन्दरे आज़म के वापसी वाले दौर से पहले वाला बताया है।' **एन. एम. बिल्मोरिया** ने 1944 ई. में हिंगलाज में नानी देवी के लिये लिखा है कि 'मुसलमान हिंगलाज को बीबी नानी का आस्थान समझते हैं।' (धरती माता : इश्तियाक अंसारी)

ये सीरिया एवं पर्शिया में 'नानिआदेवी' तथा बेबिलोन में 'नन्ना देवी' नाम से जानी जाती हैं। भारत में शक और कुषाण राजवंश इस देवी के उपासक थे।

डी.सी. सरकार के अनुसार- हिंगलाज देवी को स्थानीय लोग बीबी नानी के नाम से सम्बोधित करते हैं। उनकी पुस्तक 'The Shakta Pithas' के अनुसार- "Hinglaja- (Andi (Nabhi), the Devinama is doubtful); Same as Hingula, on the Aghor or Hingol river in Baluchistan.

Hingula, Hingulaja- Kubjika, Rudra, Pitha (Brahmarandhra-Kattari, Kottavi, Kottarisa, Bhimlochana, Shiva Mahapitha, Brahmarandra - Kottari, Bhimlochana) Prana, same as Hinglaja (Hinglaj) in Baluchistan where the goddess is locally called Bibi Nani.)"

सिंधु सभ्यता, हड़प्पा सभ्यता और सुमेरीयन सभ्यता ईरान और पश्चिम एशिया में माँ शक्ति प्रमुख रूप से जनजीवन का अंग रही है। सुमेरीयन क्षेत्र की देवी का नाम ''नना'' था और बलूचिस्तान में स्थित महाशक्ति हिंगलाज माता को भी नानी या ननी कहा जाता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि प्राचीनतम देवी हिंगलाज जिसे नानी मां के नाम से संबोधित भी करते हैं, सुमेरीयन देवी नना भी यही हिंगलाज देवी हैं।

डॉ. भगवत शरण उपाध्याय ने अपनी रचना 'पुरातत्व के रोमांस' में कहा है कि- ''दजला फरात नदियों के दो आब, उत्तरी इराक में बसा था देश-असुर, जिसके प्रमुख नगर थे-अश्शूर (असुर), निनुआ (निनेवे), अरबैल ईरान तथा कला।''

कुषाण काल की नानीआ मुद्रा

श्री अली अहमद ब्रोही के 'दैनिक डॉन में लिखे आलेख के अनुसार- ''हिंगलाज देवी का

स्थान पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रान्त के लसबेला नाम के भूतपूर्व राज्य में स्थित है। यह मुस्लिम बहुल क्षेत्र है। यहाँ के मुसलमान हिंगलाज देवी को ''नानी बीबी'' जिसका तात्पर्य ''मोटा दादी मां'' "LADY GRAND MOTHER" को पूजनीय व वन्दनीय मानते हैं। इस्लाम पूर्व समय में सीरिया, ईरान, आरमेनिया, ओशियाना, इजिप्ट (मिस्र) तथा यूरोप में ग्रीस, रोम (इटली) में मातृ पूजा भक्ति प्रचलित होने के ऐतिहासिक प्रमाण हैं। इन प्रदेशों में (NANEA THE MOTHER GODDESS) नानेआ अथवा देवी माता के नाम से पूजते हैं। यह नानेआ देवी, नानी बीबी, महान माता, मोटा दादी माँ ही है।''

अघोर से **हिंगलाज** शक्ति पीठ की ओर जाने वाले मार्ग पर पाकिस्तान सरकार ने ''नानी मंदर'' Nani Mandar का मार्ग सूचक सूचना पट्ट प्रदर्शित कर रखा है। प्राचीन ग्रंथों में उल्लेख मिलता है कि मेसोपोटामिया को नानी की भूमि के रूप में माना जाता रहा है। हमें पुरातत्व सर्वेक्षणों एवं अध्ययन से ज्ञात होता है कि बलूचिस्तान से लेकर मेसोपोटामिया एवं सिंधु नदी की घाटी के बीच नानी माँ की पूजा और दर्शन हेतु भारी संख्या में श्रद्धालुओं का प्राचीन काल में भी आना-जाना रहा है। व्यवसायी, दस्तकार, व्यापारी और फकीर इस नानी माँ की पूजा-अर्चना करते रहे हैं। बलूचिस्तान एवं ईरान से लगे समुद्री तट पर हिंगोल नदी के किनारे **हिंगलाज** ही वह शक्तिपीठ है जो नानी के नाम से पूजित होती रही है।

सिन्धी साहित्य के विद्वानों ने हिंगलाज माता को ''नानी'' के नाम से संबोधन को लेकर जो लिखा है उन्हीं की भाषा में हम उल्लेख कर रहे हैं- ''नैनवा (ईरान) में हिंगलाज माता खे नानी जे नाले सां सदा॒ंदा आहिनि, बलोचिस्तान में ज़िगिरी कौम जा माण्हू अज॒ बि माता हिंगलाज खे ''नानी'' करे सदा॒ंदा आहिनि। इन्हे जो पसमंज़र हिन रीत आहे त कंहिं बि सन्त महात्मा जे आस्थान ते कंहिं मेले त्यौहार जे मौके ते सुखा दियण लाइ, या कंहि दुख दर्द मिटाइण लाइ, कंहिं महाभारी कष्ट कटण लाइ, मर्दन सां गदु औरतूं बि वद॒ अंग में वेंदियूं आहिनि। साग॒ो तरह माता हिंगलाज जे पवित्र स्थान ते जद॒हिं औरतूं वेंदियूं हुयूं त संदनि ब॒ार बि उनहनि सां गदु वेंदा हुआ। उहे औरतूं जद॒हिं माता हिंगलाज खे माता करे वद॒े जोश सां पुकारींदियूं हुयूं त उनहनि औरतुन जा ब॒ार वरी माता खे ''नानी'' करे पुकारींदा हुआ। उन द॒ोहं खां वठी हर माण्हूअ जी ज़िबान ते माता हिंगलाज जो नालो ''नानी'' पइजी वियो आहे। हिन वक्त माता हिंगलाज जो मन्दर बि ''नानी मन्दर'' जे नाले सां सद॒ियो वेंदो आहे, खुद सरकार बि रोड, रस्तन जे संग मीलन ते हिंगलाज माता मन्दर जे बंदिरां ''नानी मन्दर'' रखियो आहे त ''नानी मन्दर'' हितां खां 10 किलोमीटर परे आहे। अहिड़ीअ

तरह उतां जे नंढी तोड़े वदी उम्र वारन में नानी मन्दर जो नालो ज़िबान ते वधीक चढ़ियलु आहे।''

गोपाल जी गुप्त के अनुसार- ''शाक्तगण पीठों की स्थिति अपने शरीर में भी मानते हैं। काँगड़ा का ज्वाला जी (जालंधर), उड्डियान (ओड़ीसा), पूर्णागिरि जिसे कुछ दक्कन तो कुछ हिमालय में मानते हैं, **नना क्षेत्र** (बलूचिस्तान-हिंगलाज), कामकोटि या त्रिपुरा की काँचीपीठ की मान्यता भी बढ़ी।''

सलमान रशीद के ''डेली टाइम्स ऑफ पाकिस्तान'' में छपे लेख के अनुसार- नानिया बीबी विश्व में सबसे प्राचीनतम हैं। उन्हीं के शब्दों में- "The cult of **Nania or Bibi** as we know her, is thus one of the oldest in the world: it has survived for over four thousand three hundred years. And so over the millenniums, caravans carrying trade and philosophy back and forth between Mesopotamia and the cities of the Sindhu Valley dispersed the name of this goddess across the countries."

शाह अब्दुल लतीफ ने हिंगलाज को नानी शब्द से संबोधित किया है-

''नांगा नानी हलिया - हिंगलाजां हली
देखी तिनि द्वारका - महेर्सी मल्ही
आगहु जिनि अली - आउ जीअंदे उन रे।''

बंगाली भाषा में 'नना' संबोधन माता के लिये होता है।

अन्य भारतीय शब्दकोशों के अनुसार-

नाना = माता के पिता
नानी = माता की मां
नानेरा = माता का जन्म स्थान

इस प्रकार नानी मंदिर का तात्पर्य मां की मां के मंदिर से है। सांसारिक जीवन में मां को अत्यधिक श्रद्धाप्रद माना है और मां की मां सर्वाधिक आस्था केन्द्र होती है।

भगवान ब्रह्मा, विष्णु, शिव और सती के पहले किसी भी सभ्यता या देवी के स्थापित होने, लोक पूजित होने का प्रमाण विश्वसनीय इतिहास के किसी भी पृष्ठ में उपलब्ध नहीं है। उपरोक्त विवेचन से हमारा मत है कि सती के अंग से स्थापित हिंगलाज शक्तिपीठ विश्व का प्राचीनतम शक्ति पीठ है।

आस्था के रूप

1. हिंगलाज माता के परचे व कथायें

महाकवि ईश्वरदास बारहठ

हिंगलाज माता के अनेक लोक कल्याणकारी परचे-परवाड़े एवं लोक कथायें प्रसिद्ध हैं। हम उनमें से कुछ का उल्लेख पाठकों की जानकारी के लिये प्रस्तुत करना उचित समझते हैं।

भक्त कवि ईसरदास बारहठ का जन्म हिंगलाज माता की कृपा से ही हुआ था। उनके पिता ने हिंगलाज यात्रा कर माताजी का आशीर्वाद प्राप्त किया था। इस संबंध में निम्नलिखित दोहा उल्लेखित है-

''कापड़ियो हिंगलाज रौ, हींमालै गळियोह।
सो सूरा बारठ रे घरे, ईसर अवतरियोह।।''

हिंगलाज माता की कृपा से महाराज अजीत सिंह का जन्म

जोधपुर के महाराजा जसवंत सिंह के कोई सन्तान नहीं थी। जसवंत सिंह काबुल युद्ध के लिये गये हुये थे। नाथ योगी रिद्ध-सिद्ध पुरी ने हिंगलाज शक्ति पीठ में जाकर पांच वर्ष तक तपस्या की और उसे हिंगलाज माता ने हुक्म दिया कि तुम महाराजा जसवंत सिंह के पुत्र के रूप में जन्म लो नहीं तो मारवाड़ का शासन समाप्त हो जायेगा। योगी रिद्ध-सिद्ध पुरी काबुल में महाराजा जसवंत सिंह के पास गये और हिंगलाज माता के आदेश को बताया। योगी रिद्ध-सिद्ध पुरी ने काबुल में ही समाधि ली और उसी दिन महाराजा जसवंत सिंह की रानी जादम जी के गर्भ धारण हुआ। समाधि के ठीक नौ महीने बाद महारानी जादम जी के गर्भ से महाराजा अजीत सिंह का जन्म हुआ। इस संपूर्ण हिंगलाज माता के चमत्कार का वर्णन 'बाँकीदास री ख्यात' और 'अजीत विलास' नामक ग्रंथ में मिलता है।

बाँकीदास री ख्यात (सं. पं. नरोतम दास स्वामी) के अनुसार-

''हिंगलाजजीसूं रिधसिधपुरी सन्यासी हररामपुरीरो चेलो काबुल आयो. मालम करायी, पांच वरस मैं हिंगळाज चरणां तप कियो, माईरी अग्या हुई समाध लेनै जसवंतसिंघरै कंवर होय, नवकोटीरो राज कर, जैसूं मोनै समाध दिराड़ो. महाराज ठावा आदमी मेल समाध दिराड़ी, भंडारो करायो. इण कह्यो-राणी जादव के पेट आऊंगा, महाराज हमारा मुख न देखै, म्हे महाराजका मुख न देखूं संवत् १७३५ रा भादवा वद ९ सन्यासी दुपहररी समाध काबलमें लिवी. बभूतरो गोळो, माला १, पोथी १ सूर्पी कह्यो-हूं मांग लेसूं।''

अजीत विलास (सं. शिव दत्त बारहठ) में जोधपुर के महाराजा अजीत सिंह का जन्म हिंगलाज माता की कृपा से होने का 'कवत्त' एवं 'बात' निम्नलिखित प्रकार मिलती है-

बात

सिन्यासी रिधपुरी हिंगलाज जी री तरफ सुं आय ने समाध लीनी।

कवत्त

हींगुलाज चे हुकम, उठै सीनासी आयो।
रीध सिध पुरी नाव, गुरु हरराम बतायो।।
बरस अमर बावीस, करे कै तीरथ कासी।
कमधां सु बतकाव, ऐम कहै जोग्य भासी।।
तापियो वरस हूं पांच तक, इम देवी तब उच्चरै।
'जसराज' तणै घर जनम लै, कोट नवां राजस करै।।

बात

अे समाचार सिन्यासी केहा। समाध री दुवायती मांगी।

कवत्त

मास सात गरभवास, राखसी जादम राणी।
....।।
अदीक चक्र बहसी इला सेह मचकूर सुणावियो।
विख्यात नाम माहरो बसु, सिंघ 'अगजीत' स्व आखियो।।
माला वभूत पोथी मिलै, सोंपी सिध सुभाव सूँ।
आठमें वरस लेईस ऊरा, याद करे सो आय सूँ।।

बात

अै सारा वचन सिध रा छै। कवत तो घणां छै, पण एक लिखीयो छै। दुरगदास

जी अे सारी बातां म्हाराज सूँ मालम कीनी, म्हाराज राजी हुवा। अजीत-सिंघ जी रे गरभ रो दिन इण सिध समाद लीनी सो ही दिन गिणीजियो।

कवत्त

पैंतीसो वरस परस, भादर पद मास भणिजै।
वद नवमी गुरवार, गरभ चो दिन गीणीजै।।

बात

मास च्यार तो अजीतसिंह जी रे मां जादम जी ने गरभ रा हुवा था, ने मास छव दळथंभण जी री मां कछवाई जी ने गरभ रा हुवा था इतरा में महाराज धांम पधारीया।

कवत

''राज बीज राखतां, राज नव कोट राखियो।
राज बीज राखतां, कमध वंस नीर चढ़ायो।।
राज बीज राखतां, रहो धरम दोनु राहे।
राज बीज राखतां,साळ हुवो पतसांहे।।
राखतां बीज राजा तणो, कितो सुजस सुर पुर के हो।
तिण वार उदेसिंघ लखधीर तणा राज बीज सु रेहो।।''

गुमान भारती री वेल

कवियां चिमनजी कृत ''सोढ़ायण'' में गुमान भारती की **हिंगलाज** यात्रा का वर्णन मिलता है।

गुमान भारती 35 संत-मुनियों के साथ **हिंगलाज** यात्रा पर गये। आदि शक्ति **श्री हिंगुलाज** के पावन स्थल पर पहुंचने के बाद वहाँ के कुछ जगद् प्रसिद्ध चमत्कार भी देखे। सूर्योदय से पांच घड़ी पूर्व आदि शक्ति का रथ आने से पहाड़ का गूंजना, देवी के चरणों में पहने हुये नूपुरों की ध्वनि सुनाई पड़ना, रोमांच हो उठना आदि प्रमुख घटनाओं का उल्लेख है। इसके बाद अलिल कुंड में स्नान करना, परिक्रमा लगाना, आच्छा (इच्छा), बूट, कालिका आदि देवियों तथा महादेव आदि के यथाविधि पूजन का वर्णन है।

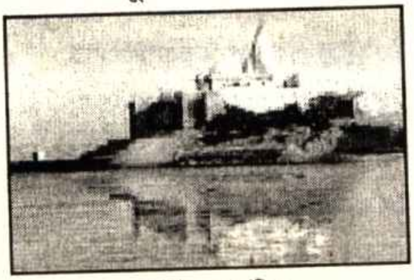
कोटेश्वर मंदिर

श्री हिंगलाज के दर्शन कर पुनः लौटते समय वहाँ से ८ कोस की दूरी पर 'उत्तरिये रण' नामक स्थान पर चोर-चूनड़ी आदि चढ़ावा करने की परंपरागत रस्म अदा की और कुछ गौओं का दान भी दिया।

कोटेश्वर मंदिर पर
लगने वाली छाप

इसके पश्चात् कोटेश्वर में भक्ति की छापें लगवा कर तथा गऊकोठे में नहाकर कच्छ, गुजरात और मालवा को पार करते हुए पूर्व की धरती पर आने का उल्लेख है। नेपाल के महादेव को गोले चढ़ाकर घूमते हुए बाबा श्री गुमान भारती पुनः पश्चिम की ओर मुड़े व शेरगढ़ के गड़ा नामक गाँव में आ पहुंचे।

चिमनजी कवियां ने गुमान भारती की हिंगलाज यात्रा का वर्णन काव्य में निम्नलिखित प्रकार किया है-

*''**हिंगलाज** सै हियौ हुलसियौ, वस रै मारग वूवा।*
महापुरस पैंतीस मूरतां, उवां रै साथे हूवा।
भेख रा भांण गुमानभारती, दरसन सुनमुख दीजे।। २७।।
सोवनमेड़ी में छड़ियां मेली, अग्गर धूप उपांण।
आगे होय मरर गवौ, जैजैकार जपांण।
भेख रा भांण गुमानभारती, दरसन सुनमुख दीजे।। २८।।
पांच घड़ी दिन ऊगां पैला, आदसगत रथ आवै।
जांझरमाल वाजिया गैरा, गर डूंगर गरणावै।
भेख रा भांण गुमानभारती, दरसन सुनमुख दीजे।। २९।।
गवो कहै हमें थे ऊठौ, सरण नीकळौ सारा।
करो संपाड़ा लिलकुंड में, परचौ कहियण प्यारा।
भेख रा भांण गुमानभारती, दरसन सुनमुख दीजे।। ३०।।
चरणां में सांमीजी निकल्या, जयपुरी गुर भाई।
धोती नारेल गवै नै दीया, कीनी सफळ कमाई।
भेख रा भांण गुमानभारती, दरसन सुनमुख दीजे।। ३१।।
आछा पूज काळका पूजी, बूटा बकर चढ़ाई।
महादे नै रोट चाढ़ नै, चंद्र कूंप वोलाई।
भेख रा भांण गुमानभारती, दरसन सुनमुख दीजे।। ३२।।
परस माई रै वळिया पाछा, हरख मनां में हूवा।
गुर चेलै रै समाध गुढ़ढे, सावधांन हुय वूवा।
भेख रा भांण गुमानभारती, दरसन सुनमुख दीजे।। ३३।।
कोस आठ रौ पैंडौ करने, उत्तरियै रिण आया।
चीर चूनड़ी थांन चढ़ाया, दांन गउवां देराया।

भेख रा भांण गुमानभारती, दरसन सुनमुख दीजे।। ३४।।
कोस आठ रौ पैंडौ करने, अकल आठमी आया।
लालां नै जसराज कापड़ौ, मगर भींव परठाया।
भेख रा भांण गुमानभारती, दरसन सुनमुख दीजे।। ३५।।
चड़ियां सोनमैड़ी में चाड़ी, सरधा ह्वै सोइ चाड़ौ।
दांन मांन घर सारूं दीजे, दसे नोंम खाड़ौ।
भेख रा भांण गुमानभारती, दरसन सुनमुख दीजे।। ३६।।
कोटेसर में छापां लीनी, गउ कांठै में नाया।
अगवै हाथ टूमरा दीना, लेय कंठ लपटाया।
भेख रा भांण गुमानभारती, दरसन सुनमुख दीजे।। ३७।।
कछ गुजरात माळवी लांघ्यौ, धर पूरबले धाया।
महादेव नेपाळ कहीजै, गोळा उठै चढ़ाया।
भेख रा भांण गुमानभारती, दरसन सुनमुख दीजे।। ३८।।
फेर पिछ्म री वाटां फिरिया, अवघट घाटां आया।
घणै हरख सूं गड़ै पहूंता, विध-विध लोक वधाया।
अळभेख रा भांण गुमानभारती, दरसन सुनमुख दीजे।। ३९।।
बीज थावर रौ जमौ जगायौ, बाबै साध बुलाया।
घर-घर होवै हरख वधावा, सहिया मंगळ गाया।
भेख रा भांण गुमानभारती, दरसन सुनमुख दीजे।। ४०।।

हिंगलाज माता को एक लाख स्वर्ण मुद्राओं का चढ़ावा

आसेरगढ़ के भानुराज अपरनाम अस्थिपाल ने हिंगलाज माता के दर्शन कर एक लाख स्वर्ण मुद्राओं का चढ़ावा चढ़ाया। महाकवि सूर्यमल्ल मीसण ने वंशभास्कर में उक्त घटना का उल्लेख एक छंद में करते हुए लिखा है-

''पय पुज्जि जननि अग्गें प्रनमि कनक लक्ख तंहं भेट किय।''

2. जगन्नाथपुरी एवं हिंगलाज माता

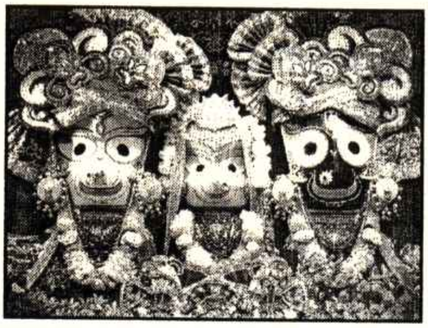

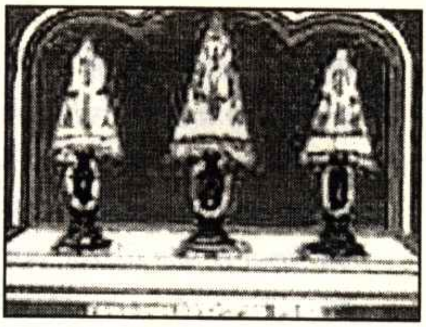

एक प्राचीन कथा के अनुसार विदर्भ के सुप्रसिद्ध राजा नल माता **हिंगलाज** के अनन्य भक्त थे। पुरी के राजा ने राजा नल से प्रार्थना की कि भगवान **जगन्नाथ** के 'महाप्रसाद' को पकाने के लिये मां हिंगुला को प्रज्वलित अग्नि रूप में प्राप्त की जाये। राजा नल की प्रार्थना पर माँ **हिंगुला** पुरी में अग्नि रूपा पधारीं।

पन्द्रहवीं शताब्दी में महाकवि सारला दास ने अपनी कृति '**सारला महाभारत**' में देवी हिंगुला का वर्णन किया है। उनके अनुसार भगवान के चढ़ाये जाने वाले प्रसाद का स्वादिष्ट होना हिंगलाज माता की कृपा से ही संभव होता है। उनके अनुसार विदर्भ का सूर्यवंशी राजा नल हिंगुला देवी का उपासक था। हिंगलाज देवी की कृपा से ही राजा नल ने '**गौरी सौरी पाका**' तैयार करने में सफल हुआ। राजा नल के उत्तराधिकार भी हिंगुला देवी की पूजा पीढ़ी दर पीढ़ी करते आ रहे हैं।

प्राचीन कथानक के अनुसार हिंगलाज माता ने राजा को स्वप्न में कहा कि मेरी पीठ गोपाल गढ़ में होगी। सन् 1575 से वहाँ हिंगुला यात्रा का आयोजन के द्वारा लाखों श्रद्धालु अपनी श्रद्धा अर्पित करते हैं। वीरवर हरि चन्दन तालचेर के पहले राजा थे जिन्होंने हिंगुला समारोह प्रारम्भ किया। चैत्र माह की चतुर्दशी को जगन्नाथ मंदिर की रसोई से अग्नि स्वरूपा हिंगलाज यात्रा के लिये प्रस्थान करती है और सभी वर्गों एवं जातियों के लाखों श्रद्धालु उसके दर्शन करते हैं। उक्त यात्रा में वहाँ के राजा

के छत्र को अग्नि स्वरूपा हिंगलाज पर आच्छादित किया जाता है। चतुर्दशी के कुछ दिनों पूर्व हिंगुला मां प्रकट होकर मुख्य 'देहुरी' को प्रकटीकरण के स्थल के बारे में जलता हुआ स्थल के रूप में सूचना देती हैं और उस स्थल को हिंगुला यात्रा तक श्रद्धालु श्रद्धा के साथ शृंगारित करते हैं। हिंगलाज, अनुगुल अथा मलिक, हिंडोल, धेनकानल, पाललहड़ा एवं देवगढ़ क्षेत्र के लोगों की उपासना देवी है। प्रत्येक बृहस्पतिवार को माता की विशेष पूजा होती है।

माता के 36 कौमों के लोग उपासक हैं। माता के मंदिर की गदा नायक एवं पायिका जिनमें खाती और ब्राह्मण सम्मिलित हैं, विशिष्ट पूजा-अर्चना करते हैं। वहाँ के राजा हिंगुला माता की पूजा-अर्चना करने आते हैं। हिंगुला देवी की पूजा आदिवासी प्राचीन काल से करते हैं और सबरी श्लोकों से अर्चना करते हैं।

उड़ीसा के सामान्य हिन्दू समाज में देवी हिंगलाज की अत्यधिक श्रद्धा के साथ पूजा की जाती है। ग्रामीण क्षेत्रों में यह लोक मान्यता है कि देवी हिंगलाज श्रद्धालुओं के दुख हरण करने के लिये पधारती हैं और श्रद्धालु हिंगुला यात्रा/पटुवा यात्रा का आयोजन करते हैं। गांव की गली-गली में हिंगलाज माता की पूजा की जाती है और माता के मिष्टान्न, नये वस्त्र, पणा, कच्चे आम की केरी चढ़ाई जाती है एवं घी का दीपक जलाया जाता है। महिलाएं उपवास रखती हैं और उन्हें 'औसती' (Osati) से संबोधन किया जाता है। श्रद्धालु गांव-गांव हिंगलाज की यात्रा निकालते हैं। वे सिर पर काला वस्त्र बांधते हैं। ढोल व अन्य वाद्य यन्त्र बजाये जाते हैं। हिंगुला यात्रा उड़ीसा का लोक त्यौहार है।

जन्म जन्म से मुक्ति

श्री ब्रह्मवैवर्त पुराण में कृष्णा जन्मखंड 76 अध्याय में कहा गया है कि- "आसोज शुक्ल पक्ष की अष्टमी के दिन श्री हिंगलाज तीर्थ में दर्शन करने पर मनुष्य इस पृथ्वी पर बार-बार जन्म लेने के चक्र से मुक्ति प्राप्त कर लेता है।"

माता हिंगलाज तेरे नाम अनेक

हिंगलाज माता को हिंगुला, हिंगलाम्बिका, हिंगुलाम्बा, लाल माता, अरुण माता, कोट्टरी देवी, बीबी नानी, नानीआं, नना देवी, अगोर देवी, मकरान पर्वत वाली माता, 'हिंगलाज हड', हिंगल माता, ज्वाला मुखी हिंगलाज आदि नामों से सम्बोधित किया जाता है।

3. बप्पा रावल एवं हिंगलाज

बप्पा रावल हिंगलाज शक्ति पीठ के दर्शन करने गये थे। मोहम्मद बिन कासिम द्वारा भारत पर किये गये हमले का सिंध के राजा दाहरसेन ने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर प्रतिरोध किया। बप्पा रावल भी दाहरसेन की रानी की राष्ट्र रक्षार्थ सहायता करने पहुँचे। वे पाटन से थट्टा होते हुये हिंगुलोत्सवा, जिसे हिंगोस नदी कहते हैं, उसके तट पर स्थित गिरिगुहा में ज्योति रूप में विराजमान **हिंगुलाज** माँ के स्थान पर जा पहुंचे। यहां सती के हिंगु-मंडित ब्रह्मरंध्र का पतन होने के कारण इसका नाम **हिंगुलाज** अर्थात् 'सिंदूरचर्चित मांग से समुत्पन्न' तीर्थ है।'

4. पाण्डव और हिंगलाज माता

जब पाण्डवों ने राजसूय यज्ञ का आयोजन किया था, तब उन्होंने जो विजयाश्व छोड़ा था, उसे गणेशजी ने हिंगलाज नामक स्थान पर रोक लिया था। तब अर्जुन वहाँ आये और उन्होंने यहाँ देवी माता से पूछा कि यह अश्व किसने रोका है, तब माता ने कहा- आपने राजसूय यज्ञ के प्रारम्भ में गणेश जी का पूजन नहीं किया था, इसलिए गणेश जी ने यह अश्व पकड़ लिया। तब अर्जुन ने गणेशजी से क्षमा माँगी, इसके बाद गणेशजी ने यज्ञाश्व को छोड़ दिया।

5. चंद्रला परमेश्वरी स्वरूपा हिंगुलाज

राजा सैन की एक पुत्री थी, जिसका नाम चंद्रला था। राजा ने उसके लिये वर तलाशना शुरू किया, परन्तु राजा की कसौटी पर कोई उपयुक्त वर नहीं मिला। एक रात राजा को स्वप्न में **हिंगुला माता** ने दर्शन दिये और कहा कि एक व्यक्ति तुम्हारे नगर के बगीचे में दूसरे दिन आयेगा, उससे तुम्हारी पुत्री का विवाह कर देना। दूसरे दिन नारायण मुनि नामक अत्यधिक रूपवान व्यक्ति नगर के बगीचे में आया। राजा ने उसका आदर-सत्कार किया और अपनी पुत्री से विवाह का प्रस्ताव रखा। प्रारम्भ में तो नारायण मुनि ने प्रस्ताव को ठुकरा दिया, परन्तु बाद में राजा के आग्रह पर प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। चन्द्रला और नारायण मुनि का विवाह संपन्न हुआ और दोनों भीम नदी के किनारे रहने लगे। उस क्षेत्र के एक दुष्ट राजा की कुदृष्टि चंद्रला पर पड़ी और वह उसे जबरन अपहरण कर ले गया। चंद्रला को चालीस दिन तक नारायण मुनि ढूंढ़ते रहे, परन्तु वह नहीं मिली। नारायण मुनी हिंगुला पीठ में जाकर देवी की प्रार्थना करने लगे।

देवी ने नारायण मुनि की प्रार्थना स्वीकार की और एक शर्त के साथ सहायता करने का विश्वास दिलाया। शर्त यह थी कि नारायण मुनि माता के आगे-आगे अपने नगर तक चलेंगे और पीछे मुड़कर नहीं देखेंगे। नारायण मुनि ने हिंगुला माता की शर्त स्वीकार कर ली और माता के आगे-आगे चलने लगे। नारायण मुनि को अपने पीछे हिंगुला माता के पदचाप सुनाई दे रहे थे। बीच रास्ते में नारायण स्वामी के मन में विचार आया कि पीछे मुड़कर यह सुनिश्चित कर लूं कि उनके पीछे हिंगुला माता पधार रही हैं कि नहीं। ज्यों ही नारायण मुनि ने पीछे मुड़कर देखा अचानक पक्षी चहचहाने लगे, भीमा नदी में गर्जना हुई और नदी के जल में चक्रवात आ गया। हिंगुला माता पत्थर स्वरूप में परिवर्तित हो गई। नारायण मुनि द्वारा शर्त भंग करने पर

हिंगुला माता ने स्वयं आगे चलने से मना कर दिया, परन्तु नारायण मुनि को एक नारियल दिया और आदेश दिया कि राजा के महल पर उक्त नारियल जाकर फोड़ देना। नारायण मुनि ने उस दुष्ट राजा के महल तक जाकर उक्त नारियल को हिंगुला मां के निर्देशानुसार ज्यों ही फोड़ा, उसमें से असंख्य मधुमक्खियां प्रकट हुइ और चंद्रला का अपहरण कर बन्दी बनाने वाले राजा पर हमला बोल दिया। राजा अपने आप को बचाने के लिये नदी में कूद गया और नदी में डूबने से उसकी मृत्यु हो गई। चंद्रला दुष्ट राजा के चंगुल से मुक्त हुई। इस घटना स्थल पर लगभग ८00 वर्ष पूर्व एक मंदिर का निर्माण किया गया। उक्त मंदिर में कर्नाटक राज्य से लाखों श्रद्धालु आकर चंद्रलाम्बा देवी की पूजा करते हैं। यह स्थान गुलबर्गा के निकट है।

6. राजा युवनाश्व-कोली एवं हिंगलाज

अलेक्जेण्डर किनलॉक फार्ब्स द्वारा लिखित पुस्तक 'रासमाला' के हिन्दी अनुवाद में **हिंगलाज** माता का उल्लेख करते हुए एक कथा का वर्णन किया गया है, जिसके अनुसार, ''राजा मान्धाता के पिता युवनाश्व से कोली लोगों की उत्पत्ति हुई। उनके पूर्वज कोली का पालन-पोषण एक साधु द्वारा उसी के आश्रम में हुआ था और वह सदा जंगल में रहता था। भाट लोग कहते हैं कि उनके वंशजों का बस्ती में तो कोई उपयोग नहीं था, परन्तु जंगलों में वे लोग शेर के समान रहते थे। ये कोली लोग बहुत समय तक सिन्धु नदी के पास ही समुद्र के किनारे रहते रहे, परन्तु **हिंगलाज** माता उनको नल के पास के देश में ले गई जहाँ वे लोग अपने साथ बीरड़ नाम का बीज भी ले गये थे। यह बीज अकाल में भी निष्फल नहीं जाता। उस समय वे लोग म्हेर कहलाने के साथ कोली भी कहलाते थे और सोनंग म्हेर उनका मुखिया था। उसके बारह पुत्र हुये जिनमें से प्रत्येक के नाम पर अलग-अलग शाखा चली। सबसे बड़ा लड़का नरवान नल बावली में जाकर बस गया। वहाँ **हिंगलाज** देवी का निवास था। अब तो यह मन्दिर विद्यमान नहीं है, परन्तु नल के एक द्वीप पर उसका स्थान बतलाया जाता है जहाँ अब भी एक आरा **हिंगलाज** के आरा के नाम से प्रसिद्ध है।''

7. दधीचि ऋषि एवं हिंगलाज

त्रेतायुग में भगवान **परशुराम** अवतार के दिनों में दधीचि ऋषि द्वारा भी सात द्वीपों की गुफाओं में विराजित देवी के स्थान को हिंगुल तीर्थ के रूप में वर्णित करते हुये कथा कहने का उल्लेख मिलता है। हिंगुल के समीप

महामुनि दधीचि का आश्रम था-

''हिंगुलस्य समीपे च दधीचियो महामुनिः।
महालक्ष्म्यां महाभक्तिं करोति शुद्धमानसः।।''

(श्री हिंगुला पुराण)

पुराणों में ऋषियों, दधीचि ऋषि तथा राजपुत्रों का हिंगलाज दर्शन के लिये जाना और मार्ग में चन्द्रकूप, गोरखतीर्थ, भैरवाश्रम की पूजा करने का भी उल्लेख मिलता है। ऋषि उवाच-

किं गत्वावस्थितास्ते वै हिंगुले पर्वतोत्तमे।
अस्त्रप्राप्तिः पुनर्जाता हिंगुलायाः प्रसादतः।।

(श्री हिंगुला पुराण)

व्यासजी ने द्विज श्रेष्ठों को संबोधित करते हुये कहा कि हिंगलाज की कृपा से हम सब कृतकृत्य हो गये हैं।

कथितं वो द्विजश्रेष्ठाः श्रुतं व्यासमुखान्मया।
श्री हिंगुलाप्रसादेन कृतकृत्योऽस्म्यहं द्विज।।

(श्री हिंगुला पुराण)

8. भगवान परशुराम एवं हिंगलाज

ब्रह्म क्षत्री/खत्री समाज की मान्यता है कि **परशुराम** द्वारा भूमि को क्षत्रिय विहीन करने के संकल्प के कारण शेष बचे हुये क्षत्रियों ने ब्राह्मण का रूप धारण कर **हिंगलाज** माता से प्राणों की रक्षा की प्रार्थना की, और तब से वे ब्रह्म क्षत्री/खत्री कहलाने लगे।

एक और प्राचीन कथा के अनुसार **खत्री** कौम के राजा सहस्रार्जुन शिकार करते करते ऋषि जमदग्नि के आश्रम पहुँच गये वहाँ ऋषि जमदग्नि ने राजा की आवभगत की। राजा ने आश्रम की सुन्दर गायें देखीं और उसने उन्हें ले जाने की इच्छा व्यक्त की। ऋषि ने गायें देने से मना किया तो राजा सहस्रार्जुन बलपूर्वक ऋषि की गायें ले गया। ऋषि-पुत्र परशुराम को जब इसकी जानकारी हुई

तो वे क्रोधित हुये और उन्होंने राजा सहस्रार्जुन को मार दिया। राजा के पुत्र ने पिता की हत्या का प्रतिशोध लेने का व्रत लिया और एक दिन आश्रम पर परशुराम की अनुपस्थिति में तपस्यारत ऋषि जमदग्नि को अकेला देखकर उनका सिर धड़ से अलग कर दिया। परशुराम को जब पता लगा तो परशुराम ने संकल्प लिया कि मैं ऋषि-हत्या का प्रतिशोध लेने के लिये सभी क्षत्रियों को समाप्त करूँगा। उन्होंने सिन्ध के सूर्यवंशी राजा रत्नसेन पर हमला किया और उसे परास्त किया। राजा रत्नसेन ने युद्ध के मैदान से भागकर ऋषि दधीचि के आश्रम में शरण ली। राजा रत्नसेन की रानी ऋषि दधीचि के आश्रम में रही जहाँ उसने पाँच पुत्रों को जन्म दिया। ऋषि दधीचि ने उनके नाम जयसेन, बिन्दूमान, विशाल, चन्द्रसाल, भरत रखे। राजा रत्नसेन ऋषि दधीचि की आज्ञा के बिना शिकार करने जंगल में चला गया। परशुराम क्षत्रियों को ढूंढ़ते-ढूंढ़ते वहाँ पहुँच गये और उन्होंने राजा रत्नसेन को मार दिया। ऋषि दधीचि ने पांचों राजकुमारों को शिक्षा-दीक्षा दी और परशुराम से उनकी रक्षा की। तदुपरान्त उन्हें सात द्वीप ''सारता द्वीप'' (बलूचिस्तान) इलाके की एक गुफा में जहाँ **हिंगलाज माता** का मन्दिर है वहाँ शीश नवाने के लिये भेजा। जब जयसेन ने ऋषि दधीचि से पूछा कि देवी का नाम क्या है तब ऋषि ने उन्हें कहा कि इस देवी का नाम हिंगोल देवी है।

पांचों राजकुमारों ने हिंगलाज माता की भक्ति की और अपनी प्रार्थना से देवी को प्रसन्न किया। स्वयं हिंगलाज माता ने पांचों राजकुमारों की भक्ति से प्रसन्न होकर इच्छा पूछी। पांचों राजकुमारों ने शस्त्र-विद्या का आशीर्वाद मांगा, परन्तु हिंगलाज माता ने कहा कि भार्गव ऋषि के श्राप के कारण तुम लोग शस्त्र-विद्या का विचार छोड़ दो। हिंगलाज माता ने विश्वकर्मा को स्मरण कर बुलाया। माता ने विश्वकर्मा से पांचों राजकुमारों को विशिष्ट कला से सुसज्जित करने का आग्रह किया। भगवान विश्वकर्मा ने हिंगलाज माता के आदेशानुसार पांचों राजकुमारों को लकड़ी का 'बीबा' और 'क्षार' देकर यह कहा कि तुम रंग, रंगाई, छपाई और भांति-भांति के वस्त्रों में छपाई का श्रेष्ठ कार्य करोगे। हिंगलाज माता ने भावसार व छीपा समाज को उनके वंश को पृथ्वी पर हुनरकला में अग्रणी रहने का आशीर्वाद दिया। तब से भावसार परिवार और छीपा परिवार हिंगलाज माता को अपनी कुल देवी मानते हैं। भानुशाली (भणशाली) समाज भी हिंगलाज माता को अपनी कुल देवी मानते हैं।

9. हिंगोल वध

पुरुषोत्तम लाल तोलाराम मंघवाणी (खूहा) ने अपनी रचना 'कथा हिंगलाज या हिंगोल देवी जी' में लिखा है कि मंगोल के राजा पृथु की दसवीं पीढ़ी में मोगोटी नाम के एक राजा हुए। उनके पुत्र राजा विचित्र हुए। राजा विचित्र के दो पुत्र थे हिंगोल एवं सुन्दर। उनके राज्य के पास में चीन का मंडारियन राज्य था। उसके राजा चन्द्रवंशी खत्री थे और वे भगवान शिव की पूजा करते थे। एक बार राजकुमार सुन्दर वहाँ चला गया और उसने अनेक अत्याचार किये। राजा ने भगवान शिव से अत्याचार से मुक्ति दिलाने के लिये प्रार्थना की। भगवान शिव ने प्रार्थना स्वीकार कर अपने पुत्र गणेश को आदेश दिया। गणेश के हाथों राजकुमार सुन्दर मारा गया। इसकी सूचना मिलने पर राजकुमार सुन्दर का भाई राजकुमार हिंगोल अत्यधिक क्रोधित हुआ और प्रतिशोध लेने का संकल्प लिया। राजकुमार हिंगोल ने तीन साल तक कठिन तपस्या की और भगवान से यह वरदान प्राप्त कर लिया कि जमीन और पाताल में उसे जहाँ पर भी सूर्य की रोशनी जाती है वहाँ पर कोई मार नहीं सकेगा। इससे राजकुमार हिंगोल सत्ता के नशे में अहंकारी और पथभ्रष्ट हो गया। उसने भी अत्याचार प्रारम्भ कर दिये। पूरी प्रजा हिंगोल के अत्याचार से त्राहि-त्राहि करने लगी और उसके जुल्म से बचाने के लिये जगत-जननी से प्रार्थना की। कथा में आगे कहा गया है कि भक्तों की पुकार सुनकर देवी बलूचिस्तान के खैरथर पहाड़ों की उसी गुफा में प्रकट हुई जहाँ सूर्य की रोशनी नहीं पहुँचती थी। माता ने अत्याचारी हिंगोल का वध किया और तभी से इस देवी का नाम हिंगोल देवी हो गया।

10. भूपत देथा को वरदान

कवि अनोपदान बीठू, झिणकली ने 'खारोड़ा री देवल माय' भक्ति रचना में भूपत जी देथा द्वारा तीन बार **हिंगलाज** यात्रा करने पर **हिंगलाज** माता द्वारा आशीर्वाद देने का उल्लेख करते हुए लिखा है-

''भूपत जी नाम देथा भगत, सिमरत नाम नित-नित सकत,
हिंगलाज तीन जात्रा हजूर, देवता न पूठ घर आत दूर।
वरदान दियो देवी विचार, तीसरी पीढ़ी कुळ तोय तार,
घर जन्म माडवे गाम धाम, पोतरे ब्याव तो संग प्रणाम।।''

11. महाराव देशलजी को हिंगलाज का चमत्कार

महाराव देशल जी को हिंगलाज माता ने चमत्कार दिखाया। जोरावर सिंह जादव ने अपनी कृति 'दिव्य मंदिर मारा देवनां रे' में सरल गुजराती भाषा में उसका वर्णन निम्नलिखित प्रकार किया है-

''कच्छमां आवेला मढ़ गाम मां माताजीनुं प्राकट्य केवी रीते थयुं तेनी कथा ''कच्छ देश नी करूणा मयी मां आशापुरा मां श्री धनसुख अजाणीअे आ प्रमाणे नोंधी छे।

जूना जमानामां मकराना ना हिंगलाज मातानी पगपाल यात्रा अति कठिन अने मुश्केल बनी रहेती। सने १९०४ मां कच्छना महाराव देशलजी बीजा हिंगलाज पीरसवानी तैयारी करी भुजथी माताना मढ़ आव्या। महाराज श्री नीं मुसाफरी जोखमभरी होवाथी जागीरनां महंत तेजसी राजा अे कह्युं ''महाराव श्री! आशापुराजीनां दर्शनथी आपनी यात्रा फली छे। माटे हवे आगल नहीं जतां अहींथी ज पाछा पधारो।''

महाराव श्री अे पुछयुं ''मारी यात्रा फली छे अेनी खातरी शी? हुं हिंगलाज पीरसवा नीकल्यो छुं। अेटले यात्रा तो पूरी करीश, पाछा जवाय नहीं। संकटो आवशे तो सहन करीश।''

अेम कहीने महाराव श्री अे यात्रा शुरू करी। ते दिवसे हिंगलाज माताअे स्वप्नमां आवीने कह्युं : ''राजन! तारी आस्था जोईने हुं प्रसन्न थई छुं। तारे छेक मकरान जवानी ज़रूर नथी। काले सवारे चाचरा कुंड मां स्नान करजे। अे वखते तने ठुमरा आपीश। अेने तुं प्रसादी रूपे लई लेजे। ते समये गाम मां आग लागशे। नुकशान थया वगर आग बुजाई जशे। अे मारो परचो छे। परचो पाम्या पछी यात्राना स्थले मारूं मन्दिर बनावजे। अेमां मारी मूर्ति पधरावजे। मारां अहीं दर्शन करनार यात्रालुओ ने हवे मकरान सुधी जवानी जरूर नहीं पड़े। स्वप्नुं आवीने उड़ी गयुं। बीजे दिवसे स्वप्नमां आवेली हकीकत सत्य बनी रही। महाराव श्री अे हिंगलाज मंदिर नो पायो नाख्यो। अे वर्ष हतुं सने १९०४ नुं। बे वर्ष मां मंदिर नुं बांधकाम पुरू थयुं। कच्छ ना कामणगारा कलाकारो अे सफेद आरस पहाणमांथी माताजीनी प्रतिमा कंडारी विधिसर अे मूर्तिनी प्रतिष्ठा करवामां आवी।

आजे कच्छनी लोकजातिओ हिंगलाज माता ने श्रद्धापूर्वक पूजे छे। हिंगलाज माता मानवीनी तमाम मनोकामना पूर्ण करनारी माता छे। माताअे अनेक भक्तों ने परचा आप्या छे। तेमना मननी मुरादो पूरी थई छें असंख्य लोको बाधा-मानता पूरी करवा माताजीना मंदिर आवे छे। वार तहेवारे ते मंदिर मानवमहेरामणथी हांफी उठे थे।''

12. गिरिपंथ एवं हिंगलाज

दो सौ वर्ष पूर्व राजस्थान से श्रद्धालु हिंगलाज यात्रा पैदल, बैलगाड़ी, ऊंट एवं घोड़े आदि से करते थे। हिंगलाज यात्रा उस समय कठिन चुनौती से कम नहीं थी। गिरि पंथ में हिंगलाज यात्रा की परम्परा आदि प्रवर्तक नारायण गिरि से पड़ी। नारायण गिरि ने सिद्धि सम्प्राप्ति के लिये हिंगलाज की यात्रा की। बाद में उनकी ही पीढ़ी के प्रतापी संत ब्रह्मगिरि ने हिंगलाज की ऐतिहासिक यात्रा की। ब्रह्मगिरि तपोनिष्ठ संत थे। उन्होंने इस दुर्गम तीर्थ यात्रा का निर्णय किया और हिंगलाज से बारह कोस पूर्व में अपना धुना लगा लिया तथा माँ हिंगलाज के दर्शन के लिये तपस्या करने लगे। वे हिंगलाज माँ के साक्षात् दर्शन करना चाहते थे। बारह वर्षों की उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर माँ ने साक्षात् उपस्थित होकर दर्शन दिये तथा रिद्धि एवं सिद्धि नामक सिद्धियां ब्रह्मगिरि को प्रदान की।''

श्री बुधगिरि

श्री बुधगिरि जी महाराज दसनामी गिरि पंथ के साधु थे। दसनामी गिरि पंथ में आद्यादेवी मां हिंगलाज के पूजन एवं दर्शन का अत्यधिक महत्व है। नाथ पंथ में हिंगलाज यात्रा को अत्यधिक फल देने वाला पवित्र तीर्थ यात्रा माना गया है।

श्री बुधगिरि महिमा (डॉ. चेतन स्वामी) ग्रंथ के अनुसार-

श्री बुधगिरि जी महाराज ने अपने गुरु लक्ष्मण गिरि से हिंगलाज यात्रा की अनुमति मांगी और गुरु ने सहर्ष इस तीथाटन की स्वीकृति प्रदान कर दी।

श्री बुधगिरि जी महाराज ने अनेक महीनों तक पद यात्रा करते हुये हिंगलाज यात्रा के पड़ाव सोनमियांणी तक पहुंचे। यहाँ पर बुधगिरि की भेंट सन्त रामगिरि से हुई। रामगिरि यात्री संत से एक सवाल पूछते, जो उनका उत्तर नहीं दे पाता उसे वे आगे जाने की आज्ञा नहीं देते। इस संबंध में एक कथन भी प्रचलित है-

"सोनमियांणी सूई का नाका, जहां बसे रामगिरि काका।
आवों सिद्धों धरो ध्यान, रामगिरि पूछे उल्टा ग्यान।।"

चन्द्रकूप पर्वत को पार कर बुधगिरि जी अघोर नदी तक पहुंचे। वहां उनकी भेंट अघोरी बाबा से हुई। यह अघोरी बाबा बुधगिरि जी के गुरु लक्ष्मण गिरि जी के गुरु भाई थे। माँ हिंगलाज के शक्तिपीठ तक ले जाने का कार्य अघोरी बाबा का होता है। बुधगिरि जी ने हिंगलाज माँ के साक्षात् दर्शन पाकर वे स्वयं महाप्राण शक्ति के पर्याय हो गए।

माँ हिंगलाज के परम भक्त होने के कारण बुधगिरि जी ने नवरात्र पूजन के समापन के अवसर पर श्रेष्ठ ब्राह्मणों को भोजन पर आमंत्रित करने के लिये पंडित सोहन लाल को आदेश दिया। सोहन लाल ने सोचा कि सभी ब्राह्मण श्रेष्ठ ही हैं इसलिए उसने फतेहपुर कस्बे के सभी ब्राह्मणों को भोजन के लिये न्यौता दे दिया। भोजन तो कुछ ही लोगों के लिये बना था। भोजन के लिये पूरा ब्राह्मण समाज आमंत्रित होने के कारण हिंगलाज मंदिर पर उमड़ पड़ा। बुधगिरि जी ने इन सबको देखकर कहा- हिंगलाज माई के दरबार में प्रसाद पाने आये हैं तो सभी प्रसाद पाकर जायेंगे और उन्होंने प्रसाद के बर्तनों को ढंक दिया और सभी को भोजन कराने लगे। बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं को भोजन कराने के बावजूद मढ़ी में बचे लोगों का प्रसाद शेष रहा और हिंगलाज माँ ने अन्नपूर्णा का कार्य किया। बुधगिरि जी को हिंगलाज माता ने अनेक परचे परवाड़ों के दर्शन करवाये। आज भी यह स्थान श्रद्धालुओं का प्रमुख स्थान है।

हिंगलाज माता के दर्शनार्थ अमेरिका, ब्रिटेन, पूर्वी अफ्रीका, हांगकांग आदि देशों से भी श्रद्धालु आते हैं। वे अपनी कुल देवी के रूप में **हिंगलाज** माता को पूजते हैं।

हिंगलाज माता के दर्शन करना जम्बूद्वीप के श्रद्धालु अपने जीवन को जीने के अन्तिम लक्ष्य की पूर्ति समान समझते हैं।

शरण भाई की रस्म

हिंगलाज यात्री हिंगोल नदी के किनारे पहुंच कर सहयात्री को अपना धर्म भाई (शरण भाई) बनाता था। यात्री दातण तोड़ कर हिंगोल नदी के किनारे उसे रोप देता था। तीन चार दिन बाद उसे जब हिंगलाज दर्शन कर वापस हिंगोल नदी के किनारे पहुंचते थे तब यदि रोपा हुआ दातण के कोंपल फूट जाती तो धर्म भाई के रिश्ते को हिंगलाज माताजी की स्वीकृति मानी जाती थी।

हिंगलाज यात्रा : तब और अब

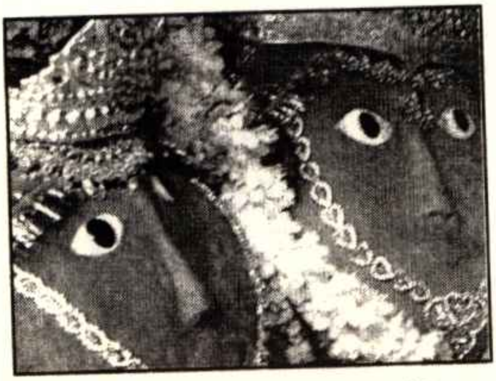

प्राचीन काल में तूफानी रेगिस्तान, सनसनाते मकरान क्षेत्र के दुर्गम पहाड़ी रास्तों, हिंगोल नदी के बहाव एवं मगरमच्छों जैसे जलजीवों वाले भयावह रास्तों को पैदल पार कर अनेक महीनों में हिंगलाज यात्रा पूरी होती थी। अत: भाग्यशाली यात्री ही इस तीर्थ यात्रा को पूर्ण कर पाते थे। अलेक्जेण्डर के सैनिक अभियान में लगभग बीस हजार सैनिक इस भयावह मरुस्थल में अपने प्राण गंवा बैठे। इसका उल्लेख जे. हुसैन (An Illustrated History of Pakistan Book 1 Page 44) ने करते हुये लिखा है-

"Now soldiers, sailors and camp followers all faced starvation. It is estimated that of the 40,000 people who marched in to the makran desert with Alexander more than half died along the

प्राचीन हिंगलाज यात्रा का रेगिस्तानी मार्ग

way. Finally the land forces, having lost all contact with fleet, reached Gwadar."

देवल मां की हिंगलाज यात्रा

खारोड़ा की देवल माँ द्वारा हिंगलाज यात्रा पर जाने का उल्लेख कवि अनोपदान बीठू ने अपनी रचना 'खारोड़ा री देवल माय' में निम्नलिखित प्रकार किया है-

"तद कियो मतो महमांय तोय, हिंगलाज मात री जात होय,
पंत दिस हाल पछम पंथ, संग चाल सन्यासी कई संत।। १ ।।
नगरी देवल देवल निवास, ऋषि मुनि करै नित रमण रास,
चंद्र कूंप बोलवियो घणै चोज, सोनमणी नगरी मह सरोज।। २ ।।
झालरां झूलरां वहै झुंड, कियो सनान कुंडीर कुंड,
हिंगोळ नदी सूं पार होय, साता दीप परसै मात सोय।। ३ ।।
नावियो कुंड अघोर नाम, धावियो शरण हिंगलाज धाम,
तिरकुंड आय ब्रमकुंड तोय, शिव शक्ति कुंड नाविया सोय।। ४ ।।
नावियों व्योम गंगा सुनीर, समायो हिंगोळ नदी शरीर,
समरयां रे नित री स्याह, माड़ेची चारणी महमाय।। ५ ।।
निज मंदिर थयो खारोड़े नेस, देवल रो नांम परदेश देश,
छतहीण थांन, नह रहत छांय, मूरती विराजे देवल मांय।। ६ ।।"

श्री हिंगलाजदान कविया की हिंगलाज यात्रा

हिंगलाजदान कविया

जयपुर जिले के सेवापुरा गांव के नाहर जी के पुत्र रामप्रताप जी भगवान के परम भक्त हुये। उन्होंने अपने जीवन काल में तीन बार हिंगलाज देवी के दर्शनार्थ बलूचिस्तान की दुर्गम यात्रा करने का कठिन साहस किया। इन्होंने हिंगलाज माता से यशस्वी संतान सुख की प्रार्थना की थी। हिंगलाज माता की कृपा से इनके एक अत्यधिक मेधावी पुत्र हुआ जिसका नाम हिंगलाजदान रखा गया। यही हिंगलाजदान कविया भक्ति एवं डिंगल साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान् हुये। इनके द्वारा रचित मेहाई-महिमा नामक ग्रंथ भक्ति साहित्य का स्वर्णिम मणि स्वरूप है। महाकवि हिंगलाजदान कविया ने हिंगलाज यात्रा की थी। उक्त कठिन रास्तों वाली हिंगलाज यात्रा का वर्णन उन्होंने अपनी

भक्ति रचना 'भळे मात हिंगोळ हिंगोळ भांमी' में अत्यधिक भावपूर्ण भाषा में निम्नलिखित प्रकार किया है-

भळे मात हिंगोळ हिंगोळ भांमी

छंद भुजंगप्रयात

मनंछा परब्रह्म हिंगोळ माता, समैं सात पोरां रमै दीप साता।
जंबू दीप में जाम एको जिकाँरो, दिसा पच्छमी दूर प्रासाद द्वारो।। १।।
जिको धोकबा काज जावै जमाताँ, अपा पाप थावै बजै सिद्ध आताँ।
करामात री बात साखात कैई, सता मात री चन्द्रकूपादि सैई।। २।।
नग्री सोनमेनी पछै गाँम नांही, महा कासटा घोर ऊजाड़ माँहीं।
प्रपा कूप नैड़ो न बैड़ो पयाणों, जलाल्या तणों फेटबो थेट जाणों।। ३।।
बहै जातरी रातरी दीह बारा, धकै चाढ़बो माग रो खाग धारा।
उदै-अद्र जौ बारमों भाँण ऊगै, पबै-अस्त सो पूगियां नीठ पूगै।। ४।।
तठै आगवो खाग हूँ छाग तोड़ै, चँडी काळिका मात रै श्रोण चौड़े।
लगावे सबै सेस बिन्दी ललाटाँ, करै फेर विश्राम पाखै कपाटाँ।। ५।।
उठै झाड़ कण्डीर पाहाड़ अँडा, बणैं मंथराँ हालणों पंथ बैंडा।
खळक्कै सदा नीझराँ नीर खोळाँ, छलै कुण्ड अल्लील सल्लील छोळाँ।। ६।।
कैई जातरा तत्र पत्राळ कूँजै, गहक्कै सिवा साद सादूळ गूँजै।
जिकां दाकले जातरी पोढ़ जावै, गुसाई रहै जागता राग गावै।। ७।।
बड़ै प्रात श्री मात मंजीर बागै, जराँ गात जम्मात जम्मात जागै।
सुणीजै अलंकार झंकार श्रूताँ, हुवै नींद विक्षेप ताकीद हूँताँ।। ८।।
बिजै मात री जातरी लोक बौले, खम्मा बैण उच्चारता नैंण खोलै।
पुगावै गुफा-गरभ पाखै पुजारा, दुजन्मा जमाताँ हुवै जेण द्वारा।। ९।।
नवो जन्म ले कुण्ड कण्डीर न्हावै, महा सुद्ध व्है मुद्ध मां नूँ नमावै।
लखै सूळ सिन्दूर रो झोक लेतो, श्रज्यो मात श्री हाथ त्रिनोक सेतो।। १०।।
धनो धन्य सो लोक जो नोक धोकै, बळे गोर हूँ और बातां बिलोकै।
रच्या राम रा दोय चित्राम रूड़ा, चखाँ-सरव एको बियो सरव-चूड़ा।। ११।।
गदा ले खड़ो लांगड़ो अग्रगामी, भले मात हिंगोळ हिंगोळ भाँमी।
मुर्णी मैं जिका आदि अन्नादि माई, अवतार ले माँमड़ा धाम आई।। १२।।

नारायण प्रसाद साहू की हिंगलाज यात्रा

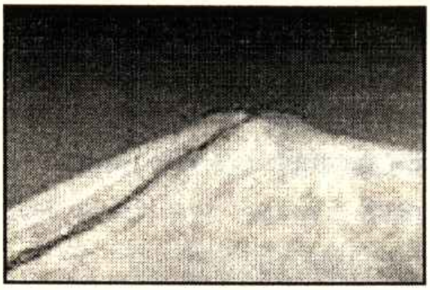

राजा रामचन्द्र का कूप (चन्द्र कूप)

श्री नारायण प्रसाद साहू ने (कल्याण) अपनी हिंगलाज यात्रा का वर्णन करते हुये लिखा है कि "हिंगलाज यात्रा के दर्शन कराने वाले पुरोहित को छड़ीदार कहते हैं। छड़ीदार अपने हाथ में झाड़ की लकड़ी से बने त्रिशूल के आकार की एक छड़ी रखते हैं और उसे लाल पीले कपड़े से ढंक देते हैं।

छड़ीदार ने हाब नदी के किनारे छड़ी की पूजा करवाई और "हिंगलाज माता की जय" लगाई। छड़ीदार ने एक गेरुआ वस्त्र देकर शपथ दिलाई कि यात्री हिंगलाज दर्शन कर लौटने तक संन्यास धर्म का पालन करेंगे, एक-दूसरे का यथाशक्ति सहयोग करेंगे। हृदय में ईर्ष्या, द्वेष, निन्दा के भाव नहीं लायेंगे। किसी भी हालत में अपनी सुराही का पानी किसी को नहीं देंगे। भले ही वे गुरु-शिष्य हों, पति-पत्नी हो, पिता-पुत्र हों या मां-बेटे हों। हाव नदी से हमने अपनी-अपनी सुराही पानी से भरकर यात्रा प्रारम्भ की। रेगिस्तान की यात्रा आग की नदी में चलने जैसी होती है। मरुस्थल की यात्रा प्राय: रात्रि में होती है।

इस यात्रा में सबसे पहले गुरु-शिष्य के स्थान पर पहुंचे। वहाँ दो पत्थर रेत में गाड़े हुये थे जिसमें एक गुरु था दूसरा शिष्य था। छड़ीदार ने बताया कि एक बार गुरु और शिष्य हिंगलाज यात्रा के लिये गये। रास्ते में शिष्य ने गुरु के लिये अपनी पानी की सुराही पूरी खाली कर दी और बाद में प्यास से दोनों की मृत्यु हो गई।

रास्ते में जहाँ भी कुआं पड़ता था वहाँ पहरेदार को पानी के बदले रोटी देनी पड़ती थी। आगे चलकर 'चन्द्रकूप' आया। वहाँ छड़ीदार के निर्देशानुसार तीर्थ यात्री को शुद्ध हृदय से अपने पापों का विवरण देना पड़ता था। वहाँ चन्द्रकूप में नारियल डाल पूजा की जाती है। चन्द्रकूप एक सरोवर है जिसमें दलदल डेढ़-दो सौ गज के गोल घेरे में उबलता रहता है। छड़ीदार के अनुसार यदि किसी ने पाप किया और उसे छुपाया तो उसकी पूजा स्वीकार नहीं होती है। चन्द्रकूप के लिये 12 सेर आटे का रोट बनाया गया और उसे चढ़ाने के बाद सबने उसका प्रसाद लिया। चन्द्रकूप के पास छड़ीदार ने छड़ी गाड़ दी और रोट का प्रसाद चढ़ाया तथा वहाँ नारियल चिलम आदि डाली गई फिर आगे बढ़े हिंगलाज माता के दर्शन के लिये।

चन्द्रकूप से निकलकर पांच दिनों तक चलते ठहरते एक छोटे से गांव में

पहुंचे। यह हिंगलाज माई की गुफा तक पहुंचने का अंतिम पड़ाव था। दूसरे दिन चार-पांच घंटे चलने के बाद अघोर नदी पहुंचे। सभी तीर्थ यात्रियों ने छड़ीदार के निर्देशानुसार पूजन सामग्री, अगरबत्तो, घी से चुपड़ी दीप बत्ती, कपूर, नारियल, पंच मेवा, सिन्दूर, मिश्री, लाल कपड़ा, मणियों की माला जो ठूमरे से बनी हुई थी, अपने साथ लिया।

चार-पांच घंटे रेत का समुद्र पार करने के बाद अघोर नदी का किनारा आ गया। वहाँ अघोर नदी की पूजा की। सभी ने अघोर नदी में स्नान किया और नदी पार की और पहुंच गये हिंगलाज माता के महल। छड़ीदार ने बताया यह महल मनुष्यों ने नहीं यक्षों ने बनाया है। सचमुच यह अमानवीय शिल्प है। एक निराली रहस्यमयी नगरी! पहाड़ पिघलाकर यह महल बनाया गया था। संकीर्ण मार्ग दांयें-बांयें मुड़ते चल रहे थे। रंग-बिरंगे पत्थर लटक रहे थे। पिघले हुये पत्थरों की चार दीवारी एवं छत थी और नीचे भी रंगीन पत्थरों का फर्श।

एक और मोड़ आया और फर्श गायब ! फिर जमीन मिली जिस पर हरी-हरी दौब उगी थी। एक ओर कल-कल करता झरना बह रहा था और आगे हिंगलाज गुफा। सबने हिंगलाज माता का जयघोष किया। गुफा का मुंह 50-60 फुट ऊँचा था। असंख्य लाल-लाल कनेर के फूल महक रहे थे।

छड़ीदार ने यहाँ बताया कि सती की मृत देह को अपने कंधे पर लादे हुये इधर-उधर घूमते भगवान शिव यहाँ आये तो विष्णु के चक्र से शक्का छेदन होने से सती का ब्रह्मरंन्ध्र यहाँ गिरा और यह एक प्रमुख शक्ति पीठ बन गया।

छड़ीदार ने यह भी बताया "श्री राम ने रावण का वध करने के बाद ब्रह्म हत्या से मुक्ति पाने के लिये यहाँ आकर तपस्या की थी। वे ब्रह्म हत्या के पाप से मुक्त हुये। हिंगलाज गुफा का द्वार विशाल था। गुफा के अंतिम भाग में एक बड़ी वेदी पर दीपक जल रहा था। छड़ीदार ने वेदी पर पूजन सामग्री सजाई। वेदी के एक छोर पर एक द्वार था और दूसरी ओर दूसरा द्वार। छड़ीदार ने दीपक दिखाते हुये बताया कि सिर झुकाये रहे ओर घुटने टेककर सब लोग अंदर जाये तथा दूसरे द्वार से दर्शन कर निकल आये। यह अदभुत्, अपूर्व अनुभव था। मालूम पड़ा कि जन्म-जन्मान्तर के बाद पाप-ताप का क्षय हो गया, हृदय का अंधकार मिट गया और हृदय देश में दिव्य प्रकाश भर गया।

गुफा से बाहर आने पर एक अघोरी बाबा ने पर्वत शिखर की ओर संकेत करते हुये कहा "देखो, एक विशाल शिलाखंड के शिरो भाग में लटकती सी दिखने वाली शिला में सूर्य और चन्द्र अंकित थे जो भगवान राम ने अपनी तपस्या के बाद अपनी

उपस्थिति स्वरूप अपने हाथों से सूर्य, चन्द्र अंकित किये थे। हमने सूर्य, चन्द्र देखे। यह कृति कल्पनातीत थी। फिर छड़ीदार तीर्थ यात्रियों को आकाश गंगा दिखाने ले गया। और फिर यात्री वापस अनेक तीर्थ स्थलों के दर्शन कर लौट आये।''

सर्वश्री देवदत्त शास्त्री, अवधूत, कानदान बारहठ, नाहर सिंह जसोल, डॉ. करणी सिंह रत्नू, डॉ. अम्बादान रोहड़िया, विजय पुष्पदान गढ़वी, श्री हरिलाल उपाध्याय आदि ने अपनी हिंगलाज यात्रा का वृत्तांत प्रकाशित किया है।

पहले हिंगलाज तीर्थ यात्री को हाव नदी से हिंगलाज माता की गुफा तक पहुँचने में 25 दिन लगते थे और वापस लौटने में 20 दिन लगते थे। तीर्थ यात्रियों को 20-25 यात्रियों के समूह में छड़ीदार यात्रा कराने ले जाता था। उक्त यात्रियों की संख्या पूरी होने में कई दिन लग जाते थे। नागनाथ के अखाड़े में यात्रीदल अन्य यात्रियों की प्रतीक्षा करते थे। सामान ऊंटों पर लादकर ले जाया जाता था। **श्री देवदत शास्त्री** ने आग्नेय तीर्थ हिंगलाज में अपनी यात्रा का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करते हुये लिखा है कराची के बाद से खेत, बंजर भूमि, रेतीली भुरभुरी जमीन, झाड़ियां, झाड़, कांटे, कंकर वाला रास्ता था। ऊँची-नीची जमीन, कभी टीले, कभी टीबों से होकर रास्ता गुजरता था। श्री शास्त्री के अनुसार- ''हिमालय में मैंने हिम नदियों को पार किया, हिम तूफानों को झेला किन्तु माता हिंगलाज के इस आग की दरिया ने मुझे विषम बना डाला।'' रेगिस्तान मार्ग में रोटी बनाने के लिये जलाने की लकड़ियां भी ढूंढ़ना मुश्किल था। रास्ते में ऊँट वाले को और कुएं की रखवाली करने वाले को भी रोटी देनी होती थी। लसबेला राज्य की राजधानी सोनमियाणी में यात्रियों को अपना नाम अंकित कराना होता था और कर चुकाना होता था। रास्ते में चोर और डाकुओं के दल एवं हिंसक जानवरों से भी खतरा बना रहता था। भीषण गर्मी के कारण प्याज खाकर ही यात्रा संभव थी। सनसनाती आंधियां यात्रा को रोक देती थीं। अनेक यात्रियों की आंधियों की मिट्टी में दबकर प्राण पखेरू उड़ जाते थे। श्री देवदत शास्त्री के दो सह हिंगलाज यात्री आंधी की मिट्टी के नीचे दबकर रास्ते में ही अपने प्राण गंवा बैठे। कुएं का रखवाला भी भूख से सूखकर मर जाता था। दूर-दूर तक निर्जन रेगिस्तान था। आठ-दस वर्ष में पानी बरस जाये तो खुश किस्मती थी। यात्रा वे ही कर पाते थे जो मृत्यु का भय त्यागकर हिंगलाज माई के दर्शन के लिये साहस और धीरज बटोर सकते थे। रास्ते में लालटेन और मोमबती से प्रकाश किया जाता था। रात में सप्तर्षि और ध्रुवतारा मार्गदर्शक होता था। पीली काली आंधियां रेगिस्तानी रास्ते के चिह्न समाप्त कर देती थीं और केवल प्रशिक्षित अनुभवी ऊँटों और उनके सवारों की सहायता से ही यात्रा संभव होती थी अन्यथा

रास्ता भटकना सामान्य बात थी। संपूर्ण मार्ग में आंधी के कारण बालू-मिट्टी ही अभिषेक करती थी। पानी का अभाव कंठ सूखा देती थी। बाद में ऊँटों की सवारी से दुर्गम रास्ता पार होने लगा। बदलते समय में चार पहियों वाले वाहन भी कम से कम ऊबड़-खाबड़, पहाड़ी पथरीले रास्ते, तूफानी मरुस्थली रास्तों एवं घाटियों के बीच से **हिंगलाज** माता के यहाँ पहुँचाने लगे। इन्हें कराची से 20-22 घंटे लगते थे।

अब सुगम यात्रा

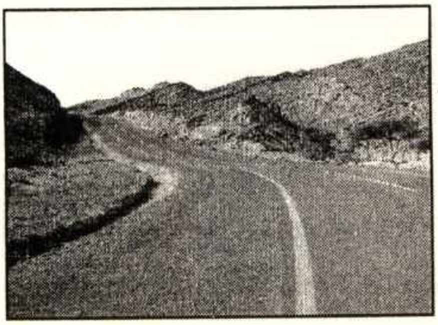

ग्वादर राष्ट्रीय राजमार्ग

अब माँ हिंगलाज की कृपा और आधारभूत ढांचे के विकास एवं मूलभूत सुविधाओं के विस्तार से बने ग्वादर तक के राष्ट्रीय राजमार्ग ने हिंगलाज यात्रा को और सुगम व आरामदायक बना दिया है।

अब तो यात्री कराची से हिंगलाज एक दिन में आसानी से आरामदायक मार्ग से पहुंच कर, माता के दर्शन व पूजा कर सायंकाल तक वापस कराची पहुंच सकते हैं। थार एक्सप्रेस रेल ने भी जोधपुर से कराची की यात्रा को सुगम व सस्ता बनाया है। समझौता एक्सप्रेस के द्वारा भी दिल्ली से अटारी होते हुये लाहौर जाया जा सकता है। लाहौर से कराची रेल मार्ग व सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है। कराची दुनिया के अनेक देशों से हवाई मार्ग से भी जुड़ा हुआ है।

वरसीमल देवानी

स्वामी नारायण मंदिर, कराची में हिंगलाज सेवा मंडली से यात्री सुविधानुसार मार्ग दर्शन व सहयोग प्राप्त कर सकते हैं। स्वामी नारायण मंदिर कराची में स्थायी रूप से **हिंगलाज** यात्रा के मार्गदर्शन और सहयोग के लिए सेवा मंडली तत्पर रहती है। श्री वरसीमल देवानी और उनके सहयोगी यात्रियों को मार्गदर्शन और आवश्यकतानुसार आवास सुविधा एवं वाहन सुविधा उपलब्ध कराने में सहयोग करते हैं। यात्री कराची में स्वामी नारायण मंदिर परिसर में बनी धर्मशाला में ठहर भी सकते हैं। इनका सम्पर्क सूत्र है- (वी.के. देवानी, मुख्य आयोजक श्री हिंगलाज सेवा मंदिर, मकान नं. 100, स्वामी नारायण टेम्पल इस्टेट, मोहम्मद अली जिन्ना रोड, कराची (पाकिस्तान), दूरभाष : 0092-21-2624485)

सिंध और बलूचिस्तान के नागरिकों का **हिंगलाज** यात्रियों के प्रति अत्यधिक स्नेहपूर्ण व सहयोगात्मक व्यवहार रहता है। वहाँ के लोग अत्यधिक मिलनसार और मृदुभाषी हैं। सामान्यत: तीर्थ यात्रियों के लिए सुरक्षा सम्बन्धी कोई समस्या नहीं होती है। सिंध और बलूचिस्तान में अनेक हिन्दू प्रांतीय असेम्बली और राष्ट्रीय असेम्बली के सदस्य निर्वाचित होकर आते हैं। वे समय-समय पर हिन्दू और हिन्दू जीवन पद्धति एवं आस्था से जुड़े विषयों तथा समस्याओं पर प्रभावी तरीके से अपनी बात रखते हैं।

हिंगलाज यात्रा वर्षा ॠतु को छोड़कर कभी भी आसानी से की जा सकती है। अरब सागर के तटवर्ती क्षेत्र में **हिंगलाज** शक्ति पीठ होने के कारण वहाँ की जलवायु मुंबई व कराची से मिलती-जुलती है।

हिंगलाज यात्रियों का समूह

हिंगलाज यात्रियों के संबंध में पाकिस्तान में किये गये एक सर्वेक्षण के अनुसार 99 प्रतिशत यात्री समूह में हिंगलाज माता के दर्शन करने आते हैं। समूहों की संख्या 5 से 50 व्यक्तियों का 55 प्रतिशत यात्री 26 से 50 व्यक्तियों के समूह में 19 प्रतिशत 2 से 5 व्यक्तियों के समूह में एवं 16 प्रतिशत 6 से 15 व्यक्तियों के समूह में एवं 10 प्रतिशत 16 से 25 व्यक्तियों के समूह में तीर्थ यात्रा करने आते हैं।

66 प्रतिशत यात्री निजी किराये के वाहन से आते हैं, 19 प्रतिशत अपने स्वयं के वाहनों से और 15 प्रतिशत लोक वाहनों से हिंगलाज यात्रा करने आते हैं।

बारह वर्षीय छात्र की हिंगलाज यात्रा

1962 में श्री चन्द्र दवे नामक छात्र ने 'महाभारती' नामक ग्रंथ का अध्ययन करते हुए हिन्दू पवित्र स्थान के बारे में जानकारी की।

उक्त पुस्तक में 563 ए.डी. में हिंगलाज के बारे में केवल संकेत दिये गये। उक्त छात्र अपने 17 साथियों के साथ सफेद धोती पहनकर पुस्तक में दिये गये संकेतों के अनुसार यात्रा में निकल गया। उक्त संकेतों के आधार पर उक्त छात्र हिंगलाज पहुँच गया और वहाँ हिंगलाज माता के पिंड के दर्शन किये।

अध्याय : चौदह

संसद में हिंगलाज पर प्रश्नोत्तर

राज्य सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या-178

बृहस्पतिवार, 20 नवम्बर, 1997/29 कार्तिक, 1919 (शक)

को राज्य सभा की बैठक में उत्तर दिये जाने के लिए

178. श्री ओंकार सिंह लखावत

क्या प्रधानमंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि -

(क) क्या भारत द्वारा पाकिस्तानी तीर्थयात्रियों को अजमेर में स्थित ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह पर होने वाले सालाना उर्स और कुछ अन्य अवसरों पर आने की अनुमति प्रदान की जाती है?

(ख) क्या पाकिस्तानी प्राधिकारियों द्वारा करोड़ों भारतीयों की इष्ट देवी **हिंगलाज** और पाकिस्तान में स्थित अन्य धार्मिक स्थलों की यात्रा के लिए भारतीय श्रद्धालुओं को अनुमति दी गई थी? यदि हां, तो पिछले तीन वर्षों के दौरान वर्षवार किस-किस तारीख को कितने-कितने तीर्थयात्रियों को अनुमति प्रदान की गयी, और

(ग) क्या भारत सरकार भारतीय तीर्थ यात्रियों को ''**हिंगलाज**'' की यात्रा के लिए पाकिस्तान से अनुमति प्राप्त करने का कोई प्रयास कर रही है ?

उत्तर

श्री सलीम इकबाल शेरवानी (विदेश राज्य मंत्री)

(क) पवित्र धार्मिक स्थलों के यात्रा सम्बन्धी भारत-पाकिस्तान प्रोतोकोल-1974 के अन्तर्गत पाकिस्तानी तीर्थयात्री भारत में अजमेर स्थित हजरत ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह सहित धार्मिक स्थलों की यात्रा करते हैं।

(ख) पिछले तीन वर्षो के दौरान उन भारतीय तीर्थयात्रियों की अनुमानित संख्या जिन्होंने पाकिस्तान में विभिन्न धार्मिक स्थलों की यात्रा की इस प्रकार है :-

अवसर/स्थान/माह	वर्ष	उन तीर्थयात्रियों की अनुमानित संख्या जिन्होंने यात्रा की
बैसाखी (अप्रैल)	1994	1920
	1995	1980
	1996	1925
गुरु अर्जनुदेव जी का शहीद दिवस (मई)	1994	660
	1995	640
	1996	545
महाराजा रंजीतसिंह की बरसी (जून)	1994	340
	1995	300
	1996	245
शादानी दरबार हयात पिताफी (अक्टूबर)	1994	170
	1995	180
	1996	190
गुरुनानक देव जी की जयंती (नवम्बर)	1994	2290
	1995	2110
	1996	2180

(ग) सरकार ने पाकिस्तान सरकार के द्विपक्षीय प्रोतोकोल के अन्तर्गत भारत से आने वाले तीर्थयात्रियों के लिए **हिंगलाज** देवी मंदिर सहित और अधिक धार्मिक स्थलों को खोलने का अनुरोध किया है। पाकिस्तान ने इस प्रस्ताव का अभी तक कोई उत्तर नहीं दिया है।

बंगाली फिल्म मरुतीर्थ हिंगलाज

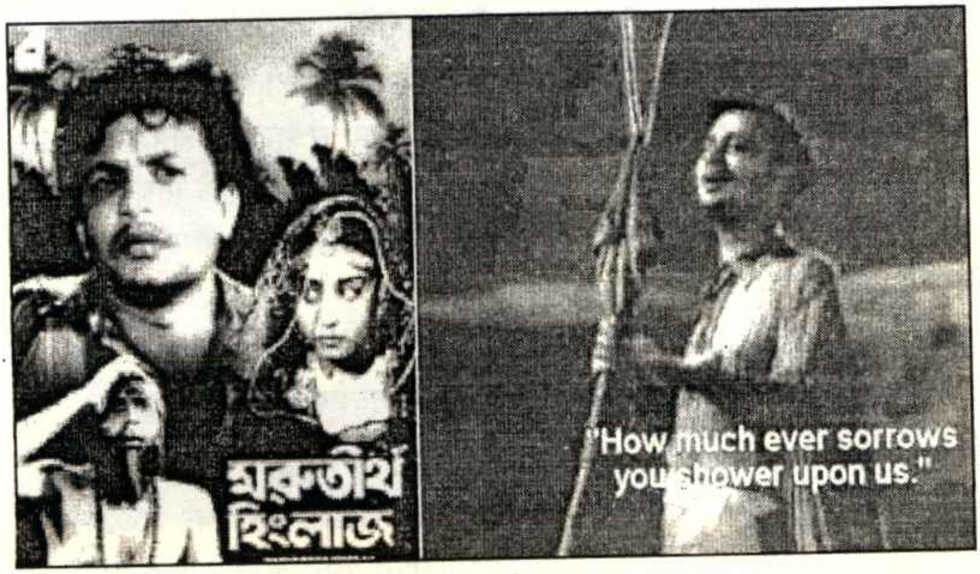

मरुतीर्थ हिंगलाज फिल्म का दृश्य

उत्तम कुमार

बिकास रॉय

हेमंत मुखर्जी

लता मंगेशकर

सुप्रसिद्ध फिल्म निर्देशक बिकास रॉय द्वारा निर्मित बांग्ला भाषा फिल्म 'मरुतीर्थ हिंगलाज' बांग्ला सिनेमा के इतिहास की सर्वाधिक आय वाली व्यावसायिक फिल्म है। इस फिल्म ने सफलता के कई कीर्तिमान स्थापित किये।

मरुतीर्थ हिंगलाज में प्रमुख अभिनेता उत्तम कुमार ने अपनी भूमिका निभाई है। फिल्म में संगीत हेमंत मुखर्जी ने दिया और 'विकास रॉय प्रॉडक्ट प्रा. लि.' ने 1959 में इसे प्रसारित किया। फिल्म के अन्य कलाकार अनिल चटर्जी, पाहड़ी सान्याल एवं बिकास रॉय आदि हैं।

इस फिल्म में आध्यात्मिक श्रद्धा, त्याग एवं दृढ़ इच्छा शक्ति के संदेश को प्रमुखता से प्रस्तुत किया गया है। हिंगलाज यात्रा अत्यधिक कष्टप्रद, परन्तु साहसिक स्वरूप में दर्शायी गई है। इस फिल्म में बंगालियों की आध्यात्मिक दृढ़ इच्छा शक्ति को प्रस्तुत किया गया है। इस फिल्म में गीत गौरी प्रसन्ना मजूमदार ने लिखे हैं और गीतों के पार्श्व गायक श्री हेमन्त मुखर्जी, लता मंगेशकर, गीता दत्त एवं शम्भु कव्वाल हैं। फिल्म में 'कुमार भुबोने मागो एतोपाप' एवं 'कातो दूर, और कातो दूर, बोलो माँ' जैसे गाने दर्शकों एवं श्रद्धालुओं की वाणी से मुखरित होते रहे हैं। इस फिल्म में दुर्गम हिंगलाज यात्रा के दृश्य फिल्माये गये हैं। छड़ीदार के साथ सनसनाती धूलभरी तूफानी आंधियां, सामूहिक तीर्थ यात्रा को अत्यधिक प्रभावी रूप से दिखाया गया है।

उच्चतम न्यायालय में हिंगलाज दर्शन का उल्लेख

सर्वोच्च न्यायालय

दिवानी अपील संख्या 1767 सन 2002
शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी **बनाम**
महन्त प्रेमदास : निर्णय दिनांक 24 फरवरी 2009
माननीय **न्यायाधिपति श्री तरुण चटर्जी** एवं **श्री वी.एस. सिरपुरकर**

"The genealogical table of the family of Bhagat Bhagwan,. as it appeared in "Udasi Sikhan di Vithya", was also referred to and a reference was also made to the book "Udasi Mat Darpan", compiled in the year 1953 by Baba Brahma nand Udasi. A reference was made to Pages 91-98, giving the description of Bhagwan Gir. A story was then quoted as to how Bhagwan Gir was deeply impressed by miracle shown by Dharam Chand Ji and how he could see the Goddess 'Hinglaj' and that he decided to change his name and became a Chela of Dharam Chand Ji."

हिंगलाज मंदिर के बचाव में बलूच सरकार

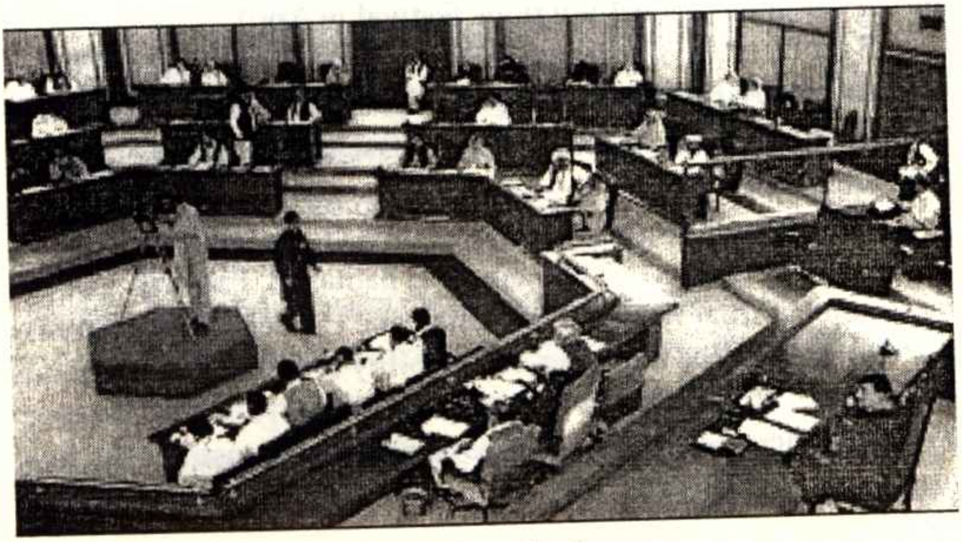

बलूचिस्तान प्रांतीय असेंबली का दृश्य

पाकिस्तान में बलूचिस्तान की प्रांतीय असेंबली ने संघीय सरकार से हिंगोल नदी पर बनने वाले बांध का निर्माण कार्य रोकने संबंधी प्रस्ताव संसद से पारित कराने का अनुरोध किया है, ताकि इस बांध के कारण इस इलाके में स्थित **हिंगलाज** माता के प्राचीन मंदिर को होने वाले नुकसान से बचाया जा सके। इस संबंध में प्रसारित समाचार हम यहाँ उद्धृत कर रहे है-

Balochistan lawmakers oppose dam construction near temple-Pakistan-world-The Times of India

Balochistan lawmakers oppose dam construction near temple

29 Jun 2008, 1251 hrs IST, PTI

ISLAMABAD: Lawmakers in Pakistan's southwest Balochistan assembly have demanded that the federal government drop plans to build a dam in the region as the structure will damage

a historical Hindu temple visited by thousands of pilgrims every year.

In a joint resolution moved by several provincial ministers and backed by all lawmakers, except one, members of the assembly wanted the federal government to cancel plans for building the dam on Hangol river that would pass near the Makran coastal highway close to the Hinglaj Mata temple.

The temple, which could be endangered by the proposed dam, is visited each year by thousands of Hindu pilgrims, especially during the grand annual religious festival in April.

Balochistan's Irrigation and Power Minister Sardar Muhammad Aslam Bizenjo along with several provincial ministers moved the joint resolution in the assembly opposing the construction of the dam.

"We request the government to respect the sentiments of our fellow Hindu brothers. If the temple is damaged, Pakistan's image on the global front would be tarnished and Hindus living all across the world would be hurt over our inability to protect our religious minorities," the resolution said.

"We therefore request the government to construct the dam elsewhere to ensure the protection of the Hinglaj Mata temple," it said.

Saleem Shahid reports from Quetta that according to movers of the resolution, historical Hindu temple 'Hinglaj Mata' would submerge in the proposed dam's reservoir. ... Dr. Narain said hundred of thousands of Hindu pilgrims from all over the world visited the ancient temple in April every year. "With the construction of the dam all roads leading to the temple would be blocked," he told the assembly. He said the project would also ignite the religious sentiments of the Hindu community not only in Pakistan but at the international level and Pakistan's image would be affected adversely.

QUETTA : Chairman Wapda Shakeel Durrani assured the community members that Hingol dam would be constructed only after removing all their reservations. Chairman Wapda decided to visit the site of the dam along with representatives of the Hindu community to brief them about the ways and means to save the historic temple in the area.

अध्याय : सत्तरह

सांस्कृतिक एकता का प्रतीक हिंगलाज

भारतीय संस्कृति, मानव की उत्पति से प्रारम्भ होती है। भारतीय संस्कृति विश्व में प्राचीनतम संस्कृति है। **शुक्ल यजुर्वेद** में संस्कृति का उल्लेख निम्न प्रकार हुआ है- "**सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा**"। संस्कृति के कालखण्ड को समय सीमा या एक महापुरुष, सम्प्रदाय से नहीं जोड़ा जा सकता है। हमारे ऋषि-मुनियों ने 'कृण्वन्तो विश्वाऽर्यम्' का संदेश सारी दुनिया को उस समय दिया जब दुनिया के अधिकतर देश सभ्यता व संस्कृति के प्रारंभिक दौर से गुजर रहे थे।

ख्याति प्राप्त विद्वान्, चिन्तक और लेखक गुरुदत्त के अनुसार 'भारतीय इतिहासज्ञों के कथनानुसार ब्रह्मा इस सृष्टि पर प्रथम संस्कृति अर्थात् विचारधारा का प्रचार करने वाला हुआ था। उसने अपनी विचारधारा के प्रचार के लिए अपने छह शिष्य बनाये। महाभारत के अनुसार ब्रह्माजी के मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह और क्रतु छः मानस पुत्र हुए, मरीचि के पुत्र कश्यप थे और कश्यप से ही प्रजाएँ हुइं। दक्ष प्रजापति ब्रह्मा के पुत्र थे।"

भारतीय चिन्तकों के विचार से ब्रह्माजी के उक्त छह मानस पुत्र वेदों के ज्ञाता होने के कारण महर्षि कहलाये, वेदों में वर्णित आचार-विचार को सर्वप्रथम ब्रह्मा ने इन ऋषियों को दिया। इन्हीं पुराणों में शक्तिपीठों की उत्पत्ति का विस्तृत वर्णन है। शक्तिपीठ भारतीय संस्कृति की प्रतीक है। भारतीय संस्कृति में सभी श्रेष्ठ विचारों का समावेश है। पंडित जवाहर लाल नेहरू ने रामधारी सिंह दिनकर की पुस्तक 'संस्कृति के चार अध्याय' की प्रस्तावना में संस्कृति को परिभाषित करते हुये लिखा है- "संसार भर में जो भी सर्वोत्तम बातें जानी या कही गई हैं, उनसे अपने आपको परिचित कराना संस्कृति है"। पंडित नेहरू के अनुसार- "पाश्चात्य विचारों में भारत का जो विश्वास जागा था, अब तो वह भी हिल रहा है। नतीजा यह है कि हमारे पास न तो पुराने आदर्श हैं, न नवीन और हम बिना जाने हुये बहते जा रहे हैं कि हम किधर को कहाँ जा रहे हैं।"

डॉ. शिवदास ने अपनी पुस्तक 'भारतीय संस्कृति के मूल तत्व' में संस्कृति को परिभाषित करते हुये लिखा है- "संस्कृति मानव अथवा मानव समुदाय की मानसिक बौद्धिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों की अभिवृद्धि और परिष्करण की सूचक होती है। संस्कृति का मूल्य मात्र भौतिक समृद्धि से नहीं जांचा जा सकता।"

पाकिस्तान एवं बांग्लादेश तो 1947 में ही हमसे अलग हुये। श्रीलंका, नेपाल, म्यांमार (बर्मा) तिब्बत, अफगानिस्तान, सुमात्रा, जावा, यवद्वीप, इण्डोनेशिया, मॉरीशस, कम्बोडिया, जापान, चीन आदि देशों में हिन्दू और बौद्ध धर्म से अनुप्राणित सभ्यता और संस्कृति प्रभावी रही हैं।

ख्याति प्राप्त विद्वान डॉक्टर लोकेश चन्द्र के अनुसार "आठवीं शती में तिब्बत के सम्राट ठिसोङ्देत्सेन सभा बुलाकर निश्चय कर रहे थे कि तिब्बत सदा ही अपना धर्म भारत से ग्रहण करेगा और संस्कृत की साहित्य विभूति को आत्मसात करेगा।" उनके अनुसार तीसरी शती ईसा पूर्व में भारत अपना सन्देश बर्मा को प्रदान कर रहा था। दूसरी शती ईसा पूर्व में लंका ने भारत के उपदेश को शाश्वत रूप से आत्मसात किया।"

पहली शती में मलयद्वीप संस्कृत शिलालेखों को अपनी धरा में धारण किये हुए था। चीनी भित्ति के अन्तिम छोर के निकट तुनह्वाङ् में 'ब्राह्मी लिपि' में उत्कीर्ण शिलालेख भारत की सीमाओं के साक्षी थे। चौथी शती में कम्बुज देश संस्कृतमय था। छठी शती में चीन के कोने-कोने में मन्दिर थे। नौवीं शती का अभ्युदय होते ही जापान के महाचार्य कोबोदाइशी भारतीय तन्त्रों का जापान में प्रवर्तन कर रहे थे और आचार्यवर जापानी वर्णमाला को संस्कृत के क्रम में पिरो रहे थे। एशिया की भूमि के खण्ड-खण्ड से मन्दिर मुखर हो उठे, प्रतिमाएँ प्राणवन्त हो उठीं, ताड़लिपियाँ पुकार पड़ीं, खण्डहर सहस्रों मनीषियों की साधनाओं से प्रतिध्वनित हो उठे।

भारतवर्ष में लोकजीवन का अंग बनी पौराणिक कथाएँ ग्रीस के जनजीवन की मानस स्मृति में आज भी प्रभावी हैं। पद्मभूषण पंडित सूर्य नारायण व्यास के अनुसार "मेसोपोटामिया एवं इराक में उत्खनन में प्राप्त कथाओं से भारतीय पुराणकथाओं का बहुत साम्य है। अफगानिस्तान की राजकुमारी गान्धारी का राजा धृतराष्ट्र से विवाह हुआ था।" शुकदेव व्यास के अनुसार, "तवारीख-ए-जैसलमेर के (पृष्ठ ९ व १० पर) गजबाहु (गजसिंह) ने श्री स्वांगियाजी की आज्ञा से युधिष्ठिर संवत ३०८ में गजनी बसायी थी जिसके सम्बन्ध में दोहा प्रचलित है-

तीन सत्त अतसक धरम, वैशाखे सित तीन।
रवि रोहिणि गजबाहु नै गजनी रची नवीन।।"

बलूचिस्तान के लासबेला क्षेत्र में उत्थल नामक शहर के निकट पहाड़ों की कन्दराओं में अनेक हिन्दू देवी-देवताओं की मूर्तियाँ और मन्दिर पाये गये थे। प्रसिद्ध इतिहासकार वीरेन्द्रनाथ भार्गव के अनुसार, ''इराक में लगभग दो हजार वर्ष पहले विशाल शक्तिशाली 'हथरा' राज्य का तूरगसेन शाक्तमत का उपासक था।''

रायबहादुर चिन्तामणि 'महाभारत मीमांसा' में लिखते हैं कि- ''वर्तमान पाकिस्तान में बिलोचिस्तान प्रदेश है, जहाँ पर किरात नाम के क्षत्रिय बस गये हैं, मनुस्मृति में जिन क्षत्रियों के नाम गिनाये गये हैं, उनमें से एक किरात भी है, इसी बिलोचिस्तान में हिंगलाज देवी का मन्दिर है।'' भारत के देवी-देवताओं की पूजा दुनिया के देशों में किसी न किसी रूप में प्राचीनकाल से होती रही है।

डॉक्टर रामगोपाल के अनुसार ''आज से पाँच हजार वर्ष पूर्व सिन्धु घाटी सभ्यता के समय भी भारतवासियों के तत्कालीन इजिप्ट, बेबीलोन और सीरियाई सभ्यताओं के साथ केवल घनिष्ठ संबंध ही नहीं थे, वे साम्राज्य के भाग थे।''

श्री सुरेश सोनी के अनुसार, ''पुराण साहित्य में भारतीय संस्कृति का अजस्र प्रवाह दृष्टिगोचर होता है। पुराण साहित्य भारत के इतिहास को जानने की कुंजी है। पुराण केवल भारत ही नहीं अपितु सृष्टि की रचना, उसके विकास और विकास यात्रा के उतार-चढ़ावों की कहानी है।''

इजिप्ट में 'मोफिस' और 'अरीरिस' नामक क्षेत्रों में नन्दी पर विराजमान त्रिशूलहस्त एवं व्याघ्रचर्मधारी शिव की अनेक मूर्तियाँ हैं, जिन पर बेल पत्र व दुग्धाभिषेक करते हैं।

थाईलैण्ड में वैदिक देवी-देवताओं के मन्दिर बड़ी संख्या में हैं। देश का राष्ट्रीय ग्रंथ 'वाल्मीकि रामायण' ही है।

बाली देश के लोग 'ओम स्वस्ति' कहकर शुभकामना देते हैं। बाली दूरदर्शन का कार्यक्रम प्राय: गायत्री मन्त्रोच्चारण से होता है। वियतनाम में संस्कृत भाषा में 'ओऽम नम: शिवाय:' से प्रारम्भ लेख है।

भारतीय उपमहाद्वीप एवं निकटवर्ती देशों की संस्कृति पर हिन्दुस्तानी संस्कृति का व्यापक प्रभाव है। जब अखण्ड भारत के बारे में सोचते हैं तो केवल राजनैतिक सत्ता का एक केन्द्र स्थल बने ऐसी कल्पना नहीं है। भौगोलिक रूप से बसे भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, नेपाल, अफगानिस्तान, तिब्बत, म्यांमार, भूटान में भी सभ्यता, संस्कृति, जीवन-मूल्य एवं श्रद्धा केन्द्र एक समान हैं। वर्तमान में इक्यावन शक्ति पीठों में से ये बारह शक्ति पीठ भारत के बाहर पड़ोसी देशों में है-

क्र.	शक्तिपीठ	देश का नाम	अङ्ग/आभूषण	शक्ति	भैरव
1.	हिंगुला	पाकिस्तान	ब्रह्मरन्ध्र	कोट्टरी	भीमलोचन
2.	यशोर	बांग्लादेश (जैशोर जिला खुलना)	हथेली	विमला	संवर्त
3.	चट्टल	बांग्लादेश (चन्द्रशेखर पर्वत, सीता कुण्ड जिला चटगांव)	दक्षिण बाहु	भवानी	चन्द्रशेखर
4.	करतोयातट	बांग्लादेश (भवानीपुर, लालमनीरहाट)	बायां तल्प	अपर्णा	वामन
5.	विभाष	बांग्लादेश (ताम्रलुक जिला मिदनापुर)	बायां टखना	कपालिनी	सर्वानन्द
6.	सुगन्धा	बांग्लादेश (शिकारपुर बारीसाल जिला खुलना)	नासिका	सुनन्दा	त्र्यम्बक
7.	गण्डकी	नेपाल	कपोल	गण्डकी	चक्रपाणि
8.	नेपाल (गुह्येश्वरी)	नेपाल	दोनों जानु	महामाया	कपाल
9.	श्रीलंका (लंका शक्तिपीठ)	श्रीलंका	नुपूर	इन्द्राक्षी	राक्षेश्वरी
10.	मानस	मानसरोवर (चीन अधिकृत तिब्बत)	दायीं हथेली	दाक्षायणी	अमर
11.	मिथिला	नेपाल	वाम स्कन्ध	उमा देवी	महोदरा
12.	जयन्ती	बांग्लादेश	वाम जंघा	जयन्ती	कर्मादीश्वरा

अपने कुल देवी-देवताओं के प्रति प्रगाढ़ आस्था से उस क्षेत्र एवं भूभाग की रक्षा, संवर्द्धन एवं आपसी सौहार्द की भावना उत्पन्न होती है। उस भूभाग व देश के प्रति भी शुभेच्छा का भाव जागृत होता है।

शान्तिप्रिय नागरिक को इस भू-भाग में अपने सांस्कृतिक परिवेश के दर्शन करने, श्रद्धा प्रकट करने और जीवन मूल्यों की रक्षा के लिये अपने संकल्प की पूर्ति हेतु स्वतन्त्र रूप से भ्रमण की छूट नितांत आवश्यक है। कानून तोड़ने वाला और विध्वंसकारी मानसिकता वाला व्यक्ति तो अपने स्थान पर भी स्वतन्त्र नहीं होना चाहिये। सांस्कृतिक एकता इस क्षेत्र के लिए हर दृष्टि से लाभकारी होगी। सांस्कृतिक एकता के द्वारा पाकिस्तान में स्थित शक्तिपीठ **हिंगलाज**, असम स्थित शक्ति-पीठ कामाख्या, अजमेर में ख्वाजा गरीब नवाज मोईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह और तीर्थराज पुष्कर स्थित प्रजापति ब्रह्माजी, श्रीलंका, बांग्लादेश, नेपाल, तिब्बत आदि देशों में स्थित शक्तिपीठों के इच्छानुसार दर्शनों के बीच की सभी बाधायें दूर करने का संकल्प लिया जाना चाहिए। हमें सांस्कृतिक एकता को व्यावहारिक स्वरूप में प्रस्तुत करना होगा।

पुनर्जन्म

हिंगलाज प्रतिमा शयन अवस्था में है और 'प्रसूता' स्वरूपा प्रतीक है। माता के पिण्ड के ऊपर चून्दड़ी वस्त्र का पहनावा है। हिंगलाज माता दर्शनार्थी भक्त को सांसारिक पाप ताप से मुक्त कर पुनर्जन्म प्रदान करती हैं। शास्त्रों के अनुसार पुनर्जन्मित व्यक्ति आचरण की शुद्धता व सत्कर्म में संलग्न रहता है।

हिंगलाज यात्रियों का सर्वेक्षण

बलूचिस्तान स्थित हिंगलाज माता की यात्रा करने वाले तीर्थ यात्रियों का पाकिस्तान में किये गये एक सर्वेक्षण के अनुसार 32% तीर्थ यात्री पहली बार, 24% दूसरी बार, 12% तीसरी बार, 4% पांचवीं बार, 20% पांच से नौवीं बार, 7% दस से पन्द्रह बार सिन्ध, पंजाब एवं बलूचिस्तान से आये। 30% यात्रियों का हिंगलाज में ठहराव तीन दिन, 19% का पांच दिन, 10% का छह दिन, 4% का एक दिन एवं 1% का 2 दिन का ठहराव होता है। शेष दर्शन कर लौट जाते है।

भक्ति काव्य में हिंगलाज

भक्ति काव्य में भक्त कवियों ने हिंगलाज माता का उल्लेख आदरपूर्वक किया है। पाठकों के लिए कुछ काव्यांश का उल्लेख हम यहाँ कर रहे हैं :

कवि : रचना	काव्यांश
ईसरदास बारहठ 'देवियांण'	नमो सात दीपां नमो माढ़राणी, नमो तूं नमो तूं धजा की धिराणी। नमो मात तूं राखणी धर्म पाजा, नमो विश्व मंडी नमो **हिंगलाजा**।
गाडण शिवदास : 'अचलदास खीची री वचनिका' (570 वर्ष पुरानी)	तउँ वीसहथि विरोळि, तइँ वीसहथि विरोळिय। भावठि भामइ तू तणइ, हिज्यउँ सु काँई **हिंगाळि**।।
कविराजा बांकीदास आशिया	नेणा नारायण, रास-रमणी सुखरासा। **हींगळाज** दुरिहरा, विंधवासणी विलासा।। जयेस्वरी ज्वाळपा, रुद्ररूपा रुद्राणी। आई आसापुरा, वागदेवी ब्रम्माणी। राधिका राज राजेस्वरी, भूदेवी भुवनेस्वरी। जय अष्ट भुजी बांकौ जपै, सर वग्या सरवेस्वरी।।
खूमदान लांगीदान बारठ (भीमावेरी)	**हिंगोळ** साथ देवल नित ओपर, जंगळराय अति स्वाई तणै। पक्ष मातुल्ल शक्ति सायक हो, नवेलाख नित साय वणै। अवनी पर राज सोझ रहै अविचळ, आशिष कव खूमौ उचरै। अधपत भड़ सिंघ भडेली ऊपरी, समरथ भड़ सिवरेस सिरै।
जुंझारदान जी देथा (मिठड़िया)	कोयला चन्द्रकूंप अंगम कळाधर, कुंड अघोर में घोर क्रमै। अकळा कळ पंथ अमोघ अपंपर, रूप सातादिप आय रमै।

	महमा मंडळीक नवेखंड मंडण, खंडण दांवण खल्ल खनूं। सकतां नवलाख झूळां बिच सोभत, देवल राजत देव दिनूं।। **हिंगळाज** वीसांहथ चूड़ हळोहळ, भुज्ज भळोळाळ साथ भळै। ब्रहमंड चळोचळ यूं धर भूधर, दैत खळां दळ दुक्ख दळै। निम नाच वळोवळ राच निरम्मळ, विम्मळ तेज सदा वरनूं। सकतां नवलाख झूळां बिच सोभत, देवल राजत देव दिनूं।
गीत लालस पीरदांनजी रो कहियो	निंमौ ईस्वरी, अनंत नांम **हींगलाज** निरंजणी। बड़ा देव मेकदंत संभु नाथ वछ। अकल संमापौ आई देवी राजि कीजै दया, कथणी अनंत करा कहां मद कछ। विरोलिओ जलाकार वालिया आपरा वेद, साझियो फूक सासां....।
मोडजी आशिया : पाबू प्रकाश	चक्रेस्वरी बलेस्थाने। राटेश्वरी तथा रटे।। पंखणी सप्त मात्रेण। नागणेची नमस्तुते।।
मानदान कविया दीपपुरा : 'धंजाबंध राख घणी धणियाप'	नमो रत्तबीज खपावण रीस, नमो बहो रूप रच्या भुज बीस। नमो **हिंगलाज** हुवा तहां हेक, नमो वसुधा जिहिं क्रीत बशेक।। नमो घर पच्छिम धारत धाम, नमो वन खण्ड उजागर नाम। नमो थिर देस बिलोचिसथान, नमो जहँ जाहर जोति जहान।।
हिंगलाज दान कविया सेवापुरा : मेहाई महिमा	थिर बिलोचिसथान, थान धवलागिर थाने। पोहो साता दीप हूँ, उठै माता नित आवै।।
जवाहरदान रतनू थूंसड़ा : 'चाकर थारो चंडी'	सात दीप **हिंगलाज** सगत्ती मनरंगथळ धिन माता सांभळ अरज कहै इम सुकवि खेड़ पधारो खाता।
केसरा जी खिड़िया	तोर सुचि हाथ पै जोर मोटा तणो, रोर सूं कही अपजोर खातै। पात केहर तणै महर कर थापिया, मात **हिंगलाज** रा हाथ माथै।।
चायमजी : 'चेलां सहित पधारो चारणि'	बिरवड़ अनपूरण बेलाई, **हिंगलाज** गिरि हेम सुताई। काछ पंचाळ कोटड़ा, हेलो सुणत आव मेहाई।।

चन्द वरदाई : 'नमस्ते भवानी'	तुंही सात द्वीप नवे खंड मंडी, तुंही घाट ओघाट ब्रह्मंड डंडी। तुंही धर्नि आकाश तूं बेद बानी, तुंही नित्य नौजोवना हो भवानी।
बहादुर दान दधवाड़िया चारणवास	सुइच्छ रूप सात दीप सात पोर तो रही। कहै हिंगोळ पोर हेक साक बेद तो कही। ब्रह्माण्ड खंड खंड में सु आदि रूप मंडणी, खिमा विशेष देह तेज दुष्ट दूर खण्डनी।।
शीशराम बारैठ करड़ाला	जितूं भासती पर्वतं मधि ज्वाला, कहूं कालिका श्रोण पानं कराला थपी शर्नमें **हींगळाज** सुथानं, नमो मात चामुँड रूपं न जानं।
नृसिंहदास कविया सांडियों का टीबा	हुवै शीष अज्ञा रसा नाथ हंदै, विसा वीस जोड़े दिसा नाथ वंदै सुरे देव सेवं नरे देव साजा, हवा दीप साता पती **हींगलाजा** कला उग्र बँकी बला कांतियाणी, महा शक्ति देबी जयो माढ़राणी।
गंगादानजी बारैठ कल्याणपुरा	तुहीं थान थायो निजं सिंध तीरं, तुहीं सेवगां पीर मेटी सरीरं। तुहीं मात हिंगोळ नामं कहाई, नमो तो नमो तो नमो इन्द्रबाई।। तुहीं सिंध में आवड़ा नाम पायो, तुहीं मामड़ा तात विख्यात थायो।।
बेणूजी	काली कामख्या कृष्णां कला कमला कराली क्रोधा, बामंगा बिमल्ला बाला बसंती बिराट। हरि-सिद्धि हिंगळा हेम पुत्री हेला हरा, मातंगी माता मंडे मही माट।।
बालाबख्श बारैठ	देणी नव निद्धि दरश हरसिद्धि **हिंगलाज**। आखाँ कीरत ऊजळी लाखाँ राखण लाज।।
रामू जी बीरम	आखों आवड़ **हिंगलाज** अजोनी सात बहन सवांणी, प्रभुता कीध समंदरा पाजा राजा डूंगर राणी।।
शक्ति-सुयश	पच्छिम दिश **हिंगलाज**, कमख्या पूरब दिस पुजवाया तुलजा दक्षिण उत्तर ज्वाला, थिर चहुं थान थपाया।
डॉ. शक्तिदान कविया : सर्व देवी स्तुति	(छंद भुजंगप्रयात) नमो वीस हत्थी भवा सीस नम्मूं। पुणूं सारदा मेकाद्दा प्रणम्भूं।

	मया आदिया शक्त तूं भक्त माजा। हुवै राज री हाजरी **हींगलाजा**।
धूहड़ जी मोतीसर जुडिया	**हिंगलाज** आवड़ हुई, भयण सगत सत भाय। इम दूले घर अवतरी मालण दे महमाय।।
अनूपदान बीठू झिणकली	**हिंगलाज** माता हुल्लरातां दीप साता दरसणी। वरदान दाता विरद्याता पालतां उग परसणी।।
हमीर जी रतनू 'अमां रिद्धि-सिद्धि देजो'	चौरासी चारणां देवी, छपन्न कोटि चामुंडा माता **हिंगलाज** आशापूरा महमाय अंबिका कालिका नागणेची डुंगरेची आई रवेची चालकनेची, नमो सुरांराय...
वजमाल महेडु 'आई श्री हिंगलाज नुं गीत'	पाताल सातुं परठ पीठे, कमठ धारण कोल; इकीस ब्रहमंड किया उभा भ्रगटमां भुगोल; तो **हिंगोलजी**, हिंगोल धणी संकट भवी हिंगोल।
ईसरदास रोहड़िया 'हिंगलाज स्तवन का गीत'	भद्रकाली **हिंगलाज** भवानी, कामेरी देवीय कामाख्या, आशापुरा ईसरो आखे, धो मोहि तेरी दिख्या...सुरां राय ।
रामभाई देथा 'हिंगलाज स्तुति नुं गीत'	ऊँकार पार अनादि अंबे, विमल धर्म वधारनी, हितकार दास उद्धार कर, अघ उदधि पार उतारनी सुख भक्त करनी कष्ट हरनी, सर्व अशुभ संहारनी, जय जयति जगदंबा, तुंही **हिंगलाज**, विघ्न विदारनी।

अध्याय : उन्नीस

शब्दकोशों में हिंगलाज

हिंगलाज माता का शब्दकोशों में वर्णन मिलता है। विद्वानों ने अनेक शास्त्र सम्मत एवं धर्म शास्त्रों में हिंगलाज माता के संबंध में वर्णित कथानकों का उल्लेख शब्दकोशों में किया है। हिंगलाज माता की मान्यता, प्राचीनता, भौगोलिक स्थिति, लोक आस्था आदि का शब्दकोशों से हमारा ज्ञानवर्द्धन होता है। कुछ शब्दकोशों का पाठकों के अध्ययन हेतु उल्लेख हम यहाँ कर रहे हैं।

शब्दकोश : संपादक	विवरण
नालन्दा विशाल शब्द सागर : श्री नवलजी	हिंगुला-हिङ्गुला, हिंगलाजा, हिङ्गुलाजा (संज्ञा, स्त्री) दुर्गा या देवी की एक मूर्ति जो सिंध और बलूचिस्तान के बीच की पहाड़ियों में है।
हिन्दी विश्वकोश : नगेन्द्र नाथ बसु	हिङ्गुलाज-बलूचिस्तान का एक प्रसिद्ध प्राचीन नगर और तीर्थ स्थान। यह अक्षां. २५ ३० उ. तथा देशा. ६५ ३१ पू. के मध्य विस्तृत है। सिंधु नदी के मुहाने से २० मील पश्चिम तथा अरब समुद्र से १२ मील दूर जहां गिरिमाला के प्रान्तभाग में यह शहर बसा हुआ है। पहाड़ के ऊपर एक भीषण काली मंदिर है। स्थानीय लोगों के निकट वह काली 'नानी' या 'महामायी' कहलाती है। इस देवी के कारण हिन्दू लोग इसे महापीठ स्थान समझते हैं। 'तन्त्रचूड़ामणि' और 'वृहन्नील' तंत्र में यह स्थान 'हिङ्गुला' तथा शिवचरित नामक तांत्रिक ग्रंथ में 'हिङ्गला' नाम से परिचित है। उन तंत्रों के मत से

	यह ५९ महापीठों में से एक है। यहाँ देवी का ब्रह्मरन्ध्र गिरा था। यहां की शक्ति का नाम कोट्टरी या कोट्टरीशा तथा भैरव का नाम भीमलोचन है।
मानक विशाल हिन्दी शब्दकोश : कृष्णकांत दीक्षित : सूर्यनारायण उपाध्याय	हिंगुला-एक प्रदेश विशेष जो सिंध और बलूचिस्तान के मध्य में है। देवी की एक मूर्ति जो हिंगुला प्रदेश में है।
हिन्दू धर्म ज्ञान कोश : दिनेश चन्द शर्मा	भवानी चौदह भुवन को धारण करने वाली भुवनेश्वरी, शंकर भगवान की पत्नी/सती, पार्वती, गौरी, गिरिजा, शैलजा, शिवा, अपर्णा, उमा, शक्ति आदि। कालिकापुराण के अनुसार ईश्वर के अंश से ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव उत्पन्न हुए। ब्रह्मा और विष्णु ने सृष्टि हेतु अपनी-अपनी शक्ति ग्रहण कर ली, परंतु शिव ने अपनी शक्ति ग्रहण नहीं की और योग समाधि में चले गये। ब्रह्मा ने दक्ष प्रजापति से कहा कि केवल विष्णु की माया ही शिव को लुभा सकती है। दक्ष ने विष्णु की स्तुति की और उनकी माया से दक्ष पुत्री के रूप में जन्म लिया। उस कन्या ने अपने रूप और तप से शिव को मोहित कर लिया। यह भवानी सती का रूप था। दक्ष द्वारा शिव का अपमान किये जाने पर सती ने योग अग्नि से देहत्याग कर हिमवान के यहाँ पार्वती के रूप में जन्म लिया और तपस्या से शिव को प्राप्त किया।
हिन्दी शब्द सागर : श्यामसुंदर दास	हिंगुला-संज्ञा, स्त्री, एक प्रदेश का नाम, जो सिंध और बलूचिस्तान के बीच में है और जहां 'हिंगुलाजा' या 'हिंगलाज' देवी का स्थान है।

राजस्थानी शब्द कोश : पद्मश्री सीताराम लालस	हिंगलाज-सं. स्त्री, सिंध और बलूचिस्तान की पहाड़ियों में स्थित लसबेला राज्य की हिंगोल नदी पर दुर्गा देवी की एक मूर्ति विशेष। यह स्थान कराची बंदरगाह से उत्तर की ओर समुद्र के किनारे से ४५ कोस दूर है। उ. 1 माकड़ा झाड़ आखाड़मल, चाढ्या मसती चालिया। सिधराज जांण माजम मसत, हिंगळाज मग हालिया। उ. 2 देवां दुंदभि वज्जियां, हिंगलाज दरबार। माता सूं गुण भज लिया, सुण नभ वयण मुरार। रा.रू.।
राजस्थानी हिन्दी शब्दकोश : डॉ. बद्रीप्रसाद साकरिया प्रो. भूपतिराम साकरिया	हिंगलाज एक प्रसिद्ध देवी-पीठ, जो बलूचिस्तान (पाकिस्तान) में है। 2 एक देवी। हिंगोल। हिंगोल पुराण : भक्त कवि ईसरदास कृत देवियाण का अपर नाम।
राजस्थानी संस्कृति कोश : डॉ. सद्दीक मोहम्मद	हिंगलाज-चारणों की एक देवी। हींग के पहाड़ों के बीच में होने से इस माता का नाम हिंगलाज पड़ा। चारणों में यह विश्वास है कि सिंध के थट्टा गांव के चारण हरिदास गोरविया के घर हिंगलाज ने अवतार लिया और इसलिये यह मान्यता बन गई कि जो थट्टा गांव की यात्रा करता है, उसे हिंगलाज यात्रा का पुण्य मिलता है। इस प्रकार यह आद्य शक्ति मां, चारणों की देवी बनीं। राजस्थान में इस देवी के बहुत से मंदिर हैं, जिनमें सिवाना के पास छप्पन पहाड़ों में पंच तीर्थों में इस माता का प्रसिद्ध मंदिर है।
वृहत हिन्दी कोश : कालिका प्रसाद, राजवल्लभ सहाय मुकुन्दी लाल श्रीवास्तव	हिंगुला-प्रदेश विशेष, जो सिंध तथा बलूचिस्तान के मध्य में है, देवी की एक मूर्ति जो हिंगुला प्रदेश में है।

मानक हिन्दी कोश : रामचन्द्र वर्मा	हिंगलाज-स्त्री (सं. हिंगलाज) देवी की एक मूर्ति, जिनका मुख्य मंदिर सिंध और बलूचिस्तान के बीच की पहाड़ियों में है। वहां अंधेरी गुफा में ज्योति के उसी प्रकार दर्शन होते हैं, जिस प्रकार कांगड़ा के ज्वालामुखी नामक स्थान में होते हैं।
भाषा शब्दकोश : डॉ. रामशंकर शुक्ल रसाल	हिंगलाज-संज्ञा स्त्री दे. (सं. हिंगुलाजा) दुर्गा देवी की मूर्ति जो सिंध देश में है।
The Encyclopedia Indica : नगेन्द्र नाथ बसु	हिङ्गुला (सं. स्त्री) पीठ स्थान विशेष। इस पीठ स्थान पर सती का ब्रह्मरंध्र गिरा था। यहाँ जो शक्ति है, उसका नाम कोट्टरी है तथा भैरव भीमलोचन है। (वामनपुराण के ६७वें अध्याय में भी इस स्थान का उल्लेख देखने में आता है।)
जदीद हिन्दी उर्दू शब्दकोश : नसीर अहमद खाँ	हिंगुला (पु.स.) एक खित्त:, जो सिंध और बलूचिस्तान के दर्मियान में है, जहां हिंगुलाजा देवी का मुकद्दस मकाम है। हिंगुलाजा (स्त्री स.) दुर्गा देवी की एक शबीह।
समांतर कोश : हिंदी थिसारस अरविंद कुमार कुसुम कुमार	७४६ देवी-देवता मूर्ति-दुर्गा मूर्ति सूची, हिंगुलाजा
पौराणिक कोश : राणा प्रसाद शर्मा	हिंगलाज-स्त्री (सं. हिंगुलाजा) बलूचिस्तान की पहाड़ियों में स्थित एक देवी, जो एक गुफा में है। समुद्र के किनारे-किनारे कराची से ४५ कोस जाने पर यहाँ पहुंचते हैं। हिंगुला (पु.सं.) सिंध और बलूचिस्तान के बीच का वह प्रदेश जहाँ हिंगलाज देवी का मंदिर है।

वृहद् गुजराती कोश : (खण्ड-2) प्रो. केशवराम का. शास्त्री विद्यावाचस्पति	हिंगलाज, स्त्री, संस्कृत-हिंगुलाया-प्राकृत-हिंगुलाजा, सिंध मां कराची थी, सोलेक किलोमीटर उपरना एक पहाड़ ऊपरनी दुर्गा देवी नुं ए नाम नूं एव स्वरूप (भारत मां अनेक स्थले पची ए माताजी ना मंदिर छैः।)
ब्रजभाषा सूर-कोश : डॉ. प्रेमनारायण टंडन	हिंगुलाजा-संज्ञा स्त्री (सं.) दुर्गा मां देवी की एक मूर्ति, जो सिंध और बलूचिस्तान के बीच की पहाड़ियों में है।
प्राचीन भारतीय संस्कृति कोश : डॉ. हरदेव बाहरी	हिंगलाज-बलूचिस्तान से दक्षिण, कराची से फारस की खाड़ी तक जाते हुए मकरान तट में स्थित एक स्थान, यहाँ पुराण वर्णित दुर्गा देवी का एक महास्थान है। शक्तिपीठ : 51-हिंगुला, शर्करार, सुगंधा, काश्मीर, ज्वालामुखी, जलंधर, वैद्यनाथ, नेपाल, मानस, विरजा, गंडकी, बहुला, हरिसिद्ध, त्रिपुरा, चहल, चिस्त्रोत, कामगिरि, प्रयाग, जयंती, युगाधा, कालीपीठ, किरीट, विशालाक्षी, कन्याश्रम, कुरुक्षेत्र, मणिबंध, श्रीशैल, कामाक्षी, कांजीवरम्, कालमाधव, शोणदेश, रामगिरि, वृन्दावन, शुचि पंचसागर, करतोयातट, श्री पर्वत, विभास, प्रभास, भैरव पर्वत, जनस्थल, सर्वशैल, गोदावरी, तीर, रत्नावली, मिथिला, नलहाटी, कर्नाट, वक्रेश्वर यशोट, अट्टहास, नन्दिपुर और लंका।
भारतीय संस्कृति कोश : प्रो. देवेन्द्र मिश्र कन्हैया लाल चंचरीक डॉ. महेश कुमार जैन	हिंगलाज बलूचिस्तान से दक्षिण कराची से फारस की खाड़ी तक जाते हुए मेकरान तट में स्थित एक स्थान, यहाँ पुराण वर्णित दुर्गा देवी का एक महास्थान है। लोक गाथाओं में वर्णन मिलता है।

अध्याय : बीस

आध्यात्मिक पर्यटन केन्द्र हिंगलाज

पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में हिंगलाज शक्तिपीठ के आध्यात्मिक पर्यटन की दृष्टि से विश्व पटल पर उभरने की प्रबल संभावना है। सम्पूर्ण विश्व में हिंगलाज माता के प्रति आस्था रखने वाले करोड़ों श्रद्धालु हैं। श्रद्धालु हिंगलाज यात्रा करना चाहते हैं और पाकिस्तान के अन्य धार्मिक और पर्यटन स्थलों का भी भ्रमण करना चाहते हैं। हिंगलाज माता शक्तिपीठों में प्रथम शक्तिपीठ है और इसलिये इसके दर्शन करने आने वाले यात्री हिंगोल नेशनल पार्क, लसबेला, निकटवर्ती अन्य तीर्थ स्थलों को भी देखना चाहेंगे। लसबेला जिला अत्यधिक महत्वपूर्ण जिला है और यहाँ की भौगोलिक स्थिति यात्रियों का मन मोहती है। राजा चच का यहाँ शासन हुआ करता था। समय की गति के अनुसार अलेक्जेण्डर, मोहम्मद बिन कासिम एवं सैल्यूकस आदि ने भी अपने सैन्य अभियान के दौरान इसको केन्द्र बनाया था। सूमराओं और सम्माओं का भी शासन अध्ययन का विषय है। इस क्षेत्र की गुर्जर, रांझा, घूंघा और बूरफात जनजाति आज भी अपने सांस्कृतिक विरासत के कारण प्रसिद्ध है। प्रागैतिहासिक काल की गुफाऐं और प्राकृतिक दृष्टि से अत्यधिक सुन्दर पहाड़ यात्रियों का मन मोहने के लिये उपलब्ध है। उत्थल, बेला और हब क्षेत्र में पर्यटकों के लिये आधारभूत सुविधायें और वातावरण भी अनुकूल है। लसबेला में अल्पसंख्यक जनजाति गूंजास, सिनार, संगूर, छुट्टाज और खोजा भी अपनी जनजाति विशेषताएं बनाये हुये हैं। इस क्षेत्र का भू-दृश्य भी मनमोहक है। हिंगोल राष्ट्रीय उद्यान में 250 प्रकार के पौधे, 185 प्रकार के पक्षी, 35 प्रकार के स्तनधारी वन्य जीव एवं 40 प्रकार के जल आधारित पक्षी पर्यटकों को देखने के लिये उपलब्ध हैं। हिंगोल नदी में मगरमच्छों की भरमार है। लसबेला क्षेत्र में नागरिक सिन्धी या बलूची भाषा बोलते हैं। अधिकांश लोग स्थानीय लासी भाषा का भी उपयोग करते हैं।

यह क्षेत्र शीरी फरहाद, सस्सी-पुन्नू, हिंगलाज माता, कुम्ब माता आदि के लिये प्रसिद्ध है। तीर्थ यात्रियों के आने के कारण इस क्षेत्र में आवास के लिये होटलों,

यातायात के वाहनों एवं स्थानीय भ्रमण के लिये पर्यावरण मित्र वाहनों की मांग बढ़ेगी। विदेशी मुद्रा भी पर्याप्त मात्रा में पाकिस्तान को प्राप्त होगी। तीर्थाटन और पर्यटन से जुड़ी हुई अन्य सेवाओं की भी आवश्यकताएँ बढ़ेंगी। पाकिस्तान सरकार को आध्यात्मिक पर्यटन के लिये यात्रियों की सुरक्षा, यात्रा वाहनों, आवास और भोजन आदि के लिये होटल, रेस्टोरेन्ट एवं धर्मशालाओं के निर्माण की सुविधायें निजी या विभागीय स्तर पर करने की ओर ध्यान देना होगा। हिंगलाज माता और उसके निकटवर्ती क्षेत्र की यात्रा के लिये यात्रा मार्ग, प्रमुख दर्शनीय स्थल एवं यातायात सुविधाओं का व्यापक पैमाने पर देश-विदेशों में प्रचार-प्रसार की व्यवस्था करनी होगी। अघोर नदी मोड़ से हिंगलाज मां तक अच्छी सड़क व पुलियाओं के निर्माण की भी आवश्यकता है।

हिन्दुस्तान में माता वैष्णो देवी, तिरुपति एवं ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह में जिस प्रकार तीर्थ यात्री बड़ी संख्या में निडर होकर आते हैं, उसी प्रकार पाकिस्तान को भी हिंगलाज, कटास राज, साधुबेला, मुअन जोदड़ो, तक्षशिला, हालानी दरबार, टीला जोगियान, ननकाना साहिब, देवल मां आदि स्थानों के लिये आने वाले यात्रियों को सुरक्षा एवं सुविधायें उपलब्ध कराने की दिशा में कारगर कदम उठाने चाहिये।

सिन्धी समाज और हिंगलाज

सिन्धी समाज हिंगलाज को सिन्ध की लोक पूज्य देवी के रूप में पूजते हैं। प्राचीन काल में हिंगलाज सिन्ध राज्य की सीमा में अवस्थित थी।

हिंगलाज माता के नाम पर नाम

चारण समाज में हिंगलाज माता सर्वोच्च आस्था की केन्द्र है। चारण समाज के अनेक श्रद्धालुओं के नाम 'हिंगलाज दान' हैं। प्रत्येक चारण कवि ने हिंगलाज माता की स्तुति में छन्द लिखे हैं। चारण समाज हिंगलाज माता को आदि शक्ति के रूप में पूजते हैं।

अध्याय : इक्कीस

स्तुति

1. हिंगलाज माता : डिंगल काव्य में स्तुति

आदि शक्ति **हिंगलाज** के सम्बन्ध में अनेक महाकवियों ने अपनी पद्य रचनाएं की हैं। सातो द्वीप फारस की खाड़ी में एक छोटा सा टापू है जहां **हिंगलाज** की अंखड ज्योति जलने का उल्लेख है। डिंगल के प्रसिद्ध कवियों ने **हिंगलाज** माता की स्तुति में जो रचनाएं रची हैं, उनमें से कुछ का उल्लेख करना आवश्यक लगता है।

हिंगलाज स्तुति : महाराजा अजीत सिंह

जोधपुर महाराजा अजीत सिंह ने गुणसार ग्रंथ की रचना की थी। ग्रंथ के प्रारम्भ में उन्होंने हिंगलाज माता को स्मरण करते हुये लिखा है-

''श्री परमात्मने नम:, श्री गणेशाय नम:, श्री महामाय ***हींगुलाजजी*** *सदा सहाय:।।*
अथ महाराजाधिराज महाराजा श्री जीतसिंहजी क्रित गुणसार ग्रंथ लिख्यते।।''

गुणसागर ग्रंथ में काटारिका पूजन हिंगलाज स्तुति, 'रतना कँवर रतनावली की बात' में हिंगलाज स्तुति की रचना जोधपुर महाराजा के निजी पुस्तकालय 'पुस्तक प्रकाश' में सुरक्षित है।

जोधपुर महाराजा अजीत सिंह कृत हींगुलाज स्तुति

अथ श्री हींगुलाज जी रो छंद लिख्यते अथ छंद नाराच।।

सदा प्रसन्न एक मन सेवतां समाप ऐ।
अखंड राज गज वाज दिल प्रति आप ऐ।
मारणी अनेक सत्रु सेवकां सधारणी।
जपंत देवि हींगुलाज कल्यीयांण कारणी।। १।।

गिरे करेसु कंगरेसु कंगडें विराजति।
वडे वडे गठे मठे बतीस राग वाजती।
सदा सहाय जन्तभाय तीन लोक तारणी।
जपंत देवि हींगुलाज कल्यीयांण कारणी।। २।।
मुकट्ट सीस मंडीयां कीरण कांन कुंडला।
ललाट आड सोभए तिलक मध्य मंडला।
रकत्त नेन भी भला कीयां पीयां सुवारुणी।
जपंत देवि हींगुलाज कल्यीयांण कारणी।। ३।।
मुकत्त केस लघु वेस देह द्युत्तिदीपए।
उद्योत जोत मुष होत कोट भांण बीपए।
घमंक रोल गुंघरे त्रिशुल हाथ धारणी।
जपंत देवि हींगुलाज कल्यीयांण कारणी।। ४।।
अनूंप वीर ओढ़णें सुकंचुकी विराज ए।
घणुंस घेर घुघरें सबें वसन्न साक ए।
सहाय माय संकरी चरित्र नेक चारणी।।
जपंत देवि हींगुलाज कल्यीयांण कारणी।। ५।।
सके सिंगार अण पार अंग अंग ओप ए।
मुकत्त माल चंद्र भाल हें विसाल लोच ए।
सुमत्ति दत्त नित्त प्रत्त सत्त तत सारणी।
जपंत देवि हींगुलाज कल्यीयांण कारणी।। ६।।
प्रचंड देह धारणी सुविक्कराल वंक्कडी।
प्रसन्न रूप सेवगां सहाय वार संकडी।।
अल छला वाला वला दलां दइत्त मारणी।
जपंत देवि हींगुलाज कल्यीयांण कारणी।। ७।।
विलास हास सुख रास जास सांम सुंदरी।
दिवस निस होत हें आणंद में सदा करी।।
सुबुद्धि रिद्ध दायणी कुबुद्धि ने कटारणी।
जपंत देवि हींगुलाज कल्यीयांण कारणी।। ८।।
करूर रूप किद्ध ए सु चंड मुंड वीरयं।
सहत सेन साज ए द्विषे घणुं अधीरयं।
अरी दलां महा बलां षलां षगी प्रहारणी।

जपंत देवि हींगुलाज कल्यीयांण कारणी।। ९।।
सुरां अपार वार वार की सहाय संकरी।
वडा विसाल विक्कराल दांणवां क्षयंकरी।
षडग्ग षप्र धारियांर कत्त बीज मारणी।
जपंत देवि हींगुलाज कल्यीयांण कारणी।। १०।।
कीया सुजुद्ध वार वार के अपार इस्वरी।
दइत मार जन तार जयत जगदीस्वरी।
तुंहीज सार तुं अधार तुं अपार पारणी।
जपंत देवि हींगलाज कल्यीयांण कारणी।। ११।।
तुंहीज आद तुं अनाद सात दीप सांमणी।
तुं ही विरुप तुं सरुप कोट कला कांमणी।
तुंहीज अंत तुं अनंत तुं धरम्म धारणी।
जपंत देवि हींगलाज कल्यीयांण कारणी।। १२।।
तुंहीज माय तुं पीताय तुं सहाय सेवगां।
सदा सुभाय आपरां अभाय दुख देवगां।
रमंत तीन लोक में अनंत संत तारणी।
जपंत देवि हींगलाज कल्यीयांण कारणी।। १३।।
सदा सराज सुंदरी कीया सुरां सकाज ए।
करे बला स अबला निसंभ संभ साक ए।
महष मार जुध वार भुव तार तारणी।
जपंत देवि हींगलाज कल्यीयांण कारणी।। १४।।
।। अथ कलस कवित।।
करें सदा कल्यीयांण दीये सीध नवे निध।
करें सदा कल्यीयांण पुत्र पउत्रा धनणी व्रिध।
करें सदा कल्यीयांण सु दिन सुष संपति साता।
करें सदा कल्यीयांण दीयें वं बिन दाता।
जन भाय भाय करें मन आपणें। असुरां मेट अनीत रें।
हींगुलाज माय रक्षा करें। माहाराजा अगजीत रें।। १५।।
इति श्री हींगुलाज माय स्तुति।

(सौजन्य महाराजा मान सिंह, पुस्तक प्रकाश, जोधपुर)

जोधपुर महाराजा अजीत सिंह कृत हींगुलाज स्तुति

अथ शस्त्र पूजा कटारिका पुजन श्लोक

रक्ष सेन प सुरक्षं। हत शत्रु महा छला।
मंह देह रक्षतो भद्रे। कटारिका नमोस्तुते।

।। अथ दुहा।।

लंक उथापण जन थपण पर वेद छपर पाज।
अमर कीयो हनुमांन कुं। सो हें श्री हिंगुलाज।।
कंसप बाढ़ण अरिदलण। देव सुधारण काज।
कर भारथ जीता किसन। सो हें श्री हिंगुलाज।।
बरखत चमकत चिहुं दिसा, गहरी हुवत गाज।
खळहळ नीर खळकिया सो हें श्री हिंगुलाज।।
खांन पांन उत्तम हुं गति, सबें देत सुभसाज।
अरी खंडण मंडण मही। सो हें श्री हिंगुलाज।।
मछ रूप धरि समुद में। संखासुर कुं साज।
वेद आंण ब्रह्मा दिया। सो हें श्री हिंगुलाज।।
कीयो रूप कुरम को। समुद मथांवण काज।
काढ़ दीया-चवदे रतन। सो हें श्री हिंगुलाज।।
वडो रूप वाराह रो। धरीयो धरती काज।
दाढ़ां उपर राखली। सो हें श्री हिंगुलाज।।
रूप धर्‍यो बल बलन कुं। वांमन वसुधा काज।
राज दीयो पाताल को। सो हें श्री हिंगुलाज।।
रूप धर्‍यो नरसिंह को। हिरणकुस कु साज।
राख लीयो प्रहलाद कुं। सो हें श्री हिंगुलाज।।

बोध रूप अवतार बुध। सबें जोग विधि साज।
बेंठें ताली लाय कें। सो हें श्री हिंगुलाज।।
व्यास पुरांण बखांणीया संत उधारण काज।
अष्टा दस कीने प्रगट। सो हें श्री हिंगुलाज।।
फरसरांम फरसी धरें। सहस्त्रार्जन कुं साज।
जीत लइ पीरथी सबें। सो हें श्री हिंगुलाज।।
रूप धनंतर धार कें। कीये जगत के काज।
विचरें तीनुं लोक में। सो हें श्री हिंगुलाज।।
ध्रु होय बेठे अटल पद। सबें तपस्या साज।
सबें सीस राजत सदा। सो हें श्री हिंगुलाज।।
जोग रूप बहु जुगत सुं। भसम अंग सब साज।
जग में दत्त दीपावियो। सो हें श्री हिंगुलाज।।
जग रक्षण राखण जगत। धर्‍यो रूप यह काज।
असुर उथापण सुर थपण। सो हें श्री हिंगुलाज।।
अस्व मुख कंध अनंत को। किये भगत के काज।
धर्‍यो रूप हयग्रीव को। सो हें श्री हिंगुलाज।।
अति कुमार कोमल वदन। मुनि हें सब मुनिराज।
कहत सबे ही कपिल मुनि। सो हें श्री हिंगुलाज।।
नित कुमार लघु वेस में। सबें जोग तत साज।
सनकादिक सब कहतु हें। सो हें श्री हिंगुलाज।।
निह कलंक अवतार धर, करण सबें सुभ काज।
अवनी भार उतारवा। सो हें श्री हिंगुलाज।।
राजा पृथु पृथवी परा। किया बड़ा बहु काज।
बांधी मेर मृजाद सुं। सो हें श्री हिंगुलाज।।
हंस रूप हर हंस जव। कियो ग्यांन यह काज।
जाणे वा जगदीस नुं। सो हें श्री हिंगलाज।।
ब्रह्मा किया सरीर सुं। मन्वंतर रिषि राज।
सृष्ट उपाइ जिन सकल। सो हें श्री हिंगुलाज।।
नर नारायण रूप धर करें ध्यांन चित साज।
बदरी पति जाकुं कहें। सो हें श्री हिंगुलाज।।
जोग रूप गोरख जती। नव नाथां सिरताज।

प्रगट फिरे तिऊं लोक में। सो हें श्री हिंगुलाज।।
सिध चोरासी नाथ तव। दस दिस राजत राज।
नवग्रह वारें रास सब। सो हें श्री हिंगुलाज।।
द्वादस मास विसेषीयें। षट रिति राजत राज।
आठ वार पनरें तिथ। सो हें श्री हिंगुलाज।।
पलक घड़ी आठुं पहर। दीह निसा सब राज।
सुकल कृश्ना अरू वरस। सो हें श्री हिंगुलाज।।
सुक मुख सों अमृत स्रवे। ग्यांन रूप गुण पाज।
वेद व्यास ग्रह अवतरे। सो हें श्री हिंगुलाज।।
चार वेद गीता सहित। भारथ कर धरि काज।
रामायण कीधी जुतें। सो हें श्री हिंगुलाज।।
नेतक जेंने तो जवा। हुआ मथांणी राज।
सागर मथियो राज ही। सो हें श्री हिंगुलाज।।
गंगा गया गोमती। सब तीरथ सुभ आप।
तव दरसन तें सब कटे। पुरब भव के पाप।।
आठ पोहर चोसठ घड़ी। मुखां नमे हलुं जाप।
तातै सब ही कटतु हें। जनम जनम के पाप।।
महामाय हिंगुलाय तुम। सब देवां सिर देव।
मैं मन वच चें जांनके रमूं रावळी सेव।।
श्री जी विष्णु महेश ब्रह्मा। इंद्र रवि आप।
तव दरसन तें सब कटे। पुरब भव के पाप।।
तुं इंद तुं चंद तुं हरी। तुं हरि रवि तुं सेस।
तुं विरंचि तेंतीस सुर। तूं हिंगुलाज सुरेस।।
गंगा यमुना सरस्वती। सिप्रा रावी सिंध।
रेवा तापी नें मही। तूं सोभा अन मंध।।
गया गंगा तूं गोमती। तुं पोहकर तुं प्राग।
अठसठ तीरथ राजि हो। भाय होवो त्यां भाग।।
सात समुंद नवसें नदी। अठ कुल भार अठार।
नाग कुली नव ईस्वरी। वेद चार विस्तार।।
मारकंडे गुण गाविया, राज तणा सुर राय।
आठूं रिषि कीधा अमर। युग जातां जुगां न जाय।।

अगन वरुण मारुत गरुड़। तुं विजया तत सार।
बल बल मेर कुमेर तुं। तूं लिषमी अवतार।।
सत गुण तम तुं राजसी। पंच तत्व परवीण।
तुंहीज भुगता भोगणी। जग जणणी तुं जीण।।
सहस किरण सोलें कलां। जोति रूप जग ईस।
स्वर्धा सजीवन सुंदरी। नमै कोड़ तेतीस।।
तुहिंज घड़ें पोषें तुहिं। तुं बलि भांजणहार।
अतुली बल तुं इस्वरी। तुंझ लहें कुण पार।।
मारण मोहण वसिकरण। आकर्षण तु बाट।
तुंही पर दल थंभणी हे हुवणी हय थाट।।
लजा सद बुधि सुंदरी सती रूप सुरराय।
काल रूप कंटक लखे शांति रूप सुखदाय।।
बीस हथी अब आ घणी, हद दह हुणा बारंत।
मधु कैटभ दांणव दुरित। चामुंडा चावंत।।
रस सिंगार भुषण वसन। राजत नाना रंग।
भक्ति सिंहासन सोहियो। चामर छत्र सुचंग।।
महिषासुर नुं मारीयो। सिंघ चढ़े सुरराय।
रक्त बीज सेन्या सहित। हणियो श्री खगसाहि।।
रूप धरे नरसिंघ रो। हिरणकुस नुं मार।
तें जननी पहलाद नुं। वर दे लीयो उबार।।
बहतां जल तांणीजतां। बिन एक माहि बुडाय।
अजेराज कीधो अभें। तें वर दे त्रिपुराय।।
हणुं सजीवन कारणें। ल्यायो द्रोण उचाय।
लखमण सरजीवत कियो। ताहरें वर त्रिपुराय।।
वीसहथी वरदायणीं, संता सदा सहाय।
हनुंमांन जांबव अमर। राज किया सुरराय।।
सेव तिहारी संकरी। मेटें जग जंजाल।
बल राजा नुं वर दियों। पायो राज पयांळ।।
साझे दस सिर सुंदरी। तुं बांधे दधिराज।
वर थाहरे लंका तणो। करें बभीषण राज।।
जग मोहे कीनो प्रगट। तो प्रताप सुरराय।

श्री भागोत कह्यो सबें। वेद व्यास वर पाय।।
साचें मनसा चलतणी। की सेवा चित लाय।
वरदाता वरदायिणी। मन वांछित महमाय।।
ब्रह्मा वेद वखांणीया। मया तिहारी मात।
कारण तारण लोक तिहुं। वर दे किया विख्यात।।

(सौजन्य : महाराज मानसिंह, पुस्तक-प्रकाश, जोधपुर)

देवी रा कवत

(सुमति रंग प्रणीत)

हूं सेवक हिंगळाज खास खिजमतगर खासो।
हूं सेवक हिंगळाज दास दासां रो दासो।
हूं सेवक हिंगळाज विनो सेवकां वधारौ।
हूं सेवक हिंगळाज चित्त मोनैं चीतारौ।
हिंगलाज राज मो लाज-तो, शत्रु ठेली संकट हरौ।
कहै सुमतिरंग वरदायनी, कमलापति मोनैं करौ।
भला भोग भोगवै, महल माननि मन मानी।
लख विध लाभै लच्छ, भगति पूजतां भवानी।
सुथिर लहै सम्पदा सदा सोभाग सनूरा।
दुनी जुड़ै दीवाण, प्रभू पद पावै पूरा।
हय घट सुभट हथीह सम, कवीजन बोलै किता।
इक नित चित आराधतां, आई सुख पूरे इता।
कामित करणी मात, जात आवै जग जणणी।
संभ नसंभ हताक, हाक देतां दल हणणी।
संतां करै सहाय, भाइ भगतां भगवती।
आपै ज्ञान अनंत, संत तूठै सरसती।
दाळिद दळण अकळण कळण, नळण नेत्र विरूदां लहण।
करुणा करण संकट हरण, असरण सरण तूं हिज सरण।
न हुवे नफळ कदै रूंख वायउ रखायउ।
न हुवे नफळ कदै गरथ पति गीते गायउ।

न हुवे नफळ कदै साध सेवा सदाई।
न हुये नफळ कदै सगै सखरे सगाई।
संसार सकल सेवा सफळ, साच वाच संतां सही।
चामुंड राय चरची चतुर, नेट जाइ निफळ नहीं।
उखध आई नाम मंत्र माहा माता रौ।
यंत्र कारसि जाळपा, साच समरण साचा रौ।
जडी साइ जोगणी ध्यान धणियाणी धारिस।
मोहन माया महमाय, सगति करि कारिज सारिस।
होयसौ नाम हिंगळाज रौ, वीसभुजी वसिकरण मो।
कहि सुमतिरंग वरदायणी, नृप सरब मुझ राजि तौ.।
मुझ वैरी युं मार थूं महिसासुर मार्‌यौ।
मुझ वैरी युं मार रगति जिम रोस विडार्‌यौ।
मुझ वैरी युं मार संभ अनसंभ संघारै।
मुझ वैरी युं मार मरद मधु कैटभ मारै।
पछाड़ पाड़ पिसुणां प्रगट, खाड गाडि खूनी खरे।
भैरवी भीड़ पीड़ा हरण, कह सुमतिरंग करना करे।

(सौजन्य श्री गिरधरदान रतनू दासोड़ी के निजी संग्रह सूं)

छंद जोगमाया रा : शभजी जोशी दासोड़ी प्रणीत

दूहा

आद अखण्डी ईशरी, दैत विखण्डी देव।
मंडी जग हिंगळा मुदै, शुभिया चण्डी सेव।। १।।
आद अनादी ईशरी, सुकर त्रिसूळां साज।
शुभिये रा अरि साळणी, है देवी हिंगळाज।। २।।
शिव शक्ति सु प्रसन्न रहो, जपूं तिहारो जाप।
सरणागत तोरी सभो, पढ़ै तोर प्रताप।। ३।।

छंद-त्रिभंगी

तूं आदि शकत्ती जाप जगत्ती, देय उकत्ती जै सजनम।
ज्वाळा गिरि जत्ती साय करत्ती, ध्यान धरती सो भजनम।

डूंगर डमरंत्ती निरत करंत्ती विमर बरत्ती शत वर नम।
भज रे शुभ अम्बे भुज पर लम्बे शक्ति सरम्बै तो शरनम।। १।।
चोसट वर चण्डी रूप अखण्डी, मात ब्रह्मण्डी तूझ रमम।
दैत्यन कुल डंडी देह प्रचण्डी, खळ कर खण्डी जोग समम।
अति अमर अखण्डी मूरत मण्डी, थापन थंडी तैं थिरनम।
भज रे शुभ अम्बे भुज पर लम्बे शक्ति सरम्बै तो शरनम।। २।।
तिहूं लोक तिरानी आद भवानी तूं कात्यानी जग रचता।
माता जुग मानी विम्मल बानी, वेद वडाळी तूं वक्ता।
आपै जस आनी, दीरघ दानी, धरम धिरानी सो धरनम।
भज रे शुभ अम्बे भुज पर लम्बे शक्ति सरम्बै तो शरनम।। ३।।
मस्तक पर मुकटी भाळ भृकुट्टी, तेज त्रिकुट्टी ए तुमनम।
करियंदह कट्टी सत गत सट्टी, भा इम तट्टी तुम समनम।
जीता जग जट्टी त्रिहुं पुर तट्टी, ज्ञान अघट्टी तूं करनम।
भज रे शुभ अम्बे भुज पर लम्बे शक्ति सरम्बै तो शरनम।। ४।।
बावन कर भैंरू डहकै डैंरू रास रचेरूं तूं रचनम।
माता कर मैरूं निरत नचेरूं बीण बजेरू ए भजनम।
पायल पग पैरूं धर धुजेरूं गरजत गैरूं ए वरनम।
भज रे शुभ अम्बे भुज पर लम्बे शक्ति सरम्बै तो शरनम।। ५।।
काळी किरपाळी दीन दयाली, तूं प्रतिपाळी है संता।
शत्रु घट साळी, जोग जपाळी, मा विरदाळी मोट मता।
चंचर चिरताळो आव उताली, तीजी ताळी रिछकरनम।
भज रे शुभ अम्बे भुज पर लम्बे शक्ति सरम्बै तो शरनम।। ६।।
भुज अष्ट भवानी दैत्य दबानी, खल खपवानी तूं चण्डी।
निरलेय नवांनी संत सेवानी, गाथ गवानी ब्रह्मण्डी।
त्रिय लोचन वानी है शुभ वानी, मैं जप बानी ते चरनम।
भज रे शुभ अम्बे भुज पर लम्बे शक्ति सरम्बै तो शरनम।। ७।।
धोळागिर धाई शिखर सिधाई, आप उपाई जोग तनम।
मेना है माई सब सुखदाई आठम आई पूज धनम।
गिरजा गुण गाई अमर उछाई, वर शिव पाई तैं वरनम।
भज रे शुभ अम्बे भुज पर लम्बे शक्ति सरम्बै तो शरनम।। ८।।

शंभु हित लागी तिहुं गुण त्यागी, जोग सभागी तूं गवरी।
मूरत मन मागी जोगण जागी शंकर सागी चढ़ चंवरी।
रिख परचो रागी परम परागी तूं बड़भागी शंकरनम।
भज रे शुभ अम्बे भुज पर लम्बे शक्ति सरम्बै तो शरनम।। ९।।
हिंगलाज हलंती मात मलंती दुष्ट दलंती नव दुरगा।
चिरताळ चलंती शत्रु सलंती, भाळ भलंती ये परगा।
कुरियंद कलंती मेल मलंती, खेल खिलंति जय करनम।
भज रे शुभ अम्बे भुज पर लम्बे शक्ति सरम्बै तो शरनम।। १०।।
जळ गंगा गहिरू जमना नीरू, अड़सठ तीरूं तूं सरता।
वरदेणी वीरूं विमळ सरीरू, धरम सधीरू तूं धरता।
चंड मुंडन चीरू गुणे गहीरूं अगर उगीरुं ये वरनम।
भज रे शुभ अम्बे भुज पर लम्बे शक्ति सरम्बै तो शरनम।। ११।।
आये व्रद आया मित्र मनाया, भव मन भाया भगवंती।
दीनन पर दाया करो सिवाया, गुण मैं गाया शुभवंती।
सेवा सुख पाया धिन महमाया, थिर शभ-थाया ते थिरनम।
भज रे शुभ अम्बे भुज पर लम्बे शक्ति सरम्बै तो शरनम।। १२।।

(सौजन्य : श्री गिरधरदानजी रतनू रै निजी संग्रै सूं)

गुण हिंगलाज रासौ

सुप्रसिद्ध भक्त कवि पीरदान लालस ने 'गुण हींगलाज रासौ' की रचना की। उक्त रचना में से एक कवित्त यहाँ प्रस्तुत है।

अथ गुण हींगलाज रासौ

पारबती परमेस सरब पारबती सती।
कहि हो कहि त्रिसकति जोग तु गोरख जती।।
सीता श्री सारिखी श्रीया सारंगधर सरिखी।
सावतरी सुभराज प्रघळ ब्रह्मा जी परखी।।
तुं पच्छिमि पाट पतिसाह तुं भेस सरब भगवंत भू।
पीरीये कहै परमेसरी हींगलाज सुप्रसन्न हू।।
।। इति श्रीहींगळाजरासौ संपूर्णम् लिखतुं लालस पीरदान वाचै
जिण नुं राम-राम सं. १७९२ काती बदि १४ बार थावर छै।।

सात दीप हिंगलाज सगती

(जवाहरदान)

कीनी क्यों जेज इती किनयांणी, धिणयांणी नंह और धणी।
खाथी आव रमंती खेळा, बेळा अबखी आंण बणी।।१।।
अबलंब नहीं दूसरो अम्बा, जगदंबा किण नैं कहुं जाय।
म्हारै जोर आपरो मोटो, धाबळवाळ चाड सुण धाय।।२।।
सात दीप हिंगलाज सगत्ती, मन रंग थळ धिन माता।
सांभळ अरज कहै इम सुकवी, खड़े पधारो खाता।।३।।
आवड़ जी री आण ईसरी, करनी जेज न कीजै।
रोग पिसाच न रहै अंग नेड़ो, देवी ओ वर दीजै।।४।।
आद अनाद सगत अजोनी, पाळण समरथ पातां।
परगट करो नयो परवाड़ो, जाय नहीं जुग जातां।।५।।
ब्रह्मा विष्णु महेस शेषवर, एको ध्यान अखंडी।
सेवक सदा जवारो सरणै, चाकर थारो चंडी।।६।।

अजोनीय अम्बा हिंगलाज आसापुर

(गोपीनाथ गाडण)

सुप्रसन दिन देवां सधर, बुध गुण दे बिसतार।
निरमल जोगण नाम रा, उर वस छन्द उचार।।
सिव नंद वंदू सुरसती, सुमति दीजे सगत्त।
कोहेला रांणी काळिका, इधकी विसय उकत्त।।
अध बम्ब अधो जळ जाझ उधारक, व्यापक व्रख अरद्ध अधो
अध क्रेत अधो राउ मेर धरा, अध आठम से पख चन्द्र अधो
अध के अधिकार अवधेसही नाम, अधो गज आप हि उद्धरयो
अजोनीय अम्बा हिंगलाज आसापुर, आप चण्डी मुझ सहाय अयो
जिय ईसरी मुज्झ सहाय अयो

अधपत्त किया अवनी अध ऊपर, राम अधोक्षर देत रिदै
अधरा असमान आधोपर अद्धर, अरद्ध उरद्धहि ज्ञान उदै
अधमा मधमा वरदीत अधंतर, मान अधे कर दाह दियो
अजोनीय अम्बा हिंगलाज आसापुर, आप चण्डी मुझ सहाय अयो
जिय ईसरी मुज्झ सहाय अयो

अेक ब्रम्ह हुकम्म अम्बा पत अेकल, अेक निकेक निकळकी
अेक पाज बंधी जलधी अवधेसर, अेक रिधि रतना गर की
एक राज धरंम सुरग्ग रहे इळ अेक अवच्चळ धू अखियो
अजोनीय अम्बा हिंगलाज आसापुर, आप चण्डी मुझ सहाय अयो
जिय ईसरी मुज्झ सहाय अयो

दोइ सूर ससी दिन रात दोइ, पख दोय रिधि सिधि दोय दखै
पुन पाप दोइ सुख दुख दोइ, पद राह दोइ दोइ भेद रखै
नर नार दोइ दोहू जोड़ि निपावत, जग्ग दोइ कर जोड़ वियो
अजोनीय अम्बा हिंगलाज आसापुर, आप चण्डी मुझ सहाय अयो
जिय ईसरी मुज्झ सहाय अयो

तीन देव तीनूं रुत लोक तीनूं तर, काज त्रहूं सिव नैण किया
सुर नाग नरां त्रण विद्ध सरज्जण, लोह त्रिसूल त्रिझाड़ लिया
गुण तीन त्रहूं गुणी धार गंगा जळ, तीनेही ताप निवार तयो
अजोनीय अम्बा हिंगलाज आसापुर, आपचण्डी मुझ सहाय अयो
जिय ईसरी मुज्झ सहाय अयो

जुग चार चहुं मद चार कूंटी चित्र चार, बांणी खांणी चार खरी
चत्र भुज्ज प्रभु लक्ष्मी बड़ कीरत, चहुं वेदां चहुंधा उचरी
व्रन वार पदारथ चार वहो वय, चार मुखां चतुरान चयो
अजोनीय अम्बा हिंगलाज आसापुर, आप चण्डी मुझ सहाय अयो
जिय ईसरी मुज्झ सहाय अयो

पंच बाण पंचेतत ज्वाळ पंचानळ, पंचवटी पंच धूणि पुजै
परबत क्रोड़ पंचहि पांच प्रमोदक, देव पंचांळो प्रपंच दुजै
पंच मुक्ख से वाहन संख पंचानन, पांडव पांचोंय जीत पयो
अजोनीय अम्बा हिंगलाज आसापुर आप चण्डी मुझ सहाय अयो
जिय ईसरी मुज्झ सहाय अयो

खट सास्त्र भास दरस्सण खट, खट्ट जती खट कासि खिले
खट मुक्ख खटानन चक्रवती खट, राग खटे खट रस्स रिले
खट्ट कमल खट धरम रुतां खट, केली खटे खट माध कियो
अजोनीय अम्बा हिंगलाज आसापुर, आप चण्डी मुझ सहाय अयो
जिय ईसरी मुज्झ सहाय अयो

सम सत्त लीला सत वार साता दिप, सात समन्द व्है सात सती
सुरगां पत सात सातां सुख संपत, धातव सात तुं ही धरती
रिख सात रसातळ सात जिभ्या रस, सात समांणीय साथ थयो
अजोनीय अम्बा हिंगलाज आसापुर, आप चण्डी मुझ सहाय अयो
जिय ईसरी मुज्झ सहाय अयो

अैरावत आठ अड़स्सठ तीरथ, आठ कुळी परबत्त इहां
वसु आठ आठां व्रग आठ कुलां विध, आठोंय जाम जो थट्ट इहां
असठा बध आठ अनद्र आठूं सिध, दिसा अठ आठहि साद दियो
अजोनीय अम्बा हिंगलाज आसापुर, आप चण्डी मुझ सहाय अयो
जिय ईसरी मुज्झ सहाय अयो

नव पाट मण्डे क्रोड़ घाट मण्डे नव, एक नवे नव नव छन्दी
नवधा भगती धज चाड़ नेजा नव, अंक नचे नोरता उयंदी
नव व्याक्रण भेद सुबोधन दे नव, कोट नवे परवांण कियो
अजोनीय अम्बा हिंगलाज आसापुर, आप चण्डी मुझ सहाय अयो
जिय ईसरी मुज्झ सहाय अयो

नव लक्ख तारा नव खण्ड नवे, ग्रहनाथ नवे कुळ नाग नमें
नवसो नदियां नव निद्ध निद्रावल, राग नवे नव लाख रमें
नव सोरठ रावली नव्वलखां सिंघ, नव मुखो कुम्भ बोलवियो
अजोनीय अम्बा हिंगलाज आसापुर, आप चण्डी मुझ सहाय अयो
जिय ईसरी मुज्झ सहाय अयो

दस देस दसे दिगपाळ दसे, दस दोस दसे दस कन्ध दयो
दस सो रवि किरणांय नेण सुरांसुर, काय अतीदस द्वार कयो
अवतार दसे दस नाम गोसांइय, सेस दसे सौ मुखां सिमयों
अजोनीय अम्बा हिंगलाज आसापुर, आप चण्डी मुझ सहाय अयो
जिय ईसरी मुज्झ सहाय अयो

एका दस व्रत तुहिं इगियारस, रूद्र इग्यारेहि रम्म रही
रोहिणी इगियारे य केरव खांण, मानब क्रोड इग्यारै मही
इगियारे जथा इगियारे गुणा व्रग, होम इगियारे अपार हयो
अजोनीय अम्बा हिंगलाज आसापुर, आप चण्डी मुझ सहाय अयो
जिय ईसरी मुज्झ सहाय अयो

बारे बारे नामा गणपत रू सारद, मोर मेघां बारे मास वणी
रस रास आदीत सक्रांत बारे, पंथ ग्रंथ बारे बारे बीज गुणी
पर बंध बारे अमवायस पूनम, बारे छत्री ध्रम भेरू बयो
अजोनीय अम्बा हिंगलाज आसापुर, आप चण्डी मुझ सहाय अयो
जिय ईसरी मुज्झ सहाय अयो

तेरेय होकर मास दैतां हण, तेरेहि क्रोड़य ब्रन्न तरां
तरूनी वस में ब्रस तेरही पांडव, पाखण्ड तेरेहि पार परां
प्रसार तेरे क्रोड़ माळ तुगां पख, साख तेरे कमधां सदयो
अजोनीय अम्बा हिंगलाज आसापुर, आप चण्डी मुझ सहाय अयो
जिय ईसरी मुज्झ सहाय अयो

चवदेय विद्या कर चवद चले, कछ भोजन चवदै लोक भंणे
विचरी चवदे व्रस राम साधे वन, देव चवदेय तेज दुणे
चपला चवदे रतना विच चाविय, चवदे नैणां सपतास चयो
अजोनीय अम्बा हिंगलाज आसापुर, आप चण्डी मुझ सहाय अयो
जिय ईसरी मुज्झ सहाय अयो

पनरे पड़वा सरजीवण पन्नरे, केवल पन्नरे चन्द्र कला
पनरे तिथ पक्ख सुभाविक पन्नरे, पन्नरे धानहिकी प्रगला
पनरे परमांण हेमाजळ पन्नरे, पन्नरे लाखाय तुज्झवियो
अजोनीय अम्बा हिंगलाज आसापुर, आप चण्डी मुझ सहाय अयो
जिय ईसरी मुज्झ सहाय अयो

कल सोल कला सोळे नरां क्रत, सोडस सोळय पूजा सोळ
सुरजां तेज सोळ सोळे हेम सामन्त, सोळे घड़ी दिन रात सोळ
सिंणगार सोळ गळहार सोळ, सरकार सोळ वहवार कियो
अजोनीय अम्बा हिंगलाज आसापुर, आप चण्डी मुझ सहाय अयो
जिय ईसरी मुज्झ सहाय अयो

सतरे लखसाख साधे जुग सांप्रत, काळ सत्तरेय धान कणी
सतरे जुध तास करे नित सूरज, भोजन सत्तरे विद्ध सुणी
सतरे चतुराई सिकोतर सत्तरे, कामई सत्तरे तत्व कियो
अजोनीय अम्बा हिंगलाज आसापुर, आप चण्डी मुझ सहाय अयो
जिय ईसरी मुज्झ सहाय अयो

गुण व्रन्न अठार अठारे आबूगिरि, भार अठार बनासपती
सज सेन अठार पदंम रामेसुर, पुरांण अठारय पारवती
दळ पांडव कोरव खाणं अठारय, जूंण अठारय लाख दियो
अजोनीय अम्बा हिंगलाज आसापुर, आप चण्डी मुझ सहाय अयो
जिय ईसरी मुज्झ सहाय अयो

उगणीस पेतारंभ जोत उजागर, तेज रंमा उगणीस तवे
सिल तांरग पें उगणीस सतंतर, हाक वीरां उगणीस हुवै
गरजे उगणीस अखाड़ेय जोगण, थाट थटां उगणीस थयो
अजोनीय अम्बा हिंगलाज आसापुर, आप चण्डी मुझ सहाय अयो
जिय ईसरी मुज्झ सहाय अयो

भुज वीस वीसांकर वीस भवानिय, अर्जुन नाम सुवीस अढ़ां
नख वीस कहै वीस हत्थ लंकानर, गज्ज वीसोतर चाड गढ़ां
जिव सेस विसा सोई गोपी भणे जस, वीस बिसव्वाय वीस कियो
अजोनीय अम्बा हिंगलाज आसापुर, आप चण्डी मुझ सहाय अयो
जिय ईसरी मुज्झ सहाय अयो

तुम्म सहाय अयो हमराय मां, तुम्म हमां पर व्रद्द तुमां।
तुम नव्व गुरु व्रन चारण तारण, हाथ धरी तुम माथ हमां।।
हमरे हिंगलाज हजूर हिंगोलज, जे पद रज्ज वंदे ज जयो।
अजोनीय अम्बा हिंगलाज आसपुर, आप चण्डी मुझ सहाय अयो।।
जिय ईसरी मुज्झ सहाय अयो

आया सहाय मंहमाय सीकोतर सिखराली,
चण्डी जय चामण्ड, बीसहथ कोहला वाली
दुरगा अम्बा देव, रोडल रव डूंगरेची
नागणेची नवलाख, आसापुर चाळक नेची
आद भवानी ईस्वरी, आप गंगा जल जिम उमां
वीसा व्हौ 'गोपौ' वदै, हिंगोळराय ऊपर हमां।

माँ हिंगळाज रम्मिये

(हिंगलाजदान कविया)

आद भवानी ईसरी, मोर भवानी माय
कला रचै अब कांमणी, रमै गिरंदां राय
भमंक अंज काळ भंज, सिंघ संज सज्जिये
झमंक जंझ ताळ खंज, वीर डंज बज्जिये
चौसठ्ठ मंझ रास रंझ, स्याम मंझ सम्मिये
गिरंद गाज बीण बाज, हिंग्गळाज रम्मिये
मां हिंग्गळाज रम्मिये

चूड़ी भुजाळ वीण वाळ, नाग डाळ रम्मिये
त्रिसूल ताळ खग्ग झाळ, खप्पराळ खम्मिये
सिंदूर ढाळ विक्कराळ, डम्मवाळ डम्मिये
गिरंद गाज बीण बाज, हिंगलाज रम्मिये
मां हिंग्गळाज रम्मिये

खेला खेलाय रंग माय, घूग्घर पाय घम्मिये
अखाड़ माय रम्म राय, झांझर पाय झम्मिये
सहाय माय सुर्रराय, इहगां साय अम्मिये
गिरंद गाज बीण बाज, हिंग्गळाज रम्मिये
मां हिंग्गळाज रम्मिये

हिलंत हार मोतिसार, नग्ग झार मांणिये
जड़ां उतार ग्रिळ धार, जोत सार जांणिये
अपार पार ग्रिब्ब धार, तेज पुंज तम्मिये
गिरंद गाज बीण बाज, हिंग्गळाज रम्मिये
मां हिंग्गळाज रम्मिये।

स्तुति जोगमाया री

(श्री फतेहकरण दधवाड़िया, कूंपड़ावास)

ममाय स्याह कीजिये, स आप पाय वंदना।
ब्रह्मंड खण्ड रचना, प्रपंच रच्चुं छंदना।।
मया उगत्त देहु सत काव्य कथ्य सारणी।
नमस्तु मातु हिंगलाज, तूं त्रिलोकी तारणी।। १।।
घम घमाट घूघरा, जम्ज जमाट जोगणी।
घटात घाट भैरवी, दय्यत दैन्त थोगणी।।
उमंग जोग जंग अंग, कौच अंग धारणी।
नमस्तु मात हिंगळाज तूं त्रिलोक तारणी।। २।।
डम डमाट डैरवास भैरवास नच्चयत।
प्रवाड़ दैत्य राड़ थम्भ, अंब जुद्ध रचियत।।
सवार नार खड्ग धार, मूंड काट डारणी।
नमस्तु मात हिंगलाज, तूं त्रिलोक तारणी।। ३।।
छकाय मद छाकती हकार रथ्थ हल्लीयम।
वकार मार मार यूं, उच्चार शौर गलियम।।
कराल काल कालिका, वैराट रूप धारणी।
नमस्तु मात हिंगलाज तूं त्रिलोक तारणी।। ४।।
महान बण्ड खण्ड चण्ड, मुण्ड रक्त दानवा।
पिनाक ताण बाणयुं, छिपाय देत भाणवा।।
उत्तंड बण्ड झुण्डको घमण्ड गर्व गारणी।
नमस्तु मात हिंगलाज तूं त्रिलोक तारणी।। ५।।
कटि क्रमाल मेघ ज्वाल, व्है कराल कालिका।
चढ़ी चमूह बांध ब्रूह, ग्रीव रुण्ड बालिका।।

चलाय चक्र वक्र तुझ, शक्र काज सारिणी।
नमस्तु मात हिंगलाज तूं त्रिलोक तारणी।।६।।
पछाड़ दैत्य जाड़ फाड़ अंब जुद्ध जीतणी।
करे लल्लक वीर हक्क जाम अट्ठ वीतणी।।
उतार भार भूमिकोज गर्व दुष्ट गारणी।
नमस्तु मात हिंगलाज तूं त्रिलोक तारणी।।७।।
धपाय ग्रीध आमिसां खपाय दीध तें खल्लम।
ममाय पाय आयदेव स्याह कीध ते भल्लम।।
पढ़ै स्तुत देव युत्थ अंबिका उबारणी।
नमस्तु मात हिंगलाज तूं त्रिलोक तारणी।।८।।
प्रशाच भूत प्रेत शत्रु डाव घाव कर छलम।
रहे जो मात सम्मुखी सदैव मोद मंगल्लम।।
सुदिष्ट पिष्ट सांकी फतेस काज सारणी।
नमस्तु मात हिंगलाज तूं त्रिलोक तारणी।।९।।

मातृ गीत

(ठा. गंगासिंह रतनू, जिलिया चारणवास)

मोरी मात हिंगलाजा राजा महाराजा तीनों लोक रा।। टेर।।
सात पहर साता दीप बिराजो एक पहर हिंगलाजा
तीनूं लोक भवन चवदा में आप की होत आवाजा।।१।।
स्वर यक राग उचारत चौसट बजै छतीसूं बाजा
सुर नर मुनिजन करत आरती इन्द्र करत है गाजा।।२।।
ब्रह्मा विसनु महेश मुनि सुर असुरां सूं डरिभाजा
सुर तेतीस क्रोड़ तव सरणैं आण खड़ा इंदराजा।।३।।
इतनूं कोप सुण्यो असुरन को बेग सुधारण काजा
चंड मुंड महिखासुर मारे खाय गई करि खाजा।।४।।
चारणवास रतनूं गंग गावै सुख संपति रख साजा
रोग दोख सब दूरि करो मां त्रपत रखो तन ताजा।।५।।

देवी हिंगलाज

(सोहनदान सिंहढ़ायच, ग्राम रातड़िया, देशनोक)

जी गिरवर पर राजै, सातां दीप विराजै, मां सुरराय।। टेर।।
पिछम धरा में पीठ सगत रो, सब तीरथ सिरताज
बीच बिलोचिस्तान विराजै है देवी हिंगलाज।। १।।
अजब झरोखा ओपे चोखा, गिर गोखा चहुं ओर
मेर हिंगोल रमण ने माता, आवे नित इक पोर।। २।।
चोरासी चट्टान परसियां, कटै चोरासी पास
गरभ गुफा रे मांय गुजरियां, नहीं आवे ग्रभवास।। ३।।
दरसण परतख कियां देवी रा, उर में हुवे उजास
दूर हुवे अज्ञान अंधारो, परमजोत परकास।। ४।।
भजन कियां होवे भगतां घर, आणंद हरख उछाव
सोहनदान शरण सगती रे, भगती दीजे भाव।। ५।।

जय-जय श्री हिंगलाज

(कविवर भंवरसिंह मधुकर रतनू, खेड़ी)

जय जय श्री हिंगलाज शकत्ती (अम्बे) आदि जगत उतपत्ती।।टेर।।
पूरब एक कल्प के मांही, दक्ष हुए प्रजापत्ती,
कर विरोध वंचित किए शिव को, यज्ञ विभाग विरत्ती।।१।।
शिव को होत निरादर देख्यो, रीस रुकी नहीं रत्ती,
योग अगनि में दग्ध कर्‌यो तन, जोगण जूना जत्ती।।२।।
जलती देह उठा त्रिपुरारी, तांडव करत तुरत्ती,
कांपन लगी प्रलय के भय सूं, संपूरण वसुमत्ती।।३।।
करे विखंड विष्णु निज आयुध, ज्वलित गात श्री सत्ती,
शक्तिपीठ इक्यावन पूरे, अंग अंग उतपत्ती।।४।।
ब्रह्मरन्ध्र गिर्‌यो धका गिरि, धन्य बिलूचि धरत्ती,
श्री हिंगलाज मात पच्छिम दिशि, जागति जोत जगत्ती।।५।।
चरन कमल रज पावन परसन, पांव परत छत्रपति,
गावत चरित मिलत मनवांछित, व्यापत नांहि विपत्ति।।६।।
दक्षसुता धवलागिरि वासिनि, पुरुष पुराण पृकत्ती,
मांगत चरणामृत रस 'मधुकर', भय भंजन भगवत्ती।।७।।

अरज सुण हिंगलाजा

(सज्जनसिंह रतनू, भैंरूपुरा)

बीसहथी मेरी मात भवानी आज अरज सुण हिंगलाजा,
दुर्गम पथ पर दुर्गा दरशी सर्वलोक की महाराजा।। टेर।।
चन्द्रकूप है आग उगलता, गांजा चिलम निगलता है,
हिंगोल नदी पर हाक सुणाता, मात सवारी मृगराजा।।१।।
दशकन्द मार दशरथ सुत धाया, चांद सुरज चितराया हो,
ब्रह्महत्या से मात बचा दे, किरपा यह फरमाजा हो।।२।।
अदभुत भवन में गुफा बनाई, यक्ष मना हरशाया हो,
बाग बगीचा झरणा झरता, अधर झूल अंदाजा हो।।३।।
सात समंद सुर सात सजाया, सात बार मैं आया हो,
सातों सगत्यां सिंह सजाकर, आंगण तणी बंधाजा हो।।४।।
ऐसा ही होगा सुण मेहा, बैण हुवा गंभीरा हो,
मन ही मन मुसकाया मेहा, सुणकर यह आवाजा हो।।५।।
सुन्दर ग्राम सुवाप मेहा घर, रिधू रूप अवतारा हो,
आई मां की करे आरती आंण खड़े, इन्द्रराजा हो।।६।।
पथ देशाणो लागै प्यारौ, 'सज्जन' साध सुणाता हो,
'राजू' मां की किरपा चावै, तुरत करो तन ताजा हो।।७।।

माता हिंगलाज

(भक्तिमति विदुषी श्रीमती गुलाब बाईसा कोट)

मात हिंगलाज तूं मेरी, दया कर भक्ति दे तेरी।। टेर ।।
अज्ञान अबुद्धी नाशदे री, मेटदे घोर अंधेरी।
लोभ मोह की काट बेरी, करै मत मात अब देरी।।१।।
दुख सिन्धु में नाव परी हेरी, ख्वायगी गोत्या अब गैरी।
समे पलटती बैरी, कहो अब या पर कैसे व्हैरी।।२।।
नहीं सेवा योग बुद्धि मेरी, करूं मैं कैसे भक्ति तेरी।
मात तूं दयालू व्हेरी, हिरदै मो ज्ञानदे री।।३।।
जनम चारण सफल करदे री, दरस दे बुला चरणा नेरी।
फरियाद या मो कानदे री, अभिलाषा ये पूर मेरी।।४।।
जपै किंकर गुलाब तेरी, सुण मात अब झट अर्ज मेरी।
तब खजानां खोलदे री, भक्ति बुद्धि देबा घनेरी।।५।।

श्री हिंगलाज माँ की स्तुति

(रामभाई देथा)

छन्द नाराच

प्रचन्ड बाहू डन्ड चन्ड जोग निद्रा भैरवी।
भुजंग केस पिन्ड रेख कुन्डला मनोहरी।
निखन्द्र कान कुन्डला तुं कालिका कृपालनी।
भजो श्री मात हिंगलाज निरमला निरंजनी।।१।।
सुचन्द्र शीश अस्त्र शस्त्र सावधान शंकरी।
कटार खड़ग खप्पर सूल कृत ले महाबली।।
नीसाज साज सिद्ध लोक दीप खन्ड मन्डनी।
भजो श्री मात हिंगलाज, निरमला निरंजनी।।२।।
सुधा पीपास बिमल वास अग्न रूप जोगणी।
सुरा जटा कटा कलप कामधेनु धामणी।।
कराल कैस वेस भाल भूत चक्र भंजनी।
भजो श्री मात हिंगलाज, निरमला निरंजनी।।३।।
सिंगार नाग बेल केल कंज काम लोचला।
बिचाल भाल चन्द्र लात पद्म माल मेखला।।
बिसाल लाप चन्डी रूप नाद बिन्दु वाहनी।
भजो श्री मात हिंगलाज निरमला निरंजनी।।४।।
गजेन्द्र चाल ताल कंठ झणंकार नूपरां।
बधार धार तेल ताल भैरवी भयंकरा।।
निसाज सात सात लोक दीप खण्ड डन्डनि।
भजो श्री मात हिंगलाज निरमला निरंजनी।।५।।
गहोर गात त्रैण नेत्र रक्त वस्त्र मन्डनी।

कला मयंक कीन कास चंड मुंड दण्डनी।
निशुम्भ शुम्भ रक्तबीज दैत्य दर्प गंजनी।
भजो श्री मात हिंगलाज निरमला निरंजनी।।६।।
कूमेर मेर इन्द्र ताप हंस रूप भूपनी।
किलोल शब्द कमल करत विमल भाव लोकनी।
मयाद सक्त चन्द्र कंत्व काम कुंज रंजनी।
भजो श्री मात हिंगलाज निरमला निरंजनी।।७।।
कूमेर इन्द्र शरण चरण चित आदी शंकनी।
ईकोल पंथ दिस्ट मात जनम मरण रक्षणी।
शरण 'राम' हिंगलाज काम काज वरदनी।
भजो श्री मात हिंगलाज निरमला निरंजनी।।८।।

जय हिंगोळ

(शंकरदान जेठी भाई देथा चारण 'राज्यकवि लीमड़ी', गुजरात)

एका नेका अज्ञेया, अजा अनंता नाम।
अगम अलक्षा ईश्वरी, पुनि पुनि करो प्रणाम।।
उपजावणी खपावणी, विश्वंभरी बडराय
जय हिंगोल जगपावनी, महादेवी महमाय।।
शंकरनी शंकर प्रिया, विघन हरणि वृषगामि।
तारण तरणी त्रयंबका, पातु पातु प्रणमामि।।
देवीधेनु सम तुम दया, मेरे सदन सदाय।
देवि अभिमत फल प्रदा, रहो हिंगोल जगराय।।
आशा पूरन आपवा, दयो अखूट अन्न धन्न।
अम्बा मां आशा पुरा, मम पे रहो प्रसन्न।।
छोरू कुछोरू होत पे, मात ना होत कुमात
जय हिंगोल जन पालिका, पातु पातु मां पात।।
यह स्तुति नित्य प्रति (कोई), कथै जो हेकण बार।
देवी देशे तेहने, इच्छित लाभ अपार।।
आरत कोई आरति समय, स्तुति पढ़ै सुप्यार।
ताको दुख झट मेटियै, देवि महा उदार।।

हिंगळा अघहारणी

(शंकरदान जेठी भाई देथा)

छन्द हरिगीतका

प्रणमामि मातु प्रेम मूरति, पारवती परमेश्वरी,
शांति क्षमामय कृपासागरि, सुखप्रदा सुरेश्वरी
सेवक सिसु रा दुरित दारिद, विघ्न दोष बिदारणी,
आदि सगती नमो अंबा, हिंगळा अघहारणी।।१।।
सब देवियां सिरछत्र, साता द्वीप री राजेश्वरी,
कोहला परबत कंदरा री, निवासी निखिलेस्वरी।
आनंद वदनी आसुतुष्टा, कृपा मंगल कारणी,
नकलंक रूपा नमो अंबा, हिंगळा अघहारणी।।२।।
देवां सिरोमणि महादेवी, सामरथ सरवोपरी,
स्तुति करत चारण सिद्ध सुरमुनि, शेष अज शंकर हरी।
परिताप हरणी प्रणत जन रा, सकळ कारज सारणी,
ओंकार रूपा नमो अंबा, हिंगळा अघहारणी।।३।।
जगधात्रि जागति ज्योति देवी, जोगमाया जोगणी,
असवार नाहर तणी अणडर, अहर खळ आरोगणी।
सोगणी समरथ सुरासुरथी, महिस मदमत मारणी,
नवलाख रूपा नमो अंबा, हिंगला अघहारणी।।४।।
गिरिजा ब्रह्मचारिणी गौरी, चंद्रघंटा स्कंदमा
कात्यायनी पुनि काळरात्रि, कूसमांडा सिद्धिदा
सरणागति निज दास सुर री, दैत्य दुसमन दारणी
नवरूप दुर्गा नमों अंबा, हिंगला अघहारणी।।५।।

वृषभासणी बाघासणी, गरूडासणी गजआसणी,
मयूरासणी महिषासणी, हंसासणी प्रेतासणी।
विध विध वपू आयुध वाहणी, धरम हेतूधारणी,
अदभूत रूपा नमो अंबा, हिंगळा अघहारणी।।६।।
ब्राह्मी महेश्वरी वैष्णवी, कोंमारी दानव द्पहा,
वाराहि अैंद्री, नारसिंघी चंडी चामुंडा महा।
सुर संत त्राता असुर हाता, अवनि भार उतारणी,
अकळोत रूपा नमो अंबा, हिंगळा अघहारणी।।७।।
निज दास शंकरदास रो, आरोग्य सुख आयुष प्रदा,
संपतिप्रदा सिद्धीप्रदा, सिव भक्ति दत सगते प्रदा।
सुमतिप्रदा शोभाप्रदा, कामना पूरण कारणी,
नारायणी मां नमो अंबा, हिंगळा अघहारणी।।८।।

छप्पय

जय हिंगोळ जगमातु, महालखमी महाकाळी,
महा सरसति महादेवि, विकट सुंदर वपुवाळी।
अेका अेका अजब, अनंता अजा कहाणी,
पृथ्वी स्वर्ग पताळ, प्रगट त्रिभुवन पूजाणी।
कर जोरि दास शंकर कहत, प्रसन होहु परमेश्वरी।
सुरतरू स्वभाववाली सुखद, जय हिंगोळ जगदीश्वरी।।
चारण तन प्रतिजन्म अयाचक वृति विशुद्ध मन,
काव्य युकती वकतव्य कुशल श्रोता चित रंजन।
दान शक्ति सम्पति अखूट शिव भगती अविच्छन,
सुचि सुन्दरी सन्तति सुशील जस मय मम जीवन।
कर जोर दास शंकर कहत निरूग शरीर नित रक्खियै।
यह सकल सुख जनमा जनम, देवि कृपा कर दीजियै।।

दोहा

चारण हम मातेश्वरी सब तेरी सन्तान।
दीज्यो सनमति संप, सुख जिय अरू विद्यादान।।

माता हिंगलाज रा हाथ माथै

(केसराजी खिड़िया)

मती गाज दालद अठै अमल माता तणो, भरम सातां तणो मकर भारो।
फैल रो भार मोटां तणी फेट सूं, थेट सूं हुजांसी मेट थारो।।१।।
मगज रा पराक्रम पढ़ै मत मकर सूं, चढ़ै मत डकर सूं डाण चुकड़ा।
चापड़ै खेत हिंगलाज रा चकर सूं, टकर सूं हुसी नव लाख टुकड़ा।।२।।
बसै मत चालराया तणां बेधसों, खसै मत खेद सों खता खासी।
ईश्वरी मारसी तनै भड़ उतन सूं, जरां जड़ उतन सूं परो जासी।।३।।
तोर सुचि हाथ पै जोर मोटा तणो, रोर सूं कही अपजोर खातै।
पात केहर तणे महर कर थापिया, मात हिंगलाज रा हाथ माथै।।४।।

हिंगलाज कीर्ति वर्णन

(ठा. अक्षयसिंह रतनू जिल्या चारणवास)

झमाल

देवसती विध्वंशि दक्ष जिग धारि कन्ध शिव धाया,
खरिया अंग पड़या जेता खिति सो 'शक्तिपीठ' सरसाया।।
पिण्ड रो मध्य भाग झड़ पड़ियो, ब्लोचिस्तान बसुन्धर,
माता 'हिंगलाज' हद मन्दिर, शक्तिपीठ अतिसुन्दर।।
सृष्टि सृजण पालण सहंरणी, श्रुति बरणी शिरताजा,
सात पहर राजै साताद्विप, हेक पहर हिंगलाजा।।
घण दुख म्हां दुरभाग इण घड़ी, बिछुड़ी पाक बिराजी,
दरसण पद परसण व्हां दुरलभ निहचै मात नराजी।।
संवत विक्रम अठम शताब्दी, सिन्ध-प्रांत बाशिन्दा,
चारण बठै गांव चालकना, साख साउवा हन्दा।।
मादा तणा तनय मामड़ रै, भवन वैभवां भरिया,
हिंगलाज प्रतिबिम्ब अम्बिका, 'आवड़जी' औतरिया।।
आवड़ रो उपनाम उब्बटा, उण बहना उपजाई,
आछी छाछी होल रेफली, गुली रू लांगी गाई।।

आई हिंगळाज आराधना

(गिरधरदान रतनू दासोड़ी)

आरत गज री ईसवर, खरो तज्यो खगराज।
चढ़जै ज्यूं ही चितारियां, हमै भीर हिंगळाज।।
सरणी है निज सेवगां, करणी अणहद काज।
धर पिछम में मात धिनं, हरणी दुख हिंगळाज।।

छंद रोमकंद

पिछमाण धराळिय, तैं प्रतपाळियं, थान तिहाळिय जेथ थपै।
सत्रु घट साळिय संत संभाळिय, देव दयाळिय रूप दिपै।।
पह पात उजाळिय तैं पख पाळिय, लम्ब हथाळियं कूण लखै।
कर काज सदा हिंगळाज किरपाळिय, राज तुंही मम लाज रखै।।
सुणती झट वाणिय तूं सुरराणिय, धीर धिराणिय नह धरती।
मन चिंत मिटाणिय आणिय आतुर काम अमाणिय तूं करती।।
मुर लोक मनाणिय वेद बखाणिय जाणिय जोगण रूप जिकै
कर काज सदा हिंगळाज किरपाळिय, राज तुही मम लाज रखै।।
भणकार पड़तांय सवार भवानिय लाड मही बुचकार लही।
अणधार आधार बणै इळ आयल, सार सुकार हजार सही।।
नित पार लगार तूं हार निवारण, सांभळ भार संसार सकै।
कर काज सदा हिंगळाज किरपाळिय, राज तुंही मम लाज रखै।।
तन ताप संताप निवारण तारण, कारण संत पुकार करै।
हित सारणं हेर नितां दुख हारण, ध्यान सुं चारण फेर धरै।।
थय सेवग थाट तुंही उर ठारण, जारण तूं जगजाळ जिके।
कर काजसदा हिंगळाज किरपाळिय, राज सदा मम लाज रखै।।
किरपाळ गुनो कर माफ कहूं किम, ओगण सीस पे बाळ इता।

प्रतपाळ रूखाळ संभाळण पाळण, जोगण टाळण दोख जिता।।
विरदाळ पंपाळ तूं गाळण वाहर, पाधर जाहर अख पखै।
कर काज सदा हिंगळाज किरपाळिय, राज सदा मम लाज रखै।।
समरत्थ तुंही अत्थ दे सुख दे सुण, कीरत कत्थन झूठ कही।
धर सत्य सकत्त तुंही सत धारणं, हत्थळ वीसांय बैठ हरी।।
मन चिंत मिटै चित्त शुद्ध रहे मुझ, ढाल तुंही हर हाल ठकै।
कर काग सदा हिंगळाज किरपाळिय, राज सदा मम लाज रखै।।
सरणै संत आय अथाय पड्या सत, साय तुंही अपणाय सती।
प्रगटी हरसाय किया गेह पावन, बेख वसु वरदाय बजी।।
सुरराय करन्नल आयल सैणल, लेस नहीं सुर भेद लखै।
कर काज सदा हिंगळाज किरपाळिय, राज सदा मम लाज रखै।।
उजवाळ कियो अवनी कुळ ईहग, पाळ दियो सत वाच पखो।
रखपाळ लियो महमाय रढाळियं, टाळ दियो दुख जाळ तिको।।
सरणागत राख लियो नित सेवग, दान गिरध्धर कीर्त दखै कर।
कर काज सदा हिंगळाज किरपाळिय, राज सदा मम लाज रखै।।

छप्पय

हुई रूप हिंगळाज, जाझ जग तारणं जरणी।
सदा केहरी साज, काज संतन रा करणी।
अरत सांभ आवाज, राज बाहरू रैणी।
नमो गरीब निवाज, लाज रखण पख लैणी।
सगतियां तणी सिरताज तूं, सदा सहायक सेवियां।
उर दास मेट सुख आपणी, कर दळ पासै केवियां।।
सायल सुणती शंकरी, धिन देती जनधीर।
तूं चढ़ती केहर तरां, भगवती कर भीर।।
सरणायां पर सामणी, हरदम राखै हाथ।
निज जन रा हिंगळाज नित, मेटै भव दुख मात।।

छंद रेणेकी

हरणी हर कष्ट समरियां हर दिन, करणी तूं हर काज करी।
सरणी नर रहै सबर रख सांपरत, खबर जेण री जबर खरी।
झरणी नित नेह बाळकां जरणी, वरणी जस इळ बीसहथी।
तरणी हिंगळाज तुंही भव तारण, भीर करै मा भगवती।। १।।
फसियो इळ पाप बहु विध फंदन, बंधन कितरा है जकै।
विसरयो इण दोख तिहाळो वंदन, भाले मंदन बुद्ध भळै।
इम आप तणो अवलंब ईसरी, जाप नेम री नह जुगती।
तरणी हिंगळाज तुंही भव तारण, भीर करै मा भगवती।। २।।
उर में नहीं अकल अंग रो अबळो, सबळ साथ में नह संगी।
कातर कळहीण कवल रो कूड़ो, सकळ जाणवै सरभंगी।
परहर तूं कुमत पलक मत पांतर, सरळ हुवै मन दे सुमती।
तरणी हिंगळाज तुंही भव तारण, भीर करै मा भगवती।। ३।।
जाणूं अब नाम एक जग जामण, क्यूं ढ़िग दूजां साद करूं।
ओगण सब माफ करै मम आई, धाई पख में ध्यान धरूं।
दिल दूजां तणी बात नह दाखूं, राखूं आस नह एक रती।
तरणी हिंगळाज तुंही भव तारण, भीर करै मा भगवती।। ४।।
जावै ओ माण आण पण जासी, बिखमी को आण बणी।
तूं केहर ताण साय झट करणी, धरणी पिछम हेक धणी।
थिर हिंगळाराय थेट सूं थारो, समथ सहारो है सगती।
तरणी हिंगळाज तुंही भव तारण, भीर करै मा भगवती।। ५।।
इतरी अरदास सांभळै अम्बा, रख जगतम्बा रखवाळो।
निरमै रैह दास तिहाळी निजरां, तास मेहजै इण ताळो।
अविचल उर राख अटळ मो अणथक भरै हिये में तो भगती।
तरणी हिंगळाज तुंही भव तारण, भीर करै मा भगवती।। ६।।
सांमळ सुरराय सताबी सायल, आयल बेगी आव अबै।
राखण तूं शरम होयनै राजी, सांपरत जाणै मरम सबै।
अणडग विसवास खास ही उरधर, कीरत गिरधर आ कत्थी।
तरणी हिंगळाज तुंही भव तारण, भीर करै तूं भगवती।। ७।।

छप्पय

मरम तणी लख मात, लम्ब हथ जेज न लाई।
बीसहथी विसवास, अटळ मन रहियो आई।
संभळ सताबी साद, साय तूं आद सचाळी।
करै दूसरो कवण, दास नित मदत दयाळी।
'गीधिये' तणी सारण गरज, बीसहथी झट बावड़ी।
तन रोग सोग मेटै तुरत, मन चंगो कर मावड़ी।

हिंगलाज माँ रा सोरठा

(हिम्मत सिंह उज्ज्वल, भारोड़ी)

सगती ब्रह्म स्वरूप, रच्यो चराचर जगत ने।
आप माय अरूरूप, हिंगलाजा पाले सकळ।।१।।
करण धरम रा काज, दुष्टां रा दल दलण ने।
प्रगटी बण हिंगलाज, जो लछमी जो सुरसती।।२।।
डिग नभ जातो डोल, थिर रहती कीकर धरा।
नह सजती हिंगोल, होकर हिंगळाजा सगत।।३।।
सजे सुखां रा साज, लाज रहे हर वखत में।
भय दुख जावे भाज, जो हिय में हिंगलाज व्है।।४।।
पिछमी सीमा पार, आप बिराज्या इस्वरी।
आर्य देश आधार, हे हिंगळाजा आप ही।।५।।
पुण्य तणी जो पाज, बन्धे सारू मानखां।
हिन्दुवां हित हिंगळाज, ज्यूं हज व्है इसलाम रै।।६।।
ज्यूं जगडू री जाज, तत्खिण करणी तार दी।
हे, मायड़ हिंगलाज, म्हारे पे राखो महर।।७।।
भगती हन्दो वित्त, भरै भाग्य भण्डार में।
कवि जो कहे कवित्त, हिरदे में हिंगळाज धर।।८।।
सब तप पूजा सार, 'नानी' मूरत निरखतां।
उजळो सुजस अपांर, 'ऊजळ' बाळक उच्चरै।।९।।

चिरजा श्री हिंगळाज मात री

(डॉ. राजेन्द्र बारहठ, खारी छोटी, जोधपुर)

हिंगळाजा सुंण मम माई, मां मेहर राखौ महमाई जी।।टेर।।
मां सुर नर नाम तोरे आगे, (मां) कर जोड़्या मुख ताकै जी।
मां सुरां तणा काज सार्या, (मां) सेवगां पर तूठी जी।।१।।
हिंगळाजा सुंण मम माई, मां मेहर राखौ महमाई जी।।टेर।।
मां चवदै भुवन तिहुं लोकां, मां आपरी फिरै पताका जी।
मां लांगड़ों हे अगवाणी, (मां) बावन भैरूं बळसाली जी।।२।।
हिंगळाजा सुंण मम माई, मां मेहर राखौ महमाई जी।।टेर।।
मां सातां दीप विराजौ, (मां) नवलख सगती समाजा जी।
जद जग पर आई विपत्ति, (मां) नवलख सझी सगत्ती जी।।३।।
हिंगळाजा सुंण मम माई, मां मेहर राखौ महमाई जी।।टेर।।
मां महिषासुर नैं मारयौ, आसुरी दळ खपायौ जी।
मां इन्द्र नैं सुरग दिरायौ, (मां) देवां रौ मान बचायौ जी।।४।।
हिंगळाजा सुंण मम माई, मां मेहर राखौ महमाई जी।।टेर।।
मां जग में जै जै थांरी, मां आप ही हौ सुररांणी जी।
म्हारी राजा थैं महाराजा, (मां) सेवगां रै रख सुख साजा जी।।५।।
हिंगळाजा सुंण मम माई, मां मेहर राखौ महमाई जी।।टेर।।
थांरौ बिरद दयाल है माई, (मां) सब काज सारौ सुरराई जी।
थांरा नाम सूं (मां) दुख भागै, म्हांनै सूझै नहीं कुछ आगै जी।।६।।
हिंगळाजा सुंण मम माई, मां मेहर राखौ महमाई जी।।टेर।।
मां कीरत थांरी गाई, (मां) बारठ राजु कहाई जी।
थांरा छोरू हां माई, म्हांरी पीढ्यां पीढ्यां गाई जी।।७।।
हिंगळाजा सुंण मम माई, मां मेहर राखौ महमाई जी।।टेर।।

आरती श्री हिंगळाज माँ की

(श्री बलबीर सिंह हापावत, श्री करणी कोट कृत)

ॐ जय हिंगळाज मया, अम्बै जय हिंगलाज मया।। टेर।।
आद सनातन अम्बे, आप रूप उमया।। १।।
अखिल जगत आराधिनी, वेद श्रुति बरणी। अम्बे...
विरद कृपा वरदायिनि, त्रिभुवन उद्धरणी।। २।।
रामत बाल रमे ज्युँहि, सृष्टि सृजन करणी। अम्बे...
पोखे सहज उपावे, सह पुनि संहरणी।। ३।।
अचिन्त्य रुप अविनाशी, विविध रूप वरणी। अम्बे...
आतम रूप अमापम्, व्यापक सह धरणी।। ४।।
दक्ष सुता तुँहि वामा, शंकर पटराणी। अम्बे...
पूजित बावन पीठै, जग महिमा जाणी।। ५।।
भवा शिवा भवप्रीता, जननी हे रम्बे। अम्बे...
शैलसुता महागौरी, आप नाम अम्बे।। ६।।
मात तुँहि महाकाली, दानव दल दरणी। अम्बे...
अवनी भार उतारण, विकट रूप धरणी।। ७।।
शक्तिपीठ सुशौभिनि, भीम नैह भैवी। अम्बे...
आद प्रथम हिंगळाजा, सकल विश्व सेवी।। ८।।
सिंह सवार सुशोभित, सबविध सुखकारी। अम्बे...
प्रणत शरण प्रतिपाळो, धणियप उर धारी।। ९।।
साता दीप सदा ही, रात दिवस राजे। अम्बे...
उभय बीर बिहुँ आगे, सेवा में साजे।। १०।।
उजड़ धरा में अनुपम, आप धाम आई। अम्बे...
पाट सरूपे पूजित, गर्भ गुफा जाही।। ११।।

सकल विश्व सुखदायक, जोत रूप जागे। अम्बे...
पावन धाम परसता, भव भव अघ भागे।। १२।।
प्रणत शरण जन पातक, हरसित आप हरे। अम्बे...
कर निरदोष पानिध, दूजो जनम करे।। १३।।
किंकर निज कापड़ियो, जाणत जग मांही। अम्बे...
भक्त सहज भव तारण, बड़पण वरदाई।। १४।।
राम तणी हुय राजी, हत्या ब्रह्म हरे। अम्बे...
चन्द्र दिवाकर निज कर, अंकित राम करे।। १५।।
निज रो वचन निभावत, दक्ष सदन दिन्हो। अम्बे...
बार बार कुळ बीदग, अवतर सत किन्हो।। १६।।
नवलख नभ जित उडगण, उत अवतार धरे। अम्बे...
हरसित चित कुळ हैतव, सहज सनात करे।। १७।।
शरणागत हित सरणी, टैरत दुख टरणीं। अम्बे...
किंकर हेत पानिध, पा सहज करणी।। १८।।
विरद वचन वश वरदा, प्रणतहि प्रतिपाळ। अम्बे...
पुनि पुनि प्रगट पधारत, कळुषित कलिकाले।। १९।।
प्रणत शरण हित पूरण, धणियप उर धारे। अम्बे...
नयनन नैह निहारत, हरसित अघ हारे।। २०।।
विनय तनय 'बलबीर' रि, आप सुणो आई। अम्बे...
रात दिवस माँ राजो, हिरदे हरसाई।। २१।।
ऊँ जय हिंगलाज मया अम्बै, जय हिंगलाज मया। अम्बे...
आद सनातन अम्बे, आप रूप उमया।। २२।।

चरजा श्री हिंगळाज मात की

(जयसिंह सिंढ़ायच, मण्डा, राजसमन्द)

जयति जय मात हिंगळाजा। सगत नवलाख सिरताजा।। टेर।।
सनातन आद सुरराया। प्रथम घर दक्ष प्रगटाया।।
सती निज नाम धरवाया। पति शिव संग परणाया।। १।।
निमन्त्रण दक्ष नहीं दीनो। कन्त अपमान जद कीनो।।
वचन दे गण विदा कीनो। यज्ञ में होम तन दीनो।। २।।
कोप कर भीम शिव भारी। भैजियो वीरभद्र लारी।।
काट सिर दक्ष हठधारी। नष्ट किय यज्ञ उणबारी।। ३।।
भयंकर रूप धर भोळे। दग्ध तन सती ले डोले।।
प्रलय लख चख हरि खोले। सती अंग चक्र सुं ढ़ोळ।। ४।।
चार खण्ड पीठ चव बाजे। मांग सिर हिंगळू साजे।।
धरे इम नाम हिंगळजे। प्रथम यह पीठ जग दाजे।। ५।।
विरद जस राज विख्याता। तुंही भव तारणी त्राता।।
सुधारणि जन्म जग माता। बिराजे दीप तूँ साता।। ६।।
ईहगा वंश अवतारे। रूप नवलाख बड धारे।।
विमल जस विरद विस्तारे। भार अघ भौम रो हारे।। ७।।
आपरी शरण जो आवे। विकट सब पाप बिनसावे।।
पुनित नव जन्म वो पावे। कापड़ियो दास कहळावे।। ८।।
बडो बड बीस भुजवारी। शरणगत दास 'जय' थारी।।
कृपा उर धार अणपारी। लीजिये लौवड़ी लारी।। ९।।

2. गुजराती साहित्य में हिंगलाज माता

आई श्री हिंगळाज माता जी ना छंद

(अज्ञात)

दोहा

कोटि कोटि प्रकासं, वेद अनंत ब्रह्मंड।
कोअ मूं थान न सूजही जण न रमी चामंड।। १।।
जगत जनेता जोगणी, जग तारण जगरध।
तुं सेवंतां संपजे, नव नेता नव नध।। २।।
आंणे मद पीआला, कड़े स कोमणी माला।
वाहण हंस वडारण, बाला न लहेअ चन्द्राअण।। ३।।
हर हरणी धर धरणी, ओधरणी त्र भूवन त्रंस।
सेवग जण सधारणी, वड़ारणी दईत वंस।। ४।।

।। छंदः नाराच।।

वडारणी दईत वंस, सेवगां साधारणी।
नवारणी वधन नेक, त्रै भूवण तारणी।।
उतारणी अघोर कंड, अधराअे अधला।
करंत देव हिंगलाज, कलीआंण मंगला।। १।।
रने वलास मंड रास, रोल टोल रमअे
सने सोहास सप्रहास, आप रूप अमअे।।।
हो अंत हास भेदभास, वारंवार वमला।
करंत देव हिंगलाज, कलीआंण मंगला।। २।।
रण झणे छणां छणां, वलोक छंद वाजणं।

असंभ देव आगली, पडंत पाअ पोषणं।।
प्रचंड गुख प्रामणंत, त्रेवणं तत्र वला।
करंत देव हिंगलाज, कलीआंण मंगला।।३।।
मोगत पंक के तमाल, कंठे माल कोमला
झलो मला झणा-झणा, करंत कांन कुंडला।।
सोले-कला संपूरण ज, मले मअंक त्रमला।
करंत देव हिंगलाज, कलीआंण मंगला।।४।।
छपंन कोटी सामला, करंत रूप कंठला।
प्रथी प्रमाण प्रधला, धनंत नीर धंमला।।
वला वला स वीजला, समा झणी मेघं झलां।
करंत देव हिंगलाज, कलीआंण मंगला।।५।।
अढ़ार भार अधकार, आगली उखेवणं।
वपे वचार वारंवार, चंदण सो चरचंण।।
सोहे संगार सवे सार, हार हीर हींडला।
करंत देव हिंगलाज, कलीआंण मंगला।।६।।
जगेसरा जगेसरा, मांनव रा रखेसरा।
सरां नरांअ असरां, आअते धनंतरा।।
दसे दसा दगंतरा दंनकरा दो आगलां।
करंत देव हिंगलाज, कलीआंण मंगला।।७।।

।। कवित्त।।

वमल रूप जोगण वकटी, वमल सरस तव मोही,
वमल मोड नाखत्र, वमल कुंडल कन सोही।
वमल हार सणगार, खेले खोह वमल ज खेचर,
वमल वीर बेताल, वमल आअुध वीसेकर।
वमल सण बेठी मेण व्रन वमल रूप वद आधरी,
वमल दण दैत वघोसणी, हिंगलाज माहेसरी।

आई श्री हिंगलाज ना दुहा

(गढ़वी सरदार संघ वरसड़ा)

कवि जदां गाजे कहां, आई तूंहारी आण।
जटा जूबंते जोगणी, प्रणीअ एह प्रमाण।। १।।
पुहरे ओट राखीए हाथ ग्रहे हिंगोल।
वगते देखाडुं वीसहथ, कवि सहे करे किलोल।। २।।
जूऊ वचारी जोगणी, वीयां तणी वगती।
आंच उआरे आपरी, सरणे राखी सकती।। ३।।
ताप जगते ताहरे, छोरू कीजे छांह।
आई ओलखे आपरां बाई दीजे बांह।। ४।।
मेहे करनी मुहुमाएआ, ईसवरी तुं आइ।
वार करंतल वीसहथी, सेवगुआरे साई।। ५।।
मुझ करे मुहमाएआ, दीधा सकजा दीह।
हवे पन हुंदुदसम लोपेन नको लीह।। ७।।
देवी कविआं दीजीए, गुंजता गजराज।
दुध पुत्र घरे अति घणा, वनि बांधे वाज।। ८।।
ईजते आदर इहणां, हे देअण हिंगलाज।
वखते वधारण वीसहथी, कविआं सारण काज।। १०।।

।। सरदार सिंघजी रा कहेल।। लंखत रतनु नागदान।।

आई श्री हिंगलाज नी स्तुति

(खोड़ीदास)

कवित्त

जे जे गणपत देव सरव जगत करत सेव,
शोभत सींह नूर, सूरत जलमलत सुर;
पुरत रध बध प्रकाश, बध रध धन होत बास;
नव नध घर पुत्र नार, धेनु धीमंत धार;
तरंग दोनु धेन धमंल तास, मेखी दूजंत बारे मास
जे गणेश वीघन हरन लघुवेस समरत हिंगलाज ।। १ ।।

छंद

फेकट मटत टलत फंद, रटत सकत आप रूप
धांन धरत अबधुत, परसत अंजनी कु पुत।
सीता रघुनाथ सोत, जती लखण वद जोत
आवत ओ घट घाट, परसत देवी कु पाट।। १।।
जोगेसर जपत. जाप, टलत जम कु प्रताप
जे जे हिंगलाज देव, सुरी नर मुनी करत सेव।
दरसत अवतार दस उनमे देवी कु अंस
हरणाकंसअ मारे हाथ, सोपण देवी सघार।। २।।
सेस रा भार संधार, मधु कैटभ मारी ए छ मार
मईसर ताड़का मार, कंकणी कु मार डार।
हनुमान की लार हाल लंका प्रजाल जाल
रावण कु काट कूट, लंका गढ़ लाट लूंट।। ३।।

भैसासर भांग भूक, दाड़मो संधार दूत
चक्र वो दाड़मो संधार, बगास रकु ठीड मार।
ले तरसुल खड़ग लीध केक असुर खपर कीध
भीली को रूप होअ, सवि पण भुलाऊ सोअ।।४।।
गवरी अवतार गंग, सवजी की जटा संघ
कांकण कीया सुर काज, लोबड़ी की राखी लाज।
कुयला पर नाल करण, हिंगलाज बीघन हरन
बीघन हरत बाट घाट, पलत वचन थाट पाट।।५।।
कापड़ी सक्रोड़ क्रोड़, जपत हाथ जोड़ी जोड़ी
नरखत मखे नुर नुर, चन्द्र जलल भलल सुर।
झणंकत कांबी झकोल, ठंणकत पाअ तंवर ठोर
मेहकत गर कोअल मोर, मनकत सोर मोरा मोर।।६।।
झणंकत कांकन झकीर, हलंकत गले कनक हार
बींदी जेम चण्ड बीज बादल चमकंत बीज।
टीली जलमलत तांम, कनक वदन हाम काज
परसत हीर प्रवाल मोती नंग सेर लंक माल।।७।।
पांनी की जगमगाट, घड़त कनक जड़त घाट
रूप देवी रूप रूप, ढलत चंमर चड़त धूप।
सजत हे देवी संगार, हाम काम कनक हार
डणकत डमरू डाक हक बक कांध बीर हाक।।८।।
मद पीअंती तांते छाक, अचरज भैरव एराक
रचेउ हिंगोल रास, करत कसल सरल काज।
कपट लपट छपट क्रोध, वकट सकटम मटत व्रोध
देव की भजन करे देव, सरव काज अरज सेव।।९।।
नत ले हिंगोल नाम, धरत सरव चार धाम
धरत चंदण अग्रु धूप, कटत पाप चन्द्रकूप।
भाखत खोड़ीदास भेद, ब्रमा का चार वेद
दाखत खोड़ीदास दास, अेती सुणीअे अरदास।।१०।।

कवित्त

एती सुणीए अरदास, राज कोहला पर रांणी,
एती सुणीए अरदास, कर प्रसध ब्रेहमांणी।
एती सुणीए अरदास, आस ए पुरण आई,
एती सुणीए अरदास, मुझ उपर महंमाई।
सेवगां तणी अरज सुंणे, सदा हूँ तारे सरण,
कवराज अरज खोड़ीदास करे, हे हिंगलाज दुख दालद हरण ।। १ ।।

श्री माताजी हिंगलाज स्तुति

(श्री रामचंद्र मोड)

छंद बिअख्खरी

अकल पंथ कपारो अक्कल, कटिये खीर मोथ कुंड कज्जल,
कोहला परबत राय सकोमल, आदि अनादि हींगोल अणंकल ।। १ ।।

दोहा

कणिर कुंड अघोर कुंड, चन्द्रकूप कुंड चाय,
सूरज कुंड जणिथे से अले, तूं थप्पे जगराय ।। २ ।।
कमला गोला पाट कहे, अलिल कुंड अणताग,
सकती ! तूं आवे शरण, भलां तेआंरा भाग ।। ३ ।।
हिंगोला ! तोरी शरण, सांचे भाव ग्रहाय,
(तो) लख चोरासी खाणरो, फेरो मिटे तिकांय ।। ४ ।।

छंद बिअख्खरी

हिंगोला शुध आपणहारी-हाड़ा दाणव भंजणहारी,
भणे 'रामचन्द्र' मात भुजाली-कारण रूप नमो महाकाली ।। ५ ।।

दोहा

मात हिंगोले मेलीया, वीर भूत विकराल,
हाड़ा माथे हल्लेआ, करे कोप कांधाल ।। ६ ।।

छंद रूप मुकुंद

करि कोप कंधालंअ वीरवदालंअ, भूत कढ़ालंअ, साव भले,
भेभीत भुजालंअ, रोष रढ़ालंअ, झूझ बराबंअ, खाग झले।
मली मतवालंअ, पेट पटालंअ, कालंअ, पालंअ, पंथ क्रमे,
तरशूल झले जलबोल त्रिकालिय, रूप असेय हींगोल रमे, जिय रूप असेय हींगोल रमे ।। १ ।।
हाडे तणी ताणंअ, सैन सजाणं अ, दैत जुआणं अ, मेलि दलं,
रणि जंग मचाणंअ, अह जमराणंअ, आग अवाणंअ, मांय खलं,
खड़े खुरसांणअ, धज्ज धजाणंअ, साहि कबाणंअ एणी समे...तरशूल झले ।। २ ।।
हाडा शिर हल्लांय कीधह मल्लायं, वीर वहल्लांय हाक वजे,
रणि देअण टल्लांय, रोष रीजल्लांय, सार नवल्लांय भीछ सजे,
जग राखण गल्लांय, साव सभल्लांय, दूत दजलांय थाट दमे...तरशूल झले ।। ३ ।।
बहुरूप बरालिय बूढ़ीय बालिय, काल कढ़ालिय रूप कले,
हिंगोल हठालिय, मात वडालिय खेतल भालिय, वीर खले,
वढ़ते वकरालिय, झूझ बरालिय, नेक निहालिय, देव नमे...तरशूल झले ।। ४ ।।
कहं शेष कुरम्मांय, थे कम कम्मायं, धम्मांय धम्मांय, पीठ ध्रजे,
हय घाट हसम्मांय, होय हकम्मांय, सम्माय सम्मांय साव सजे,
आया असरम्मांय, वीर वसम्मांय, सार दगम्मांय तेण समे...तरशूल झले ।। ५ ।।
पल सूर पछट्ठांय, सार समट्टांय, भांजि भ्रगट्टांय, दूत भड़े,
झूबे दोय झट्टांय, थे त्रमझट्टांय, वीर वीकट्टांय, मंस वड़े,
रंग रंग रमट्टांय, हे अणमट्टांय, भूत गरट्टांय, वीर भमे...तरशूल झले ।। ६ ।।
हलबोल हीलोलाय, माचे हबोलाय, लोलाय मांस रगत्त लिए,
दईतां भड़ टोलाय, थे चकडोलाय, दोलाय मार प्रहार दिये,
करि आप कलोलाय, साथ सवोलाय, भोलाय शंकर साथ भमे...तरशूल झले ।।७।।
चड़े हाड़ोय तारांय, गाजे नगारांय, दूत एआरांय, ओप दलां,
वहे लार कतारांय, थे असवारांय, जाणि अपारांय दध्दजलां,
कड भीड़ कटारांय, खाग दोधारांय, तारांय सारांय होय तमे...तरशूल झले ।। ८ ।।
असराण खंधाराय, वीर एरांराय, लोएं तोआरांय होय लड़े,
वाहे खगधारांय, वेर वडारांय, पीठ पधारां होय पड़े,
...जोगणी लारांय, मंस जयेमे...तरशूल झले ।। ९ ।।
असराण कटक्किय, वीज अटक्किय, मारे झटक्किय, सोर मतु,
करमाल बटक्किय वीज कटक्किय, रेण रटक्किय पीठ रतुं,

तरशूल खटक्किय, शीष त्रटक्किय, केक लटक्किय दूतं क्रमे...तरशूल झले ।। १० ।।
क्रोधे भरि कालिय, मा मछरालिय, देवी दबाड़य, दैत दलां,
भड़ साव भमाड़िय, धाव घुमाड़िय, खेल मचाड़िय हाथी खलां,
प्रसणाण पछाड़िय, नर्क पुंचाड़िय, नेक नमाड़िय देव नमे...तरशूल झले ।। ११ ।।
पाड़े भड़ हाडाय, जाण कि पाडाय, दाणव जाडाय थाट दळे
खिती पीठह नाडाय पूरेय खाडाय गाडां गमोगम मंस गळे,
लेवे सर जाडाय, लीलंग लाडाय, शंकर डाडाय, तेण समे...तरशूल झले ।। १२ ।।
माता महामाईय, जुद्ध मचाईय, आंण फेराईय, मांय अळा,
मेंछा, दल ढ़ाईय, हार मनाईय, खाग सु वाइय, शीस खळां,
भर भूचर ध्राईय, भाईय भाईय, पेख वड़ाईय, मोह प्रमे...तरशूल झले ।। १३ ।।

छप्पय

हे माता हिंगोल, खीर कुंड कज्जल वाली,
हे माता हिंगोल, मात आपें महाकाली।
हे माता हिंगोल, दहण भड़ दैत दाढ़ाली,
हे माता हिंगोल, रिअण कुंहला रखवाली।
राड़ि में अडरणी उ अगे, भालि तके सामु भणी
रिध्द सिध्द दियण कह रामचन्द हिंगलाज बालोचणी ।।

श्री हिंगलाज चालीसा

(बलवंत द्वारा रचित)

दोहरो

मा हर्षदना नामथी दिनचर्या आरंभे
अेनां सधलां काम उकले रंगे चंगे
हिंगलाजमानी हाक त्रणे भुवन डोलावे
रोग द्रोग के दुश्मनों कदी न सामे आवे।

चौपाई

विश्वेश्वरी हिंगलाज भवानी, कृपा करो मैया सेवक जानी।
अष्ट हाथ में आयुध साजे, कोयले डुंगर माता बिराजे।

देव सुर मुनि नर दरशन तरसे, नेह सदा नयनोथी बरसे।
जय जय हर्षद आद्यभवानी, परा-अपरा शक्ति कल्याणी।
शंख त्रिशूल-व-खप्पर सजे, धनुष खड़ग औ कमल बिराजे।
आद्य शक्ति मकराणनी देवी, सहायकरी अनिरूद्धनी केवी।
पर्वत तरणा ओथे छुपाव्यो, यादवकुल अनिरूद्ध बचाव्यो।
वीर विक्रमनी भाग्य विधाता, परशुराम सम सेवक माता।
अेक पलनोये विलंब न करियो, धा परशनो मातृदेह पे धरियो।
पिता आज्ञा थकी जननी संहारी, तव भक्ति थकी मात उगारी।
देवो ने विपत्ति पड़ी भारी, त्रिदेवे तब मात संभारी।
त्रासथी त्रण त्रण लोक उगार्या, वायुरूय थई राक्षस मार्या।
हिंगलासुर असुर हठ लीधी, ब्रह्माजीनी तपश्चर्या कीधी।
सहस्र वरस सुधी तप जप कीधां, ब्रह्मा थकी घणां वरदान लीधां।
अस्त्र-शस्त्र कापी नव शकतां, अगन के जल व्यापी न शकतां।
बाहुबल कोई काम न आवे, सबल योद्धा पण दूर भगावे।
त्रिशूल तलवार बाण रहे छेटा, सौ हथियारो पड़तां हेठां।
रकत पड़े त्यां हिंगुल प्रगटे, पापी ने तो संहारवो ज घटे।
ब्राह्मण कापे, गाय संहारे, राजा रैयत सौने मारे।
पाताले जई नागने पीड़े, कोई न पहोंचे अेनी भीड़े।
जग मा हाहाकार मचावे, देवता ऋषिओने बंदी बनावे।
नदीओ रक्तनी वहेवा लागी, त्राहिमाम् त्राहिमाम् कहेवा लागी।
देव गंधर्व सुर मुनि मूंजावे, कोईनी कंई कोरी नव कावे।
तव हिंगलाज मानी स्तुति कीधी, ओथ त्रिदेवे मातनी लीधी।
तेज रुप धरी दरशन आप्यां, त्रणे लोक तणां दुःखड़ा काप्यां।
फिकर करो नहि देव के मानव, मारा हाथथी मरशे दानव।
आज पछी नहि अे संतापे, हिंगलासुर मरशे निज पापे।
जग मोहिनी रूप धर्यु तब, हिंगलासुर दानव दीठो अब।
हिंगलासुर ने स्वरूप बताव्युं, कामीने नीज भान भुलाव्युं।
पवनरूपे कायामां पेठा, देवी मा हिंगलाजनी शक्ति।
नामस्मरण जप पूजन विधि, ते पावै निश्चे समृद्धि।
तकलीफ़ कोई पास न आवै, मां हिंगलाज नुं नाम सुणावै।
धान्य धरा धन संपत्ति मलशे, भवभव फेरां दुखड़ां टलशे।

बांजणी ने कर बाल जुलावे, विखूटां जीवन तरत मिलावे।
रंक ने पलणां राय करी दे, धन धान्य थी भंडार भरी दे।
जे धरमां हो हिंगलाजनुं पूजन, दूर रहे त्यां दरिद्रता जोजन।
हिंगलाज चालीसा 'बलवंत' गावे, अे घरमां संताप न आवे।

दोहरो

स्मरण थकी हिंगलाजनां आदरशे जे काम।
अेने जश मलशे घणो जगमां थाशे नाम।
पूजन थी हिंगलाजनां सर्वे संकट टलशे।
काम दाम ने ठाम सहित धन संपति वर मलशे।

मोमीन को जैसे मक्का - हिन्दुन के हींगलाज

(आपाभाई कालाभाई गढ़वी, बलादा, गुजरात)

दोहा

चोरासी चकवा तणी, नेह नवे नव लाख।
आज धरा पर उतरियुं, रमवा कारण रास।।
टेक बासी कोहील तनय, युग त्रेता तुहीं एक।
क्षत्री कुल रक्षन कियो, भई हींगोल तव भेख।।
परसत सह पातक मिटे, सह तिरथ सिरताज़।
मोमीन को जैसे मक्का, हिन्दुन के हींगलाज।।

छंद-चर्चरी

गौर गौर विमल गात्र, सौम्य रूप अति सुहात
प्रशन प्रशन ज्युं प्रभात, रंग अंग राचे
शरद चंद्र मुख सुहास, कमल नयन दल कहात
ललित रेख त्रय ललाट, भ्रकुटी दिव्य भासे
सावन घन घटा छात, कुचिन्त बेनी कलाप
स्रवन कुंडल सुहात, तड़ित नृत कहावे
जय जय हिंगोल मात, रमत रास नवल रात
शक्ति साथ नवेलाख, गीत हुल्लास गावे।

ठहेलत पद ठमक ठमक, घुंघर प्रिय घमक घमक
    गीत मधु सुराध गमत, नाद ब्रह्म साधे
राग रंग रमत रमत, ध्वनि प्रचंड धमक धमक
    चल हल प्रति चमक चमक, अल्लख सूर आराधे
जगमग पट दमक जमक, तेज पूंज तमक तमक
    डम्मर डाक डमक डमक, थनगनाट थावे। **जय जय ...**

फहेलत रूत शरद फंद, प्रिय लहर लहर प्रबंध
    चंद्रभा प्रभा स्वछंद, सुप्रसंग संवारे
विलसीत सह व्रंद व्रंद, कित निधान कन्द
    अंग अंग अति उमंग, भान शान हारे
पुलकित तन स्पंद स्पंद, मुख सुहास मंद मंद
    रमत रास रंग रंग, उर तरंग आवे। **जय जय ...**

घरहर पट घेर घेर, थै तत गत ठेर ठेर
    लरखराट लेर लेर, सह सुमेळ सरचे
फरगट घट फेर फेर, ढल हल अल ढेर ढेर
    रंग माट रेर रेर, रूप सवेर वरषे
प्रजवलित द्युति पेर पेर, दिपमाल ठेरठेर
    हरसत जन हेर हेर, स्वर्ग भू सुहावे। **जय जय ...**

धिधिकत नूत बजत ढोल, तुहीं तुहीं म्रदंग बोल
    फहिरत जुत गोल गोल, तन हिल्लोळ गावे
सज स्रिंगार सोल सोल, नवल रूप नोर नोर
मुद अमोल मोल मोल, अंग भंग लगत और
    नटखट घट सुघट नोर, ओळघोळ थावे। **जय जय ...**

गहिरत नभ गान मान, त्रघन मगन सुहन तान
    शब्द सुर ध्वानि प्रमान, मोहिनी सु जागे
मनुज दनुज बिबुध मान, करत गान अति बखान
    धरि ऋषी मुनींद ध्यान, तुहीं तुहीं लागे

जयति जयति सह जहान, माँ हींगोल तुं महान
    नैति नैति श्रृति निदान, पार को न पावे। **जय जय ...**

धम धम भू नभ धमंक, रमजम घुंघर रमंक
    डम डम डम्मरू डमंक, शैल शिव ही डोले
लरखर लैलिह लखीत, दिग्ग कोरंभ थंभ डगीत
    नाग दनुज मनुज नमत, हर हर बोले
कौतुक नृत विविध करत, गति प्रमान गमत गमत
    ठमक डमक रमक जमक, थै तत थावे। **जय जय ...**

दीन्न दु:खित के दयाल, भक्त वत्सलं भूपाल
    मेघ माल सम विशाल, अति पाल जानी
लाल लाल अति कराल, प्रलय जाल ज्युं प्रजाल
    आदि शक्ति त्युं उदार, माँ उमा प्रमानी
कवि आप कहत आर्त, भ्रात तात तुहींय मात
    पूज्य देवी हींगुलाज, शरण में शमावे
जय जय हिंगोल मात, रमत रास नवल रात
    शक्ति साथ नवेलाख, गीत हुल्लास गावे।

सन्दर्भ स्त्रोत

इस पुस्तक के लेखन के दौरान जिन संदर्भों-स्त्रोतों का उपयोग किया गया है, उनके लेखकों, संपादकों एवं प्रकाशकों के प्रति आभार।

1. तंत्रचूड़ामणि
2. श्रीमद् देवी भागवत महापुराण
3. ब्रह्मवैवर्तपुराण
4. 'देवियांण' : भक्त शिरोमणि ईसरदास बारहठ
5. शाह लतीफ का रसाला
6. कामिल दरवेश : शाह लतीफ : डॉ. टी.आर. शंगारी
7. शाह जो रसालो : टीकाकार प्रो. कल्याण बूलचन्द आडवाणी
8. शरण हिंगलाज : डॉ. करनी सिंह रतनू
9. आदि शक्ति हिंगलाज की ऐतिहासिक यात्रा : ठॉ. नाहर सिंह जसोल
10. सोपान : डॉ. श्री अम्बादान रोहड़िया सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट
11. हिंगलाज माता तीर्थ यात्रा के चमत्कारित संस्मरण : श्री कानदान बारहठ
12. विनम्र प्रयास : ओंकार सिंह लखावत
13. राजस्थानी शक्ति काव्य : श्री भंवर सिंह सामौर
14. उदयपुर वाटी : अतीत से वर्तमान यात्रा-डॉ. गोरधन सिंह शेखावत/ डॉ. बाघ सिंह नेवरी
15. धरती माता : इश्तियाक अंसारी : कराची
16. कल्याण शक्ति उपासना अंक, पोद्दार हनुमान प्रसाद (सं.) गीता प्रेस, गोरखपुर

17. लोक पूज्य देवियां, भंवर सिंह, सामोर, चारण साहित्य शोध संस्थान, अजमेर
18. सेवा सुमन, बारैठ, शक्ति सिंह, डॉ. गुलाब सिंह, करनी पैलेस, जयपुर
19. कल्याण देवीपुराण (महाभागवत) शक्तिपीठांक, खेमका, राधेश्याम (सं.) गीताप्रेस गोरखपुर
20. शक्ति सुयश : सं. कविया, शार्दूलसिंह, डॉ. चन्द्रमौलि सिंह
21. शक्तिपीठ हिंगलाज की तीर्थयात्रा, तरुणविजय, पांचजन्य
22. राजपूत एकता, नाहर सिंह, जसोल, हिंगलाज यात्रा वृत्तांत
23. आग्नेय तीर्थ हिंगलाज : शास्त्री, देवदत्त, बंबई
24. जय आवड़ आशापुरा : ओंकार सिंह लखावत
25. ब्रह्म रसायनम् : पं. श्रीराम दवे, जोधपुर
26. रासमाला : अलेक्जैण्डर फोर्ब्स अनुवाद श्री गोपीनाथ बहुरा
27. 'पर्ल्स ऑफ वेदाज' : कन्हैयालाल तलरेजा
28. 'द डिस्कवरी ऑफ इंडिया' : पंडित जवाहरलाल नेहरू
29. अखण्ड भारत : डॉ. सदानन्द दामोदर सप्रे
30. BHAGWATI SHRI KARNIJI MAHARAJ : Kr. Kailas Das S. Ujwal I.A.S.
31. मातृदर्शन (पू. आई मां श्री सोनल आई मां जीवन इतिहास संहिता) श्री पिंगल परबत जी पायक
32. डॉन दैनिक समाचार पत्र कराची : श्री अली अहमद ब्रोही कराची का आलेख
33. श्रीवामन महापुराणम्
34. शक्ति तत्त्व : विविध आयाम
35. दुर्गा सप्तशती
36. अर्ली इण्डस सिविलाइजेशन, मैके
37. ललिता कल्ट, दीक्षितार
38. हिन्दुज्म एण्ड बुद्धिज्म, इलियट
39. वाचस्पत्यम् : तर्कवाचस्पति श्री तारानाथ भट्टाचार्येण
40. The Encyclopedia Indica : नगेन्द्रनाथ बसु
41. कल्याण : गीता प्रेस, गोरखपुर

42. शक्तिपीठ स्तोत्रम : आदि जगतगुरु शंकराचार्य

43. अक्षय भारत दर्शन : ठॉ. अक्षय सिंह रतनू

44. श्री हिंगुला पुराण : भाषान्तर कर्त्ता छोटालाल, चंद्र शंकर शास्त्री

45. पुरातत्व के रोमांस : डॉ. भगवतशरण उपाध्याय

46. GLORIES OF MARWAR & GLORIES OF RATHORE: पं. विश्वेश्वरनाथ रैऊ

47. गोरखनाथ और उनका युग : डॉ. रांगेय राघव

48. करनी चरित्र... : ठा. किशोर सिंह वार्हस्पत

49. करणी कथामृत : श्री सार्दुल सिंह कविया

50. विश्वव्यापी हिन्दू संस्कृति : सम्पादक आनन्द मिश्र अभय, विजय कुमार, रामनारायण त्रिपाठी

51. दक्षिण-पूर्व एशिया में जीवन्त है भारतीय संस्कृति (आलेख) : डॉ. प्रभुदयाल अग्निहोत्री

52. कितनी उत्कृष्ट थी मय-संस्कृति (आलेख) : अवधकिशोर

53. मिस्र एवं सुमेर में हिन्दू-संस्कृति (आलेख) : (स्व.) पद्मभूषण पं. सूर्यनारायण व्यास

54. पश्चिम एशिया में व्यापक थी हिन्दू संस्कृति (आलेख) : शुकदेव व्यास

55. भारतीय राजा थे अरब संस्कृति के जन्मदाता (आलेख) : वीरेन्द्रनाथ भार्गव

56. भारत और जापान के सांस्कृतिक संबंध (आलेख) : डॉ. लोकेश चन्द्र

57. हमारी सांस्कृतिक विचारधारा के मूल स्रोत (आलेख) : सुरेश सोनी

58. धर्म संस्कृति और राज्य : गुरुदत्त

59. चारण-चरजाएं और उनका अध्ययन : गुलाबदान

60. वेद और पुराणों में वर्णित महाशक्तियाँ और उनके 51 शक्तिपीठ : गोपालजी गुप्त

61. वंदना कुलदेवी श्री नागणेचियां माता : ठा. उम्मेद सिंह राठौड़ 'धौली' संपादक प्रो. सुशीला लड्ढा

62. पाबूप्रकाश-महाकाव्य : (महाकवि मोडजी आशिया कृत) संपादक व भाष्यकार शंकर सिंह आशिया

63. पीरदान ग्रंथावली : संपादक अगर चन्द नाहटा सार्दुल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट, बीकानेर

64. In Praise of death : Janet Kamphorst

65. धरा सुरंगी धाट : डॉ. शक्तिदान कविया
66. महाकवि बांकीदास आशिया ग्रंथावली, भाग-2 : सं. सौभाग्य सिंह शेखावत
67. कच्छ दर्शन : शम्भुदान गढ़वी
68. दिव्य मंदिर मारा देवनां रे : जोरावर सिंह जादव
69. श्रीनाथ रहस्य : प्रथम खण्ड, चतुर्थ खण्ड
70. आइने अकबरी, हरात्त संस्करण 3
71. Sachau Edward C, Albiruni's India
72. Elliot and Dowson
73. Kramrish Stella, Survery of Paintaings in Decean, London
74. शाह लतीफ़ का काव्य : संपादक मोतीलाल जोतवाणी, अनुवाद मणिशंकर द्विवेदी
75. चारण-चिंतन : संपादक शुभकरण देवल
76. आग्नेय-तीर्थ हिंगलाज शक्तिपीठ यात्रा वृत्तांत : श्री नारायण प्रसाद साहू
77. OUR ORIENTAL HERITAGE : WILL DURANT
78. अचलदास खीची री वचनिका : गाडण शिवदास रचित : संपादक डॉ. शंभु सिंह मनोहर
79. अजीत विलास : संपादक शिवदत्त दान बारहठ
80. सोढायण : कविया चिमनजी कृत : संपादक श्री शक्तिदान कविया
81. परम्परा : संपादक नारायण सिंह भाटी
82. बाँकीदास री ख्यात : संपादक पं. नरोत्तमदास स्वामी
83. शक्तिकुञ्ज : मृदुला त्रिवेदी, टी.पी. त्रिवेदी
84. गोरख चरित्र : रामालाल श्रीवास्तव
85. गोरखपुराण : पृथ्वीराज
86. श्रीबुधगिरि महिमा : डॉ. चेतन स्वामी
87. आरती मंगल : कामदार शिवदान सिंह श्री करणी कोट, दांता (सीकर)
88. कुमार सम्भवम् : कालिदास ग्रंथावली : डॉ. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी
89. पीठनिर्णय : (महापीठनिरुपणम्)
90. कुब्जिकातंत्र
91. Encyclopedia of Indian Heritage and culture : Dr. Devendra Mishra, K.L. Chanchreek, Dr. Mahesh K. Jain

92. महिषासुर मर्दिनी : शांतिलाल नागर
93. The Sakta Pithas : D.C. Sircar
94. मेहाई महिमा : हिंगलाज दान कविया सेवापुरा
95. श्रीनाथ सिद्धों की शंखढाल : योगी विलास नाथ
96. श्रीनाथ सम्प्रदाय : योगी विलास नाथ
97. माता जी का छंद : सम्पादक डॉ. चन्द्र प्रकाश देवल
98. मरु तीर्थ हिंगलाज : कालिका नन्द अवधूत
99. माँ हरसिद्धि महिमा : शिवप्रसाद शर्मा
100. मरु तीर्थ हिंगलाज : (बंगाली भाषा में फिल्म)
101. सरला महाभारत : महाकवि सरला दास
102. ब्राह्मण निर्णय ग्रंथ : श्री छोटालाल शर्मा
103. श्री दसम ग्रंथ साहिब (प्रथम सैंची) अनुवादक डॉ. जोध सिंह
104. अभय भारत (15 अगस्त से 14 सितम्बर, 2003 अंक)
105. 'सचल सरमस्त जो चूंड कलाम', सम्पादक-कल्याण बी. आडवाणी
106. श्री करणी जी दुर्लभ दर्शन : विक्रम देपावत
107. Alexanders Compaigns in Sind : Pierre Herman Leonard Eggermont-
108. Wikipedia, the free encyclopedia
109. www. Shaktipeethas.org.
110. www.hinglajmatamandir.com
111. www.orissa.gov.inc-maggine/orissa view/june2006/eng pdf/ 75-76PDF
112. www.defence.pk(15825mudvolcnoes baluchistan
113. www.offroadpakistan.com
114. www. cssforum.com
115. Narative of A Journey to Kalat : Charles Massion
116. www.thaisikh.org.com
117. The Country of Balochistan : A.W. Hughes
118. ब्रह्मपुराण

119. भारत में वैष्णव धर्म अने शाक्त सम्प्रदाय : डॉ. नवीन चन्द्र आ. आचार्य
120. PreIslamic Heritage of Baluchistan : LLC Book
121. Paratrajas coin gallery : coinindia.com/galleries-parata-rajas.htm
122. बाबा श्री चन्द्र जी महाराज की जन्म साखी : सरदार धन्ना सिंघ 'रंगीला'
123. लतीफी सैर : भैरूंमल महरचन्द
124. शाह की रचनाओं में हिन्दू दर्शन का दर्शन : डॉ. नानकराम ईसराणी
125. सिंधुपति महाराज श्री चच देव : श्याम सुंदर भट्ट
126. श्रौतमुनि चरितामृत : स्वामी श्री गङ्गेश्वरानन्द
127. सिंधु पुत्र महाराज दाहरसेन : श्याम सुंदर भट्ट
128. सिंधु मित्र श्री बप्पा रावल : श्याम सुंदर भट्ट
129. महाशक्ति हिंगलाज माताजी : श्री अम्बिका प्रसाद आर. क्षत्रिय
130. जय हिंगलाज : धनजी भानुशाली
131. www.ORISSA.gov.in/e-magzine/orissaview/June2006/engpdf/75-76pdf
132. शक्ति-संगम तंत्र (सुन्दरी खंड) : सं. कुलभूषण पंडित रमादत शुक्ल
133. बून्दी राज्य का सम्पूर्ण इतिहास : दुर्गा प्रसाद माथुर

ओंकार सिंह लखावत

जन्म : 1 अप्रेल, 1949, टेहला, जिला–नागौर (राज.)
माता श्रीमती सायर कंवर एवं पिता स्व. श्री आश करण जी
शिक्षा : बी.ए., एल.एल.बी.

दायित्व निर्वहन : सांसद (राज्यसभा), अध्यक्ष नगर सुधार न्यास, अजमेर, अध्यक्ष राजस्थान धरोहर संरक्षण एवं प्रोन्नति प्राधिकरण (राज्यमंत्री दर्जा), अध्यक्ष चारण साहित्य शोध संस्थान, अजमेर।

कर्त्तव्य पूर्ति : सम्राट पृथ्वीराज चौहान स्मारक (अजमेर), सिंधुपति दाहरसेन स्मारक (अजमेर), गोगा जी चौहान स्मारक (गोगामेड़ी), राणा सांगा स्मारक (खानुआ), महाराजा सूरजमल स्मारक (भरतपुर), मीराबाई स्मारक (मेड़ता), गोविन्द गुरु स्मारक (मानगढ़ धाम, बांसवाड़ा), हाड़ी रानी स्मारक (सलूम्बर), तेजाजी स्मारक (खरनाल), जाम्भाजी स्मारक (पींपासर), गुरु गोविन्द सिंह स्मृति साहवा सरोवर (चूरू), नर्मदेश्वर धाम (सीलू, जालौर), नरहरिदास बारहठ स्मारक (टहला), सत्याग्रह उद्यान (आउवा), बूढ़ा पुष्कर जीर्णोद्धार, भक्तिधाम, अर्ण राज एवं मीरा बाई उद्यान आदि अनेक स्मारकों एवं परियोजनाओं का निर्माण विभिन्न दायित्वों को निर्वहन करते हुए कराया।

प्रकाशित पुस्तकें : 'जय आवड़ आसापुरा', 'बारहठ नरहरिदास'।

सम्प्रति : राजस्थान उच्च न्यायालय में वकालत।

सम्पर्क :
24–ए, मोहन कॉलोनी, स्वेज फार्म, सोडाला, जयपुर
करणी कुंज, कचहरी रोड, अजमेर
चल–दूरभाष : 09414007610
दूरभाष : 0141–2290629, 0145–2422610
ई–मेल : oslakhawat@gmail.com

ISBN : 978-81-920932-0-8

हिंघलाज

खजुराहो संग्रहालय 2320

जनरल कन्निंघम ने 1865 ई. में विश्व प्रसिद्ध पुरातत्व महत्व के खजुराहो के दक्षिण पश्चिम समूह के 64 योगिनियों के मंदिर में तीन मूर्तियाँ देखी थी। उनमें से मध्य मंदिर में महिषासुर का मर्दन करती भव्य मूर्ति के पाद पद पर '**हिंघलाज**' उत्कीर्ण है। नौवीं शताब्दी की '**हिंघलाज**' माता की मूर्ति पर्यटकों को अत्यधिक आकर्षित करती है।

ISBN : 978-81-920932-0-8